वचन की व्याख्या

बाइबल का सटीक अध्ययन, व्याख्या और संचार कैसे करें

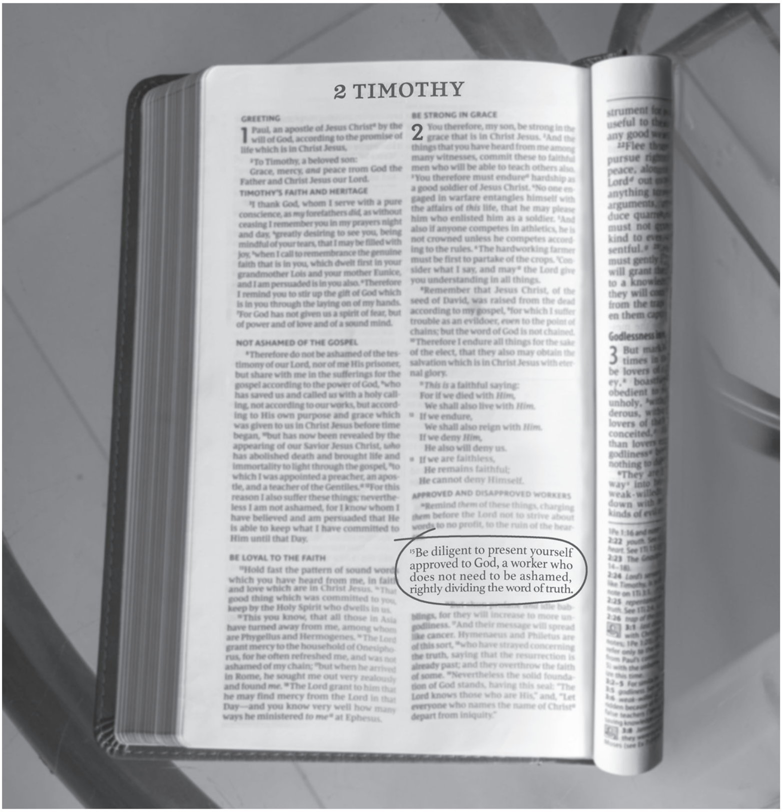

आशीष रायचूर

केवल निःशुल्क वितरण के लिए
ऑल पीपल्स चर्च एण्ड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा निर्मित और वितरित।
वर्तमान संस्करण: 2025

संपर्क जानकारी

All Peoples Church & World Outreach,
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email**: bookrequest@apcwo.org**
Website: **apcwo.org**

जब तक, अन्य रूप से संकेत न दिया गया हो, धर्मशास्त्र के सभी संदर्भ पवित्र बाइबल द बाइबल सोसायटी ऑफ इंडिया (BSI) द्वारा प्रकाशित, पुराने संस्करण से अनुमति सहित लिए गए हैं। सर्वाधिकार आरक्षित हैं। आर्थिक साझेदारी

आर्थिक साझेदारी

इस पुस्तक का निःशुल्क वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता के कारण संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के निःशुल्क प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता हेतु आर्थिक रूप से योगदान देने हेतु आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाइए या अपना योगदान कैसे करें, यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे “ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागिता” पृष्ठ को देखीए। धन्यवाद!

निःशुल्क संसाधन और संबंधित वेबसाइटें

उपदेश: apcwo.org/sermons। **पुस्तकें:** apcwo.org/books। **चर्च ऐप:** apcwo.org/app
बाइबल कॉलेज: apcbiblecollege.org। **ई-लर्निंग:** apcbiblecollege.org/elearn
परामर्श सेवा: chrysalislife.org । **संगीत:** apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: pamfi.org। **एपीसी वर्ल्ड मिशन्स:** apcworldmissions.org

(Hindi – Interpreting Scripture)

वचन की व्याख्या

बाइबल का सटीक अध्ययन, व्याख्या और संचार कैसे करें

विषयसूची

1. विश्वासी के जीवन में परमेश्वर का वचन	1
2. पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने में चुनौतियाँ	4
3. पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने की आवश्यकता	18
4. पुनर्निर्माण एवं पुनर्स्थापना–कई धाराएं, एक नदी	43
5. बाइबल अध्ययन की विधियाँ एवं उपकरण	68
6. यीशु मसीह का व्यक्तित्व	93
7. पवित्र आत्मा का प्रकाश	106
8. बाइबल संदर्भ	120
9. संस्कृति	137
10. भाषा—शब्दार्थ और व्याकरण	149
11. साहित्यिक शैलियाँ	195
12. साहित्यिक युक्तियाँ	205
13. व्याख्या के स्वरूप	216
14. प्रकार और प्रतिरूप	220
15. दृष्टांत	228
16. रूपक से बचें	235
17. असंबंधित वाक्यांशों को जोड़ने से बचें	247

18. शब्दावली और वाक्यांशों के उपयोग को समझना 253
19. बाइबल भविष्यवाणी की व्याख्या करना 260
20. नए नियम में पुराना नियम 289
21. तर्क के सिद्धांत 307
22. जब बाइबल चुप रहती है 315
23. परमेश्वर के वचन को लागू करना 322
24. कठिन विषय 326
25. प्रचार और शिक्षण 360

विशिष्ट विषयों के लिए अनुक्रमणिका

परमेश्वर की ओर से कष्ट देने वाली आत्मा (1 शमूएल 16:14-16,23)? 102
स्वर्गदूत 158
बपतिस्मा 159
मृतकों के लिए बपतिस्मा (1 कुरिन्थियों 15:29) 125
पृथ्वी पर बाँधो, पृथ्वी पर खोलो (मत्ती 16:19) 180
बंधुआ मजदूर (दास, गुलाम) 174
कैल्विनवाद और आर्मिनियनवाद.. 58,336
क्या कोई विश्वासी मसीह से दूर हो सकता है और अपना
उद्धार खो सकता है?... 350
केरिस और *करिश्मा* 161
निरंतरतावाद—बाइबल आधारित कारण 346
निरंतरतावाद और समाप्तिवाद... 59
विरोधाभासी सुसमाचार विवरण? 331
व्यर्थता के बंधन में सृष्टि (रोमियों 8:18-23)..................................... 187
व्यवस्था (नियम) का अभिशाप—क्या हम इससे मुक्त हैं
(गलातियों 3:13,14)? 297
सिय्योन की पुत्री, सिय्योन की पुत्रियाँ 254
अंतिम समय—70 सप्ताह और अंतिम 7 वर्ष
(दानिय्येल 9:24-27) 272
अंतिम समय—एक समय, कई समय, और आधा समय 270
अंतिम समय—दानिय्येल में आने वाले राज्य 262
अंतिम समय—बहुत से पानियों पर बैठी बड़ी वेश्या
(प्रकाशितवाक्य 17:1,15) 268

अंतिम समय—वर्तमान राज्य, आने वाला राज्य 282
अंतिम समय—पहाड़, राजा, सींग, पशु, वेश्या
(प्रकाशितवाक्य 17:9-13) 268
अंतिम समय—पूर्ववाद विरूद्ध युगानुकूल सहस्राब्दिवाद 285
अंतिम समय—क्रमानुसार प्रकाशन 280
अंतिम समय—क्या तीसरा मंदिर होगा?... 287
अंतिम समय—स्त्री, नर बालक, और अजगर
(प्रकाशितवाक्य 12:1-6) 266
विश्वास और विश्वास करना.. 157
लोगों के पापों को क्षमा करना (यूहन्ना 20:23) 339
आनुवंशिक शोध और अन्य प्रगति 320
परमेश्वर और नरसंहार 356
उसने हमारे रोगों और पीड़ाओं को सहा (यशायाह 53:4,5) 169
नरक—*शिओल, हेडिस, गेहेना*, स्वर्गलोक, अथाह कुंड
(आग की झील) 167
जीवन की पुस्तक से नाम किस प्रकार मिटाए जा सकते हैं? 352
आत्मा द्वारा गुप्त रहस्यों का प्रकटीकरण (इफिसियों 3:1-7) 53
प्रभु से पूछना, प्रभु से पूछा.. 253
मध्यस्थता—दीवार बनाना, बीच में खड़े होना
(यहेजकेल 22:29,30) 193
क्या सारी बातें परमेश्वर की इच्छा अनुरूप ही होती है?...................... 338
क्या यीशु परमेश्वर हैं? 326
ज़च्चा की सी पीड़ाएँ—आत्मिक कष्ट (गलातियों 4:19) 192
जीवन 152
प्रेम 153

रहस्य / रहस्यों 257
नया 153
इस चट्टान पर, मैं अपनी कलीसिया बनाऊँगा (मत्ती 16:15-20) 178
बालकों के मुँह से (भजन संहिता 8:2) 171
पैराक्लेटोस 155
पौलुस के शरीर में काँटा (2 कुरिन्थियों 12:7) 159
शांति—*शालोम* 154
परमेश्वर के वचन में मिलावट करना (2 कुरिन्थियों 2:17) 37
परिपूर्ण और संपूर्ण 153
बहुविवाह और एकविवाह 355
शक्ति और अधिकार 151
आत्मा में प्रार्थना करना 258
पूर्वनियति और मनुष्य की स्वतंत्र नैतिक क्रिया 336
छुटकारा (मोचन) 172
वचन की उचित रूप से व्याख्या करें और बांटे
(2 तीमुथियुस 2:15) 25
सब्त 354
उद्धार 154
शाऊल और एन्दोर की जादूगरनी (1 शमूएल 28:1-20) 358
सिगरेट पीना 316
परमेश्वर का पुत्र, सृष्टि का आरंभ, पहिलौठा, एकलौता 328
टैटू (गोदना) 317
सही सिद्धांत सिखाएँ (तीतुस 2:1) 29
परमेश्वर की पूर्ण सलाह सिखाएँ (प्रेरितों के काम 20:27) 26

प्रभु की ताड़ना (इब्रानियों 12:5-13) 184
सबसे बड़ा पाप—पिलातुस, यहूदा 335
प्रभु का हाथ 255
पवित्र आत्मा हमारी दुर्बलताओं में सहायता करता है
(रोमियों 8:26,27) 189
त्रिएकत्व 327
बलपूर्वक छीन लेते हैं (मत्ती 11:12) 176
तीन दिन और तीन रातें (मत्ती 12:40) 341
समय—*क्रोनोस* और *कैरोस* 151
दशमांश देना—क्या नए नियम के विश्वासी इसका
पालन करते हैं? 300
विजय 174
जब वह जो सिद्ध है, आ गया है (1 कुरिन्थियों 13:9-13) 344
यीशु ने दृष्टांतों में बातें क्यों की? 228
प्रेरित स्त्री जिसका नाम "जुनिया" है (रोमियों 16:7) 182
स्त्री न उपदेश करे और न पुरुष पर आज्ञा चलाए
(1 तीमुथियुस 2:10-15) 130
स्त्री और पुरुष—मुख्य पद, अगुवाई, वरदान 349
चर्च की सभाओं में स्त्रियाँ अपना सिर ढकती हैं
(1 कुरिन्थियों 11:2-16).. 145
पाँच प्रकार की सेवकाई में स्त्रियाँ (इफिसियों 4:11) 181
स्त्रियाँ कलीसियाओं में शांत (चुप) रहें (1 कुरिन्थियों 14:34,35) 126
स्त्रियों द्वारा आभूषण और उत्तम वस्त्र पहनना (1 पतरस 3:1-6) 304

परिचय

परमेश्वर अपने वचन और अपनी आत्मा की शक्ति से कार्य करता है। परमेश्वर का लिखित वचन, शास्त्र, पवित्र बाइबल उन रीतियों में से एक है जिसके द्वारा परमेश्वर हमारे जीवन में कार्य करता है।

हमें बाइबल, 66 पुस्तकों का एकत्रित किया हुआ प्रिंट, ऑडियो, डिजिटल टेक्स्ट इत्यादि जैसे विभिन्न प्रकार से उपलब्ध होने का गौरव प्राप्त हुआ है। जब हम वचनों को पढ़ते हैं, तो हम बाइबल के परमेश्वर से मिलते हैं, सत्य की खोज करते हैं, और अपने जीवन में परमेश्वर के कार्य का अनुभव करते हैं। यह हमारी महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है कि हम बाइबल की शिक्षाओं को अपने दैनिक जीवन में लागू करे और परमेश्वर ने जो निर्देश दिया है, उसके अनुसार अपना जीवन बिताएं। परमेश्वर के वचन में जो कुछ भी हमें पता लगता हैं, उसे दूसरों के साथ भी साझा कर सकते हैं।

हमारा परमेश्वर के वचन को पढ़ना और उसका अध्ययन करना एक बड़े उत्तरदायित्व को भी लेकर आता है कि हम परमेश्वर के वचन को सही और सटीक रूप में समझें, उसकी व्याख्या करें, उसे अपने जीवन में लागू करें और उसे सही रीती से सिखाएं। यदि हम परमेश्वर के वचन को गलत समझते हैं, गलत व्याख्या करते हैं या उसका दुरुपयोग करते हैं, तो हम मुसीबत में पड़ सकते हैं। इसलिए यह सीखने की आवश्यकता है कि परमेश्वर के वचन को सही और सटीक रूप से कैसे समझा जाए, व्याख्या की जाए, लागू किया जाए और सिखाया जाए, जो इस संसाधन का उद्देश्य है।

हममें से कुछ लोगों ने परमेश्वर के वचन की सेवकाई करने

की बुलाहट (आह्वान) को पहचाना होगा। हम परमेश्वर के वचन का प्रचार करने और दूसरों को सिखाने की तैयारी कर रहे होंगे या पहले से ही इसमें लगे हुए होंगे। हमें प्रेरित पौलुस द्वारा तीमुथियुस को दी गई सलाह पर ध्यान देना चाहिए, *"अपने और उपदेश के प्रति सचेत रह। उनमें बने रह, क्योंकि ऐसा करने से तू अपने और अपने सुननेवालों के लिए उद्धार का कारण होगा"* (1 तीमुथियुस 4:16)। परमेश्वर के सेवकों के रूप में, हमें अपने और अपने उपदेशों पर गंभीर दृष्टि रखनी चाहिए। हमें प्रेरित पौलुस द्वारा तीमुथियुस को दी गई शिक्षा पर उचित रूप से ध्यान देना होगा। परमेश्वर के सेवकों के रूप में, हमें अपने और अपनी शिक्षा पर गंभीर दृष्टि रखनी चाहिए। हमें इस बारे में निरंतर सतर्क रहना चाहिए, स्वयं अपने जीवन और शिक्षा के प्रति सावधान रहना चाहिए। यदि हम ऐसा करेंगे, तो हम स्वयं अपने आप को और अपने सुननेवालों दोनों को बचाएँगे।

प्रेरित पौलुस ने परमेश्वर के वचन को सही रूप से साझा करने कई आवश्यकता पर ज़ोर दिया, *"अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा सेवक ठहराने का यत्न करो जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक से बाँटता हो"* (2 तीमुथियुस 2:15)। इस पुस्तक में हमारा लक्ष्य यह सीखना है कि पवित्र आत्मा के नेतृत्व में परमेश्वर के वचन को उचित रूप से किस प्रकार संभाला जाए। हम वचनों की सही व्याख्या करने के अभ्यास को सरल और समझने में सरल बनाने का प्रयास करते हैं ताकि विश्वासी और वचन के सेवक इन सिद्धांतों को और परमेश्वर के पवित्र वचन को पढ़ने, अध्ययन करने और सेवकाई में लागू करने में सफल हो सकें। हमारा लक्ष्य इसे सरल और व्यावहारिक बनाए रखना है। हमने कुछ सामान्य प्रश्न और कठिन विषय भी सम्मिलित किए हैं जिससे हम इन विषयों पर बाइबल के दृष्टिकोण तक पहुँचने में व्याख्यात्मक प्रक्रिया को समझ सकें।

परमेश्वर के वचन का अध्ययन, समझ, व्याख्या, और शिक्षण करते समय यह पुस्तक एक उपयोगी संसाधन होगी।

परमेश्वर आपको आशीष दे!

आशीष रायचूर

1
विश्वासी के जीवन में परमेश्वर का वचन

परमेश्वर अपने वचन और पवित्र आत्मा की शक्ति के माध्यम से विश्वासी के जीवन में कार्य करता है। परमेश्वर का वचन और पवित्र आत्मा का कार्य समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। हम वचन (1 पतरस 1:23) और पवित्र आत्मा (यूहन्ना 3:5; तीतुस 3:4,5) द्वारा नया जन्म लेते हैं। विश्वासियों के रूप में, जब हम वचन (यूहन्ना 15:3; यूहन्ना 17:17) और पवित्र आत्मा की शक्ति (2 कुरिन्थियों 3:18) द्वारा जीवन बिताते है, तो हम पवित्र बनते और रूपांतरित होते जाते हैं। परमेश्वर में हमारा विश्वास पोषित होता है और यह तब बढ़ता है जब हम उसके वचन (रोमियों 10:17) पर निर्भर रहते हैं। हमें मसीही जीवन और सेवकाई के लिए परमेश्वर के वचन द्वारा शिक्षित, निर्देशित, प्रशिक्षित और सुसज्जित किया जाता है (2 तीमुथियुस 3:16,17)। परमेश्वर का वचन हमारे मार्ग को रोशन करता है (भजन संहिता 119:130) और हमारे निर्णयों और विकल्पों में हमारा मार्गदर्शन करता है। जब हम शत्रु की चालों के विरुद्ध संघर्ष करते हैं, तो हम पवित्र आत्मा द्वारा सशक्त होते हैं और परमेश्वर के वचन को अपनी तलवार के रूप में उपयोग करते हैं (इफिसियों 6:17)। ये और कई अन्य वचन हम को विश्वासी के जीवन में परमेश्वर के वचन के महत्व के बारे में सिखाते हैं।

बीज बोने वाले का दृष्टांत

प्रभु यीशु ने बीज बोने वाले का दृष्टांत सिखाया (मत्ती 13:1-23; मरकुस 4:1-20; लूका 8:4-15), ताकि हमें परमेश्वर के वचन का महत्व बताया जा सके, कि हमें परमेश्वर के वचन के साथ कैसे जुड़ना है, और वचन हमारे जीवन में क्या कर सकता है। यह दृष्टांत हमें बताता है कि

परमेश्वर का राज्य कैसे काम करता है और परमेश्वर के राज्य के कौन से सिद्धांत हैं जिन्हें हम अपने जीवन में परमेश्वर के वचन को कार्य करते हुए अनुभव करने के लिए लागू कर सकते हैं। परमेश्वर का वचन वह बीज है जिसे सुनने के माध्यम से हमारे हृदय में बोया जाना चाहिए। वचन का बीज सिद्ध है। यह जीवन और शक्ति में परिपूर्ण है। यह सदैव फल देगा और परमेश्वर के पास बिना फल लाए कभी नहीं लौटेगा। हृदय (आंतरिक मनुष्य, आत्मा) वह भूमि है जिसमें वचन के बीज को जड़ पकड़ना चाहिए, अंकुरित होना चाहिए, और बढ़ना चाहिए। हृदय की स्थिति यह निर्धारित करती है कि बीज का क्या होता है। जब कोई व्यक्ति वचन सुनता है, किन्तु उसे समझ नहीं पाता है, तो यह शैतान को अवसर देता है कि वह इस बोए गए वचन को चुरा ले जाए। मार्ग के किनारे का वचन फल नहीं लाता है (अर्थात ऐसा हृदय जो वचन समझ नहीं पाता)। जब हम वचन को गृहण करते हैं, तो बहुत आनंदित होते हैं और हमें जो वचन मिला है, जब उससे सबंधित कठिनाइयाँ और उत्पीड़न आते हैं। तो यह हार मानने का समय नहीं है, बल्कि वचन को पकड़े रहने का समय है। यदि कोई व्यक्ति वचन को छोड़ देता है, तो वचन का बीज उत्पन्न नहीं होता (पथरीली भूमि)। यदि हृदय इस संसार की चिंताओं में व्यस्त है, धन-दौलत या अन्य वस्तुओं की इच्छा से धोखा खा जाता है, तो ये चीज़ें "वचन को दबा देती हैं" और इसे उत्पन्न होने से रोकती हैं (काँटों वाली ज़मीन)। जबकि, जो लोग वचन सुनते हैं, अपने हृदय की मिट्टी को पोषित करते हैं और वचन को बढ़ने देते हैं, और वचन को दृढ़ता से थामे रहते हैं, तो वे (अच्छी भूमि) एक अच्छी फ़सल लाते हैं, जो बोई गई फसल से तीस गुना, साठ या सौ गुना अधिक हो सकती है।

राज्य का सिद्धांत यह है—कि जब परमेश्वर अपने वचन को हमारे हृदय में बोता है और पोषित करता है, तो वह उसके द्वारा हम में कार्य करता है। परमेश्वर का वचन हममें अपनी शक्ति को लागू करता है, और हमारे जीवन में वही उत्पन्न करता है जो परमेश्वर चाहता है।

मनन (चिंतन) का सिद्धांत

जिस प्रक्रिया से हम परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में ग्रहण करते हैं वह बहुत महत्वपूर्ण है। बाइबल हमें मनन (चिंतन) का सिद्धांत सिखाती है। बाइबल मनन में चिंतन अंगीकार और कल्पना करना सम्मिलित है। **चिंतन** का अर्थ है मनन करना, गहराई से सोचना, अपने मन में विचार करना। **अंगीकार** करने का अर्थ है बुदबुदाना, कहना और घोषणा करना। **कल्पना** का अर्थ है कल्पना पर अधिकार करना, मन की आँखों से देखना, वचन को अपनी आँखों के सामने रखना। ध्यान की प्रक्रिया के माध्यम से, हम अपने हृदय में परमेश्वर के वचन का बीज बो सकते हैं, अंकुरित कर सकते हैं, सींच सकते हैं और पोषित कर सकते हैं और अंततः अपने जीवन में फल ला सकते हैं।

परमेश्वर का वचन–चमत्कारी बीज

हम पाठकों को निःशुल्क APC पुस्तक, **“परमेश्वर का वचन–चमत्कारी बीज”** का संदर्भ देते हैं, जो PDF डाउनलोड के रूप में **apcwo.org/books** पर निःशुल्क उपलब्ध है। ऊपर प्रस्तुत सभी अंतर्दृष्टियों को इस पुस्तक में विस्तृत रूप से समझाया गया है।

2
पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने में चुनौतियाँ

परमेश्वर की प्रेरणा द्वारा दिया गया

2 तीमुथियुस 3:16,17
[16]सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिये लाभदायक है,
[17]ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।

बाइबल एक प्रेरित पुस्तक है। सम्पूर्ण शास्त्र, पुराना नियम और नया नियम, परमेश्वर की प्रेरणा द्वारा लिखा गया है। यह परमेश्वर हमसे इस प्रकार बात कर रहा है जिसे हम समझ सकते हैं और उससे जुड़ सकते हैं।

बाइबल परमेश्वर का वचन है क्योंकि यह परमेश्वर से प्रेरित है। यह परमेश्वर की सांस है। यह परमेश्वर है जो हमसे बात कर रहा है।

बाइबल सत्य है क्योंकि परमेश्वर ने सत्य कहा है। *"वह चट्टान है, उसका काम खरा है; और उसकी सारी गति न्याय की है। वह सच्चा परमेश्वर है, उसमें कुटिलता नहीं, वह धर्मी और सीधा है।"* (व्यवस्थाविवरण 32:4)।

बाइबल अनंतकालीन है और आज हमारे समय के लिए बहुत प्रासंगिक है क्योंकि जिसने बोला है वह अनंतकाल तक का परमेश्वर है और समय से परे है। *"वरन् अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही परमेश्वर है"* (भजन संहिता 90:2)। *"हे यहोवा, तेरा वचन, आकाश में सदा तक स्थिर रहता है।"* (भजन संहिता 119:89)।

बाइबल सभी संस्कृतियों के सभी लोगों के लिए प्रासंगिक है क्योंकि परमेश्वर ने जो बोला है वह सभी प्राणियों का परमेश्वर है। *"देख, मैं तो सब प्राणियों का परमेश्वर यहोवा हूँ; क्या मेरे लिये कोई भी काम कठिन है?"* (यिर्मयाह 32:27)।

बाइबल पूरी तरह से विश्वसनीय है क्योंकि परमेश्वर ने स्वयं इसकी पूर्ति की गारंटी दी है। *"उसी प्रकार मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ होकर मेरे पास न लौटेगा, परंतु जो मेरी इच्छा है उसे पूरा करेगा, और जिस काम के लिये मैं ने उसको भेजा है उसे वह सफल करेगा"* (यशायाह 55:11)।

परमेश्वर के लोगों ने पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित होकर बात की

2 पतरस 1:16-21
16क्योंकि जब हम ने तुम्हें अपने प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ्य का और आगमन का समाचार दिया था, तो वह चतुराई से गढ़ी हुई कहानियों का अनुकरण नहीं था वरन् हम ने आप ही उसके प्रताप को देखा था।
17क्योंकि जब उसने परमेश्वर पिता से आदर और महिमा पाई और उस प्रतापमय महिमा में से यह वाणी आई, "यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ।"
18तब हम उसके साथ पवित्र पहाड़ पर थे और स्वर्ग से यही वाणी आते सुनी।
19हमारे पास जो भविष्यद्वक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा। तुम यह अच्छा करते हो जो यह समझकर उस पर ध्यान करते हो कि वह एक दीया है, जो अन्धियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे।
20पर पहले यह जान ल कि पवित्रशास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती,
21क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।

प्रेरित पतरस इस तथ्य पर प्रकाश डालता है कि जब वे यीशु मसीह के बारे में उपदेश देते और सिखाते थे, तो वे "चतुराई से गढ़ी

गई दंतकथाएँ" या चतुराई से गढ़ी गई कहानियाँ नहीं बता रहे थे। वे उन बातों के बारे में बोलते और लिखते थे जिन्हें उन्होंने व्यक्तिगत रूप से देखा और सुना था। वे "प्रत्यक्षदर्शी" थे। वे व्यक्तिगत रूप से वहाँ थे जब उन्होंने पिता को यह कहते हुए सुना कि *"यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ"* (2 पतरस 1:17)। वे व्यक्तिगत रूप से रूपांतरण पर्वत पर थे जहाँ उन्होंने रूपांतरित मसीह को देखा और पिता की आवाज़ सुनी। व्यक्तिगत रूप से वहाँ होने, इन चीज़ों को देखने और सुनने के बाद, पतरस कहता है, *"हमारे पास जो भविष्यद्वक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा।"* (2 पतरस 1:19)। इसलिए, पतरस हमें भविष्यवक्ताओं द्वारा कही गई सभी बातों एवं, सभी वचनों पर ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित करता है, *"कि वह एक दीया है, जो अन्धियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे।"* (2 पतरस 1:19)।

फिर पतरस हमें बताता है कि "पवित्र शास्त्र की भविष्यवाणी" कैसे दी गई। मनुष्य ने इन बातों के बारे में नहीं सोचा। ये कुछ लोगों की कल्पना या कल्पना की उड़ान का परिणाम नहीं हैं। पतरस कहता है कि *"भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।"* (2 पतरस 1:21)। इस तरह से हमें पवित्रशास्त्र दिया गया। लोगों ने पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित, निर्देशित और नेतृत्व किए जाने पर बात की है।

हम मानते हैं कि परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र की प्रेरणा, संचार और संकलन में लोगों के माध्यम से काम किया। बाइबल, जो परमेश्वर का वचन है उसमें ईश्वरीय पक्ष और मानवीय पक्ष दोनों है।

बाइबल एक आत्मिक पुस्तक और एक मानवीय पुस्तक दोनों है

बाइबल एक आत्मिक पुस्तक के रूप में

बाइबल एक प्रेरित पुस्तक है। परमेश्वर ने अपनी आत्मा के द्वारा बात की और उसके शब्द स्वयं की अभिव्यक्ति हैं। बाइबल परमेश्वर, उसके स्वभाव, उसके हृदय, उसकी इच्छा, उसकी योजनाओं, उसके उद्देश्यों को और वह सब कुछ प्रकट करती है जो वह हमें, यानि उसकी रचना को प्रदान करना चाहता है।

हम बाइबल के बारे में निम्नलिखित दावे कर सकते हैं क्योंकि यह एक आत्मिक पुस्तक है।

- **त्रुटिहीन:** बाइबल त्रुटिहीन है। हालाँकि इसमें ऐसी बातें हो सकती हैं जो विवादास्पद हों या समझने में कठिन लग सकती हैं। हमें जिस समझ और स्पष्टता की आवश्यकता है उसके लिए थोड़ा अध्ययन, शोध, प्रार्थना और परमेश्वर की खोज की आवश्यकता है। *"परमेश्वर का वचन पवित्र है, उस चाँदी के समान जो भट्ठी में मिट्टी पर ताई गई, और सात बार निर्मल की गई हो।"* (भजन संहिता 12:6)। *"यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है; यहोवा के उपदेश सिद्ध हैं, हृदय को आनन्दित कर देते हैं; यहोवा की आज्ञा निर्मल है, वह आँखों में ज्योति ले आती है; यहोवा का भय पवित्र है, वह अनन्तकाल तक स्थिर रहता है; यहोवा के नियम सत्य और पूरी रीति से धर्ममय हैं।"* (भजन संहिता 19:7-9)।
- **आधिकारिक**: किसी भी विषय में परमेश्वर का वचन अंतिम है। परमेश्वर का वचन उसकी इच्छा की अभिव्यक्ति है, और जैसे-जैसे हम उसके वचन के प्रति समर्पित होते हैं, हम अपने जीवन में उसकी इच्छा के प्रति समर्पित होते हैं। *"क्योंकि यहोवा*

का वचन सीधा है; और उसका सब काम सच्चाई से होता है" (भजन संहिता 33:4)। *"इसी कारण मैं तेरे सब उपदेशों को सब विषयों में ठीक जानता हूँ; और सब मिथ्या मार्गों से बैर रखता हूँ"* (भजन संहिता 119:128)।

- **सुसंगत (एकरूपता**): वचन एकता और सामंजस्य बनाए रखते हैं, सुसंगत और स्पष्ट हैं और स्वयं-विरोधाभासी नहीं हैं। वचनों के बारे में हमारा अध्ययन, समझ और व्याख्या इस सुसंगतता के सिद्धांत का पालन करते हैं। जिन अंशों को समझना मुश्किल है, उनकी व्याख्या उन अंशों के आधार पर की जाती है जो स्पष्ट हैं और उसी विषय पर बोलते हैं। कठिन अंशों पर काम करते समय, हम स्पष्ट, सुसंगत और विवेकपूर्ण (सही) व्याख्या को स्वीकार करते हैं। अतः हमें भी, वचनों की व्याख्या बाकी वचन के प्रकाश में करनी चाहिए। बाइबल स्वयं की व्याख्या करती है। हमें वचनोन की निरंतरत व्याख्या करते समय प्रगतिशील प्रकाशन के सिद्धांत को भी लागू करना चाहिए।
- **रहस्योद्‌घाटक (उजागरण):** हम पवित्रशास्त्र के प्रगतिशील उजागरण को पहचानते हैं और स्वीकार करते हैं। इसका मतलब है कि परमेश्वर ने समय के साथ-साथ अपने लोगों को जो जानना चाहा, उसका अनावरण किया। प्रगतिशील प्रकाशन की प्रक्रिया में, हम पहचानते हैं कि कुछ निर्देश समय-बद्ध थे, जो विशिष्ट लोगों को एक विशेष समय-अवधि के दौरान दिए गए थे। प्रगतिशील प्रकाशन की प्रक्रिया में, जो शुरू में अस्पष्ट और अज्ञात लग सकता था, वह बाद में स्पष्ट रूप से समझ में आ जाता है। नए नियम के विश्वासियों के रूप में, हम यीशु मसीह के व्यक्तित्व में हमें दिए गए प्रकाशन और परमेश्वर के प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं द्वारा दिए गए पत्रियों के माध्यम से हमारे सामने प्रकट किए गए रहस्यों के अनुसार जीते हैं। *"पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भाँति–भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें*

कर, और इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है" (इब्रानियों 1:1,2)। *"और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर, जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो"* (इफिसियों 2:20)।

- **अलौकिक**: एक दिव्य पुस्तक के रूप में बाइबल परमेश्वर के उन कार्यों का उल्लेख करती है जो अलौकिक हैं। उनके कार्यों को हमेशा तर्क या कारण से नहीं समझाया जा सकता। वे मानवीय समझ के दायरे से परे हैं। बाइबल का परमेश्वर आज का परमेश्वर है। वह आज भी अलौकिक, चमत्कारी रीतियों से कार्य करता है। परमेश्वर पर विश्वास आज भी उसी प्रकार कार्य करता है जैसे बाइबल के समय में करता था। इसलिए, जो लोग आज परमेश्वर पर विश्वास रखते हैं, वे परमेश्वर के कार्यों का अनुभव कर सकते हैं जैसा कि लोगों ने बाइबल के समय में किया था। इसलिए हम बाइबल को आशा और अपेक्षा के साथ पढ़ते हैं। *"यहोवा के काम बड़े हैं, जितने उनसे प्रसन्न रहते हैं, वे उन पर ध्यान लगाते हैं।"* (भजन संहिता 111:2)। *"आहा! परमेश्वर का धन और बुद्धि और ज्ञान क्या ही गंभीर है! उसके विचार कैसे अथाह और उसके मार्ग कैसे अगम हैं!"* (रोमियों 11:33)।

बाइबल एक मानवीय पुस्तक के रूप में

- **मानवीय भाषा**: जबकि परमेश्वर ने लोगों को अपने विचारों और प्रकाशन से प्रेरित किया, इन्हें उस समय के लोगों द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषा (हिब्रू, ग्रीक, अरामी) में लिखा गया था, जिसमें उस समय प्रचलित सामान्य व्याकरणिक प्रारूप, उपयोग और अर्थ का उपयोग किया गया था।
- **सांस्कृतिक संदर्भ**: परमेश्वर ने अपने विचारों और प्रकाशन को लेखक के सांस्कृतिक संदर्भ में उनके दैनिक जीवन की स्थितियों

और उदाहरणों को लेकर उनका उपयोग करके बताया। जब परमेश्वर ने भविष्य की बातों के बारे में बात की, तो इसे उस व्यक्ति के संदर्भ में समझाया गया और वर्णित किया गया जिससे परमेश्वर बात कर रहा था।

- **साहित्यिक रूप**: किसी भी भाषा की तरह, विचारों और सुझावों को उस भाषा में निहित विभिन्न साहित्यिक शैलियों और रूपों में बताया जा सकता है (**उदाहरण:** वर्णनात्मक, विवरणात्मक, कविता, भविष्यवाणी, ज्ञान साहित्य, पत्र (पत्रियाँ), प्रेरक / तार्किक, दृष्टांत, अंत-समय की भविष्यवाणी साहित्य)। विभिन्न व्याकरणिक अभिव्यक्तियाँ (**उदाहरण:** काल, व्यक्ति, लिंग, मनोदशा, आदि) और भाषण के अलंकार (**उदाहरण:** मानवीकरण, उपमा, मुहावरा, रूपक, अनुप्रास, अतिशयोक्ति, विरोधाभासी, व्यंजना, मिथ्याभासी, आदि) का उपयोग किया जाता है। इसलिए, पवित्रशास्त्र की व्याख्या करते समय, लेखक के सही अभिप्राय को समझने के लिए भाषा के इन मानक नियमों को लागू किया जाना चाहिए।
- **विशिष्ट श्रोता**: जब परमेश्वर ने अपने सेवकों को प्रेरित किया, और उन्होंने बोला / लिखा, तो वे एक विशिष्ट श्रोता (विशेष सुनने वाले को) को संबोधित कर रहे थे। कभी-कभी श्रोता, वक्ता या लेखक समुदाय के होते थे। कुछ मामलों में, परमेश्वर पूरे राष्ट्र को संबोधित कर रहा था। अन्य समय में, वह विभिन्न पीढ़ियों के लोगों से बात कर रहा था या चर्च तथा भविष्य के बारे में समय से पहले की बातें कर रहा था। हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि यह अंश किसी व्यक्ति द्वारा विशिष्ट श्रोताओं या पाठकों (सुनने वाले या बोलने वाले) के लिए एक विशेष ऐतिहासिक, भौगोलिक स्थिति में एक विशिष्ट उद्देश्य के लिए लिखा गया था। इसलिए, पवित्रशास्त्र की व्याख्या, समझ और लागू करने में, हमें इन बातों को ध्यान में रखना चाहिए। **उदाहरण:** हम लैव्यव्यवस्था की पुस्तक के

इच्छित श्रोता और उद्देश्य को पहचानते हैं। इसे पुराने नियम के अंतर्गत विशेष रूप से इस्राएल के लिए वाचा संबंधी निर्देश और व्यवस्था के रूप में दिया गया था। इसलिए, हम इसे विश्वासियों के लिए नये नियम के अंतर्गत आधुनिक समय के अभ्यास के लिए एक गाइड या नियमावली के रूप में उपयोग नहीं करते हैं।

- **तर्क और संचार के सिद्धांत**: जैसे-जैसे पवित्र आत्मा का कार्य लोगों में बढ़ने लगा, उन्होंने तर्क और संचार के मानक अभ्यासों का उपयोग करके इन विचारों को व्यक्त किया। यह वक्ताओं / लेखकों के लिए स्पष्ट था। इसे सामान्य रूप से, आरंभिक पाठकों / श्रोताओं द्वारा भी समझा गया था। पवित्रशास्त्र का अध्ययन और व्याख्या करते समय, हमें विचार के मूल प्रवाह, संबोधित किए जा रहे विशेष विषयों, प्रस्तुत तर्कों, प्रयुक्त भाषा, प्रासंगिकता और तर्क के साथ बने रहने की आवश्यकता है जैसा कि हम आज विषय-वस्तु को सुनने / पढ़ने में करते हैं।
- **मानवीय साधनों द्वारा कॉपी / मुद्रित / अनुवादित**: हम यह भी मानते हैं कि व्यक्तियों द्वारा लिखे गए मूल पाठ को बाद में मानवीय साधनों द्वारा कॉपी, मुद्रित और अनुवादित किया गया था। हमें इस प्रक्रिया में सम्मिलित मानवीय तत्वों को पहचानने की आवश्यकता है, यह समझने की आवश्यकता है कि ये क्यों किए गए थे (उदाहरण के लिए, अनुवाद, आदि) और जहाँ पर भी आवश्यक हो, पवित्रशास्त्र के हमारे अध्ययन और व्याख्या में इन्हें उचित रूप से संबोधित करें।

बाइबल की व्याख्या में चुनौती

पहली पाँच पुस्तकें मूसा द्वारा लगभग 1400 ईसा पूर्व (लगभग 3,400 वर्ष पहले) लिखी गई थीं। पुराने नियम की अंतिम पुस्तक, मलाकी लगभग 400 ईसा पूर्व लिखी गई थी। नया नियम 36 ईसा पश्चात से 90 ईसा पश्चात (लगभग 1,900 वर्ष पहले) के बीच लिखा गया था। बाइबल

की 66 पुस्तकें 40 अलग-अलग लेखकों द्वारा 1,500 वर्षों की अवधि में लिखी गई थीं। पुराने नियम का अधिकांश भाग हिब्रू में लिखा गया था, जबकि दानिय्येल और एज्रा के कुछ भाग अरामी भाषा में लिखे गए थे। नया नियम कोइन ग्रीक में लिखा गया था। पुराने नियम का ग्रीक में अनुवाद लगभग 200 ईसा पूर्व में किया गया था। (पुराने नियम के ग्रीक अनुवाद को सेप्टुआजिंट कहा जाता है)।

जब हम बाइबल पढ़ते हैं, तो हमें कई "अंतराल" मिलते हैं जिन्हें हमें संबोधित करने की आवश्यकता होती है। हम ज्ञान में "अंतराल" शब्द का उपयोग अपने अपर्याप्त, अधूरे या अपर्याप्त ज्ञान को संदर्भित करने के लिए करते हैं जिसे हमें उचित अध्ययन, शोध, शिक्षा और बातचीत के माध्यम से अंतराल को भरने का प्रयास करके संबोधित करने की आवश्यकता है।

- **आत्मिक अंतराल**: हम ऐसे समय में रह रहे हैं जहाँ हमारे पास पुराने और नए नियम दोनों का सम्पूर्ण प्रकाशन दिया गया है। जब पवित्रशास्त्र के अंश लिखे गए थे, तब लोगों की आत्मिक समझ वैसी नहीं थी जैसी आज हमारे पास है। इसलिए, पुराने नियम को ***समझने*** में, हमें उस समय का और उनके लिए उपलब्ध आत्मिक प्रकाशन का ध्यान रखना चाहिए। आज अपने जीवन में पुराने नियम की शिक्षा को ***लागू*** करते समय, हमें इसे नए नियम के प्रकाशन के संदर्भ में लागू करने की आवश्यकता है।
- **समय अंतराल**: हम एक अलग समय और युग में रह रहे हैं जहाँ मानवता बाइबल के समय की तुलना में कई मायनों में आगे बढ़ गई है। जबकि परमेश्वर का सत्य अनंतकालीन है, स्थितियों का रूप और परिस्थितियों की प्रकृति बाइबल के समय से बहुत अलग है। इसलिए, आज हमें बाइबल के सत्य के अनुप्रयोग को हमारे सामने आने वाली परिस्थितियों में "अनुवादित" करने की आवश्यकता है।

- **भौगोलिक अंतर**: हममें से अधिकांश लोग दुनिया के उन हिस्सों में रहते हैं जो बाइबल के लोगों के रहने की भूमि और क्षेत्रों से बहुत अलग हैं (**उदाहरण:** इज़राइल, मेसोपोटामिया, मिस्र)। बाइबल की कहानियों को पढ़ने और समझने से, इसमें सम्मिलित भूगोल (भूभाग, जलवायु, कृषि, आदि) की कुछ समझ प्राप्त करने में सहायता मिलेगी।
- **सांस्कृतिक अंतर**: "सांस्कृतिक अंतर" से हमारा तात्पर्य बाइबल की संस्कृतियों और जिस संस्कृति में हम रहते हैं, उसके बीच रीति-रिवाजों, सामाजिक मानदंडों, प्रथाओं, विश्वासों, राजनीतिक, आर्थिक और कानूनी वातावरण आदि में अंतर से है। बाइबल लगभग 1,500 वर्षों की अवधि में लिखी गई थी जिसमें मिस्र, कनानी, असीरियन, बेबीलोनियन, फारसी, यूनानी और रोमन जैसी कई मध्य पूर्वी संस्कृतियाँ शामिल थीं। सटीक व्याख्या के लिए उस ऐतिहासिक सांस्कृतिक संदर्भ को समझना महत्वपूर्ण है जिसमें बाइबल की घटनाएँ घटित हुईं।
- **भाषा अंतर**: जैसा कि हम जानते हैं, बाइबल मूल रूप से तीन प्राचीन भाषाओं में लिखी गई थी—हिब्रू, अरामी और ग्रीक। हम जो भाषाएँ बोलते हैं, वे इन प्राचीन भाषाओं से बहुत भिन्न हैं, जो ऐसी चुनौतियाँ पेश करती हैं जिन पर हमें काम करने की आवश्यकता है। **उदाहरण:** प्राचीन हिब्रू, अरामी या ग्रीक भाषा में शब्द अक्सर उनके संदर्भ के आधार पर कई अर्थ रखते हैं। प्रत्येक भाषा का अपना व्याकरण, वाक्यविन्यास और अद्वितीय मुहावरे और अभिव्यक्तियाँ होती हैं। उदाहरण के लिए, *"अपनी कमर बाँधकर"* (1 राजाओं 18:46)। जबकि हम हिब्रू, अरामी और ग्रीक की प्राचीन भाषाओं में निपुणता प्राप्त नहीं कर पाएँगे, किन्तु हम उन उपकरणों का उपयोग कर सकते हैं जो हमारे पास अध्ययन करने और इस अंतर को भरने के लिए उपलब्ध हैं।

- **साहित्यिक अंतर**: बाइबल के अध्याय विभिन्न प्रकार की साहित्यिक शैलियों (रचना-पद्धति) का उपयोग करके लिखा गया है जो शायद बहुधा हमारे लिए परिचित न हों। हमने पवित्रशास्त्र में उपयोग की गई कुछ साहित्यिक शैलियों का उल्लेख किया है—वर्णनात्मक, कथात्मक, कविता, भविष्यवाणी, ज्ञान साहित्य, पत्र (पत्रियाँ), प्रेरक / तार्किक, दृष्टांत, अंत-समय की भविष्यवाणी साहित्य, आदि। ये साहित्यिक शैलियाँ प्रतीकात्मक अर्थ, संकेत, आलंकारिक भाषा (जैसे रूपक, उपमाएँ और अतिशयोक्ति) जैसी साहित्यिक तकनीकों का उपयोग करती हैं और बहुत कुछ जिससे हम परिचित नहीं हैं। हमें किसी अंश के अर्थ की सही व्याख्या करने के लिए इन साहित्यिक शैलियों और साहित्यिक तकनीकों को पहचानने और सीखने की आवश्यकता है।

बाइबल की व्याख्या में हमारा दृष्टिकोण

बाइबल की व्याख्या में हमारा लक्ष्य वचनों के अर्थ को उचित रूप से समझना है जिससे कि हम वह ग्रहण कर सकें जो परमेश्वर आज हमसे कह रहा है।

पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने के लिए पवित्र आत्मा के प्रकाश पर निर्भरता और सही निर्णय और तर्क के उपयोग की आवश्यकता होती है।

प्रार्थना और पवित्र आत्मा पर निर्भरता: सर्वप्रथम और सबसे महत्वपूर्ण, हम पवित्र आत्मा पर निर्भर रहते हैं, जिससे जब हम पवित्रशास्त्र को पढ़ते और अध्ययन करते हैं तो हमें सत्य की स्पष्ट और सही समझ प्राप्त करने मे सहायता मिले। हम उनकी प्रेरणा को पहचानते हैं, और जब हम बाइबल पढ़ते हैं तो हम पवित्रात्मा के प्रकाश को आमंत्रित करते हैं।

बाइबल की व्याख्या के सिद्धांतों को लागू करते हुए गंभीर अध्ययन: हम अपने पास उपलब्ध उपकरणों का उपयोग करके वचनों के अध्ययन करने का हर संभव प्रयास करते हैं, और अध्ययन करते समय हमारा मार्गदर्शन करने के लिए बाइबल की व्याख्या के सिद्धांतों को लागू करते हैं। हम इस पुस्तक में बाइबल की व्याख्या के कई आवश्यक सिद्धांतों का समावेश करते हैं।

स्वयं पर लागू करना (अनुप्रयोग) और साझा करना: हमारा लक्ष्य वचन पर चलने वाला बनना है, और पवित्रशास्त्र में जिन सत्यों को हमने खोजा है उसे अपने जीवन में सही रीती से लागू करना है। हम पहले यह निर्धारित करते हैं किअध्याय का उसके मूल संदर्भ में क्या अर्थ था। फिर अपने विश्वास की यात्रा के लिए, हम सुनते हैं कि परमेश्वर हमें व्यक्तिगत रूप से अध्याय के माध्यम से क्या कह रहा है और हमें इसे अपने जीवन में कैसे लागू करना है। परमेश्वर के वचन को अपने जीवन में लागू करने के बाद, हम इन्हें दूसरों को सिखाने और उनके जीवन की उन्नति के लिए उनके साथ बाँट सकते हैं।

सामान्य व्याख्यात्मक (हर्मेन्युटिकल) त्रुटियों को टालना

हम बाइबल की व्याख्या में कुछ सामान्य त्रुटियों को टालना सीखते हैं। इनमें से कुछ त्रुटियाँ निम्न प्रकार की हैं।

ईसेजेसिस (स्वयं की व्याख्या): जबकि व्याख्या में किसी मूलपाठ का सही अर्थ निकालना सम्मिलित है, ईसेजेसिस में अध्याय में वह पढ़ना सम्मिलित है जो वहाँ नहीं है, जिसके परिणामस्वरूप वचन के मूलपाठ की गलत समझ होती है।

प्रूफ़-टेक्स्टिंग: किसी बात को समझने के लिए उसके संदर्भ पर विचार किए बिना अलग-अलग प्रसंगों का उपयोग करना।

रूपक (ऐलगराइज़िंग): ऐतिहासिक घटनाओं को केवल रूपक में बदलना या इस प्रकार के आलंकारिक अर्थ और व्याख्या को जोड़ना जो लेखक कहना नहीं चाह रहा था।

व्यक्तिपरक व्याख्या: व्यक्तिगत अनुभव, प्रकाशन, विचार, राय या रुचियों को पवित्रशास्त्र में पढ़ना।

शब्दावली

हेर्मेनेयुटिक्स (व्याख्याशास्त्र): विज्ञान (सिद्धांत) और कला (कार्य) जिसके द्वारा बाइबल के मूलपाठ का अर्थ निर्धारित किया जाता है। हेर्मेनेयुटिक्स, व्याख्या करने का एक सिद्धांत और कार्यप्रणाली है। यह मूलपाठ की व्याख्या करने के लिए अंतर्निहित सिद्धांतों और नियमों से संबंधित है। हेर्मेनेयुटिक्स यह समझने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है कि किसी पाठ्य भाग को किस प्रकार समझा जाए।

व्याख्या (एक्सिजीसस): बाइबल के किसी पाठ्य भाग के अर्थ का निर्धारण उसके ऐतिहासिक और साहित्यिक संदर्भों में करना। व्याख्या करना, किसी पाठ की व्याख्या करने का वास्तविक अभ्यास है। इसमें पाठ्य भाग का विस्तृत विश्लेषण, शब्द दर शब्द और वचन दर वचन सम्मिलित है। व्याख्या का उद्देश्य लेखक के मूल अर्थ और आशय को उजागर करना है।

संक्षेप में, “हेर्मेनेयुटिक्स" व्याख्या का "कैसे" है, जबकि "विवरण"-व्याख्या "करना" है। इस पुस्तक में, हम हेर्मेनेयुटिक्स के बारे में अध्ययन करेंगे और व्याख्या के व्यावहारिक उदाहरण को प्रस्तुत करेंगे, जो प्रस्तुत किए गए हेर्मेनेयुटिकल सिद्धांतों को लागू करते हैं।

व्याख्या या विवरण (एक्स्पोज़िशन): अध्याय के अर्थ के साथ-साथ वर्तमान श्रोताओं के लिए इसकी प्रासंगिकता का संचार।

होमिलेटिक्स (प्रवचनकला) / उपदेश: विज्ञान (सिद्धांत) और कला (कार्य) जिसके द्वारा उपदेश में बाइबल के अध्याय का अर्थ और प्रासंगिकता बताई जाती है।

3
पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने की आवश्यकता

आइये हम बाइबल में दिए कुछ कारणों पर ध्यान दें जो बाइबल का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने और उसकी व्याख्या करने की आवश्यकता पर बल देते हैं।

1) लोगों को अर्थ और उसे लागू करने के लिए समझने में सहायता करना

कुछ लोगों के लिए वचन नए हैं और कुछ ऐसे भी हैं जिनका इन वचनों से पहले से ही परिचय हो सकता है। हम मानते हैं कि दोनों प्रकार के लोगों को वचनों को समझने और अपने जीवन में परमेश्वर के वचन को लागू करने का तरिका सीखने और समझने में सहायता की आवश्यकता हो सकती है।

प्रेरितों के काम 8:26-35

26फिर प्रभु के एक स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस से कहा, "उठ और दक्खिन की ओर उस मार्ग पर जा, जो यरूशलेम से गाज़ा को जाता है।" यह रेगिस्तानी मार्ग है।
27वह उठकर चल दिया, और देखो, कूश देश का एक मनुष्य आ रहा था जो खोजा और कूशियों की रानी कन्दाके का मंत्री और खजांची था। वह आराधना करने को यरूशलेम आया था।
28वह अपने रथ पर बैठा हुआ था, और यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ता हुआ लौटा जा रहा था।
29तब आत्मा ने फिलिप्पुस से कहा, "निकट जाकर इस रथ के साथ हो ले।"
30फिलिप्पुस उसकी ओर दौड़ा और उसे यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक पढ़ते हुए सुना, और पूछा, "तू जो पढ़ रहा है क्या उसे समझता भी है?"
31उसने कहा, "जब तक कोई मुझे न समझाए तो मैं कैसे समझूँ?" और उसने फिलिप्पुस से विनती की कि वह चढ़कर उसके पास बैठे।

32पवित्रशास्त्र का जो अध्याय वह पढ़ रहा था, वह यह था:
"वह भेड़ के समान वध होने को पहुँचाया गया,
और जैसा मेम्ना अपने ऊन कतरनेवालों
के सामने चुपचाप रहता है,
वैसे ही उसने भी अपना मुँह न खोला।
33उसकी दीनता में उसका न्याय नहीं होने पाया।
उसके समय के लोगों का वर्णन कौन करेगा?
क्योंकि पृथ्वी से उसका प्राण उठा लिया जाता है।"
34इस पर खोजे ने फिलिप्पुस से पूछा, "मैं तुझ से विनती करता हूँ, यह बता कि भविष्यद्वक्ता यह किसके विषय में कहता है, अपने या किसी दूसरे के विषय में?"
35तब फिलिप्पुस ने अपना मुँह खोला, और इसी शास्त्र से आरम्भ करके उसे यीशु का सुसमाचार सुनाया।

प्रेरितों के काम 8 में, हम इथियोपियाई खोजे के बारे में पढ़ते हैं। हम उसकी धार्मिक पृष्ठभूमि के बारे में अधिक नहीं जानते। हम कह सकते हैं कि वह यहूदी धर्म में परिवर्तित इथियोपियाई व्यक्ति रहा होगा जो यरूशलेम में आराधना करने आया था। उसके पास यशायाह की पुस्तक की एक प्रति थी और वह इथियोपिया लौटते समय इसे पढ़ रहा था। जब फिलिप्पुस उससे मिला तब वह यशायाह का अध्याय 53 पढ़ रहा था। अत्यधिक शिक्षित, अत्यधिक सफल और प्रभावशाली यह व्यक्ति समझ नहीं पाया कि वह क्या पढ़ रहा था। फिलिप्पुस ने वचनों को समझाया और उसे यीशु के बारे में बताया। इस व्यक्ति ने तब उस अध्याय को समझा और यीशु मसीह पर विश्वास किया।

नहेम्याह 8:5-8

5तब एज्रा ने जो सब लोगों से ऊँचे पर था, सभों के देखते उस पुस्तक को खोल दिया; और जब उसने उसको खोला, तब सब लोग उठ खड़े हुए।
6तब एज्रा ने महान् परमेश्‍वर यहोवा को धन्य कहा; और सब लोगों ने अपने अपने हाथ उठाकर आमीन, आमीन, कहा; और सिर झुकाकर अपना अपना माथा भूमि पर टेक कर यहोवा को दण्डवत् किया।
7येशू, बानी, शेरेब्याह, यामीन, अक्कूब, शब्बतै, होदिय्याह, मासेयाह, कलीता,

अजर्याह, योजाबाद, हानान और पलायाह नामक लेवीय, लोगों को व्यवस्था समझाते गए, और लोग अपने अपने स्थान पर खड़े रहे।
8उन्होंने परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक से पढ़कर अर्थ समझा दिया; और लोगों ने पाठ को समझ लिया।

नबूकदनेस्सर के नेतृत्व में बेबीलोन साम्राज्य ने यहूदा पर विजय प्राप्त की और 586 ईसा पूर्व में यरूशलेम और मंदिर को नष्ट कर दिया। जैसा कि यिर्मयाह और यहेजकेल ने भविष्यवाणी की थी, यहूदी लोग 70 वर्षों तक बेबीलोन में निर्वासन में रहे। कुस्रू के नेतृत्व में फारसी साम्राज्य ने 539 ईसा पूर्व में बेबीलोन पर विजय प्राप्त की। जैसा कि यशायाह ने भविष्यवाणी की थी (यशायाह 44:28; यशायाह 45:1), कुस्रू ने यहूदियों को अपने देश लौटने और मंदिर का पुनर्निर्माण करने की अनुमति देने वाला एक सम्मन जारी किया (एज्रा 1:1-4)। **जरुब्बाबेल** 538 ईसा पूर्व के आसपास निर्वासितों के पहले समूह को वापस यरूशलेम ले गया और मंदिर का पुनर्निर्माण शुरू किया, जो 516 ईसा पूर्व में पूरा हुआ (एज्रा 3-6)। इस दौरान भविष्यवक्ता हाग्गै और जकर्याह ने भविष्यवाणी की। फारस के राजा अर्तक्षत्र प्रथम (जिसने 465-424 ईसा पूर्व शासन किया) के शासनकाल के दौरान, लेखक **एज्रा** ने 458 ईसा पूर्व के आसपास बेबीलोन से यरूशलेम में निर्वासितों की दूसरी वापसी ("दूसरी लहर") का नेतृत्व किया। एज्रा ने धार्मिक और आत्मिक प्रथाओं को बहाल करने पर ध्यान केंद्रित किया (एज्रा 7-10)। **नहेम्याह** यरूशलेम की दीवारों का पुनर्निर्माण करने के लिए 445 ईसा पूर्व में बाद में आया। विरोध के बावजूद, यरूशलेम शहर की दीवारों का पुनर्निर्माण केवल 52 दिनों में पूरा हो गया (नहेम्याह 6:15,16)। (कृपया ध्यान रखें कि ये ऐतिहासिक तिथियाँ सन्निकट और अनुमानित हैं, सटीक नहीं हैं)।

नहेम्याह अध्याय 8 से संदर्भित पवित्रशास्त्र का अंश यरूशलेम की दीवारों के पुनर्निर्माण के तुरंत बाद लिखा गया था। यहाँ हम एक महान आत्मिक पुनरुत्थान देखते हैं क्योंकि लोग व्यवस्था का अध्याय

सुनने के लिए एकत्र हुए थे। एज्रा, शास्त्री एक लकड़ी के मंच पर खड़ा था और सुबह से दोपहर तक व्यवस्था पढ़ा रहा था (नहेम्याह 8:2,3)। यह संभव है कि यहूदी लोगों ने पवित्रशास्त्र और हिब्रू भाषा दोनों से संपर्क खो दिया था, क्योंकि उन्हें बेबीलोन में निर्वासन के दौरान अरामी भाषा का उपयोग करना पड़ता था। लेवियों ने लोगों को इस पठन को समझने में सहायता की और उन्हें इसे स्पष्ट किया ताकि वे व्यवस्था को समझ सकें और लागू कर सकें। हम देखते हैं कि उन्होंने कई वर्षों के बाद झोपड़ियों का पर्व *(सुक्कोत)* मनाया (नहेम्याह 8:13-18)।

नहेम्याह 8:8 में, हम तीन कार्य देखते हैं।

- *उन्होंने पुस्तक से अलग-अलग पढ़ा,* जिसका अर्थ है कि उन्होंने स्पष्ट और विशिष्ट रूप से पढ़ा।
- *उन्होंने अर्थ बताया,* अर्थात्, उन्होंने अर्थ समझाया, व्याख्या की या उसका अनुवाद किया।
- *उन्होंने उन्हें इस पठन को समझने में सहायता की,* अर्थात्, उन्होंने इसे समझना सरल बना दिया और संभवतः उन्हें दिखाया कि उन्होंने जो सुना उसे कैसे लागू किया जाए।

जब वचन स्पष्ट रूप से समझ में आ जाते हैं, तो लोग उन्हें लागू कर सकते हैं और उनका अभ्यास कर सकते हैं।

2) सिद्धांत का प्रचार और शिक्षा देकर विश्वासियों का निर्माण करना

परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के वचन के द्वारा आत्मिक रूप से विकसित किया जाना चाहिए। इफिसुस के प्राचीनों को अपने अंतिम उपदेश में, प्रेरित पौलुस ने उन्हें परमेश्वर के वचन के प्रति समर्पित होने के लिए प्रोत्साहित किया।

प्रेरितों के काम 20:27-32
27क्योंकि मैं परमेश्वर के सारे अभिप्राय को तुम्हें पूरी रीति से बताने से न झिझका।
28इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है।
29मैं जानता हूँ कि मेरे जाने के बाद फाड़नेवाले भेडिए तुम में आएँगे जो झुण्ड को न छोड़ेंगे।
30तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे–ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी–मेढ़ी बातें कहेंगे।
31इसलिये जागते रहो, और स्मरण करो कि मैं ने तीन वर्ष तक रात दिन आँसू बहा–बहाकर हर एक को चितौनी देना न छोड़ा।
32और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को, और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूँ; जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है और सब पवित्र किए गए लोगों में साझी करके मीरास दे सकता है।

परमेश्वर के सेवकों के रूप में परमेश्वर के समूह की सेवा करते हुए, हमें वचन और वचन की सेवकाई के प्रति समर्पित होना चाहिए।

परमेश्वर द्वारा नियुक्त चरवाहों के रूप में हमारी मुख्य जिम्मेदारियों में से एक परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर और उसके वचन के ज्ञान और समझ से खिलाना है। *"मैं तुम्हें अपने मन के अनुकूल चरवाहे दूँगा, जो ज्ञान और बुद्धि से तुम्हें चराएँगे"* (यिर्मयाह 3:15)।

जब परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर का ज्ञान और जो उसने कहा है, वह प्राप्त नहीं होता, तो वे आसानी से बंदी बना लिए जाते हैं, और शत्रु उनके जीवन में तबाही मचा सकता है। *"इसलिए अज्ञानता के कारन मेरी प्रजा बन्धुआई में जाती है ..."* (यशायाह 5:13)। *"मेरे ज्ञान के न होने से मेरी प्रजा नष्ट हो गई"* (होशे 4:6)।

3) त्रुटिका सामना करने हेतु सत्य को बढ़ाना

प्रेरितों के काम 20:27-32 में, जैसा कि पहले उद्त किया गया है,

प्रेरित पौलुस ने अपनी चिंता व्यक्त की कि क्रूर भेड़िये परमेश्वर की भेड़ों के पीछे आएंगे। वह उन लोगों का उल्लेख कर रहा था जो प्रभु के शिष्यों को अपने पीछे खींचने के लिए उल्टी-सीधी बातें बोलते हैं और उन्हें प्रभु और उनकी सच्चाई से दूर ले जाते हैं। प्रेरितों के काम 20:30 में "उल्टी-सीधी बातें" के लिए यूनानी शब्द का-वास्तविक अर्थ है "विकृत करना, भ्रष्ट करना, गलत व्याख्या करना, गुमराह करना, सही मार्ग से भटकाना।" ये "क्रूर भेड़िये" झूठी बातों को इस प्रकार से बोलते और प्रस्तुत करते हैं जैसे कि मानो वह सत्य है, वे परमेश्वर के वचन की गलत अनुवाद करते हैं, और परमेश्वर के लोगों को गुमराह करते हैं, उन्हें प्रभु से दूर करके स्वयं अपनी की ओर ले जाते हैं।

प्रभु यीशु चाहते हैं कि उनके लोग सत्य में दृढ़ और स्थापित हों। यही कारण है कि उन्होंने चर्च में प्रेरित, भविष्यवक्ता, पासवान, शिक्षक और प्रचारक के पाँच प्रकार की सेवा का कार्य (फाइव फोल्ड मिनिसट्री) नियुक्त किया है। इनके कार्यों का एक उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि *"ताकि हम आगे को बालक न रहें जो मनुष्यों की ठग–विद्या और चतुराई से, उन के भ्रम की युक्तियों के और उपदेश के हर एक झोंके से उछाले और इधर–उधर घुमाए जाते हों"* (इफिसियों 4:14)। ऐसे लोग हैं जो उपदेश देते और सिखाते हैं, जिनका सिद्धांत वास्तव में कपट,चालाकी और छल से बना है और जिसका उद्देश्य विश्वासियों को धोखा देना, भ्रमित करना और सत्य से दूर ले जाना है।

जब प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को अंतिम समय के संकेतों के बारे में प्रश्न का उत्तर दिया, तो सूची में सबसे पहले भरमाए जाना था। *"और यीशु ने उत्तर दिया और उनसे कहा: सावधान रहो! कोई तुम्हें न भरमाने पाए, क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, 'मैं मसीह हूँ', और बहुतों को भरमाएँगे"* (मत्ती 24:4,5)। प्रेरित पौलुस ने पवित्र आत्मा के माध्यम से भरमानेवाली आत्माओं और शिक्षाओं की गतिविधि के बारे में चेतावनी दी जो अंतिम समय के दौरान होने वाली

घटनाओं में से एक के रूप में शैतानी रूप से प्रेरित हैं। *"परंतु आत्मा स्पष्टता से कहता है कि आनेवाले समयों में कितने लोग भरमानेवाली आत्माओं, और दुष्टात्माओं की शिक्षाओं पर मन लगाकर विश्वास से बहक जाएँगे"* (1 तीमुथियुस 4:1)।

अतः, वचन की प्रामाणिक सेवकाई का एक बड़ा हिस्सा लोगों को सत्य में स्थापित करना है, जिससे वे झूठ, त्रुटियों और छल-कपट से दूर हो जाएँ जो चर्च के भीतर और बाहर, हर स्थान पर व्याप्त हैं। परमेश्वर के लोगों को छल-कपट से बचाने की विधि यह है कि उन्हें सत्य में स्थापित किया जाए। परमेश्वर का वचन सत्य है (यूहन्ना 17:17)। हमें परमेश्वर के सत्य को स्पष्ट करना चाहिए, विश्वासियों को सत्य को समझने और अपने जीवन में लागू करने के लिए सहायता करनी चाहिए। यह सुनिश्चित करेगा कि वे उन लोगों के बहकावे में न आएँ जो गलत बातें प्रचार करते और सिखाते हैं।

जब हम वचन के सत्य को विस्तार से समझाते और स्पष्ट करते हैं तो हम इन गलतियों का सामना करते हैं। हम त्रुटि पर ध्यान केंद्रित नहीं करते, बल्कि सत्य पर ध्यान केंद्रित करते हैं। सत्य को विस्तार से उल्लेख करें। सत्य को स्पष्ट करें। इसे सादा, सरल और स्पष्ट रूप से समझने योग्य बनाएँ। जब परमेश्वर के लोग सत्य में स्थापित हो जाएंगे, तो वे गलतियों को पहचानने और अस्वीकार करने में सक्षम होंगे और हर धोखे से सावधान रहेंगे।

हेर्मेनेयुटिक्स (व्याख्याशास्त्र), जो वचनों की व्याख्या करने का अभ्यास है, उन दोनों का उत्तरदायित्व है जो वचन की सेवा करते हैं और जो वचन को उनके पास लाए जाने पर पढ़ते / सुनते हैं।

आइये हम वचन के सेवकों के रूप में हमारी बाइबल के उत्तरदायित्व और वचन के श्रोताओं के रूप में हमारे उत्तरदायित्व पर आगे विचार करें।

वचन के उपदेशक / शिक्षक की जिम्मेदारी

a) अभ्यास करें, फिर सिखाएँ

मत्ती 5:19
इसलिये जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उन आज्ञाओं का पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान् कहलाएगा।

जब प्रभु यीशु पृथ्वी पर सेवा कर रहे थे, तब भी पुरानी वाचा लागू थी। उनके पुनरुत्थान के बाद ही नई वाचा लागू हुई। इसलिए, पुरानी वाचा और उस समय तक उनके पास मौजूद शास्त्रों की शिक्षा के संदर्भ में, प्रभु यीशु ने कहा कि "जो कोई भी उन्हें करता है और सिखाता है" वह परमेश्वर के राज्य में महान कहलाएगा। नई वाचा के तहत, हम वह सब सिखाते और प्रचार करते हैं जो परमेश्वर ने हमें बताया है, किन्तु करने और सिखाने का क्रम बना रहता है। पहले करो, फिर सिखाओ। पहले अपने जीवन में वचन का अभ्यास करो, और फिर दूसरों से साझा करो।

परमेश्वर के वचन के सेवकों के रूप में, हमें स्वयं अपने आप को इस क्रम में रखना चाहिए। हमें पहले अपने जीवन में परमेश्वर के वचन को लागू करना और उसका अभ्यास करना चाहिए। और फिर हम न केवल वचन का ज्ञान सिखा सकते हैं और दे सकते हैं, बल्कि वचन के साथ-साथ बुद्धि भी दे सकते हैं। बुद्धि यह जानने की क्षमता है कि परमेश्वर के वचन के ज्ञान को जीवन की विभिन्न स्थितियों में कैसे लागू किया जाए, ताकि यह प्रासंगिक और व्यावहारिक बन सके।

b) वचन की उचित रूप से व्याख्या करें और बांटे

2 तीमुथियुस 2:15
अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति

से काम में लाता हो।

प्रभु के सेवकों के रूप में जो परमेश्वर द्वारा स्वीकृत होना चाहते हैं और उसके सामने बिना लज्जित हुए खड़े रहना चाहते हैं, उनके उत्तरदायित्व मे में से एक है-सत्य के वचन को उचित रूप से बाँटना।

"उचित रूप से बाँटना" शब्द ग्रीक शब्द *'ऑर्थोटोमाउंटा'* से आया है जिसका अर्थ है "सीधा काटना, सीधा रास्ता पकड़ना, सीधा और चिकना बनाना, उचित रीति से संभालना।" "सत्य के वचन" को संभालने के संदर्भ में, इसका अर्थ है सत्य को सीधे और उचित रूप से सिखाना, बिना किसी गलत या विकृति के सच्चाई से पेश करना।

जब हम परमेश्वर के वचन को सिखाने की तैयारी करते हैं, तो हमें स्वयं से पूछना चाहिए कि क्या हम परमेश्वर के लोगों को जो पेश करने जा रहे हैं वह सही तरीके से विभाजित वचन है। क्या हम जो प्रचार / शिक्षा देने जा रहे हैं, वह सत्य के वचन की सच्ची, बिना विकृत, बिना भ्रष्ट, उचित रूप से व्याख्या की गई, सटीक रूप से लागू की गई सेवकाई है? जब अनिश्चित हों, तो परमेश्वर के अन्य अनुभवी सेवकों से जाँच करवाना और फिर सेवकाई करना बेहतर होगा। याद रखें, एक बार कुछ बोल दिया और जारी कर दिया, तो उसे सुधारना या वापस लेना सरल नहीं है। गलत शिक्षा को सुधारने के लिए बहुत प्रयास करने पड़ते हैं। इसलिए, ऐसा करने से पहले यह जाँचना और पुष्टि करना हमेशा अच्छा होता है कि हम वचन के सत्य को सही रीती से बांटे।

c) परमेश्वर की पूर्ण सलाह सिखाएँ

प्रेरितों के काम 20:27
क्योंकि मैं परमेश्‍वर के सारे अभिप्राय को तुम्हें पूरी रीति से बताने से न झिझका।

ग्रीक में "सलाह" शब्द का अर्थ है "मन, विचार, इच्छा, उद्देश्य,

योजना, सलाह, डिज़ाइन, दृढ़ संकल्प और आदेश।"

परमेश्वर की "पूर्ण सलाह" का अर्थ है "परमेश्वर की **सम्पूर्ण** प्रकट इच्छा, योजना और उद्देश्य।" हमारे लिए, आज, यह वह सब है जो परमेश्वर ने अपने लिखित शास्त्रों में हमारे लिए उपलब्ध करावाया है।

हम समझते हैं कि परमेश्वर ने हमें अलग-अलग तरीके से सेवकों के रूप में बुलाया और अभिषिक्त किया है। कुछ लोगों को ईसाई जीवन के कुछ खास शिक्षण और पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने और उन पर ज़ोर देने के लिए बुलाया जा सकता है। ये सेवक "विशेषज्ञ" होते हैं जो कुछ खास विषयों और क्षेत्रों पर सेवकाई करने में ध्यान केंद्रित करते हैं और उन क्षेत्रों में विशेष रूप से जीवन, शक्ति, छुटकारा और कुशलता लाते हैं और इन्हें सुसज्जित करते हैं।

जबकि, जो लोग पासवान सेवकाई में हैं, उन्हें हमें "परमेश्वर की पूर्ण सलाह" सिखाना और प्रचार करना चाहिए। हमें यह सुनिश्चित करने की ज़रूरत है कि हमें परमेश्वर के वचन से जो कुछ भी प्रकाशन मिला है उसे लोगों को सिखाएं और उनके भीतर परमेश्वर के वचन की समझ पैदा करें। बेशक, इसमें समय और मेहनत लगेगी। और कई मामलों में, हमें उन विषयों और क्षेत्रों पर सिखाने और सेवकाई करने के लिए अन्य सेवकों की सहायता की आवश्यकता होगी जिन्हें हम स्वयं सिखाने के लिए उपयुक्त नहीं हो सकते हैं।

d) ईमानदारी, गंभीरता, पवित्रता और अच्छी बोली के साथ सिखाएँ

तीतुस 2:7,8

7सब बातों में अपने आप को भले कामों का नमूना बना। तेरे उपदेश में सफाई, गम्भीरता,

8और ऐसी खराई पाई जाए कि कोई उसे बुरा न कह सके, जिससे विरोधी हम पर कोई दोष लगाने का अवसर न पाकर लज्जित हों।

शब्द "सिद्धांत" का सीधा अर्थ है "शिक्षा, निर्देश और सीखना।" ध्यान दें कि हमें परमेश्वर के वचन की शिक्षा को कैसे संभालना चाहिए। इसे निष्ठा (ईमानदारी), श्रद्धा (गंभीरता), शुद्धता (बिना मिलावट के) और ऐसी अच्छी बातों के साथ किया जाना चाहिए जो दोषरहित और निर्दोष हों। अच्छी बोली का मतलब है स्वस्थ, स्वास्थ्यवर्धक, स्वच्छ, सत्य और सही शब्द।

ईमानदारी: क्या हम जो कह रहे हैं, उसमें सच्चे, ईमानदार और निष्ठावान हैं? क्या हम वचन की सेवा करते समय किसी गलत प्रेरणा, बुरे आशय, छल, चालाकी, स्वार्थी मुद्दे या स्वार्थपूर्ण कार्य आदि से मुक्त हैं? क्या हम वचन का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए कर रहे हैं?

श्रद्धा: क्या हम गंभीरता से वचन की सेवा कर रहे हैं, यह जानते हुए कि हम प्रभु का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं? क्या हम ऐसे बोल रहे हैं कि ये वास्तव में परमेश्वर के वचन हैं, ताकि प्रभु और केवल उसी की महिमा हो (1 पतरस 4:11)?

शुद्धता: क्या हम परमेश्वर के वचन की सेवा शुद्ध रीती से, बिना मिलावट के, बिना भ्रष्ट किये, या तोड़े मरोड़े कर रहे हैं? क्या हम वचन का प्रचार करते समय अपनी निजी पूर्वा धारणाओं, सांप्रदायिक पूर्वाग्रहों की मिलावट करते हैं?

सही व्याख्यान: शब्दों का चयन, भाषा (कोई अपशब्द नहीं, कोई असभ्य शब्द नहीं), हमारे द्वारा उपयोग किए जाने वाले दृष्टांत, हमारे द्वारा व्यक्त किए जाने वाले विचार, जिस दृष्टिकोण से हम बोलते हैं—क्या वे उस प्रभु के योग्य हैं जिसका हम प्रतिनिधित्व करते हैं?

जब हम परमेश्वर के वचन का प्रचार कर रहे हैं और सिखा रहे हैं, तो हमें इसे उस गंभीरता के साथ करना चाहिए जिसके वह योग्य है।

e) सही सिद्धांत सिखाएँ—जो स्वस्थ, स्वास्थ्यप्रद, सुरक्षित और सत्य है

तीतुस 2:1
पर तू ऐसी बातें कहा कर जो खरे उपदेश के योग्य हैं।

2 तीमुथियुस 4:2-4
[2]कि तू वचन का प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे और डाँट और समझा।
[3]क्योंकि ऐसा समय आएगा जब लोग खरा उपदेश न सह सकेंगे, पर कानों की खुजली के कारण अपनी अभिलाषाओं के अनुसार अपने लिये बहुत से उपदेशक बटोर लेंगे,
[4]और अपने कान सत्य से फेरकर कथा–कहानियों पर लगाएँगे।

पासवान संबंधी अपनी पत्रियों में, पौलुस ने तीमुथियुस और तीतुस दोनों को "सही सिद्धांत" बोलने, सिखाने और प्रचार करने का निर्देश दिया। वास्तव में, पौलुस हमें पहले से ही चेतावनी देता है कि एक समय आएगा जब लोग "सही सिद्धांत" सुनना नहीं चाहेंगे। इसके बजाय वे ऐसे लोगों को सुनना पसंद करेंगे जो उनकी इच्छाओं को पूरा करते हैं और उनके कानों को उन चीज़ों से रिझाते हैं जो वे सुनना चाहते हैं,और उन्हें "सत्य के वचन" (2 तीमुथियुस 2:15) के साथ प्रस्तुत करने के बजाय मनगढ़ंत कहानियाँ (पौराणिक नीति कथाएं) सुनाते हैं।

"सही" के लिए अनुवादित ग्रीक शब्द में स्वस्थ, पौष्टिक, अच्छे स्वास्थ्य का विचार है और यह स्वस्थ, शुद्ध, भ्रष्ट न होने, स्वस्थ होने, किसी भी तरह की त्रुटि के मिश्रण से मुक्त होने को संदर्भित करता है।

सही सिद्धांत से तात्पर्य ऐसी शिक्षा से है जो स्वस्थ, सकारात्मक, सपूर्ण, शुद्ध, सत्य, भ्रष्ट न होने और किसी भी तरह की त्रुटि या मिश्रण से मुक्त हो। कुछ अंग्रेजी संस्करण "सही सिद्धांत" का अनुवाद "अच्छी शिक्षा", “सच्ची शिक्षा", “सत्य के उपचारात्मक शब्द" के रूप में करते हैं।

प्रेरित पौलुस ने पासवान संबंधी अपनी पत्रियों में कई बार "ठोस सिद्धांत" शब्द का इस्तेमाल किया। हम आगे यह समझने के लिए निम्नलिखित को सूचीबद्ध कर सकते हैं कि पौलुस का "ठोस सिद्धांत" से क्या मतलब था।

- ठोस सिद्धांत वह शिक्षा है जो धार्मिक जीवन उत्पन्न करती है और धन्य परमेश्वर के गौरवशाली सुसमाचार के अनुरूप होती है (1 तीमुथियुस 1:8-11)।
- ठोस सिद्धांत *"खरी बातों को अर्थात् हमारे प्रभु यीशु मसीह की बातों को और उस उपदेश को नहीं मानता, जो भक्ति के अनुसार है,"* उसे संदर्भित करता है (1 तीमुथियुस 6:2,3)।
- ठोस सिद्धांत "विश्वासयोग्य वचन" को संदर्भित करता है और यह वही है जो हम उन लोगों के सामने प्रस्तुत करते हैं जो विरोध करते हैं, विरोधाभास करते हैं या भ्रमित होते हैं। *"और वह विश्वासयोग्य वचन पर जो धर्मोपदेश के अनुसार है, स्थिर रहे कि खरी शिक्षा से उपदेश दे सके और विरोधियों का मुँह भी बन्द कर सके"* (तीतुस 1:9)।

वचन की सेवकाई, यदि यह "ठोस सिद्धांत" है, तो यह अच्छे आत्मिक स्वास्थ्य, स्वास्थ्यप्रद आत्मिक विकास को उत्पन्न करेगी, और इसे प्राप्त करने वाले लोगों में भक्ति और धार्मिक जीवन को उत्पन्न करेगी।

श्रोता की जिम्मेदारी

आइये हम उन लोगों की कुछ जिम्मेदारियों पर विचार करें जो वचन को सही ढंग से व्याख्या करने, समझने और लागू करने के संदर्भ में सुनते हैं।

a) समझना, अध्ययन करना और ग्रहण करना

प्रेरितों के काम 17:10,11
10भाइयों ने तुरन्त रात ही रात पौलुस और सीलास को बिरीया भेज दिया; और वे वहाँ पहुँचकर यहूदियों के आराधनालय में गए।
11ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे, और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रतिदिन पवित्रशास्त्रों में ढूँढ़ते रहे कि ये बातें योंहीं हैं कि नहीं।

इस पहलू में इंगित करने के लिए सबसे अच्छे उदाहरणों में से एक बिरिया के यहूदी हैं जिन्होंने आराधनालय में पौलुस और सीलास की शिक्षाएँ सुनीं। फिर उन्होंने जाकर पवित्रशास्त्र में खोजबीन की जिससे यह पता लगाया जा सके कि पौलुस और सीलास ने जो प्रस्तुत किया वह वास्तव में सच था या नहीं।

विश्वासी होने के नाते, जब हम वचन का प्रचार सुनते हैं, तो हमें विवेकशील होना चाहिए और यह आंकलन करना चाहिए कि जो प्रस्तुत किया जा रहा है वह सही, सटीक और ठोस है या नहीं।

इब्रानियों 13:9
नाना प्रकार के विचित्र उपदेशों से न भरमाए जाओ, क्योंकि मन का अनुग्रह से दृढ़ रहना भला है, न कि उन खाने की वस्तुओं से जिन से काम रखनेवालों को कुछ लाभ न हुआ।

दु:ख की बात है कि मसीही संसार में "विविध और विचित्र सिद्धांत" सिखाए और प्रचारित किए जाते हैं और यदि हम सावधान न रहें, तो हम बहक सकते हैं। ये "विविध और विचित्र सिद्धांत" खराब भोजन खाने के समान हैं जो किसी भी तरह से अच्छा नहीं करते, बल्कि इसे खाने वाले लोगों को हानि पहुँचाते हैं।

शायद लोगों को प्रायः यह भ्रमित करता है कि ये सेवक जो "विविध और विचित्र सिद्धांतों" का प्रचार करते हैं, उनके पास

ऐसी सेवकाई हैं जो संकेत और चमत्कार प्रकट करते हैं, शायद भविष्यवाणी का प्रदर्शन करते हैं, दर्शन, सपने, स्वर्गदूतों के दर्शन और अन्य अलौकिक अभिव्यक्तियों का दावा करते हैं। वे कभी-कभी "अमुक प्रेरित" या "अमुक भविष्यवक्ता" जैसे शीर्षकों से जाने जाते हैं। अधिकांश विश्वासियों की प्रवृत्ति यह है कि वे इन लोगों द्वारा प्रचारित और सिखाई गई किसी भी चीज़ को बिना किसी सत्यापन और लिखित वचनों से संदेश की जाँच किए बिना ही स्वीकार कर लेते हैं। हमें इस बात से अवगत होना चाहिए कि एक सेवक के पास पवित्र आत्मा की शक्तिशाली अलौकिक अभिव्यक्तियाँ हो सकती हैं, और फिर भी वह शास्त्रों की अपनी समझ, व्याख्या, अनुप्रयोग और शिक्षण के कुछ क्षेत्रों में गलत हो सकता है।

हमें आशा है कि इस पुस्तक के माध्यम से यात्रा करने और वचनों की व्याख्या करने के सिद्धांतों को सीखने में हम सभी को बेरिया के यहूदियों की तरह बनने मे सहायता करेगा। हम जो कुछ भी सुनते हैं उसकी जाँच करेंगे, और यह देखने के लिए जाँच करेंगे कि क्या यह परमेश्वर का सही रूप से विभाजित वचन है, और केवल वही ग्रहण करेंगे जो वचनों की शिक्षा के अनुसार है।

2 कुरिन्थियों 11:4 (गलातियों 1:8 भी देखें)
यदि कोई तुम्हारे पास आकर किसी दूसरे यीशु का प्रचार करे, जिसका प्रचार हम ने नहीं किया; या कोई और आत्मा तुम्हें मिले, जो पहले न मिला था; या और कोई सुसमाचार सुनाए जिसे तुम ने पहले न माना था, तो तुम उसे सह लेते हो।

प्रारंभिक चर्च के दिनों में भी, प्रेरित पौलुस ने उन लोगों के बारे में चेतावनी दी थी जो "दूसरे यीशु" का प्रचार करते थे, और जो "एक अलग आत्मा" के अंतर्गत सेवा करते थे, और "एक अलग सुसमाचार" का प्रचार करते थे। यदि यह तब हुआ था, तो आज भी हो सकता है। श्रोताओं के रूप में, हमें सेवकाई करने वाले व्यक्ति, पवित्र आत्मा (या शैतानी आत्मा) जिसके अधीन संदेशवाहक सेवकाई कर रहा है और

जो संदेश हमें प्रस्तुत किया जाता है, उसके बारे में विवेकशील होना चाहिए।

1 यूहन्ना 2:20,27
[20]परन्तु तुम्हारा तो उस पवित्र से अभिषेक हुआ है, और तुम सब कुछ जानते हो।
[27] परन्तु तुम्हारा वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया, तुम में बना रहता है; और तुम्हें इसका प्रयोजन नहीं कि कोई तुम्हें सिखाए, वरन् जैसे वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया तुम्हें सब बातें सिखाता है, और यह सच्चा है और झूठा नहीं; और जैसा उसने तुम्हें सिखाया है वैसे ही तुम उसमें बने रहते हो।

पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने के सिद्धांतों का उपयोग करके सही निर्णय लेने के अलावा, हमारी निर्भरता हमारे भीतर के अभिषेक पर है। यह परमेश्वर की आत्मा है जो हर विश्वासी में निवास करती है, जो स्वयं हमें सिखाती है, हमें सभी सत्यों में ले जाती है और हमारा मार्गदर्शन करती है। हमें उसकी बात वैसे ही सुननी चाहिए जैसे हम उन लोगों की सुनते हैं जो हमें वचन का प्रचार और शिक्षा देते हैं।

b) वचन को सीधे ग्रहण करें

1 पतरस 2:2
नये जन्मे हुए बच्चों के समान निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ,

इब्रानियों 5:12-14
[12]समय के विचार से तो तुम्हें गुरु हो जाना चाहिए था, तौभी यह आवश्यक हो गया है कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से सिखाए। तुम तो ऐसे हो गए हो कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिए।
[13]क्योंकि दूध पीनेवाले बच्चे को तो धर्म के वचन की पहिचान नहीं होती, क्योंकि वह बालक है।
[14]पर अन्न सयानों के लिये है, जिनकी ज्ञानेन्द्रियाँ अभ्यास करते–करते भले–बुरे में भेद करने में निपुण हो गई हैं।

हम ऐसे समय में रह रहे हैं जब हमारे पास बहुत सारे मीडिया संसाधन स्वतंत्र रूप से उपलब्ध हैं जिनके माध्यम से हम परमेश्वर के वचन को सुन सकते हैं, देख सकते हैं और सीख सकते हैं। जबकि यह एक निश्चित आशीष है, यह हमें व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर के वचन को पढ़ने, अध्ययन करने और उससे पोषण लेने से भी रोक सकता है। परमेश्वर का वचन हमारा आत्मिक भोजन है। वचन का दूध और वचन का ठोस भोजन, परमेश्वर की वाणी है। हमें दोनों की आवश्यकता है। कोई और हमारे लिए दूध नहीं पी सकता और ठोस भोजन नहीं खा सकता। हममें से प्रत्येक को नियमित रूप से वचन से पोषण लेना चाहिए। अपने प्राकृतिक शरीर के लिए भोजन के अलावा, हमें *"परमेश्वर के मुख से निकलने वाले प्रत्येक वचन"* (मत्ती 4:4) की आवश्यकता है। अय्यूब की तरह हमें भी कहना चाहिए, *"उसकी आज्ञा का पालन करने से मैं न हटा, और मैं उसके वचन अपनी इच्छा से कहीं अधिक काम के जानकार सुरक्षित रखे"* (अय्यूब 23:12)।

प्रेरित पौलुस ने विश्वासियों को निर्देश दिया कि *"मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो..."* (कुलुस्सियों 3:16)। विश्वासियों के रूप में, हमारे हृदय और मन में वचन का एक समृद्ध व्यक्तिगत भंडार जीवित होना चाहिए।

c) वचन के अनुसार चलना

याकूब 1:21-25

21इसलिये सारी मलिनता और बैर भाव की बढ़ती को दूर करके, उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है।

22परन्तु वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं।

23क्योंकि जो कोई वचन का सुननेवाला हो और उस पर चलनेवाला न हो, तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना स्वाभाविक मुँह दर्पण में देखता है।

[24]इसलिये कि वह अपने आप को देखकर चला जाता और तुरन्त भूल जाता है कि वह कैसा था।
[25]पर जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिये आशीष पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं पर वैसा ही काम करता है।

वचन की व्याख्या कैसे करना है इसे सीखने का अंतिम लक्ष्य यह है कि इसे हम अपने जीवन में सही तरीके से लागू कैसे करें। हमारा लक्ष्य सिर्फ ज्ञान के लिए ज्ञान प्राप्त करना नहीं है। हम वचन द्वारा जो पढ़ते हैं, अध्ययन करते हैं और समझते हैं, यह हमारे दैनिक जीवन का अंग बन जाता है। हमारा लक्ष्य वचन पर चलने वाले बनना है। यही आशीष लाता है। और जैसा कि प्रभु यीशु ने हमें सिखाया—जब हम उनकी शिक्षा सुनते और उसको अपने जीवन में लागू करते हैं, तो हम अपने जीवन को एक ठोस नींव पर बनाते हैं जो हमें आनेवाली हवाओं और तूफानों में खड़े रहने में सक्षम बनाती है।

पवित्रशास्त्र का अनुप्रयोग

हमारे समकालीन संदर्भ में बाइबल को हमारे दैनिक जीवन में उचित रूप से लागू करने के लिए सटीक व्याख्या आवश्यक है। यदि हम बाइबल की उचित व्याख्या नहीं करते हैं, तो हम बाइबल को गलत तरीके से लागू कर सकते हैं। हम सत्य को पढ़ सकते हैं, लेकिन सत्य को गलत समझ सकते हैं और फिर इसे गलत तरीके से लागू कर सकते हैं। इसके परिणाम विनाशकारी हो सकते हैं।

सत्य के वचन को सही रूप में लागू करने के लिए इसे सटीक रूप से समझना चाहिए। गलत रूप से समझा गया सत्य गलतियों की ओर ले जा सकता है। व्यवहार में लाई गई गलतियों के विनाशकारी परिणाम हो सकते हैं।

इन दो उदाहरणों पर विचार करें।

उदाहरण 1

1 कुरिन्थियों 7:23
तुम दाम देकर मोल लिए गए हो; मनुष्यों के दास न बनो।

कल्पना कीजिए कि एक विश्वासी इस वचन को पढ़ता है और फिर, इस पवित्रशास्त्र की गलत समझ के कारण, इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि वह कभी किसी और के लिए काम नहीं करेगा (किसी का दास / कर्मचारी नहीं बनेगा)। अतः यह विश्वासी व्यक्ति किसी भी संगठन में नौकरी करने से मना करता है और स्वयं का मालिक बनने और स्वयं का व्यवसाय चलाने पर जोर देता है। कुछ विषयों में, यदि विश्वासी के पास अच्छा व्यवसाय कौशल है और वह सफल है, तो बातें ठीक हो जाती हैं। लेकिन क्या होगा यदि इस विश्वासी के पास कोई व्यवसायिक योग्यता नहीं है और उसके लिए किसी और के पास काम करना उचित है, फिर भी 1 कुरिन्थियों 7:23 में दिये वचन की गलत समझ के कारण, वह कहीं भी नौकरी करने से मना कर देता है। यह आर्थिक रूप से बहुत बुरा निर्णय प्रमाणित हो सकता है और इसके परिणामस्वरूप बहुत सारी अनावश्यक कठिनाई और कष्ट आ सकता है।

उदाहरण 2

इसी अध्याय में आगे, हमारे पास निम्नलिखित निर्देश हैं।

1 कुरिन्थियों 7:29
हे भाइयो, मैं यह कहता हूँ कि समय कम किया गया है, इसलिये चाहिए कि जिन के पत्नी हों, वे ऐसे हों मानो उन के पत्नी नहीं;

एक विवाहित व्यक्ति की कल्पना करें जो इस वचन को पढ़ता है और इसे बाइबल के संदर्भ से बाहर ले जाता है। फिर वह घोषणा करता है कि बाइबल कहती है कि "बहुत समय नहीं बचा है, और अब से विवाहित लोगों को ऐसे रहना चाहिए जैसे कि वे विवाहित नहीं हैं"

और अपनी पत्नी और परिवार को पूरी तरह से अनदेखा कर देता है। जब उससे उसकी लापरवाही के बारे में पूछा गया, तो उसने इस वचन की ओर इशारा किया। यह उसकी पत्नी और परिवार के लिए एक दर्दनाक अनुभव होगा, क्योंकि वचन के अध्ययन की गलत समझ और गलत उपयोग के कारण ऐसा हुआ।

1 कुरिन्थियों 7:23,29 में इन दो वचनों की सही व्याख्या, समझ और उन्हें लागू करने के लिए, जैसा कि हम इस पुस्तक में बाद में विस्तार से जानेंगे, हमें इन बातों को पहचानना होगा:

a) पवित्रशास्त्र के पाठ का तात्कालिक संदर्भ,

b) संपूर्ण पुस्तक / पत्री का संदर्भ और

c) इन मामलों पर नए नियम का शेष भाग क्या सिखाता है।

यह जानना भी उपयोगी होगा कि कुरिन्थी के लोग और जीवन किस सांस्कृतिक परिवेश में थे, जिन्हें पौलुस संबोधित कर रहा था। इन सब बातों को एक साथ रखते हुए, हम समकालीन स्थितियों में बाइबल के निर्देशों के सही रूप से लागू करने पर विचार करते हैं।

व्याख्या के दौरान त्रुटियों (गलतियों) की संभावना

यदि परमेश्वर, पवित्र आत्मा अपने सभी सेवकों का अभिषेक कर रहा है, तो जब प्रचारक और शिक्षक परमेश्वर के वचन की व्याख्या और सेवकाई करते हैं, तो त्रुटियों की संभावना कैसे हो सकती है?

आइये हम इस पर विचार करें।

a) परमेश्वर के वचन में मिलावट करना

2 कुरिन्थियों 2:17

क्योंकि हम उन बहुतों के समान नहीं जो परमेश्‍वर के वचन में मिलावट करते हैं; परन्तु मन की सच्चाई से और परमेश्‍वर की ओर से परमेश्‍वर को उपस्थित जानकर मसीह में बोलते हैं।

रोमियों 16:17,18
17अब हे भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूँ, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत, जो तुम ने पाई है, फूट डालने और ठोकर खिलाने का कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उनसे दूर रहो।
18क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं; और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे–सादे मन के लोगों को बहका देते हैं।

शब्द "भ्रष्ट करना" ग्रीक शब्द से आया है जिसका अर्थ है "भ्रष्ट करना, मिलावट करना।" फेरीवालों को लाभ के लिए अपनी वस्तुओं में मिलावट करने की आदत थी, ताकि वे सौदेबाजी कर सकें। दुःख की बात है कि आज भी हमारे पास ऐसे लोग हैं जो पैसे या दूसरे तरह की आय और लाभ के लिए परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं। अभिषिक्त सेवक भी कभी-कभी सांसारिक काम कर सकते हैं। रोमियों 16 में, प्रेरित पौलुस ऐसे लोगों का उल्लेख करता है जो "अपने पेट" की, अपनी स्वार्थी इच्छाओं की सेवा कर रहे हैं, और वे लोगों के दिलों को धोखा देने के लिए "चिकनी-चुपड़ी बातों और चापलूसी भरी बातों" का उपयोग करते हैं।

हमें परमेश्वर के वचन में मिलावट करने और लोगों को प्रभावित करने के लिए या ऐसा संदेश प्रस्तुत करने से क्या रोक सकता है जिससे हमें कुछ लाभ हो? इसका उत्तर उसी वचन में मिलता है, 2 कुरिन्थियों 2:17, जहाँ पौलुस कहता है कि वह परमेश्वर के वचन की सेवकाई (क) ईमानदारी से, (ख) परमेश्वर की ओर से (ग) परमेश्वर के सामने या परमेश्वर की दृष्टि में करता है।

परमेश्वर के वचन को बेचने से स्वयं को रोकने के लिए तीन काम करें। ऐसी जगह से सेवकाई करें...

- **ईमानदारी, (निष्ठा)**: सच्चा, ईमानदार, साफ-सुथरा, यथार्थ बनें। किसी को प्रभावित करने या वचन की सेवकाई से कोई आय या लाभ प्राप्त करने की कोशिश न करें।

- **परमेश्वर की ओर से**: आप परमेश्वर, उसके वचन, उसके राज्य और उसके उद्देश्यों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। आप स्वयं को इस पवित्र दायित्व के योग्य रखें।
- **परमेश्वर के सामने**: प्रभु देख रहा है और सुन रहा है कि आप क्या उपदेश दे रहे हैं और क्या सिखा रहे हैं। क्या वह आपकी बातों को स्वीकार करेगा?

b) परमेश्वर के वचन का छल पूर्वक उपयोग करना

2 कुरिन्थियों 4:2

परन्तु हम ने लज्जा के गुप्त कामों को त्याग दिया, और न चतुराई से चलते, और न परमेश्वर के वचन में मिलावट करते हैं; परन्तु सत्य को प्रगट करके, परमेश्वर के सामने हर एक मनुष्य के विवेक में अपनी भलाई बैठाते हैं।

कुछ लोग ऐसे भी हैं जो परमेश्वर के वचन की सेवा तो करते हैं, परंतु चालाकी और धूर्तता से करते हैं, और लोगों को जाल में फंसाने के लिए छल करते हैं। वे धोखेबाज हैं और लोगों को नियंत्रित करने और हेरफेर करने के लिए भ्रष्ट, या मिलावटी वचन प्रस्तुत करते हैं। वे जानबूझकर वचन को तोड़-मरोड़ कर पेश करते हैं, ताकि वे अपने श्रोताओं पर नियंत्रण और प्रभाव बना सकें। नियंत्रण और हेरफेर का उद्देश्य अलग-अलग हो सकता है। कभी-कभी लोगों से वह करवाने के लिए जो वे चाहते हैं। कभी-कभी उन्हें अपने घेरे में रखने और अपने प्रभाव में रखने के लिए। कभी-कभी उन्हें बाहर देखने, दूसरों की बात सुनने आदि से रोकने के लिए। वचन की सेवकाई चालाकी से लोगों को फंसाने, बहकाने, अटकाये रखने और नियंत्रित करने के लिए बनाई जाती है।

परमेश्वर के सेवकों के रूप में, हमें यह जानना चाहिए कि परमेश्वर के लोग हमारे नहीं हैं। वे हमारी संपत्ति नहीं हैं। वे परमेश्वर के हैं। वे उसकी खरीदी हुई संपत्ति हैं। परमेश्वर ने हमें उनकी देखभाल करने

और उनकी सेवा करने का दायित्व सौंपा है, और हमें यह काम शुद्ध हृदय से करना चाहिए और हम में लोगों को अपने एजेंडे के लिए नियंत्रित करने, हेरफेर करने या उनका उपयोग करने की इच्छा नहीं होनी चाहिए।

c) वचनों को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करना, गलत व्याख्याएँ करना

2 पतरस 3:16
वैसे ही उसने अपनी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की है, जिनमें कुछ बातें ऐसी हैं जिनका समझना कठिन है, और अनपढ़ और चंचल लोग उन के अर्थों को भी पवित्रशास्त्र की अन्य बातों की तरह खींच तानकर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं।

कुछ लोग अपनी अज्ञानता, ज्ञान की कमी, लापरवाही, दुविधा (अस्थिरता, अस्थिर, एक तरफ से दूसरी तरफ जाना) या कभी-कभी जानबूझकर व्याख्यात्मक सिद्धांतों को अनदेखा करके वचनों को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करते हैं, जिनके बारे में वे अच्छी तरह से जानते हैं। उन्होंने वचन के अन्य भागों के साथ-साथ उन बातों का अध्ययन करने का प्रयास नहीं किया है जिन्हें समझना कठिन हो सकता है। इसके बदले, वे अज्ञानता के कारण अहंकार से बोलते हैं और वचन को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत करते हैं, और वे एक ही बात की व्याख्या एक समय पर किसी और प्रकार से और दूसरे समय पर किसी और प्रकार से करते हैं। इसका परिणाम सिर्फ आत्मिक स्वयं का और शायद उन लोगों का (आत्मिक, शारीरिक, अनंत) विनाश होता है जो उनकी कही हुई बातों को ग्रहण करते हैं।

जब हम परमेश्वर के वचन को संभालने के प्रति लापरवाह होते हैं, तो हम स्वयं का और साथ ही उन लोगों का भी विनाश करने की संभावना रखते हैं जिनकी हम सेवा करते हैं।

d) परंपराओं और मानव निर्मित नियमों को सिखाना

मत्ती 15:3,7-9(मत्ती 15:1-9 भी देखें)
3उसने उनको उत्तर दिया, "तुम भी अपनी परम्पराओं के कारण क्यों परमेश्वर की आज्ञा टालते हो?
7हे कपटियो, यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यद्वाणी ठीक ही की है:
8'ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं,
पर उनका मन मुझ से दूर रहता है।*
9और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं,
क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश
करके सिखाते हैं।' "

मरकुस 7:8,9,13 (मरकुस 7:1-13 भी देखें)
8क्योंकि तुम परमेश्वर की आज्ञा को टालकर मनुष्यों की रीतियों को मानते हो।"
9उसने उनसे कहा, "तुम अपनी परम्पराओं को मानने के लिये परमेश्वर की आज्ञा कैसी अच्छी तरह टाल देते हो!
13इस प्रकार तुम अपनी परम्पराओं से, जिन्हें तुम ने ठहराया है, परमेश्वर का वचन टाल देते हो; और ऐसे ऐसे बहुत से काम करते हो।"

प्रभु यीशु शास्त्रियों और फरीसियों से बात कर रहे थे जो व्यवस्था और वचनों को जानते थे। उन्होंने जानबूझकर परमेश्वर की कही बातों को अनदेखा कर दिया और इसके बदले उन्हें अपनी परंपराओं और आज्ञाओं का पालन करना और सिखाना चुना। उन्होंने *"परमेश्वर के वचन को निष्प्रभावी"* (मरकुस 7:13) बना दिया, जिसका अर्थ है "अमान्य बनाना, शक्ति और अधिकार से वंचित करना, अपनी परंपराओं द्वारा रद्द करना।"

यह हमारे समय में भी प्रासंगिक है। कभी-कभी, लोग परमेश्वर के वचन को एक तरफ कर देते हैं और वचन के विपरीत संप्रदाय / संस्थागत परंपराओं, प्रथाओं और विचारों को सिखाते और प्रचार करते हैं। वे वचनों से पढ़ सकते हैं किन्तु अपने मानव-निर्मित प्रथाओं

और परंपराओं का समर्थन करने के लिए वे वचनों की व्याख्या करते हैं, इस प्रकार से वे परमेश्वर के वचन को निष्प्रभावी बना देते हैं।

e) प्रचारक जो सत्य से भटक गए हैं और दूसरों के विश्वास को समाप्त कर रहे हैं

2 तीमुथियुस 2:16-18

16पर अशुद्ध बकवाद से बचा रह, क्योंकि ऐसे लोग और भी अभक्ति में बढ़ते जाएँगे,

17और उनका वचन सड़े घाव की तरह फैलता जाएगा। हुमिनयुस और फिलेतुस उन्हीं में से हैं,

18जो यह कहकर कि पुनरुत्थान हो चुका है सत्य से भटक गए हैं, और कितनों के विश्वास को उलट पुलट कर देते हैं।

हुमिनयुस जैसे कुछ लोग हो सकते हैं जिन्होंने स्वयं का विश्वास नष्ट कर दिया है (1 तीमुथियुस 1:19,20) और सत्य से भटक गए हैं। वे अब झूठी बातें सिखाने में लगे हुए हैं, दूसरों को गुमराह कर रहे हैं और उनके विश्वास को नष्ट कर रहे हैं।

इस पुस्तक में हमारी यात्रा का लक्ष्य यह सीखना है कि परमेश्वर के वचन को आदर के साथ संभाले जिसके वह योग्य है। हम महत्वपूर्ण सिद्धांत सीखेंगे जो हमें वचन को सही रूप से विभाजित करने, व्याख्या करने, समझने और सही रूप से लागू करने में सहायता करेंगे। हम वचन के माध्यम से मिलने वाली आशीषों का अनुभव अपने लिए और उन लोगों के लिए कर सकते हैं जिनकी हम सेवा करते हैं।

4
पुनर्निर्माण एवं पुनर्स्थापना–कई धाराएं, एक नदी

उपदेश पर उपदेश, पंक्ति पर पंक्ति

जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, पवित्रशास्त्र का प्रकाशन या अंतरदृष्टी लोगों के माध्यम से पवित्र आत्मा की प्रेरणा से प्रगतिशील रूप से दिया गया था। बाइबल की सबसे पुरानी पुस्तक, अय्यूब की पुस्तक, जो कि लगभग 2000 ईसा पूर्व लिखी गई थी, से लेकर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक तक, जो कि लगभग 95 ईस्वी में लिखी गई थी, बाइबल की ये पुस्तकें लगभग 2100 वर्षों की अवधि में लिखी गई थीं।

जैसा कि यशायाह ने वर्णन किया है, परमेश्वर ज्ञान और समझ प्रदान कर रहा था, सत्य को उजागर कर रहा था, उपदेश पर उपदेश, नियम पर नियम, जो पहले प्रकट किया जा चुका है उसमें कुछ और जोड़ रहा था।

यशायाह 28:9,10
9"वह किसको ज्ञान सिखाएगा,
और किसको अपने समाचार का अर्थ समझाएगा?
क्या उनको जो दूध छुड़ाए हुए
और स्तन से अलगाए हुए हैं?
10क्योंकि आज्ञा पर आज्ञा, आज्ञा पर आज्ञा,
नियम पर नियम, नियम पर नियम,
थोड़ा यहाँ, थोड़ा वहाँ।"

यहाँ बाइबल की 66 पुस्तकों की सूची कालानुक्रमिक क्रम में दी गई है, साथ ही उनके लेखन की अनुमानित तिथियाँ और पारंपरिक

रूप से समझे जाने वाले लेखक (हालांकि कुछ मामलों में तिथियों और पारंपरिक रूप से स्वीकृत लेखकत्व में कुछ भिन्नताएँ हो सकती हैं) और इन पुस्तकों में प्रस्तुत कुछ प्रमुख शिक्षाओं और अंतर्दृष्टि का संक्षिप्त विवरण दिया गया है.

बाइबल की पुस्तक (लेखक)	लेखन तिथि	मुख्य शिक्षा और अंतर्दृष्टि
पुराना नियम		
अय्यूब (अय्यूब या मूसा)	2,100-1,800 ईसा पूर्व	यह पुस्तक अय्यूब की परीक्षा और परमेश्वर के छुटकारे के कार्य पर ध्यान केंद्रित करते हुए, मानवीय पीड़ा के पीछे शैतान की योजना, विश्वास और परमेश्वर की सार्वभौमिकता पर प्रकाश डालती है।
उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, व्यवस्थाविवरण (मूसा)	1,446-1,406 ईसा पूर्व	• **उत्पत्ति:** सृष्टि, पतन, बाढ़ और पूर्वजों (अब्राहम, इसहाक, याकूब और यूसुफ) के जीवन का विवरण देती है, जो इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा पर प्रकाश डालती है। • **निर्गमन:** मिस्र की गुलामी से इस्राएल का छुड़ाया जाना, व्यवस्था देने और तम्बू के लिए निर्देशों का वर्णन करता है, जो परमेश्वर की उपस्थिति का प्रतीक है। • **लैव्यव्यवस्था:** पवित्रता, बलिदान और लैवियों के कर्तव्यों के बारे में नियमों की रूपरेखा तैयार करता है, जो पवित्र परमेश्वर के साथ इस्राएल के संबंधों पर ध्यान केंद्रित करता है। • **गिनती:** इस्राएल की जंगल यात्रा का इतिहास, इस्राएल के विद्रोह के बावजूद विश्वास, आज्ञाकारिता और परमेश्वर के प्रावधान पर प्रकाश डालता है। • **व्यवस्थाविवरण:** मूसा का अंतिम संबोधन, व्यवस्था की समीक्षा और इस्राएल द्वारा वाचा के देश में प्रवेश करने की तैयारी के दौरान विश्वासयोग्यता का आग्रह।

बाइबल की पुस्तक (लेखक)	लेखन तिथि	मुख्य शिक्षा और अंतर्दृष्टि
यहोशू (यहोशू)	1,400-1,370 ईसा पूर्व	कनान पर इस्राएल की विजय को दर्ज करता है, एवं विश्वास, आज्ञाकारिता और परमेश्वर की विश्वासयोग्यता पर प्रकाश डालता है।
न्यायियों, रूत (शमूएल)	1,050-1,000 ईसा पूर्व	• **न्यायियों:** इस्राएल के पाप, न्याय, पश्चाताप और उद्धार के दोहराए जाने वाले चक्र के बारे में बताता है, जो ईश्वरीय नेतृत्व की आवश्यकता को दर्शाता है। • **रूत:** रूत की ईमानदारी, बोअज़ के छुटकारे और परमेश्वर की भविष्यवाणी की कहानी।
1 और 2 शमूएल (शमूएल, नातान और गाद)	930 ईसा पूर्व	• **1 शमूएल:** शमूएल, शाऊल के शासनकाल और दाऊद के अभिषेक पर ध्यान केंद्रित करते हुए न्यायीयों से राजतंत्र में परिवर्तन का इतिहास। • **2 शमूएल:** दाऊद के शासनकाल, उसकी सफलताओं, असफलताओं और एक अनंत राज्य के वायदे का विवरण।
भजन संहिता (दाऊद, आसाप, कोरह के पुत्र, सुलैमान, मूसा और अन्य)	1000-400 ईसा पूर्व	आराधना, विलाप, धन्यवाद और परमेश्वर में विश्वास व्यक्त करने वाले गीतों और प्रार्थनाओं का संग्रह।
नीतिवचन, सभोपदेशक, श्रेष्ठगीत (सुलैमान, नीतिवचन में कुछ अतिरिक्त)	970-930 ईसा पूर्व	• **नीतिवचन:** व्यावहारिक और ईश्वरीय जीवन जीने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने वाली ज्ञानपूर्ण वचनों का संकलन। • **सभोपदेशक:** सांसारिक गतिविधियों की निरर्थकता और परमेश्वर का भय मानने के मूल्य पर प्रकाश डालते हुए जीवन के अर्थ पर विचार करता है। • **श्रेष्ठगीत:** मानव प्रेम का जश्न मनाने वाला एक काव्यात्मक संवाद।

बाइबल की पुस्तक (लेखक)	लेखन तिथि	मुख्य शिक्षा और अंतर्दृष्टि
ओबद्याह (ओबद्याह)	848-841 ईसा पूर्व	एदोम के घमंड और इस्राएल के साथ दुर्व्यवहार के लिए उसके विरुद्ध भविष्यवाणी करता है।
योएल (योएल)	835-796 ईसा पूर्व	टिड्डियों की महामारी और "प्रभु के आने वाले दिन" की भविष्यवाणी करता है, पश्चाताप करने और आशा प्रदान करने का आह्वान करता है।
योना (योना)	785-760 ईसा पूर्व	नीनवे में योना के अनिच्छुक मिशन की कहानी पश्चाताप करने वाले पापियों के प्रति परमेश्वर की दया को उजागर करती है।
आमोस (आमोस)	760-750 ईसा पूर्व	सामाजिक अन्याय और खोखले धार्मिक अनुष्ठानों की निंदा करता है, आने वाले न्याय की चेतावनी देता है।
होशे (होशे)	755-725 ईसा पूर्व	होशे के विवाह को माध्यम बना कर उसका उपयोग इस्राएल के प्रति उसके विश्वासघाती होने पर भी परमेश्वर के प्रेम और उनकी दया दर्शाने के लिए करता है।
यशायाह (यशायाह)	740-680 ईसा पूर्व	न्याय और आशा की भविष्यवाणी करता है, जिसमें "पीड़ित सेवक" के माध्यम से उद्धार की मसीह संबंधी भविष्यवाणियों का समावेश हैं।
मीका (मीका)	735-700 ईसा पूर्व	इस्राएल और यहूदा पर निर्णय की भविष्यवाणी करता है किन्तु पुनर्स्थापना और आने वाले मसीहा का वचन भी देता है।
नहूम (नहूम)	650 ईसा पूर्व	सभी उत्पीड़कों पर परमेश्वर के न्याय के प्रतीक के रूप में नीनवे के विनाश की भविष्यवाणी करता है।
सपन्याह (सपन्याह)	640-621 ईसा पूर्व	आने वाले "प्रभु के दिन" की चेतावनी देता है और पुनर्स्थापना की आशा प्रदान करते हुए पश्चाताप करने का आह्वान करता है।

बाइबल की पुस्तक (लेखक)	लेखन तिथि	मुख्य शिक्षा और अंतर्दृष्टि
यिर्मयाह, विलापगीत (यिर्मयाह)	627-580 ईसा पूर्व	• **यिर्मयाह:** यहूदा पर उसके पापों के लिए आनेवाले न्याय की चेतावनी देता है, साथ ही एक नई वाचा का वादा करता है। • **विलापगीत:** यरूशलेम के विनाश पर विलाप गीत की एक श्रृंखला, जिसमें दुःख, पश्चाताप और परमेश्वर की दया में आशा पर जोर दिया गया है।
हबक्कूक (हबक्कूक)	609-598 ईसा पूर्व	हबक्कूक परमेश्वर के न्याय पर सवाल उठाता है किन्तु अंततः परमेश्वर की योजना और संप्रभुता पर भरोसा करता है।
यहेजेकेल (यहेजकेल)	593-571 ईसा पूर्व	इसमें यहूदा पर न्याय के दर्शन, पुनर्स्थापना के वचन और एक नए मंदिर के दर्शन का समावेश है।
1 राजाओं और 2 राजाओं (यिर्मयाह या उसके बाद के संपादक)	561-538 ईसा पूर्व	**970-586 ईसा पूर्व की घटनाओं के विवरण** • **1 राजाओं:** सुलैमान के शासनकाल, मंदिर के निर्माण और उसकी मृत्यु के बाद राज्य के विभाजन को शामिल करता है। • **2 राजाओं:** मूर्तिपूजा और परमेश्वर के विरुद्ध अनाज्ञाकारिता के कारण इस्रा-एल और यहूदा दोनों के पतन का वर्णन करता है।

बाइबल की पुस्तक (लेखक)	लेखन तिथि	मुख्य शिक्षा और अंतर्दृष्टि
दानिय्येल (दानिय्येल)	536-530 ईसा पूर्व	निर्वासन में आस्था की कहानियाँ और भविष्य के राज्यों और परमेश्वर के अनंत राज्य के आगमन के सर्वनाशकारी दर्शन।
हाग्गै (हाग्गै)	520 ईसा पूर्व	निर्वासन में आस्था की कहानियाँ और भविष्य के राज्यों और परमेश्वर के अनंत राज्य के आगमन के सर्वनाशकारी दर्शन।
जकर्याह (जकर्याह)	520-518 ईसा पूर्व	इसमें मसीहा और भविष्य की शांति की भविष्यवाणियों के साथ मंदिर के पुनर्निर्माण को प्रोत्साहित करने वाले दर्शन शामिल हैं।
एस्तेर (मोर्दकै)	470 ईसा पूर्व	**(घटनाओं का विवरण-लगभग 483-473 ईसा पूर्व)** यहूदी लोगों को विनाश से बचाने में एस्तेर के साहस की कहानी।
एज्रा, नहेम्याह (एज्रा, नहेम्याह और अन्य)	450-400 ईसा पूर्व	नहेम्याह और अन्य स्रोतों से योगदानों का संकलन। • **एज्रा:** यहूदियों के निर्वासन से लौटने, मंदिर के पुनर्निर्माण और उपासना की पुनः स्थापना के बारे में बताता है। • **नहेम्याह:** यरूशलेम की दीवारों के पुनर्निर्माण और नहेम्याह के नेतृत्व में आत्मिक सुधारों का विवरण।

बाइबल की पुस्तक (लेखक)	लेखन तिथि	मुख्य शिक्षा और अंतर्दृष्टि
1 और 2 इतिहास (एज्रा)	450-400 ईसा पूर्व	इसके लिए परंपरागत रूप से एज्रा को जिम्मेदार ठहराया जाता है, हालांकि यह अनिश्चित है। इतिहास में आदम से लेकर निर्गमन के बाद की अवधि तक की वंशावली का पता लगाने वाले इस्राएल के इतिहास का समावेश किया गया है, जो काफी हद तक शमूएल और राजाओं में पाई जाने वाली सामग्री के साथ तक परस्पर व्याप्त करता है, किन्तु बहुधा अत्याधिक याजकीय दृष्टिकोण से, मंदिर की आराधना, दाऊद वंश और परमेश्वर के साथ इस्राएल के वाचा के संबंध पर जोर देता है। इतिहास की पुस्तक फारस के महान राजा कुस्रू के आदेश के साथ समाप्त होती है, जिसने निर्वासितों को मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए यरूशलेम लौटने की अनुमति दी (लगभग 538 ईसा पूर्व), जो सीधे उस काल से जुड़ता है जब एज्रा और नहेम्याह ने पुनर्निर्माण के प्रयासों का नेतृत्व किया था। • **1 इतिहास:** दाऊद के शासनकाल पर ध्यान केंद्रित करता है और उपासना और मंदिर की केंद्रीयता पर जोर देता है। • **2 इतिहास:** यहूदा के राजाओं का इतिहास, मंदिर की उपासना और लोगों के पश्चाताप की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित करता है।
मलाकी (मलाकी)	430 ईसा पूर्व	इस्राएल को ईमानदारी के लिए बुलाता है और ढीली आत्मिक स्थिति की निंदा करता है।

बाइबल की पुस्तक (लेखक)	लेखन तिथि	मुख्य शिक्षा और अंतर्दृष्टि
नया नियम		
याकूब (याकूब, यीशु का सौतेला भाई)	ईसा 45-49	विश्वास, कार्य और ईसाई मसीहत पर व्यावहारिक शिक्षा।
गलातियों (पौलुस)	ईसा 49	मसीह में स्वतंत्रता और व्यवस्था द्वारा नहीं, बल्कि विश्वास से अनुग्रह द्वारा उद्धार पर जोर देता है।
1 और 2 थिस्सलुनीकियों (पौलुस)	ईसा 50-51	• **1 थिस्सलुनीकियों:** विश्वासियों को उनके विश्वास में प्रोत्साहित करता है और मसीह की वापसी की आशा करता है। • **2 थिस्सलुनीकियों:** मसीह की वापसी पर शिक्षाओं को स्पष्ट करता है और दृढ़ता को प्रोत्साहित करता है।
1 और 2 कुरिन्थियों (पौलुस)	ईसा 53-55	• **1 कुरिन्थियों:** मसीह में एकता के आह्वान के साथ चर्च के मुद्दों, जैसे विभाजन, अनैतिकता और आत्मिक वरदानों को संबोधित करता है। • **2 कुरिन्थियों:** पौलुस द्वारा अपने प्रेरितत्व का बचाव और मेल-मिलाप पर जोर देते हुए कलीसिया को प्रोत्साहन।
रोमियों (पौलुस)	ईसा 56-57	पाप, उद्धार, अनुग्रह, विश्वास और मसीही जीवन पर पौलुस की धार्मिक व्याख्या।

बाइबल की पुस्तक (लेखक)	लेखन तिथि	मुख्य शिक्षा और अंतर्दृष्टि
फिलिप्पियों, इफिसियों, कुलुस्सियों, फिलेमोन (पौलुस)	ईसा 60-62	• **इफिसियों:** मसीह में चर्च की स्थिति पर प्रकाश डालता है और पवित्र जीवन जीने को प्रोत्साहित करता है। • **फिलिप्पियों:** खुशी और प्रोत्साहन का एक पत्र, विश्वासियों से विनम्रतापूर्वक और मसीह में एकजुट रहने का आग्रह करता है। • **कुलुस्सियों:** मसीह की सर्वोच्चता की पुष्टि करता है और चर्च को व्यावहारिक मसीही जीवन जीने का निर्देश देता है। • **फिलेमोन:** फिलेमोन और उसके सेवक ओने-सिमस के बीच क्षमा और सुलह की वकालत करने वाला एक व्यक्तिगत पत्र।
1 तीमुथियुस, तीतुस (पौलुस)	ईसा 62-64	• **तीमुथियुस:** तीमुथियुस को पौलुस द्वारा चर्च नेतृत्व, सिद्धांत और पासवान संबंधी देखभाल के बारे में निर्देश। • **तीतुस**: तीतुस को पौलुस द्वारा चर्च संगठन, सुदृढ़ सिद्धांत और अच्छे कार्यों के बारे में मार्गदर्शन।
1 पतरस (पतरस)	ईसा 60-65	मसीह में आशा पर जोर देते हुए कष्टों के माध्यम से दृढ़ता को प्रोत्साहित करता है।
2 तीमुथियुस (पौलुस)	ईसा 64-67	पौलुस का अंतिम पत्र जो तीमुथियुस को उत्पीड़न के बीच विश्वास में दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहित करता है।
2 पतरस (पतरस)	ईसा 65-68	झूठे शिक्षकों के विरुद्ध चेतावनी देता है और विश्वास में बढ़ने का आग्रह करता है।
इब्रानियों (?, पौलुस)	ईसा 65-70	पुरानी वाचा पर मसीह की श्रेष्ठता पर जोर देता है और उसके प्रति ईमानदारी को प्रोत्साहित करता है।

बाइबल की पुस्तक (लेखक)	लेखन तिथि	मुख्य शिक्षा और अंतर्दृष्टि
मरकुस (मरकुस, यूहन्ना)	ईसा 65-70	यीशु को परमेश्वर के पीड़ित सेवक और पुत्र के रूप में महत्व देता है, जो उसके कार्यों और सेवकाई पर ध्यान केंद्रित करता है।
मत्ती (मत्ती)	ईसा 70-85	यीशु को प्रतिज्ञा किए गए मसीहा के रूप में प्रस्तुत करता है, जो उसकी शिक्षाओं, चमत्कारों और भवि-ष्यवाणी की पूर्ति पर ध्यान केंद्रित करता है।
लूका, प्रेरितों के काम (लूका)	ईसा 70-85	यीशु की करुणा, शिक्षाओं और सभी के प्रति उनकी सेवकाई पर प्रकाश डाला गया है। प्रारंभिक चर्च के विकास और सुसमाचार के प्रसार को दर्ज किया गया है।
यहूदा (यीशु का सौतेला भाई)	ईसा 68-80	झूठे शिक्षकों के विरुद्ध चेतावनी देता है और विश्वासियों से विश्वास के लिए संघर्ष करने का आग्रह करता है।
यूहन्ना (यूहन्ना)	ईसा 85-90	परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु पर ध्यान केंद्रित करता है, उसकी पहचान, चमत्कार और पिता के साथ संबंध पर जोर देता है।
1, 2 और 3 यूहन्ना (यूहन्ना)	ईसा 85-95	• **1 यूहन्ना:** मसीह के देह धारण करने की पुष्टि करता है और मसीही समुदाय के भीतर प्रेम और संगति पर जोर देता है। • **2 यूहन्ना**: एक संक्षिप्त पत्र जिसमें झूठी शिक्षाओं के विरुद्ध चेतावनी दी गई है और प्रेम और सत्य पर जोर दिया गया है। • **3 यूहन्ना:** एक व्यक्तिगत पत्र जिसमें अतिथि सत्कार की सराहना की गई है और कलीसिया के विषयों को संबोधित किया गया है।
प्रकाशितवाक्य (यूहन्ना)	ईसा 95-96	आनेवाली घटनाओं और बातों को उजागर किया है, मसीह की अंतिम विजय और राज्य, और एक नए स्वर्ग और नई पृथ्वी की स्थापना।

आत्मा द्वारा गुप्त रहस्यों का प्रकटीकरण

इफिसियों 3:1-7

1 इसी कारण मैं पौलुस जो तुम अन्यजातियों के लिये मसीह यीशु का बन्दी हूँ –
2 यदि तुम ने परमेश्वर के उस अनुग्रह के प्रबंध का समाचार सुना हो, जो तुम्हारे लिये मुझे दिया गया,
3 अर्थात् यह कि वह भेद मुझ पर प्रकाशन के द्वारा प्रगट हुआ, जैसा मैं पहले ही संक्षेप में लिख चुका हूँ,
4 जिससे तुम पढ़कर जान सकते हो कि मैं मसीह का वह भेद कहाँ तक समझता हूँ।
5 जो अन्य समयों में मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया है।
6 अर्थात् यह कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजातीय लोग मीरास में साझी, और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं।
7 मैं परमेश्वर के अनुग्रह के उस दान के अनुसार, जो उसकी सामर्थ्य के प्रभाव के अनुसार मुझे दिया गया, उस सुसमाचार का सेवक बना।

रोमियों 16:25-27

25अब जो तुम को मेरे सुसमाचार अर्थात् यीशु मसीह के संदेश के प्रचार के अनुसार स्थिर कर सकता है, उस भेद के प्रकाश के अनुसार जो सनातन से छिपा रहा,
26परन्तु अब प्रगट होकर सनातन परमेश्वर की आज्ञा से भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों के द्वारा सब जातियों को बताया गया है कि वे विश्वास से आज्ञा माननेवाले हो जाएँ,
27उसी एकमात्र बुद्धिमान परमेश्वर की यीशु मसीह के द्वारा युगानुयुग महिमा होती रहे। आमीन।

प्रेरित पौलुस मसीह के रहस्य के बारे में लिखता है जो पहले के समय में ज्ञात नहीं था, किन्तु अब आत्मा द्वारा प्रकट किया गया है (इफिसियों 3:4,5)। वह रोमियों 16 में फिर से इसका उल्लेख करता है, उस रहस्य का उल्लेख करते हुए जिसे आरंभ से ही गुप्त रखा गया था, किन्तु अब प्रकट किया गया है।

इफिसियों और रोमियों के यह अध्याय हमें इस बात की पुष्टि करते हैं जिसे पवित्रशास्त्र में प्रगतिशील प्रकाशित वाक्य के रूप में संदर्भित किया गया है।

1 पतरस 1:10-12

10इसी उद्धार के विषय में उन भविष्यद्वक्ताओं ने बहुत खोजबीन और जाँच–पड़ताल की, जिन्होंने उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर होने को था, भविष्यद्वाणी की थी।
11उन्होंने इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा जो उनमें था, और पहले ही से मसीह के दु:खों की और उसके बाद होनेवाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता था।
12उन पर यह प्रगट किया गया कि वे अपनी नहीं वरन् तुम्हारी सेवा के लिये ये बातें कहा करते थे, जिनका समाचार अब तुम्हें उनके द्वारा मिला जिन्होंने पवित्र आत्मा के द्वारा, जो स्वर्ग से भेजा गया, तुम्हें सुसमाचार सुनाया; और इन बातों को स्वर्गदूत भी ध्यान से देखने की लालसा रखते हैं।

पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर भविष्यवक्ताओं ने आने वाली बातों के बारे में बात की, और उन्होंने इन बातों को समझने के लिए खोजबीन की। यह विशेषाधिकार प्राप्त होने की बात है कि हमारे पास पवित्रशास्त्र की संपूर्णता है, जिससे हम पीछे मुड़कर देख सकें और उन बातों को समझ सकें, जिनके बारे में भविष्यवक्ताओं ने कहा था, साथ ही उन रहस्यों को भी जो प्रेरितों, पौलुस और अन्य लोगों पर प्रकट किए गए थे, जैसा कि हमें नए नियम में दिया गया है।

वर्तमान सत्य

2 पतरस 1:12

इसलिये यद्यपि तुम ये बातें जानते हो, और जो सत्य वचन तुम्हें मिला है उसमें बने रहते हो, तौभी मैं तुम्हें इन बातों की सुधि दिलाने को सर्वदा तैयार रहूँगा।

2 पतरस 3:1,2

1हे प्रियो, अब मैं तुम्हें यह दूसरी पत्री लिखता हूँ, और दोनों में सुधि दिलाकर तुम्हारे शुद्ध मन को उभारता हूँ,

[2]कि तुम उन बातों को जो पवित्र भविष्यद्वक्ताओं ने पहले से कही हैं, और प्रभु और उद्धारकर्ता की उस आज्ञा को स्मरण करो जो तुम्हारे प्रेरितों के द्वारा दी गई थी।

पतरस एशिया माइनर के आस-पास बिखरे हुए विश्वासियों को लिख रहा है—*"जिन्होंने हमारे समान बहुमूल्य विश्वास प्राप्त किया है"* (2 पतरस 1:1)। वह स्वीकार करता है कि वे "वर्तमान सत्य" को जानते हैं और उसमें दृढ़ता से स्थापित हैं। वह नए नियम के प्रकाशन का उल्लेख कर रहा है जो उन्हें बताया गया है जिसमें यीशु मसीह का सुसमाचार है, उसने क्या किया, वह कौन है, और वह सब जो चर्च को बताया गया है। कुछ अनुवाद "वर्तमान सत्य" को "वह सत्य जो तुम्हारे साथ है" और "वह सत्य जो तुम में" के रूप में प्रस्तुत करते हैं। प्रारंभिक चर्च के विश्वासी "वर्तमान सत्य" में स्थापित थे, पुराने नियम की समझ के साथ *"जो पवित्र भविष्यद्वक्ताओं ने पहले से कही हैं,"* (2 पतरस 3:2) और प्रेरितों द्वारा सिखाए गए नए नियम के प्रकाशन तक।

चर्च में आत्मिक समझ की पुनर्स्थापना

प्रारंभिक चर्च (ईस्वी सन् 30-ईस्वी सन् 100) से आरंभ होकर लगभग ईस्वी सन् 400 तक की पीढ़ियों तक, चर्च ने संतों को दिए गए सत्य को दृढ़ता से थामे रखा। ईस्वी सन् 400 के अंत तक, मसीही धर्म को “संस्थागत” बना दिया गया था और रोमन साम्राज्य में राजकीय धर्म के रूप में स्थापित किया गया था।

अगले 1000 वर्षों में (ईस्वी सन् 400-ईस्वी सन् 1500), जिन्हें कभी-कभी "अंधकार युग" के रूप में संदर्भित किया जाता है, ने चर्च में सत्य की रोशनी को लगातार कम होते देखा। संस्थागत चर्च पूरी तरह से विकसित हो गया, और अनेक पोप ने नागरिक और आत्मिक शक्ति का प्रयोग किया। उन्होंने कर (टैक्स) एकत्र किए, सेनाएँ खड़ी कीं और राजाओं और शासकों को अपने अधीन किया और इस तरह,

समाज में प्रमुख शक्ति बन गए, और पूरे पश्चिमी दुनिया में अपना प्रभाव बढ़ाया। चर्च के भीतर, इसके आत्मिक और नैतिक मूल्यों में भारी गिरावट आई। रूप, आराधान स्तुति और अनुष्ठानों ने पवित्रशास्त्र और आत्मा के जीवन और कार्य का स्थान ले लिया। सामान्य लोगों के पास पवित्रशास्त्र तक पहुँच नहीं थी। संतों से प्रार्थना, शोधन में विश्वास, ट्रांस-प्रतिस्थापन, भोग और अवशेष-आराधना जैसी गलत प्रथाएँ शुरू की गईं। चर्च को अचूक माना जाता था, क्योंकि पोप के पास सर्वोच्च शक्तियाँ होती थीं। आश्रमवाद में गिरावट आने लगी, जिससे उसकी आत्मिक ध्यान, शक्ति और जीवन शक्ति कम हो गई। लगभग 800 ई. से, चर्च में आराधना की शैली ग्रेगोरियन मंत्र का अनुसरण करती थी, जिसे रोमन कैथोलिक चर्च के पोप ग्रेगरी ने प्रस्तुत किया था, जो याजक और मंडली के बीच एक आह्वान और प्रतिक्रिया थी।

नए नियम के कई बुनियादी सत्य संस्थागत चर्च के प्रचार और व्यवहार से लुप्त हो गए थे। सत्य पवित्र शास्त्र के वचनों में छिपा हुआ था और उसे फिर से खोजने और चर्च में वापस लाने की आवश्यकता थी। चर्च को सुधारने और उसे उस स्थिति में वापस लाने की आवश्यकता थी, जो उसे वास्तव में होना चाहिए।

1100 ई. से 1500 ई. के दौरान कई प्रारंभिक सुधारक हुए। इनमें पीटर वाल्डो और वाल्डेंस (1150-1270), जॉन विक्लिफ, द रिफ़ॉर्मेशन मॉर्निंगस्टार, जिन्होंने पूरी अंग्रेजी बाइबल का अनुवाद किया (1382), जॉन हस जो मृत्यु तक वफादार रहे (1415), जोन ऑफ आर्क जिन्होंने दर्शन देखे (1429), गिरोलामो सवोनारोला, एक इतालवी भिक्षु जिन्हें उनके उपदेश के लिए जला दिया गया था (1452), हल्ड्रिच ज़्विंगली, स्विस पुजारी जिन्होंने पहली बार 1516 में चर्च में दुर्व्यवहार के खिलाफ प्रचार किया, और डेसिडेरियस इरास्मस, डच विद्वान, भिक्षु लेखक बने (1516), जिन्होंने मार्टिन लूथर के लिए आधार तैयार किया।

प्रोटेस्टेंट सुधार सामान्य रूप से **31 अक्टूबर 1517** को मार्टिन लूथर द्वारा लिखित पंचानवी थीसिस के प्रकाशन के साथ शुरू हुआ। उनकी प्राथमिक शिक्षा यह थी कि उद्धार यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से आता है और बाइबल हमारे विश्वास और अधिकार का आधार है। उनकी शिक्षा को प्रायः *"सोला ग्रैटिया", "सोला फ़ाइडे"* और *"सोला स्क्रिप्टरा"* के रूप में संक्षेपित किया जाता है–**सिर्फ अनुग्रह से, एवं सिर्फ विश्वास से, और सिर्फ वचनों से**। इसने चर्च में इन आवश्यक सत्यों के पुनर्स्थापन को एक महत्वपूर्ण रीति से शुरू किया।

इस समय (16 वीं शताब्दी) के आसपास, सामूहिक उपासना के भाग के रूप में **भजन गाने** की प्रथा को स्थापित किया गया और पुनःआरंभ किया गया। ये भजन केवल बाइबल के शब्दों को सम्मिलित करने या वचन के सटीक शब्दों को यथासंभव समीप से प्रतिबिंबित करने के लिए लिखे गए थे। मार्टिन लूथर ने जर्मन में 36 भजनों की रचना की।

उस समय से लेकर आज तक, हम देखते हैं कि आत्मिक सत्य और समझ चर्च के जीवन में उत्तरोत्तर पुनर्स्थापित हुई है। चर्च ने उस सत्य को "देखना और समझना" शुरू किया जो हमेशा लिखित वचनों में उपस्थित था। हम बाइबल पढ़ने, ध्यान, प्रार्थना, संगति, चर्च समुदाय, गवाही और मिशनों के आत्मिक अभ्यास और अनुशासन के पुनर्स्थापन को देखते हैं। हम चर्च में वरदानों, बुलाहट, सेवकाइयों और पवित्र आत्मा की अभिव्यक्तियों की उपस्थिति भी देखते हैं।

जबकि इन सभी का दस्तावेजीकरण करना लगभग असंभव होगा, क्योंकि इनमें से संसार के कई अलग-अलग हिस्सों से कई लोगों के द्वारा चर्च में **"समानांतर आंदोलन"** हो रहे थे, इनमें से कुछ को नीचे हाइलाइट किया गया है।

लगभग 401 ईस्वी से, संस्थागत चर्च ने शिशु बपतिस्मा का

अभ्यास करना शुरू किया गया था। **एनाबैप्टिस्ट**, जो 16वीं शताब्दी के आसपास उभरे, ने जोर देकर कहा कि बपतिस्मा केवल विश्वासियों के लिए था, और इसलिए, शिशुओं को बपतिस्मा देने के विचार को बाहर रखा। उन्होंने **स्थानीय चर्च** की समझ को भी वापस लाया—कि चर्च को विश्वासियों का एक स्वैच्छिक समूह होना चाहिए जो एक-दूसरे का समर्थन करते हैं।

जॉन कैल्विन (1509-1564), एक फ्रांसीसी धर्मशास्त्री, ने उन प्रमुख मान्यताओं को समझाने और एक साथ लाने में एक महान काम किया, जिन्हें हम **व्यवस्थित धर्मशास्त्र** के हिस्से के रूप में संदर्भित करते हैं—पाप, उद्धार, वचन, अनुग्रह, विश्वास द्वारा औचित्य, पूर्वनिर्धारण और स्वतंत्र इच्छा की समझ। उनके व्यवस्थित धर्मशास्त्र को प्रायः कैल्विनवाद के रूप में संदर्भित किया जाता है।

जैकोबस आर्मिनियस (1559-1609) यह एक डच सुधारवादी धर्मशास्त्री और सेवक थे जिन्होंने एक धर्मशास्त्र प्रणाली विकसित की जिसे आर्मिनियनवाद के रूप में जाना जाता है।

कैल्विनवाद (कैल्विनिज्म) और आर्मिनियनवाद (अर्मिनियनिज्म): कैल्विनवाद परमेश्वर की संप्रभुता और लोगों को उद्धार के लिए चुनने के परमेश्वर के अधिकार पर जोर देता है। कैल्विनवाद में, परमेश्वर व्यक्तियों के उद्धार में अंतिम और निर्णय कारक है। आर्मिनियनवाद परमेश्वर को चुनने की मानव क्षमता और स्वतंत्रता पर जोर देता है। आर्मिनियनवाद में, परमेश्वर की कृपा के प्रति मनुष्य की प्रतिक्रिया निर्णय कारक है। आज, प्रमुख संप्रदाय जो आम तौर पर कैल्विनवाद का समर्थन करते हैं, उनमें प्रेस्बिटेरियन, सुधारित चर्च, कांग्रेगेशनलिस्ट और कुछ बैपटिस्ट समूह ("सुधारित बैपटिस्ट") शामिल हैं। आर्मिनियनवाद की ओर झुकाव रखने वाले संप्रदायों में मेथोडिस्ट, अधिकांश जनरल बैपटिस्ट चर्च, वेस्लेयन, चर्च ऑफ़ द

नाज़रीन, पेंटेकोस्टल और करिश्माई / आत्मा से भरे / थर्ड वेव चर्च शामिल हैं। कृपया ध्यान रखें कि व्यक्ति अपने संप्रदाय से अलग होकर कैल्विनवाद / आर्मिनियनवाद पर अपनी व्यक्तिगत आस्था-स्थिति में भिन्न हो सकते हैं।

निरंतरतावाद (कन्टिन्यूऐशनिज्म) और समाप्तिवाद (सेसाशनिज्म): निरंतरतावाद, यह विश्वास कि चमत्कार और उपचार सहित पवित्र आत्मा के वरदान आज भी जारी हैं, सुधार होने तक मसीही चर्च का प्रचलित दृष्टिकोण था। यह दुःख की बात है कि सेसेशनिज्म (विश्वास कि आत्मा के वरदान, अलौकिक चमत्कार और उपचार प्रेरितिक युग के अंत के साथ बंद हो गए) की अवधारणा ने प्रोटेस्टेंट सुधार के दौरान प्रमुखता प्राप्त की, जॉन कैल्विन जैसे धर्मशास्त्रियों ने तर्क दिया कि असाधारण वरदान चर्च की स्थापना के लिए आवश्यक है, किन्तु यह अनिश्चित काल तक जारी रहने के लिए नहीं थे।

इंग्लैंड में मेथोडिस्ट आत्मिक जागृति का नेतृत्व **जॉन वेस्ले** (1703-1791) ने किया था, और उनके भाई चार्ल्स ने एक समूह की स्थापना की, जिसके प्रतिभागियों को **मेथोडिस्ट** के रूप में जाना जाता है। उन्होंने केवल मसीह में विश्वास के माध्यम से औचित्य का प्रचार किया और अनुग्रह के दूसरे कार्य, मसीही पूर्णता या संपूर्ण पवित्रता के रूप में दूसरे अनुभव पर जोर दिया। **पवित्रता और पवित्र जीवन की सच्चाई और समझ** को चर्च में बहाल किया गया। इसने **पवित्रता आंदोलन** को जन्म दिया।

इन जागृति / आंदोलनों जैसे कि महान जागृति (1730-1755) और अन्य 18वीं शताब्दी के जागृति के दौरान सामूहिक आराधना में **कोरस** (भजनों के अलावा अन्य आत्मिक गीत) का उपयोग चर्च में स्थापित किया गया था।

महान **मिशनरी आंदोलनों** की ओर ले जाने वाली कई **जागृतियां** होने लगीं।

- **विलियम कैरी** (1761-1834) आधुनिक मिशनरी आंदोलन में अग्रणी और नेता थे।
- **चार्ल्स फिन्नी** (1792-1875), जिन्हें "आधुनिक बेदारी के जनक" के रूप में जाना जाता है, आधुनिक समय के सबसे सफल प्रचारकों में से एक बन गए।
- **चार्ल्स स्पर्जन** (1834-1892), जिन्हें "प्रचारकों का राजकुमार" और प्रचारक के रूप में जाना जाता है।
- **डी. एल. मूडी** (1837-1899)
- और अन्य जाने-माने प्रचारक/ सुसमाचार प्रचारक

चर्च में **मिशनरी** और **प्रचारक** का बुलावा और सेवकाई पुनः स्थापित होने लगी थी।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, पवित्र आत्मा की चमत्कारिक अभिव्यक्तियों, पवित्र आत्मा के वरदानों, चमत्कारों और चंगाई में रुचि बढ़ने लगी। लोगों ने पेंटेकोस्टल प्रकार की आत्मा के उंडेले जाने और पवित्र आत्मा की अलौकिक सेवकाई का स्वागत और इच्छा करना शुरू कर दिया। ऐसे कई लोग थे जो चंगाई सेवकाई में अग्रणी थे। इनमें जॉन अलेक्जेंडर डोवी (1847-1907), मारिया वुडवर्थ-एटर (1844-1924), स्मिथ विगल्सवर्थ (1859-1947), लिलियन बी. योमन्स (1861-1942), जॉन जी. लेक (1870-1935), फ्रेड फ्रांसिस बोसवर्थ (1877-1958) और एमी सेम्पल मैकफर्सन (1890-1944) जैसे लोगों का समावेश हैं। 1904 में वेल्स पुनरुद्धार और 1906 में कैलिफोर्निया में अज़ुसा स्ट्रीट बेदारी के बाद पेंटेकोस्टल आंदोलन वैश्विक हो गया। सभी पेंटेकोस्टल संप्रदाय आंदोलन की शुरुआत के रूप में इन

1900-1915 के बेदारी की ओर इंगित करते हैं। **आत्मा के वरदानों** की अभिव्यक्तियों के साथ **पवित्र आत्मा** में **बपतिस्मा** चर्च में स्थापित किया जा रहा था।

1950 के दशक से लेकर अब तक, हम चर्च में कई समानांतर आंदोलनों को देखते हैं। इनमें प्रचारकों, पसवानों, शिक्षकों, भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों की पाँच प्रकार की सेवकाई कार्यों की स्थापना सम्मिलित है। स्थानीय चर्च के कामकाज की स्थापना, चर्च में सेवकाई के लिए विश्वासियों को सुसज्जित और सशक्त बनाना। मसीह में विश्वासी के जीवन, क्रूस पर मसीह के पूर्ण किए गए कार्य, छुटकारे, विश्वासी के अधिकार, प्रार्थना, मध्यस्थता, प्रबंधन, आराधना, गवाही, संगति, और बहुत कुछ के आत्मिक प्रकाशन और समझ की स्थापना शामिल है।

वचनों की प्रारंभिक प्रेरणा प्रगतिशील थी, और पवित्र आत्मा ने सत्य को उजागर किया, पंक्ति दर पंक्ति, उपदेश दर उपदेश।अंधकार युग के बाद, हम देख सकते हैं कि आत्मिक सत्य और समझ की, आत्मिक प्रथाओं और अनुशासनों की पुनः स्थापना, वरदानों, बुलाहट, सेवकाई और पवित्र आत्मा की अभिव्यक्तियों की बहाली चर्च में सुधार के साथ शुरू होकर प्रगतिशील हो रही है। प्रारंभिक चर्च को जो कुछ भी दिया गया था, उसे पूर्ण रूप से और उससे भी अधिक पुनःस्थापित किया जाएगा।

कई धाराएँ, एक नदी

कई धाराएँ, एक नदी सुधार से लेकर हमारे वर्तमान समय तक जो कुछ हुआ है, उसे चित्रित करने का एक तरीका यह है कि कई धाराओं को एक नदी में बहने के बारे में सोचें। कई धाराओं को एक नदी में बहने का एक उत्कृष्ट उदाहरण अमेज़न नदी है, जहाँ आस-पास के वर्षावनों से कई छोटी धाराएँ मुख्य अमेज़न नदी में मिलती हैं।

अनिवार्य रूप से, अमेज़न कई छोटी धाराओं से मिलकर बनी है जो एक बड़ी नदी क बनाती है। अमेज़न में बहने वाली छोटी धाराओं को सहायक नदियाँ कहा जाता है। छोटी धारा के स्रोत को हेडवाटर या धारा के शीर्ष के रूप में जाना जाता है। वह बिंदु जहाँ एक सहायक नदी मुख्य नदी से मिलती है उसे संगम कहा जाता है।

उदाहरण के लिए, हम प्रत्येक छोटी धारा के मुख्य जलस्रोत को पवित्र आत्मा द्वारा आरंभ किए गए आंदोलन के जन्म के रूप में मान सकते हैं। परमेश्वर की आत्मा ने आंदोलन (छोटी धारा, सहायक नदी) को जन्म देने के लिए एक या एक से अधिक लोगों का उपयोग किया। उन्होंने एक या एक से अधिक नए नियम की सच्चाइयों पर जोर दिया, और उन्हें इस तरह से संप्रेषित और प्रदर्शित किया कि चर्च उन्हें ग्रहण कर सके। छोटी धारा अंततः मुख्य नदी में बह रही हैं, जो पवित्र आत्मा द्वारा दुनिया भर की चर्च में किया जाने वाला कार्य था। इसलिए, कई छोटी धाराएँ पवित्र आत्मा द्वारा आरंभ की गईं, और वे सभी मुख्य नदी में बह रही हैं।

आज विश्वासियों के रूप में, हमें मुख्य नदी के साथ बने रहने की आवश्यकता है। मुख्य नदी वह है जहाँ हम चर्च में "वर्तमान सत्य" को पुनःस्थापित कर रहे हैं। यह मुख्य नदी है जहाँ *"सेवकाई के कार्य के लिए संतों को सुसज्जित करना"* और *"मसीह की देह ने उन्नति प्राप्त करना।"* यह मुख्य नदी है जो हमें *"विश्वास की एकता और परमेश्वर के पुत्र के ज्ञान में, एक परिपूर्ण मनुष्य में, मसीह की परिपूर्णता में"* ला रही है। यह मुख्य नदी है जहाँ हम *"अब बच्चे नहीं रहेंगे, जो मनुष्यों की चालाकी से, छल-कपट की चालाकी से, हर सिद्धांत की हवा से इधर-उधर फेंके जाते हैं और इधर-उधर घुमाए जाते हैं, बल्कि प्रेम में सत्य बोलते हुए, सभी बातों में उसमें बढ़ते हैं जो कि प्रमुख है—मसीह।"* यह मुख्य नदी है जिसमें यीशु चर्च में काम कर रहे हैं, ताकि उसे *"और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी*

करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो वरन् पवित्र और निर्दोष हो।" (इफिसियों 4:12-15; इफिसियों 5:27)।

पवित्र आत्मा का जल पवित्र, स्वच्छ और शुद्ध है। हालाँकि, जब यह शुद्ध जल अपूर्ण मानवीय बर्तनों से बहता है, तो यह अपनी अभिव्यक्तियों में 'शरीर की' चीज़ों के साथ मिल जाता है। इसलिए, कोई भी धारा अपनी अभिव्यक्तियों में परिपूर्ण नहीं हो पाती। अक्सर, मानवीय विचार, मानवीय हित और संस्थागत स्वार्थी मुद्दे होते हैं जो पवित्र आत्मा के शुद्ध कार्य के साथ मिल जाते हैं। हमें शरीर की चीज़ों को छानकर अलग करना सीखना चाहिए और केवल पवित्र आत्मा की शुद्ध नदी को पीना चाहिए।

समस्याएँ तब पैदा होती हैं जब हम एक धारा (जिसे आज एक संप्रदाय / संस्था या एक विशेष आंदोलन के रूप में पहचाना जाता है) के इर्द-गिर्द डेरा डालते हैं और सोचते हैं कि हमारे मसीही धर्म में यही सब है, या यह वही है जो आजकल पवित्र आत्मा चर्च में कर रहा है। समस्याएँ तब उत्पन्न होती हैं जब हम केवल एक धारा में बहाल किए गए सत्य के आधार पर वचनों की व्याख्या और समझ करते हैं, बिना यह पहचाने कि परमेश्वर ने पवित्रशास्त्र की पूर्ण समझ को कई धाराओं के माध्यम से बहाल किया है और वह ऐसा करना जारी रखता है जो एक नदी में बहती हैं—यह पवित्र आत्मा की नदी है और वह चर्च में क्या कर रहा है।

आइये हम निम्नलिखित कुछ उदाहरणों पर विचार करें जो हमें सिखाते हैं कि हमें परमेश्वर के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की आवश्यकता है, क्योंकि वह लोगों के लिए अपने अनंत उद्देश्य को प्रकट करने के लिए आगे बढ़ता है।

- **जब अतीत एक मूर्ति बन गयी:** एक समय था जब परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिया था कि वह एक पीतल का साँप बनाए और

उसे एक खंभे पर लटका दे ताकि साँपों द्वारा काटे गए लोग उसे देख सकें और चंगे हो सकें और सुरक्षित रह सकें (गिनती 21:8,9)। लगभग 800 साल बाद, हम पढ़ते हैं कि यह पीतल का साँप पूजा की वस्तु, और एक मूर्ति बन गया था। हम नहीं जानते कि कितने समय तक, लेकिन संभवतः सैकड़ों वर्षों तक, लोगों ने इस पीतल के साँप की पूजा की। कुछ ऐसा जो वास्तव में एक निश्चित समय पर परमेश्वर द्वारा उपयोग किया गया था, जो स्वयं प्रभु यीशु का एक प्रकार या संकेत था (यूहन्ना 3:14,15), यह लोगों के जीवन में परमेश्वर का स्थान लेने वाली एक मूर्ति बन गई थी, जब तक कि हिजकिय्याह यहूदा का राजा नहीं बन गया और उसने इस पीतल के साँप को नष्ट कर दिया और इसे *"नेहुश्तान"* कहा, जिसका अर्थ है पीतल का एक टुकड़ा (2 राजाओं 18:4)। यह एक ऐसा खतरा है जिससे हमें बचना चाहिए—ऐसे लोगों, रूपों, तरीकों, संगठनों, सिद्धांतों आदि को वर्तमान में मूर्तियाँ नहीं बनाना चाहिये, जिनके माध्यम से परमेश्वर ने अतीत में वास्तव में काम किया था।

- **जब परमेश्वर आगे बढ़ा:** यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को परमेश्वर ने भेजा था। यूहन्ना *"और तू हे बालक, परमप्रधान का भविष्यद्वक्ता कहलाएगा, क्योंकि तू प्रभु का मार्ग तैयार करने के लिये उसके आगे–आगे चलेगा,"* (लूका 1:76) वह *"इस्राएल पर प्रगट होने के दिन तक जंगलों में रहा।"* (लूका 1:80)। उसने अपनी सेवकाई का समय शुरू किया। *"तब यरूशलेम और सारे यहूदिया, और यरदन के आसपास के सब स्थानों के लोग उसके पास निकल आए। उन्होंने अपने–अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उससे बपतिस्मा लिया"* (मत्ती 3:5,6)। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने लगभग 6 महीने से 1 साल तक सेवकाई की होगी, जब प्रभु यीशु उसके पास यरदन नदी में बपतिस्मा लेने के लिए आए। यूहन्ना ने यीशु को बपतिस्मा देने और उसे मसीहा, परमेश्वर का पुत्र मानने के बाद, यूहन्ना ने यीशु की ओर इशारा किया। *"दूसरे दिन फिर*

यूहन्ना और उसके चेलों में से दो जन खड़े हुए थे, और उसने यीशु पर जो जा रहा था, दृष्टि करके कहा, "देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है।" तब वे दोनों चेले उसकी यह सुनकर यीशु के पीछे हो लिए।" (यूहन्ना 1:35-37) यूहन्ना का समय समाप्त हो गया था और यीशु का समय शुरू हो गया था। यूहन्ना के दो शिष्य उसे छोड़कर यीशु के पीछे हो लिए। यूहन्ना जानता था कि यीशु के बढ़ने और खुद के घटने का समय आ गया है। उसने कुछ और महीनों तक, शायद एक साल तक, नदी के किनारे पर रहकर सेवा की और फिर उसका सिर काट दिया गया। यूहन्ना के दो शिष्यों की तरह, हमें भी परमेश्वर के वर्तमान कार्य की ओर बढ़ना सीखना चाहिए क्योंकि वह शास्त्रों में सत्य को उजागर करना और अपने उद्देश्यों को प्रकट करना जारी रखता है।

- **अपोलोस को पकड़ने की ज़रूरत थी**: *"अपुल्लोस नामक एक यहूदी, जिसका जन्म सिकन्दरिया में हुआ था, जो विद्वान पुरुष था और पवित्रशास्त्र को अच्छी तरह से जानता था, इफिसुस में आया। उसने प्रभु के मार्ग की शिक्षा पाई थी, और मन लगाकर यीशु के विषय ठीक ठीक सुनाता और सिखाता था, परंतु वह केवल यूहन्ना के बपतिस्मा की बात जानता था। वह आराधनालय में निडर होकर बोलने लगा, पर प्रिस्किल्ला और अक्विला उसकी बातें सुनकर उसे अपने यहाँ ले गए और परमेश्वर का मार्ग उसको और भी ठीक ठीक बताया। जब उसने निश्चय किया कि पार उतरकर अखाया को जाए तो भाइयों ने उसे ढाढ़स देकर चेलों को लिखा कि वे उससे अच्छी तरह मिलें; और उसने वहाँ पहुँचकर उन लोगों की बड़ी सहायता की जिन्होंने अनुग्रह के कारण विश्वास किया था। क्योंकि वह पवित्रशास्त्र से प्रमाण दे देकर कि यीशु ही मसीह है, बड़ी प्रबलता से यहूदियों को सब के सामने निरुत्तर करता रहा।"* (प्रेरितों के काम 18:24-28)। परमेश्वर ने एक व्यवसायी जोड़े का उपयोग करके एक विद्वान

विद्वान को आत्मिक चीजों पर अपडेट किया।

हमारे लिए संदेश यह है कि हमें परमेश्वर के पिछले कार्य के प्रति अपने लगाव को, वचनों से सत्य के अनावरण को और कलीसिया में और उसके द्वारा परमेश्वर के कार्य को प्रकट करने से पीछे नहीं हटना चाहिये। और न ही हमें पवित्रशास्त्र के अपने अध्ययन और व्याख्या को अपने संप्रदाय या किसी और चीज़ के प्रति अपने लगाव से दूषित होने देना चाहिए। हमें परमेश्वर के साथ कदम से कदम मिलाकर चलना चाहिए।

संतों को दिए गए विश्वास के प्रति पूर्ण लगन से बने रहना

यहूदा 1:3

हे प्रियो, जब मैं तुम्हें उस उद्धार के विषय में लिखने में अत्यन्त परिश्रम से प्रयत्न कर रहा था जिसमें हम सब सहभागी हैं, तो मैं ने तुम्हें यह समझाना आवश्यक जाना कि उस विश्‍वास के लिये पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था।

वचन की हमारी व्याख्या और समझ में, हमारा लक्ष्य संतों को दिए गए विश्वास के प्रति पूरी लगन से संघर्ष करना है।

क्या आज हम विश्वास करेंगे यदि प्रेरित पतरस ने जिस *“वर्तमान सत्य”* का उल्लेख किया (2 पतरस 1:12) और यदि *“पवित्र भविष्यद्वक्ताओं द्वारा पहले से कही गई बातें और प्रभु और उद्धारकर्ता के प्रेरितों की आज्ञाएं”* (2 पतरस 3:2) आज तक अपरिवर्तित बनी रहीं?

चर्च का प्रचार और शिक्षण क्या होगा यदि *“वह विश्वास जो संतों को एक बार दिया गया था”* (यहूदा 1:3) और हमें लिखित वचनों में दिया गया आज तक अपरिवर्तित बना रहे?

हमारी आत्मिक समझ और विश्वास का अभ्यास पुराने नियम और नए नियम के सत्य के पूर्ण प्रकाशन के साथ संरेखित होना चाहिए जैसा कि मूल रूप से दिया गया था। दैनिक जीवन में, हम उन सच्चाइयों को अपनी परिस्थितियों में लाते हैं और आज परमेश्वर की बुद्धि से उन्हें लागू करते हैं।

5
बाइबल अध्ययन की विधियाँ एवं उपकरण

इस अध्याय में, हम मूल भाषाओं से अंग्रेज़ी में बाइबल अनुवाद कैसे किया जाता है, इसका संक्षिप्त विवरण देंगे। इससे हमें यह समझने में मदद मिलेगी कि अंग्रेज़ी बाइबल के कई संस्करण क्यों हैं, इनका क्या उद्देश्य है और हम अपने अध्ययन में इनका लाभ कैसे उठा सकते हैं? हम पवित्रशास्त्र का अध्ययन करने के लिए उपयोग की जाने वाली विधियों और उपकरणों पर भी विचार करेंगे।

अंग्रेज़ी बाइबल के अनेक संस्करण

यहाँ इस बात का संक्षिप्त विवरण दिया गया है कि हमारे पास अंग्रेज़ी बाइबल के कई संस्करण क्यों हैं।

ग्रीक, लैटिन और अन्य प्राचीन भाषा की पांडुलिपियों सहित बाइबल का समर्थन करने वाली 66,000 से ज़्यादा पांडुलिपियाँ और स्क्रॉल हैं।

- **हिब्रू पांडुलिपियाँ:** अनुमानतः 60,000 हिब्रू पांडुलिपियाँ और 200,000 अंश हैं।
- **ग्रीक पांडुलिपियाँ:** नए नियम की लगभग 5,800 ग्रीक पांडुलिपियाँ हैं, जिनमें से सबसे पुरानी पांडुलिपियाँ 130 ई. की हैं।
- **लैटिन पांडुलिपियाँ:** लगभग 10,000 लैटिन पांडुलिपियाँ हैं।
- **अन्य भाषा की पांडुलिपियाँ:** सीरियाई, स्लाविक, गोथिक, इथियोपिक, कॉप्टिक, न्युबियन और अर्मेनियाई सहित अन्य प्राचीन भाषाओं में लगभग 9,300 पांडुलिपियाँ हैं।

- **मृत सागर स्क्रॉल:** मृत सागर स्क्रॉल में 200 से अधिक बाइबल की पांडुलिपियाँ हैं, जिनमें से कुछ 70 ईसा पूर्व से पहले लिखी गई थीं। 1947-1950 के बीच पाए गए मृत सागर स्क्रॉल मुख्य रूप से यरुशलम में इज़राइल संग्रहालय में रखे गए हैं।

नये नियम को साहित्य के किसी भी अन्य प्राचीन कार्य की तुलना में अधिक पांडुलिपियों में संरक्षित किया गया है। न्यू टेस्टामेंट (नये नियम) के पांडुलिपियों के कुल पृष्ठ 2.6 मिलियन से अधिक हैं।

पुराने नियम की पांडुलिपि परिवार (पांडुलिपियों का संग्रह) में **मसोरेटिक लेखन (मॅजोरेटिक टेक्स्ट)** (मानक हिब्रू लेखन माना जाता है), **सेप्टआजेंट** (ग्रीक अनुवाद), और समरिटन पेंटाटेच (समरिटन हिब्रू) में लिखा गया है।

नए नियम की पांडुलिपि परिवारों को **बीजान्टिन** और **अलेक्जेंड्रियन** पाठ-प्रकारों के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

बीजान्टिन लेखन शैली (जिसे "प्राप्त पाठ" या "टेक्स्टस रिसेप्टस" भी कहा जाता है) जो जीवित नए नियम की पांडुलिपियों के बहुमत का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए तीसरी शताब्दी के अंत और चौथी शताब्दी की शुरुआत से "बहुमत पाठ" नाम दिया गया, और यह मुख्य रूप से पूरे बीजान्टिन साम्राज्य (कॉन्स्टेंटिनोपल में केंद्रित) में प्रसारित हुआ। किंग जेम्स संस्करण (केजेवी) (और इसलिए, न्यू किंग जेम्स संस्करण (एनकेजेवी)) बीजान्टिन पाठ-प्रकार कहलाता है, क्योंकि ये अनुवाद किए जाने के समय (1611 में) उपलब्ध थे।

अलेक्जेंड्रिया लेखन शैली (जिसे "आधुनिक आलोचनात्मक पाठ" भी कहा जाता है) को आम तौर पर (दूसरी शताब्दी की शुरुआत से) इसकी प्रारंभिक तिथि के कारण इसे मूल पाठ के

करीब माना जाता है। इसका प्रतिनिधित्व सबसे पुरानी जीवित न्यू टेस्टामेंट पांडुलिपियों जैसे कोडेक्स सिनैटिकस और कोडेक्स वेटिकसं के द्वारा किया जाता है, जो मिस्र में उत्पन्न हुई थी। अधिकांशतः, बाइबल के सभी आधुनिक संस्करण (न्यू इंटरनेशनल वर्जन (एन आई वी), न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल (एन एएस बी), आदि) अलेक्जेंड्रिया लेखन का उपयोग करते हैं, जिसे कई विद्वानों ने उचित लेखन के रूप में स्वीकार किया है, क्योंकि हाल ही में प्राप्त निष्कर्ष बीजान्टिन ग्रंथों के सबसे पुराने अभिलेखों से भी पुराने थे।

बाइबल के अंग्रेजी में अनुवाद पर काम शुरू करते समय, बाइबल अनुवादक यह तय करते हैं कि **पांडुलिपियों के किस संग्रह** के साथ काम करना है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, बाइबल के सबसे हाल के संस्करणों में अलेक्जेंड्रिय लेखन का उपयोग किया जाता है। बाइबल अनुवादक अनुवाद कार्य आरंभ करने से पहले **अनुवाद दर्शन** पर भी निर्णय लेते हैं जिसका वे पालन करेंगे।

यहाँ कुछ मुख्य दर्शन दिए गए हैं जिनका पालन किया जाता है।

a) औपचारिक तुल्यता

यह **शब्द-दर-शब्द** अनुवाद पर ध्यान केंद्रित करती है और यथासंभव वास्तविक होने का प्रयास करती है। औपचारिक तुल्यता दर्शन के अंतर्गत आने वाली बाइबलें अंग्रेजी मानक संस्करण (ई एस वी / ESV), (के जे वी / KJV) और (एन ए एस बी / NASB) होंगी।

b) कार्यात्मक तुल्यता

यह **विचार-दर-विचार** (गतिशील तुल्यता) अनुवाद पर ध्यान

केंद्रित करती है। इसका लक्ष्य अध्याय को पढ़ने और समझने मे सरल बनाना है। इस श्रेणी में आने वाली बाइबलें न्यू लिविंग ट्रांसलेशन (एनएलटी / NLT) और (एनआइवी / NIV) हैं।

c) सर्वोत्कृष्ट तुल्यता

यह **शब्द-दर-शब्द** और **विचार-दर-विचार** का संतुलन है जहाँ भी पाठक को उचित रूप से समझने हेतु आवश्यक हो। होल्मन क्रिश्चियन स्टैंडर्ड बाइबल एचसीएसबी(HCSB) को एक सर्वोत्कृष्ट तुल्यता दृष्टिकोण माना जाएगा।

d) आवश्यक तुल्यता

यह **अर्थ-दर-अर्थ,** या समतुल्य अर्थ है, जबकि मूल शब्दों के आवश्यक रूप और आवश्यक कार्य को बनाए रखता है। यह अर्थ-दर-अर्थ अनुवाद है, जो परमेश्वर के मूल संदेश और हृदय के सार को आधुनिक अंग्रेजी में अनुवादित करता है। द पैशन ट्रांसलेशन (टीपीटी / TPT) एक आवश्यक समतुल्यता अनुवाद है।

e) पैराफ्रेज़

जिन बाइबलों को पैराफ्रेज़ किया जाता है, उनमें सटीकता की कमी होती है और कभी-कभी वे विचार-दर-विचार दृष्टिकोण से परे हो जाती हैं। ये बाइबलें कहानी या पाठ को बेहतर ढंग से समझने के लिए अच्छी हैं, किन्तु व्याख्यात्मक उपदेश के लिए, शब्द-दर-शब्द या विचार-दर-विचार बाइबल के साथ रहना सबसे अच्छा है।

बाइबल अनुवाद के प्रकार
Types of Bible Translations

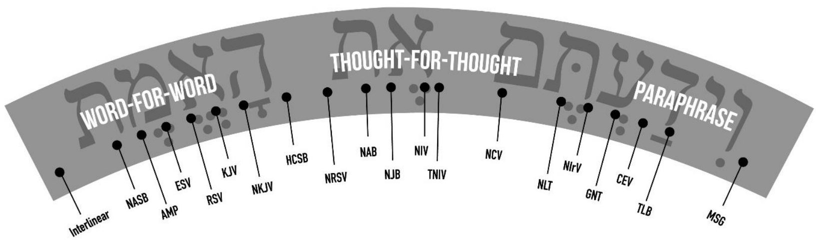

NASB - New American Standard Bible
AMP - Amplified Bible
ESV - English Standard Version
RSV - Revised Standard Version
KJV - King James Version
NKJV - New King James Version

HCSB - Holman Christian Standard Bible
NRSV - New Revised Standard Version
NAB - New American Bible
NJB - New Jerusalem Bible
NIV - New International Version
TNIV - Today's New International Version
NCV - New Century Version
NLT - New Living Translation

NIrV - New International Reader's Version
GNT - Good News Transllation (also Good News Bible)
CEV - Contemporary English Version
TLB - The Living Bible
MSG - The Message

इसे **https://www.christianity.com/wiki/Bible/why-are-there-so-many-different-versions-of-the-Bible.html -** से लिया गया है

सामान्य अंग्रेजी बाइबल संस्करण

KJV से पहले, विक्लिफ़ बाइबल थी, जो 1382 में पूरी हुई, और टिंडेल बाइबल (पूर्ण नया नियम), जो 1526 में प्रकाशित हुई।

आजकल उपयोग की जाने वाली कुछ सामान्य प्रोटेस्टेंट बाइबलें इस प्रकार हैं।

- किंग जेम्स बाइबल (KJV) (1611 में पूर्ण)
- संशोधित मानक संस्करण (RSV) (1952 में पूर्ण)
- एम्पलीफाइड बाइबल (AMP) (1965 में पूर्ण, 1987 और 2015 में नए संस्करण तैयार किए गए)

- न्यू अमेरिकन बाइबल (NAB) (का 1970 में प्रतिस्पर्धा में समावेश)
- द लिविंग बाइबल (TLB) (1971 में पूर्ण)
- न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल (NASB) (1971 में पूर्ण, 1995 और 2020 में नए संशोधन किए गए)
- न्यू इंटरनेशनल वर्जन (NIV) (1978 में पूर्ण)
- न्यू किंग जेम्स वर्जन (NKJV) (1982 में पूर्ण)
- न्यू लिविंग ट्रांसलेशन (NLT) (1996 में पूर्ण)
- इंग्लिश स्टैंडर्ड वर्जन (ESV) (2001 में पूरा हुआ)
- द मैसेज (MSG) (2002 में पूरा हुआ)
- होलमैन क्रिश्चियन स्टैंडर्ड बाइबल (HCSB) (2004 में पूरा हुआ)
- क्रिश्चियन स्टैंडर्ड बाइबल (CSB) (2017 में पूरा हुआ)

अनेक अंग्रेजी संस्करणों के होने का लाभ

हम बाइबल के कई अंग्रेजी संस्करणों का उपयोग अपने लाभ के लिए कर सकते हैं, क्योंकि हम वचनों का अध्ययन करते हैं। पवित्र शास्त्र के किसी वचन या अंश का अध्ययन करते समय, इसे अलग-अलग संस्करणों में पढ़ने से हमें पाठ की अधिक व्यापक समझ मिलती है। हम मूल अर्थ के पूर्ण छबि और अध्याय की उचित समझ प्राप्त कर सकते हैं। संस्करणों की तुलना करके, हम विभिन्न संस्करणों में प्रकाश डाले गए विशिष्ट शब्दों या वाक्यांशों के विभिन्न पहलुओं को देख सकते हैं, हिब्रू, अरामी या ग्रीक में सूक्ष्मताओं को पकड़ सकते हैं। हम यह देखकर आलंकारिक और काव्यात्मक भाषा की समझ भी प्राप्त कर सकते हैं कि, इसे विभिन्न संस्करणों में कैसे प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय और वचनों का गठन

बाइबल को अध्यायों और वचनों में विभाजित करना एक ऐसी प्रक्रिया थी जो सदियों से विकसित हुई है और इसे अंग्रेजी अनुवादों में अपनाए जाने से पहले लैटिन, हिब्रू और ग्रीक ग्रंथों में लागू किया गया था। अंग्रेजी अनुवादों ने इन उपस्थित ढाँचों का अनुसरण किया। दोनों नियमों में अध्याय और वचनों दोनों को रखने वाली पहली बाइबल **जिनेवा बाइबल (1560)** थी, जो एक अंग्रेजी अनुवाद था।

यहाँ इस बात का अवलोकन दिया गया है कि यह प्रक्रिया कब और कैसे हुई।

हिब्रू बाइबल के मसोरेटिक पाठ में पहले से ही वचन विभाजन का एक रूप था जिसे यहूदी शास्त्रियों (मसोरेट्स) ने **500-900 ई.** के बीच स्थापित किया था। मसोरेट्स ने अपने पद्य विभाजनों को मौखिक परंपराओं और वचनों को लयबद्ध तरीके से पढ़ने पर आधारित किया। ये विभाजन हिब्रू पाठ में प्राकृतिक विरामों पर आधारित थे। ग्रीक सेप्टआजेंट ने बाद में इसी तरह के पद विभाजन को अपनाया, किन्तु यह हिब्रू पाठ की तुलना में कम सुसंगत था।

बाइबल को **अध्यायों** में विभाजित करने का काम सबसे पहले कैंटरबरी के एक अंग्रेजी आर्कबिशप स्टीफन लैंगटन ने **1227 ई.** के आसपास किया था। लैंगटन ने इस विभाजन को लैटिन वुल्गेट बाइबल पर लागू किया, जिसने बाद में हिब्रू, ग्रीक, और अंग्रेजी बाइबल में अध्याय विभाजन को प्रभावित किया। अध्यायों को अध्ययन और धार्मिक उपयोग के लिए पाठ के विशिष्ट भागों को संदर्भित करना आसान बनाने के लिए इसे पेश किया गया था। लैंगटन ने अध्याय को थीम, कथात्मक बदलावों या अध्यायों में प्राकृतिक विराम के आधार पर तार्किक खंडों में विभाजित किया। लैंगटन के अध्याय विभाजन ने कभी-कभी मूल अध्ययन के प्रवाह पर अध्ययन और उद्धरण के लिए

व्यावहारिकता को प्राथमिकता दी।

नया नियम सेप्टआजेंट ने बाद में इसी तरह के पद विभाजन को अपनाया, किन्तु यह हिब्रू पाठ की तुलना में कम सुसंगत था। **1551** में रॉबर्ट एस्टियन (जिसे स्टेफनस के नाम से भी जाना जाता है) ने नए नियम को **वचनों** में विभाजित किया। उन्होंने अपने पहले के काम के बाद इसे लैटिन ग्रंथों में ग्रीक पाठ पर लागू किया। कुछ लोग नए नियम के छंदों में विभाजन को कभी-कभी आकस्मिक या अनुपयुक्त मानते हैं।

अध्याय और वचन की प्रणाली अध्ययन, याद रखने और अनुवादों और भाषाओं में क्रॉस-रेफ़रेंसिंग के लिए ज़रूरी हो गई। यह पवित्रशास्त्र पाठ को व्यवस्थित करने और संदर्भित करने की एक बहुत ही लाभदायक प्रणाली है।

जबकि, अध्याय और वचन विभाजन कभी-कभी विचार के प्रवाह को बाधित करते हैं या कृत्रिम विराम बनाते हैं, जो संभावित रूप से व्याख्या को प्रभावित करते हैं। इसलिए, पवित्रशास्त्र का अध्ययन और व्याख्या करते समय इसे ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है।

बाइबल अध्ययन की पद्धतियां

बाइबल अध्ययन करने के कई तरीके हैं। कुछ सामान्य दृष्टिकोण नीचे सूचीबद्ध और समझाए गए हैं। कृपया ध्यान रखें कि व्यवहार में, जब हम बाइबल का अध्ययन करते हैं तो हम सामान्यतः पर इन रीतियों के संयोजन का उपयोग करते हैं। इन बाइबल अध्ययन विधियों के बीच का अंतर "कठोर और तेज़" नहीं है, विशेषतः जब आप व्यक्तिगत भक्ति, व्यक्तिगत ध्यान, व्यक्तिगत अध्ययन, धर्मोपदेश की तैयारी, पुस्तक लेखन आदि सहित विभिन्न कारणों से वचनों का अध्ययन और संलग्न कर रहे हों। जब आप परमेश्वर के वचन के साथ संलग्न होते हैं

तब हमारा लक्ष्य वचनों का अध्ययन करने के लिए आवश्यक विभिन्न कौशल को सीखना और इनमें से किसी का भी सरलता से उपयोग करना है।

A) भक्ति / अंश अध्ययन दृष्टिकोण

1) भक्ति विधि

2) वचन-दर-वचन अध्ययन विधि

B) चरित्र / जीवनी अध्ययन दृष्टिकोण

3) चरित्र अध्ययन विधि

4) जीवनी अध्ययन विधि

C) विषयगत / सामयिक / शब्द अध्ययन दृष्टिकोण

5) विषयगत बाइबल अध्ययन

6) विषयगत बाइबल अध्ययन विधि (विषयगत विधि)

7) वचन अध्ययन विधि

D) अध्याय अध्ययन दृष्टिकोण

8) अध्याय सारांश विधि

9) अध्याय विश्लेषण विधि

E) पुस्तक अध्ययन दृष्टिकोण

10) पुस्तक पृष्ठभूमि और सर्वेक्षण विधि

11) बाइबल अध्ययन की पुस्तक संश्लेषण विधि (वचन दर वचन)

A) भक्ति / अंश अध्ययन दृष्टिकोण

इसमें, हम एक **"प्रेरक अध्ययन"** कर रहे हैं। आप एक अंश पढ़ते हैं औरनिम्नलिखित का उपयोग करते हुए उसका परीक्षण करते हैं...

- **अवलोकन**: यह पाठ क्या कहता है?
- **व्याख्या**: इस पाठ का क्या अर्थ है?
- **अनुप्रयोग**: मुझे इसे कैसे लागू करना चाहिए?

प्रेरक अध्ययन में, आप एक विशिष्ट अंश से सामान्य की ओर बढ़ते हैं। आप विशिष्ट अंश से शुरू करते हैं और फिर उसके सामान्य अर्थ और आपके लिए उसके अनुप्रयोग पर आगे बढ़ते हैं।

1) भक्ति विधि

शास्त्र का एक छोटा अंश चुनें और उस पर मनन करें। दृश्य या कथा की कल्पना करें। खुद को बाइबल बाइबल की स्थिति में एक सक्रिय भागीदार के रूप में रखें। कल्पना करें कि आप उस अंश में मौजूद लोगों में से एक हैं। एक ऐसा अनुप्रयोग लिखें जो व्यक्तिगत और व्यावहारिक हो।

अभ्यास 1: एक वचन या छोटा अंश चुनें (उदाहरण के लिए, भजन संहिता 23:1-3) और इसके अर्थ पर चिंतन करते हुए 15 मिनट बिताएँ, इस बात पर ध्यान केंद्रित करें कि यह आपके जीवन पर कैसे लागू होता है। इस बारे में एक पृष्ठ का व्यक्तिगत चिंतन लिखें कि आप इसे अपने दैनिक कार्यों की योजना बनाते समय इसे में कैसे लागू किया जाए।

अभ्यास 2: पहाड़ पर दिए उपदेश में से एक अंश चुनें (उदाहरण के लिए, मत्ती 5:1-12)। प्रार्थना में समय बिताएँ और परमेश्वर से अपने लिए अंतर्दृष्टि प्रकट करने के लिए कहें। किसी भी विचार, विश्वास या तरीके को लिखें जिसके लिए आपको व्यक्तिगत रूप से प्रतिक्रिया करने की आवश्यकता महसूस होती है और कोई भी विशिष्ट कार्रवाई करने के लिए इसे नोट करें।

2) वचन-दर-वचन अध्ययन विधि

वचन का एक अंश चुनें और उसका विस्तार से परीक्षण करें। कीवर्ड का अध्ययन करें। यदि संभव हो, तो शब्दों के अर्थ देखें और इसे कई संस्करणों से पढ़ें। किसी भी अंतर्दृष्टि को रिकॉर्ड करें। अवलोकन, मुख्य सीख और एक संक्षिप्त व्यक्तिगत अनुप्रयोग लिखें। (इसके अतिरिक्त, आपको ऐसे क्रॉस-रेफरेंस मिल सकते हैं जो वचनों से संबंधित हैं और व्यापक समझ प्रदान करते हैं)।

अभ्यास 1: फिलिप्पियों 4:4-7 चुनें और प्रत्येक वचन का अलग-अलग विश्लेषण करें। प्रत्येक वचन के मुख्य संदेश, मुख्य शब्दों और प्रत्येक वचन द्वारा सुझाए गए व्यावहारिक अनुप्रयोग की पहचान करें। एक संक्षिप्त पैराग्राफ लिखें जिसमें संक्षेप में बताया गया हो कि ये वचन एक-दूसरे से कैसे जुड़ते हैं।

अभ्यास 2: कुलुस्सियों 3:1-4 चुनें और प्रत्येक वचन की अलग-अलग जाँच करें। प्रत्येक वचन के लिए, किसी भी क्रॉस-रेफरेंस, स्पष्टीकरण या ऐतिहासिक संदर्भ को नोट करें जो आपकी समझ को बढ़ा सकते हैं। इस बारे में संक्षिप्त विवरण लिखें कि प्रत्येक वचन पिछले वचन पर कैसे आधारित है।

अभ्यास 3: रोमियों 12:1-8 चुनें और प्रत्येक वचन का अलग-अलग विश्लेषण करें। मुख्य विचार, मुख्य शब्दों और यह अध्याय के समग्र विषय से कैसे जुड़ता है, इसकी पहचान करें।

B) चरित्र / जीवनी अध्ययन दृष्टिकोण

3) चरित्र अध्ययन विधि

बाइबल के किसी चरित्र का चयन करें और उनके जीवन की एक निश्चित अवधि के दौरान उनके विश्वास, जीवन, विशेषताओं और अनुशासन का अध्ययन करें। उनके व्यवहार, शक्तियों और कमज़ोरियों पर

नोट्स बनाएँ और दिखाएँ कि उनके जीवन में बाइबल की सच्चाइयाँ कैसे दिखाई देती हैं। अपने अध्ययन के दौरान उस व्यक्ति के साथ रहें; उनके जूते पहनकर चलें। और देखें कि वे कैसे सोचते हैं, अनुभव करते हैं और परिस्थितियों पर कैसी प्रतिक्रिया करते हैं। विचार करें कि आप उनके विश्वास, अच्छे व्यवहार या अन्य अनुशासनों को अपने जीवन में कैसे अपना सकते हैं और इन्हें लागू कर सकते हैं। (यदि संभव हो, तो उस समय की संस्कृति, भूगोल, धार्मिक और राजनीतिक माहौल पर नज़र डालें, ताकि आप अतिरिक्त जानकारी प्राप्त कर सकें और उनके शब्दों और कार्यों को बेहतर ढंग से समझ सकें)।

अभ्यास 1: दाऊद के चरित्र का अध्ययन करें, जब वह एक चरवाहा लड़का था, और जब तक उसे राजा के रूप में अभिषिक्त नहीं किया गया था (1 शमूएल 16 से 2 शमूएल 5)। दाऊद के किसी भी तीन गुणों और विशिष्ट घटनाओं की पहचान करें जहाँ ये गुण स्पष्ट थे। अपने अवलोकनों का सारांश लिखें और बताएं कि इन गुणों ने दाऊद के जीवन और नेतृत्व को कैसे प्रभावित किया।

अभ्यास 2: सुसमाचारों में से पतरस को चुनें। तीन ऐसे उदाहरणों की पहचान करें और उनका दस्तावेजीकरण करें जहाँ पतरस ने विकास या परिवर्तन प्रदर्शित किया (उदाहरण के लिए, लूका 22:54-62; यूहन्ना 21:15-17; प्रेरितों के काम 2:14-41)। पतरस के उदाहरण से आप किस व्यक्तिगत विकास का अनुकरण कर सकते हैं, इस पर एक विचार लिखें।

अभ्यास 3: बाइबल में से एक महिला का चयन करें (उदाहरण के लिए, डेबोरा, एस्तेर, मरियम, यीशु की माँ, मार्था, या मरियम मगदलीनी) और उसके अद्वितीय गुणों को उजागर करते हुए एक चरित्र चित्रण लिखें और वह किस तरह दैवीय गुणों का उदाहरण प्रस्तुत करती है।

4) जीवनी अध्ययन विधि

जीवनी अध्ययन एक ऐसी विधि है जो बाइबल में लोगों के जीवन को उनके जन्म से लेकर मृत्यु तक (जितना कि पवित्रशास्त्र में दर्ज है) जांचती है, और उनके विश्वास की व्यक्तिगत यात्रा को करीब से देखती है। हम उन सबक की तलाश करते हैं जिन्हें हम सीख सकते हैं, अच्छी चीजें जिन्हें हमअनुकरण कर सकते हैं और ऐसी गलतियाँ जिन्हें हमें टालना चाहिए। हम परमेश्वर के बारे में सीखते हैं और यह भी कि वह लोगों के जीवन में कैसे काम करता है, उसकी विश्वासयोग्यता, उसकी अच्छाई, आदि।

अभ्यास 1: यूसुफ के जीवन का अध्ययन करें (उत्पत्ति 37,39 से 50)। विभिन्न चरणों में—उसकी युवावस्था, गुलामी, कारावास, और नेतृत्व के माध्यम से उसकी यात्रा का दस्तावेजीकरण करें। प्रत्येक चरण में लचीलापन और परमेश्वर की योजना में विश्वास के बारे में क्या सिखाया गया है, इस पर एक सारांश लिखें। *यूसुफ के माध्यम से हम परमेश्वर के बारे में क्या सीखते हैं?*

अभ्यास 2: रूत के जीवन पर शोध करें। उसके जीवन की प्रमुख घटनाओं की एक समयरेखा बनाएँ और पहचानें कि ये घटनाएँ उसके चरित्र और विश्वास के बारे में क्या बताती हैं। रूत की वफ़ादारी और विश्वास की कहानी आधुनिक जीवन के लिए कैसे प्रासंगिक है, इस पर एक पैराग्राफ़ के साथ निष्कर्ष निकालें। *रूत के जीवन के माध्यम से हम परमेश्वर के बारे में क्या सीखते हैं?*

अभ्यास 3: प्रेरित पौलुस के जीवन पर शोध करें। उसकी मिशनरी यात्राओं और उसके जीवन की प्रमुख घटनाओं की एक समयरेखा बनाएँ। अपनी सेवकाई के दौरान उसने जो अलग-अलग भूमिकाएँ निभाईं, उन पर विचार करें। *हम किन गुणों का अनुकरण कर सकते हैं? प्रेरित पौलुस से हम अगुवाई के कौन से सबक सीखते हैं।*

अभ्यास 4: बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना पर एक संक्षिप्त जीवनी लिखें, जिसमें एक भविष्यवक्ता के रूप में उनकी भूमिका और यीशु के साथ उनके संबंधों पर ध्यान केंद्रित किया गया हो। *बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना से हम कौन सी प्रमुख बात सीखते हैं?*

C) विषयगत / सामयिक / शब्द अध्ययन दृष्टिकोण

इस दृष्टिकोण में, हम "**निगमनात्मक अध्ययन**" का उपयोग करते हैं। हम एक विषय से आरंभ करते हैं, उस विषय से संबंधित वचनों को खोजते हैं और विशिष्ट निष्कर्षों पर पहुँचते हैं। हम एक सामान्य, व्यापक तस्वीर से शुरू करते हैं और विशिष्ट सत्य, अंतर्दृष्टि और सिद्धांत पर पहुँचते हैं।

5) विषयगत बाइबल अध्ययन पद्धति

किसी प्रसंग (विषय) का अध्ययन करना इस बात की सम्पूर्ण समझ प्राप्त करने की यह एक उत्तम रीति है कि बाइबल उस प्रसंग / विषय पर क्या कहती है। जब आप किसी विषय का निर्णय ले लेते हैं, तो उस विषय पर आप जो प्रश्न पूछना चाहते हैं, उन्हें लिख लें। इसके बाद, उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक उस विषय पर सभी पुस्तकों के वचनों और अंशों को पढ़ें। ऐसा करते समय, इन वचनों और अंशों को उन प्रश्नों / शीर्षकों के अंतर्गत एकत्रित करें, जिन्हें आप संबोधित करना चाहते थे। इसके अलावा, आपको नई अंतर्दृष्टि और प्रश्न मिलेंगे, जिन्हें आप अपनी सूची में जोड़ सकते हैं। आप अपने शिक्षण विचारों को तार्किक प्रवाह (या रूपरेखा) में व्यवस्थित कर सकते हैं जिसे दूसरों के साथ साझा किया जा सकता है। कभी-कभी, मुख्य विषय को पूर्णतः समझने हेतु निकटता से संबंधित अन्य उप-विषयों / विषयों को देखना आवश्यक होगा। कृपया ध्यान रखें कि एक संपूर्ण सामयिक बाइबल अध्ययन करने में कई सप्ताह / महीने लग सकते हैं।

अभ्यास 1: "मसीह में हमारी पहचान" विषय पर विचार करें। हम

आरंभिक प्रश्न पूछ सकते हैं जैसे—*मसीह में होने का क्या अर्थ है? हम मसीह में कैसे आए? मसीह में मेरी पहचान क्या है—परमेश्वर क्या कहता है कि मैं मसीह में कौन हूँ? मैं मसीह में कौन हूँ, यह जानना कि एक विश्वासी के रूप में मेरे जीवन को बदलने में यह कैसे मदद करेगा? मैं मसीह में अपनी पहचान के अनुसार कैसे जी सकता हूँ?* इसके बाद, उन उपकरणों का उपयोग करके, जिनके बारे में हम बाद में बात करेंगे, "मसीह में", "उसमें", "जिसमें", "उसके द्वारा", "मुझमें", आदि के बारे में बोलने वाले सभी वचनों और अंशों को खोजने के लिए प्रयास करें। प्रत्येक वचन / अंश को देखें और देखें कि वे आरंभिक प्रश्नों के उत्तर देने में किस प्रकार सहायक हैं। इन वचनों का अन्वेषण करते समय उप-शीर्षक जोड़ें। जब हम यह अध्ययन करते हैं, हम कई उप-विषयों का भी विस्तार से अध्ययन करेंगे। इनमें से कुछ उप-विषय होंगे धार्मिकता, औचित्य, पहचान, आत्मा से भरा जीवन, मुक्ति, आदि। APC पुस्तक, **"हम मसीह में कौन हैं"** देखें, जो इस तरह के अध्ययन का परिणाम है, जो **apcwo.org/books** पर मुफ़्त डाउनलोड के रूप में उपलब्ध है।

अभ्यास 2: बाइबल में "विश्वास" के विषय का अध्ययन करें। कुछ प्रश्न जो हम पूछना चाहेंगे वे होंगे—*विश्वास क्या है? हम विश्वास का अभ्यास कैसे करते हैं? हम विश्वास में कैसे बढ़ते हैं? हम संदेह और अविश्वास पर कैसे विजय प्राप्त करते हैं? प्रभु यीशु ने विश्वास के बारे में क्या सिखाया? इब्रानियों 11 में सूचीबद्ध कुछ विश्वासियों से हम क्या सीख सकते हैं?* आप प्रश्नों की इस सूची में और भी प्रश्न जोड़ सकते हैं। "विश्वास", "विश्वास करना", "भरोसा", आदि का संदर्भ देने वाले सभी वचनों को खोजें और गहन अध्ययन करें। जैसा कि हम यह अध्ययन करते हैं कि, अब्राहम का जीवन कुछ ऐसा है जिस पर हम गहनता से विचार करेंगे, क्योंकि परमेश्वर उसे "विश्वास के पिता" के रूप में दर्शाया गया है (रोमियों 4:11)। हम अब्राहम के जीवन को पुराने नियम में और नए नियम में उसके बारे में जो सिखाया गया है,

इन दोनों पर दृष्टि डालेंगे।

अभ्यास 3: बाइबल में "धन, वित्त, संपत्ति, भौतिक संपत्ति" के विषय का अध्ययन करें। उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक बाइबल को स्कैन करें और देखें कि हम क्या सीख सकते हैं। कुछ प्रश्न जो हम पूछ सकते हैं—*परमेश्वर ने अपने लोगों से धन और भौतिक चीज़ों के बारे में क्या कहा? आस्था रखने वाले लोगों ने अपने धन को कैसे संभाला और अपनी सांसारिक संपत्ति से परमेश्वर का सम्मान कैसे किया? क्या सफल होने और आय, कमाई और धन बढ़ाने की इच्छा करना सही है? हम अपनी वित्तीय स्थिति से अच्छे प्रबंधक कैसे बन सकते हैं? क्या निवेश करना और अपने पैसे को बढ़ाना सही है? धन, संपत्ति और सांसारिक संपत्ति के बारे में मेरे दिल और जीवन का रुख कैसा होना चाहिए? हमें किन खतरों से बचना चाहिए और हम स्वयं को कैसे सुरक्षित रख सकते हैं?* इस अध्ययन को करते समय, हमें जिन उप-विषयों का पता लगाना होगा, उनमें उदारता / दान, दसमांश, बलिदान आदि पर बाइबल की शिक्षाएँ सम्मिलित होंगी।

6) विषय बाइबल अध्ययन विधि (विषय विधि)

बाइबल अध्ययन की विषय विधि में, हम बाइबल में से एक विषय चुनते हैं और उस विषय पर बाइबल में कही गई कुछ बातों पर एक बुनियादी अध्ययन करते हैं। यह **बाइबल अध्ययन की विषय विधि** से छोटी है और इसका दायरा बहुत कम विस्तृत है। विषय अध्ययन में, हम कुछ अंशों या वचनों की जाँच करते हैं जो सीधे एक ही विषय पर लागू होते हैं और उन अंशों से सबक और अंतर्दृष्टि प्राप्त करते हैं। हमारा लक्ष्य अपने रुचि के विषय की कुछ समझ प्राप्त करना है। यह व्यापक नहीं है, न ही यह विषय से संबंधित सभी प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास है।

अभ्यास 1: पवित्र आत्मा से भरे जीवन के विषय पर अध्ययन करें। इन

तीन अंशों पर विचार करें (इफिसियों 5:16-21; गलातियों 5:16-26; रोमियों 8:1-17)। *पवित्र आत्मा से भरे होने का क्या मतलब है? पवित्र आत्मा से भरे होने की विशेषताएँ क्या हैं? इन अंशों से पवित्र आत्मा से भरे जीवन के विषय पर आपको और क्या अंतर्दृष्टि मिलती है?*

अभ्यास 2: परमेश्वर के अनुग्रह के विषय पर कम से कम पाँच अंशों (उदाहरण के लिए, रोमियों 3:23,24; रोमियों 5:1,2; इफिसियों 2:8,9; इफिसियों 3:7-9; 2 कुरिन्थियों 12:9) का अध्ययन करें। वचनों के अनुसार अनुग्रह क्या है और यह विश्वासी के परमेश्वर के साथ संबंध को और दैनिक जीवन को कैसे प्रभावित करता है, यह बताते हुए एक सारांश लिखें।

अभ्यास 3: इन अंशों की जाँच करके क्षमा के विषय पर अध्ययन करें—मत्ती 6:14,15; मरकुस 11:24; लूका 23:34; और इफिसियों 4:32। इन अंशों से इस विषय पर आपको जो अंतर्दृष्टि मिली है, उसका सारांश लिखें।

अभ्यास 4: "आत्मा में प्रार्थना करना" वाक्यांश पर विचार करें। किसी भी सॉफ़्टवेयर टूल का उपयोग करके नए नियम में इस वाक्यांश को खोजें। उन सभी उदाहरणों का अध्ययन करें जहाँ "आत्मा में प्रार्थना करने", "पवित्र आत्मा में प्रार्थना करने", का उपयोग किया जाता है। *नये नियम का कौन सा लेखक इस वाक्यांश का सबसे अधिक बार उपयोग करता है? क्या यह निष्कर्ष निकालना हमारे लिए सही होगा कि लेखक की समझ में, और इसलिए प्रारंभिक चर्च की समझ में, "आत्मा में प्रार्थना करना" वाक्यांश अन्य भाषा में प्रार्थना करने का पर्याय है? क्या आत्मा में प्रार्थना करना विश्वासी की इच्छा के नियंत्रण में है, यानी क्या विश्वासी आत्मा में, कभी भी, कहीं भी, अपनी पसंद के अनुसार प्रार्थना कर सकता है? इस विषय पर आप पवित्रशास्त्र से और क्या अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं?*

7) शब्द अध्ययन विधि

सामयिक बाइबल अध्ययन विधि की तरह, शब्द अध्ययन करना एक और रीति है जिससे आप इस बात पर अच्छी पकड़ बना सकते हैं कि वचन किसी विशिष्ट विषय पर क्या सिखाते हैं। आप पुराने नियम या नए नियम के लिए विशिष्ट शब्द अध्ययन कर सकते हैं, या पुराने और नए नियम दोनों में इसका पता लगा सकते हैं। उदाहरण के लिए, किसी विशेष शब्द के लिए, “प्रेम"। हम अपने पास उपलब्ध उपकरणों का उपयोग करके बाइबल में इस शब्द का अनुसरण करते हैं। पता लगाएँ कि पवित्रशास्त्र में कोई शब्द कितनी बार आता है और इसका उपयोग कैसे किया जाता है। हम जिस अंग्रेजी शब्द का अध्ययन कर रहे हैं, उसमें अनुवादित विभिन्न हिब्रू या ग्रीक शब्दों का पता लगाएँ। हिब्रू या ग्रीक में मूल शब्दों का अर्थ पता लगाएँ। शब्दकोश का उपयोग करके देखें कि इन शब्दों का उपयोग विभिन्न संदर्भों में कैसे किया जाता है। अंग्रेजी अनुवादों की तुलना करके देखें कि अनुवादकों ने मूल शब्दों के अर्थ को कैसे समझा और प्रस्तुत कियाहै। जब आप वचन का अध्ययन करते हैं, तो आप सबक, अंतर्दृष्टि, परमेश्वर और उनके तरीकों के बारे में प्रकाशन और बाइबल की सच्चाई के व्यावहारिक अनुप्रयोग प्राप्त कर सकते हैं। कृपया ध्यान रखें कि गहन अध्ययन करने में कई सप्ताह / महीने लग सकते हैं।

अभ्यास 1: नए नियम में "प्रेम" शब्द का अध्ययन करें। *अंग्रेजी में “प्रेम” के रूप में अनुवादित विभिन्न ग्रीक शब्द क्या हैं? आपको क्या अंतर्दृष्टि मिलती है? अगापे प्रेम को इतना विशिष्ठ क्या बनाता है?*

अभ्यास 2: नए नियम में "अधिकार" पर एक शब्द अध्ययन करें। *नए नियम में आत्मिक अधिकार के बारे में आपको क्या अंतर्दृष्टि मिलती है? नए नियम में देखे जाने वाले आत्मिक अधिकार के विभिन्न प्रकार क्या हैं? हम शैतानी शक्तियों पर आत्मिक अधिकार का प्रयोग कैसे करते हैं?*

अभ्यास 3: पुराने और नए नियम में "जीवन" पर एक वचन का अध्ययन करें। *आपको क्या अंतर्दृष्टि मिलती है? "ज़ो" जीवन को इतना खास क्या बनाता है? "ज़ो" जीवन हमारे दैनिक जीवन को कैसे प्रभावित करता है? क्या "ज़ो" जीवन "बायोस", "प्सुचे" और "एनास्ट्रोफ़े" को प्रभावित करता है?*

अभ्यास 4: पुराने और नए नियम में "आत्मा" पर एक शब्द अध्ययन करें। *"आत्मा" के लिए अनुवादित हिब्रू और ग्रीक शब्द क्या हैं? इन शब्दों के अलग-अलग अर्थ क्या हैं? हम कैसे निर्धारित करते हैं कि संदर्भ मानव आत्मा, दुष्ट आत्मा, स्वर्गदूतों और पवित्र आत्मा के लिए कब किया जा रहा है? मानव आत्मा कब बनाई गई? आत्मिक मृत्यु क्या है? क्या शारीरिक मृत्यु के बाद भी मानव आत्मा हमेशा के लिए जीवित रहती है? शरीर के मरने के बाद मानव आत्मा कहाँ जाती है? मानव प्राण और मानव आत्मा में क्या अंतर है? क्या आत्मा में प्राण एक घटक होता है जो शारीरिक रूप से मरने के बाद भी जीवित रहता है? इस अध्ययन से आपको और क्या जानकारी मिलती है?*

D) अध्याय अध्ययन दृष्टिकोण

अध्याय अध्ययन हमें पवित्रशास्त्र के छोटे-छोटे अंशों पर विचार करने और कुछ मुख्य अंतर्दृष्टियों पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देता है, जबकि हम व्याख्यात्मक प्रक्रिया को लागू करते हैं। हम **अध्याय सारांश** दृष्टिकोण अपना सकते हैं जो एक संक्षिप्त विवरण प्रदान करता है या **अध्याय विश्लेषण** दृष्टिकोण का उपयोग करके गहराई से काम करता है।

8) अध्याय सारांश अध्ययन विधि

अध्याय सारांश अध्ययन विधि में हमारा लक्ष्य अध्याय में मुख्य अंतर्दृष्टि को पकड़ना है। ऐसा करने का एक तरीका अध्याय को

विषयों के आधार पर उसके खंडों में विभाजित करना है और प्रत्येक खंड को एक उपयुक्त शीर्षक देना है जो उस खंड के मुख्य विचार का वर्णन करता है। फिर हम अध्याय से प्राप्त मुख्य अंतर्दृष्टि के अनुप्रयोग पर विचार करते हैं।

अभ्यास 1: यूहन्ना 15 के एक अध्याय सारांश का अध्ययन करें। इस अध्याय को उन विषयों के आधार पर खंडों में विभाजित करें जो साझा किए जा रहे हैं। प्रत्येक खंड को एक छोटा, सरल शीर्षक दें जो उस खंड के फोकस को पकड़ता है। इस अध्याय से मुख्य अंतर्दृष्टि को सारांशित करें और उनके अनुप्रयोग पर चर्चा करें।

अभ्यास 2: रोमियों 6 का एक अध्याय सारांश अध्ययन करें। इस अध्याय को उन विषयों के आधार पर खंडों में विभाजित करें जो साझा किए जा रहे हैं। प्रत्येक खंड को एक छोटा, सरल शीर्षक दें जो उस खंड के प्रमुखता को पकड़ता है। इस अध्याय से मुख्य अंतर्दृष्टि को सारांशित करें और उनके अनुप्रयोग पर चर्चा करें।

(आप इसी तरह अपनी पसंद के अन्य अध्यायों के साथ काम कर सकते हैं)।

9) अध्याय विश्लेषण अध्ययन विधि

अध्याय विश्लेषण अध्ययन विधि अध्याय पर गहन नज़र डालती है। अध्याय सारांश अध्ययन विधि में हमने जो बताया है, उसके अलावा, अध्याय विश्लेषण में, हम प्रत्येक अनुच्छेद, वाक्य और शब्द की विस्तार से जाँच करते हैं। हम विशिष्ट शब्दों, वाक्यांशों और भाषा (**उदाहरण:** चित्रण) का अध्ययन करते हैं। हम आत्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि सेटिंग्स पर विचार करते हैं जिसमें पुस्तक लिखी गई थी और पुस्तक लिखते समय लेखक के क्या विशिष्ट उद्देश्य थे। हम इस बात पर विचार करते हैं कि अध्याय में प्रत्येक प्रमुख तत्व

(शब्द, वाक्यांश, भाषा विवरण, आदि) पुस्तक के समग्र संदेश में कैसे योगदान करते हैं।

अभ्यास 1: 1 कुरिन्थियों 14 का अध्याय विश्लेषण अध्ययन करें। *यह अध्याय क्यों लिखा गया था (यह अध्याय इस पुस्तक में क्यों है)? मुख्य भाग और उनके शीर्षक क्या हैं? मुख्य वचन और वाक्यांश क्या हैं? इस अध्याय में पौलुस ने कितनी बार "आत्मा में" का उपयोग किया है? इस अध्याय में पौलुस ने कितनी बार "चुप रहो" का उपयोग किया है? हम जानते हैं कि 1 कुरिन्थियों 12 में पवित्र आत्मा के कम से कम 9 वरदान सूचीबद्ध किए गए हैं। 1 कुरिन्थियों 14 में, अन्यभाषा और भविष्यवाणी पर ज़्यादा ध्यान आकर्षित करती हैं। ऐसा क्यों है? इस अध्याय में प्रस्तुत किए गए अलग-अलग वास्तविक जीवन परिदृश्य क्या हैं? आत्मा के वरदानों के माध्यम से विश्वासियों औरअविश्वासियों की सेवा कैसे की जाती है?* 1 कुरिन्थियों 14 में विस्तृत, गहन नज़र डालने से आपको जो अन्य अंतर्दृष्टि मिलती है, उसे दस्तावेज़ित करें।

अभ्यास 2: पिछले अभ्यास में किए गए अध्याय सारांश पर आगे बढ़ते हुए रोमियों 6 का एक अध्याय विश्लेषण अध्ययन करें।

अभ्यास 3: इफिसियों 6 का एक अध्याय विश्लेषण अध्ययन करें। *इस अध्याय के लिए आप कौन से विभिन्न खंड और शीर्षक दे सकते हैं? "मजबूत", "शक्ति", "पराक्रमी" शब्दों का अध्ययन करें। पौलुस द्वारा अंधकार के प्रभुत्व में पदानुक्रम का वर्णन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले शब्दों का अध्ययन करें जैसे "प्रधानताएँ", "शक्तियाँ", "शासक", और दुष्ट आत्माएँ। उस समय प्रयोग किए जाने वाले रोमन सैनिक के कवच के संदर्भ में विश्वासी के कवच के प्रत्येक हिस्से का अध्ययन करें।*

E) पुस्तक अध्ययन दृष्टिकोण

परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने के लिए सबसे लाभदायक रीतियों में से एक है—पूरी पुस्तक का अध्ययन करना। इससे हमें समय, लोगों, संदेश और पुस्तक में प्रकट परमेश्वर के हृदय की गहराई से खोज करने में सहायता मिलती है। ध्यान रखें कि पुस्तक अध्ययन करने में कई सप्ताह / महीने लग सकते हैं।

10) पुस्तक पृष्ठभूमि और सर्वेक्षण विधि

बाइबल अध्ययन की पुस्तक पृष्ठभूमि और सर्वेक्षण विधि में उस समय की पृष्ठभूमि पर शोध करना शामिल है जब पुस्तक बोली या लिखी गई थी। जैसा कि हम बाद में चर्चा करेंगे, इसमें उस समय के भूगोल, इतिहास, संस्कृति, धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक वातावरण से परिचित होना शामिल है। इस पर शोध करने के बाद, हम पुस्तक में संबोधित किए जा रहे मुख्य विषय या विषयों को समझने के लिए पुस्तक को कई बार पढ़ते हैं। हम संबोधित किए जा रहे लोगों (या व्यक्तियों) के साथ यात्रा करने, उनके समय में जीने और परमेश्वर के हृदय, उनके तरीकों और विचारों और उनके लोगों के जीवन में उनके काम करने के तरीके के बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। हम पुस्तक के माध्यम से जो कुछ भी देखते हैं, उसके आधार पर जीवन अनुप्रयोग के सबक लेते हैं।

अभ्यास 1: रूत की पुस्तक की पृष्ठभूमि पर शोध और सर्वेक्षण करें। पुस्तक की ऐतिहासिक व्यवस्था, श्रोतागण, मुख्य उद्देश्य और मुख्य विषयों का दस्तावेजीकरण करें। बताएँ कि पृष्ठभूमि जानने से इस पुस्तक में दिए गए संदेश की समझ कैसे बढ़ती है।

अभ्यास 2: फिलिप्पियों को लिखे पौलुस के पत्र की पृष्ठभूमि पर शोध और सर्वेक्षण करें। फिलिप्पियों के चर्च के साथ पौलुस के संबंध, सांस्कृतिक संदर्भ और मुख्य विषयों पर शोध करें। फिलिप्पियों में

मुख्य विषयों पर आप जो शोध करते हैं, उसका दस्तावेजीकरण करें।

इसी तरह, आप बाइबल की कई पुस्तकों की पृष्ठभूमि पर शोध और सर्वेक्षण कर सकते हैं।

11) बाइबल अध्ययन की पुस्तक संश्लेषण विधि

पुस्तक संश्लेषण विधि में, हम अध्ययन विधियों के सभी पहलुओं को जोड़ते हैं जिन्हें हमने सीखा है और इनका उपयोग किसी विशेष पुस्तक का गहन और विस्तृत अध्ययन करने के लिए करते हैं। हम पृष्ठभूमि पर शोध करते हैं, पुस्तक का सर्वेक्षण करते हैं, अध्याय दर अध्याय, वचन दर वचन का विश्लेषण करते हैं और मुख्य शब्दों, वाक्यांशों, भाषा के पहलुओं की गहराई से जाँच करते हैं और इन्हें मिलाकर परमेश्वर और उसकी रीतियों के बारे में सीखते हैं। जबकि इसके लिए बहुत समय, प्रयास और ध्यान की आवश्यकता होगी, किन्तु यह हमें बाइबल की उस पुस्तक की स्पष्ट समझ प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

बाइबल अध्ययन के लिए उपकरण और संसाधन

हम वास्तव में ऐसे समय में रहने के लिए विशेषाधिकार प्राप्त हैं जब ज्ञान में वृद्धि हुई है और यह तेजी से बढ़ता जा रहा है। प्रौद्योगिकी ने हमें ऐसे उपकरण दिए हैं जिनके माध्यम से हम ज्ञान और जानकारी को बहुत तेज़ी से और आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। हम आपको इन उपकरणों (और कई अन्य उपलब्ध उपकरणों) का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं जो हमें शास्त्रों के अध्ययन में हमारी सहायता करते हैं।

1) सॉफ़्टवेयर और ऑनलाइन टूल्स

ऐसे कई निःशुल्क (और कुछ सस्ते) सॉफ़्टवेयर टूल्स हैं जिनका उपयोग हम परमेश्वर के वचन के अपने अध्ययन में कर सकते हैं।

इनमें से कुछ सॉफ़्टवेयर टूल्स यहाँ सूचीबद्ध किए गए हैं।

- **ई-स्वॉर्ड (e-sword.net**) ई-स्वॉर्ड **स्ट्रॉन्ग कॉनकॉर्डेंस** के साथ आता है जहाँ आप हिब्रू और ग्रीक शब्दों और उनके अर्थों को देख सकते हैं। आप तुलनात्मक अध्ययन के लिए बाइबल के कई निःशुल्क संस्करण भी डाउनलोड कर सकते हैं। निःशुल्क टिप्पणियाँ और कई अन्य संसाधन हैं (नीचे सूचियाँ देखें)। वाइन के पुराने और नए नियम के शब्दों के शब्दकोश, अन्य बाइबल संस्करण, आदि के खरीदे गए संस्करण हैं।
- यू वर्शन **(Bible.com)**
- ब्लू लेटर बाइबल **(blueletterbible.org)**
- लोगोस् बाइबल सॉफ्टवेयर **(logos.com)**
- बाइबल अध्ययन टूल्स (**Biblegateway.com)**

(कई अन्य)

2) हिब्रू और ग्रीक शब्दकोश

- स्ट्रॉन्ग के हिब्रू और ग्रीक शब्दकोश
- वाइन का पूरा एक्सपोजिटरी शब्दकोश
- थायर की ग्रीक परिभाषाएँ
- न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल की संपूर्ण शब्दानुक्रमणिका
- ब्राउन-ड्राइवर-ब्रिग्स की हिब्रू परिभाषाएँ
- माउंस संक्षिप्त ग्रीक-अंग्रेजी शब्दकोश
- नए नियम में वचन अध्ययन (एम. आर. विंसेंट) मार्विन आर. विंसेंट, डी.डी. द्वारा

3) टिप्पणियाँ और अध्ययन बाइबलें

- स्पिरिट-फिल्ड लाइफ़ बाइबल, थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स
- डेविड गुज़िक की एंड्योरिंग वर्ड कमेंट्री, डेविड गुज़िक एंड एंड्योरिंग वर्ड मीडिया द्वारा कॉपीराइट
- डेक के अध्ययन नोट्स (फ़िनिस डेक), फ़िनिस जेनिंग्स डेक द्वारा कॉपीराइट।

(कई अन्य)

4) निःशुल्क ऑनलाइन पाठ्यक्रम

- **apcbiblecollege.org**

(कई अन्य)

परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने के लिए हम जिन विभिन्न तरीकों और उपकरणों का उपयोग कर सकते हैं, उन्हें समझने के बाद, अब हम वचनों को सही रूप से समझने और व्याख्या करने में सहायता करने के लिए सिद्धांतों को सीखने की महत्वपूर्ण यात्रा पर निकल पड़े हैं।

6
यीशु मसीह का व्यक्तित्व

जब आप किसी व्यक्ति को जानते हैं, उदाहरण के लिए, किसी निकट परिवार के सदस्य या मित्र को, तो आप उचित रूप से समझते हैं कि वे क्या कह रहे हैं, क्योंकि आप न सिर्फ उनके द्वारा बोले गए शब्दों को सुनते हैं, बल्कि आप यह भी समझते हैं कि "वे कहाँ से आ रहे हैं।" आप उनके हृदय, उनकी व्यक्तिगत यात्रा और अन्य कारकों को जानते हैं जो वे जो कह रहे हैं और उसे उचित परिप्रेक्ष्य में रखते हैं। इसी तरह, आप कुछ ऐसा पहचान सकते हैं जो सटीक नहीं है या उनके व्यक्तित्व और चरित्र के अनुरूप नहीं है, और जो वे सामान्य रूप से कहते या करते हैं उससे अलग है।

परमेश्वर कभी भी ऐसा कुछ नहीं कहेगा या करेगा जो उसके व्यक्तित्व और स्वभाव के विपरीत हो।

परमेश्वर अपने व्यक्तित्व और स्वभाव में स्थिर और सुसंगत है। वह बदलता नहीं है। *"क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं;"* (मलाकी 3:6)। हमारे ज्योतियों के पिता के साथ *"जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।"* (याकूब 1:17)। जब उसने मूसा से बात की, तो उसने स्वयं को महान *"मैं हूँ"* के रूप में प्रकट किया। वह परमेश्वर जो समय के दायरे से बाहर रहता है, जो कभी बूढ़ा नहीं होता और हमेशा एक जैसा रहता है।

निर्गमन 3:13,14

13मूसा ने परमेश्वर से कहा, "जब मैं इस्राएलियों के पास जाकर उनसे कहूँ, 'तुम्हारे पितरों के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है,' तब यदि वे मुझ से

पूछें, 'उसका क्या नाम है?' तब मैं उनको क्या बताऊँ?"
14परमेश्‍वर ने मूसा से कहा, "मैं जो हूँ सो हूँ।" फिर उसने कहा, "तू इस्राएलियों से यह कहना, 'जिसका नाम मैं हूँ है उसी ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है'।"

जब हम वचनों की व्याख्या करते हैं, तो हमें हमेशा परमेश्वर के व्यक्तित्व, चरित्र और स्वभाव के अनुरूप रहते हुए ऐसा करना चाहिए। हमें परमेश्वर को कोई ऐसा व्यक्ति या कोई चीज़ घोषित करने का अधिकार नहीं है जिसे उसने स्वयं घोषित नहीं किया है।

परमेश्वर ने अपनी वाचा को नामों के माध्यम से प्रकट किया है

जिस प्रकार से हम परमेश्वर के व्यक्तित्व और स्वभाव को सीखते और समझते हैं, उनमें से एक रीति पवित्रशास्त्र में दिए गए उनके वाचा नामों या उपाधियों के माध्यम से है। प्रत्येक वाचा-नाम या उपाधि उनके व्यक्तित्व, उनके चरित्र और स्वभाव के अविकारी (अपरिवर्तनीय) पहलू का वर्णन करती है। ये वाचा-नाम उसकी इच्छा, विचार और कार्य को भी प्रकट करते हैं। परमेश्वर हमेशा अपने चरित्र और स्वभाव के अनुरूप ही बोलेगा और कार्य करेगा जैसा कि उसके वाचा-नामों के माध्यम से वर्णित है। यहोवा उस परमेश्वर की ओर संकेत करता है जो अनंत, स्वयं-अस्तित्ववान, स्वयं-निर्भर, अपरिवर्तनीय, वाचा का पालन करने वाला परमेश्वर है। यहोवा की प्रत्येक उपाधि इस अपरिवर्तनीय वाचा-पालन करने वाले परमेश्वर के एक निश्चित पहलू को उजागर करती है।

यहाँ यहोवा की कुछ सामान्य उपाधियों की सूची दी गई है।

- यहोवा यिरे (प्रभु प्रदान करेगा, उत्पत्ति 22:14)
- यहोवा राफा (प्रभु जो चंगा करता है, निर्गमन 15:26)
- यहोवा निस्सी (प्रभु मेरा झंडा है, निर्गमन 17:15)
- यहोवा शालोम (प्रभु शांति है, न्यायियों 6:24)

- यहोवा साबोत (सेनाओं का प्रभु, 1 शमूएल 1:3)
- यहोवा सिद्केनु (प्रभु हमारी धार्मिकता, यिर्मयाह 23:6)
- यहोवा शम्मा (प्रभु वहाँ है, यहेजकेल 48:35)
- यहोवा राह / रोही (प्रभु मेरा चरवाहा है, भजन संहिता 23:1)
- यहोवा मेकोद्दिशकेम / मिकादेश (प्रभु जो पवित्र करता है, लैव्यव्यवस्था 20:8)
- यहोवा अल एलयोन (प्रभु परमप्रधान, भजन संहिता 7:17)

ये सभी परमेश्वर के अपरिवर्तनीय गुण हैं। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जब हम वचनों की व्याख्या करते हैं, तो हम परमेश्वर के प्रति ईमानदार रहें।

यीशु मसीह के व्यक्तित्व में प्रकट परमेश्वर

बाइबल हमें स्पष्ट रूप से सिखाती है कि प्रभु यीशु मसीह देहधारी परमेश्वर हैं, इम्मानुएल, हमारे साथ परमेश्वर। *"परमेश्वर जो शरीर में प्रगट हुआ"* (1 तीमुथियुस 3:16)। यह यीशु *"वह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है"* (इब्रानियों 1:3)। *"वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप है"* (कुलुस्सियों 1:15)। यीशु हमारे लिए प्रकट परमेश्वर हैं। ईश्वरत्व की पूर्णता हमारे लिए शारीरिक रूप से प्रकट हुई (कुलुस्सियों 1:19; कुलुस्सियों 2:9)। इसलिए, यदि हम यह जानना चाहते हैं कि परमेश्वर वास्तव में कैसा है—परमेश्वर की सच्ची, सटीक और परिपूर्ण तस्वीर—तो हम इसे यीशु मसीह में देख सकते हैं।

यीशु ने जो कुछ भी कहा और किया है वह परमेश्वर की सिद्ध का प्रकटीकरण है। परमेश्वर के देहधारी पुत्र के सांसारिक जीवन का वर्णन करते हुए, इब्रानियों के लेखक ने कहा, *"तब मैं ने कहा, 'देख, मैं आ गया हूँ, पवित्रशास्त्र में मेरे विषय में लिखा हुआ है, ताकि हे*

परमेश्वर, तेरी इच्छा पूरी करूँ'" (इब्रानियों 10:7)।

हमें यीशु मसीह के व्यक्तित्व में प्रकट परमेश्वर की प्रकृति को समझना चाहिए। यीशु मसीह परमेश्वर की पूर्ण अभिव्यक्ति है। यीशु मसीह परमेश्वर की इच्छा की पूर्ण अभिव्यक्ति है। यीशु ने जो कुछ भी कहा और किया है वह परमेश्वर की इच्छा की अभिव्यक्ति है।

हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वचनों की हमारी व्याख्या उसके अनुरूप हो, जो यीशु ने जो कहा और किया है।

अनंत वचन, देहधारी वचन, लिखित वचन

यूहन्ना 1:1,14

[1]आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।
[14]और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।

प्रभु यीशु अनंत वचन हैं जो देहधारी वचन बन गए। देहधारी वचन अनंत वचन की पूर्ण अभिव्यक्ति है।

परमेश्वर के पुत्र, अनंत वचन, यीशु जो देहधारी वचन,लिखित वचन बने, और जो वचनों के अनुसार जीते, उपदेश देते और शिक्षा देते थे। छोटी उम्र से ही, यीशु पवित्रशास्त्र के अध्ययन करने और उसे सीखने में लगे रहे (लूका 2:46)। उन्होंने लिखित वचन का उपयोग करके प्रलोभनों का विरोध किया (मत्ती 4:1-10)। देहधारी वचन को पवित्र आत्मा द्वारा अभिषिक्त किया गया और वचनों को पूरा करने के लिए इस तरह से चला (लूका 4:21; मरकुस 14:49; लूका 24:44)। यीशु ने पुराने नियम के वचनों के अधिकार, विश्वसनीयता (मत्ती 4:4,7,10; मत्ती 5:18; मत्ती 12:40; मत्ती 22:29; मरकुस 13:19) और सत्यता (यूहन्ना 17:17) की पुष्टि की। उन्होंने पुराने नियम (मत्ती 23:35; लूका 24:44) में शामिल पुस्तकों की पुष्टि की। यीशु ने कहा कि शास्त्र

उनकी ओर संकेत करते हैं। *"तुम पवित्रशास्त्र में ढूँढ़ते हो, क्योंकि समझते हो कि उसमें अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है; और यह वही है जो मेरी गवाही देता है;"* (यूहन्ना 5:39)।

वचनों की हमारी व्याख्या यीशु मसीह के व्यक्तित्व की ओर संकेत करनी चाहिए और यीशु मसीह के जीवन, सेवकाई और शिक्षाओं में देखी गई परमेश्वर की अभिव्यक्ति के अनुरूप होनी चाहिए। पवित्र शास्त्र के किसी भी भाग की हमारी व्याख्या यीशु मसीह के व्यक्तित्व के माध्यम से प्रकट में होनी चाहिए और यीशु मसीह के जीवन, सेवकाई और शिक्षाओं में जो पूरी तरह और स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है, उसके अनुरूप होनी चाहिए।

जब हम पवित्र शास्त्र में ऐसे अंशों का सामना करते हैं जिन्हें समझना मुश्किल होता है, तो हम यीशु में दिखाई देने वाले प्रकाश के माध्यम से उनके साथ काम करते हैं। हम उन चीज़ों पर ध्यान देने की अपेक्षा जिन्हें हम पूरी तरह से नहीं समझ सकते, हम उन पर ध्यान देना चुनते हैं जो यीशु मसीह के जीवन में स्पष्ट रूप से प्रकट की गई हैं।

आइये हम कुछ उदाहरणों पर विचार करें।

यीशु ने चंगाई के बारे में परमेश्वर की इच्छा के बारे में कहा

जब हम यीशु के चमत्कार और चंगाई की सेवकाई को देखते हैं, तो हम कुछ अवलोकन कर सकते हैं, जो पवित्रशास्त्र की हमारी व्याख्या का मार्गदर्शन करेगा।

1) प्रभु यीशु ने कभी भी पिता की इच्छा पर प्रश्न नहीं उठाया कि जो भी उसके पास विश्वास से आए, उसे चंगा करे और मुक्ति दे। हम कभी भी यीशु को किसी ऐसे व्यक्ति से यह कहते हुए नहीं देखते हैं जो उसके पास विश्वास से आया हो—"यह परमेश्वर की इच्छा है कि तुम बीमार हो जाओ", या "यह परमेश्वर की इच्छा नहीं है कि

तुम चंगे हो जाओ।" वास्तव में, उस कोढ़ी के साथ जो परमेश्वर की इच्छा के बारे में संदेह में था कि वह उसे चंगा करेगा या नहीं, हमारे पास यह बातचीत दर्ज है, *"एक कोढ़ी उसके पास आया, उससे विनती की, और उसके सामने घुटने टेककर उससे कहा, 'यदि तू चाहे तो मुझे शुद्ध कर सकता है।' उसने उस पर तरस खाकर हाथ बढ़ाया, और उसे छूकर कहा, 'मैं चाहता हूँ तू शुद्ध हो जा।'"* (मरकुस 1:40,41)।

2) जो प्रभु यीशु के पास विश्वास के साथ चंगाई और मुक्ति की इच्छा से आए थे, उन्होंने कभी भी किसी को भी यह कहकर नहीं ठुकराया कि परमेश्वर की इच्छा नहीं है कि वे चंगे हो जाएँ। वास्तव में, बाइबल बार-बार कहती है कि "सभी" जो विश्वास से उनके पास आए, उन्हें चंगाई और मुक्ति मिली। बाइबल दर्ज करती है कि उन्होंने उन सभी को चंगा किया जो विश्वास से उनके पास आए थे। *"जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिनमें दुष्टात्माएँ थीं और उसने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया; और सब बीमारों को चंगा किया।"* (मत्ती 8:16)। *"यह जानकर यीशु वहाँ से चला गया। और बहुत लोग उसके पीछे हो लिए, और उस ने सब को चंगा किया,"* (मत्ती 12:15)। *"सब उसे छूना चाहते थे, क्योंकि उसमें से सामर्थ्य निकलकर सब को चंगा करती थी।"* (लूका 6:19)।

3) प्रभु यीशु ने कभी भी "यदि तेरी इच्छा हो" वाक्यांश का उपयोग करके चंगाई और मुक्ति के लिए प्रार्थना या सेवा नहीं की। कभी नहीं। एक बार भी नहीं। चंगाई और मुक्ति दी गई; यह उन सभी के लिए परमेश्वर की सिद्ध इच्छा थी जो विश्वास से आए थे।

आपके उद्धार के लिए परमेश्वर के समय पर यीशु (क्षमा, चंगाई, मुक्ति, आदि)—अभी!

अपने सांसारिक सेवकाई के दौरान, प्रभु यीशु ने कभी किसी को यह

कहकर नहीं लौटाया कि अभी उन्हें ठीक करने का परमेश्वर का समय नहीं है।

यहाँ कुछ अवलोकन हैं जो हम करते हैं।

1) प्रभु यीशु ने क्रूसित होने से पहले भी उन लोगों के पापों को क्षमा किया और चंगा किया और उनका उद्धार किया जो विश्वास से उनके पास आये थे।

2) जबकि उन्हें अपनी सांसारिक सेवकाई के दौरान केवल इस्राएल के घराने की सेवा करने के लिए भेजा गया था, प्रभु यीशु ने उन अन्यजातियों को चंगा किया जो विश्वास में उसके पास आए, उदाहरण के लिए, रोमी सूबेदार (मत्ती 8:5-13), कनानी स्त्री (मत्ती 15:21-28)। परमेश्वर का कार्यक्रम पिन्तेकुस्त के दिन से शुरू होकर सुसमाचार को पृथ्वी के छोर तक ले जाना था, किन्तु प्रभु यीशु ने इसे "अभी में खींच लिया" जो परमेश्वर के कार्यक्रम के अनुसार बाद के समय के लिए नियत किया गया था।

विश्वास के बारे में यीशु की शिक्षाएं

प्रभु यीशु ने परमेश्वर पर विश्वास करने और उस पर भरोसा रखने के बारे में बहुत कुछ सिखाया। (नीचे केवल कुछ वचन संदर्भ सूचीबद्ध हैं। सुसमाचारों में कई वचन ऐसे हैं जिनकी ओर हम इशारा कर सकते हैं)।

1) उन्होंने हमें चिंता न करने बल्कि भौतिक चीज़ों के बारे में परमेश्वर पर भरोसा रखने की शिक्षा दी—हम क्या खाते हैं, क्या पहनते हैं और जीवन की सभी आवश्यक चीज़ें (मत्ती 6:25-34)।

2) उन्होंने सिखाया कि विश्वास से चंगाई और मुक्ति मिलती है (मत्ती 9:22,29)।

3) उन्होंने हमें विश्वास से प्रार्थना करना और परमेश्वर पर भरोसा

करना सिखाया (मत्ती 21:22; मरकुस 11:22-24)।

4) उन्होंने सिखाया कि परमेश्वर पर भरोसा पहाड़ों को हिला सकता है और प्राकृतिक तत्वों पर हावी हो सकता है (मत्ती 17:20; मरकुस 11:22-24)।

5) उन्होंने सिखाया कि जब हालात बद से बदतर होते जाएँ, तो भी हमें डरना नहीं चाहिए, बल्कि केवल विश्वास करना चाहिए (मरकुस 5:36)।

6) उन्होंने सिखाया कि जब हम विश्वास करेंगे, तो हम परमेश्वर की महिमा देखेंगे (यूहन्ना 11:40)।

7) उन्होंने सिखाया कि अविश्वास हमें परमेश्वर की शक्ति का अनुभव करने से रोकता है (मत्ती 17:20; मरकुस 6:5,6)।

परमेश्वर में विश्वास करना, समय के साथ एक जैसा है क्योंकि जिस परमेश्वर में हम विश्वास करते हैं वह वही है। बाइबल का विश्वास आज भी उसी तरह काम करता है जैसा कि बाइबल के समय में करता था। विश्वास हृदय से होता है, और हमारे पास बाइबल के समय के लोगों से अलग तरह का विश्वास नहीं है। हमारे पास *"वही विश्वास की आत्मा है"* (2 कुरिन्थियों 4:13)।

पवित्र आत्मा के बारे में यीशु की शिक्षा

प्रभु यीशु ने अपनी सांसारिक सेवकाई के आरंभ में घोषणा की कि वह पवित्र आत्मा के अभिषेक से सेवकाई करते हैं (लूका 4:17-19)। उन्होंने यह भी स्पष्ट रूप से कहा कि वह दुष्टात्माओं को निकाल रहे थे और लोगों को परमेश्वर की आत्मा द्वारा मुक्ति दिला रहे थे (मत्ती 12:28)। उन्होंने सिखाया कि उनके शिष्य (विश्वासी) भी पवित्र आत्मा की का सामर्थ प्राप्त करेंगे और उनके द्वारा किए गए चमत्कारी कार्यों को और उससे भी महान कार्यों को करेंगे और इस प्रकार, उनके गवाह

बनेंगे। उन्होंने यह संकेत नहीं दिया कि पवित्र आत्मा उनके शिष्यों को सशक्त बनाना बंद कर देगा। पवित्र आत्मा का व्यक्तित्व, कार्य और सेवकाई पृथ्वी के छोर तक उनके गवाह बनने के लिए उनके लोगों के बीच जारी रहेगी। प्रभु यीशु ने कभी भी ऐसा कुछ भी संकेत नहीं दिया जो "समाप्तिवाद" के अंतर्गत सिखाया जाता है—कि जब नया नियम पूरा हो जाएगा या अंतिम प्रेरित की मृत्यु हो जाएगी, तो परमेश्वर की चमत्कारी शक्ति और पवित्र आत्मा के वरदान चर्च से समाप्त हो जाएंगे। उनकी उपस्थिति और पवित्र आत्मा के सशक्तीकरण के वादे के साथ उन्होंने जो महान आदेश दिया, वह युग के अंत तक (मत्ती 28:18-20) और पृथ्वी के सबसे दूर के हिस्सों (प्रेरितों के काम 1:8) तक के लिए था।

अंतिम समय के बारे में यीशु की शिक्षा

यीशु अंतिम समय के बारे में शिक्षा देते हैं अंतिम समय के बारे में अपनी शिक्षा में (मत्ती 24-25), प्रभु यीशु ने वास्तविक अर्थ में चीजों के बारे में बात की। उन्होंने मंदिर में खड़ी उजाड़ने वाले घृणित वस्तु का वास्तविक उल्लेख किया है। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक ईस्वी सन् 96 के आसपास लिखी गई थी, जो ईस्वी सन् 70 के काफी बाद की बात है, जब यरूशलेम में दूसरा मंदिर नष्ट हो गया था। प्रभु यीशु ने प्रेरित यूहन्ना को जो प्रकाशन दिया, उसमें मंदिर का संदर्भ दिया गया है (प्रकाशितवाक्य 11:1) और मंदिर के आंगन को पैरों तले रौंदा जा रहा है। दानिय्येल, पौलुस और बाइबल के अन्य लेखकों द्वारा अंतिम समय के बारे में बाइबल की भविष्यवाणी के प्रति हमारी समझ स्पष्ट रूप से सुसमाचारों और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में अंतिम समय के बारे में दी गई यीशु की शिक्षाओं पर आधारित होनी चाहिए।

प्रभु यीशु के जीवन, सेवकाई और शिक्षा में बहुत कुछ ऐसा है जिस पर हम ध्यान केंद्रित कर सकते हैं और जोर दे सकते हैं, जो कि सत्य और साहुल है, जिसके द्वारा हमें बाकी वचनों की व्याख्या करनी चाहिये।

वचनों की हमारी व्याख्या इन महत्वपूर्ण विषयों पर यीशु की शिक्षाओं और उन सभी अन्य बातों के अनुरूप होनी चाहिए जिन्हें उन्होंने अपने सांसारिक जीवन और सेवकाई के दौरान सिखाई और प्रदर्शित की हैं।

यीशु अनंत वचन है। वह कल, आज और हमेशा एक जैसा है। प्रभु यीशु आज कुछ भी अलग नहीं सिखाएंगे या करेंगे जो उन्होंने अपने सांसारिक सेवकाई के दौरान सिखाया और किया था।

परमेश्वर की ओर से कष्ट देने वाली आत्मा (1 शमूएल 16:14-16,23)?

आइये हम पुराने नियम के एक अंश पर विचार करें जिसे समझना थोड़ा मुश्किल है। और हम यीशु के जीवन, सेवकाई और शिक्षाओं से जो जानते हैं उसके आधार पर इसकी व्याख्या करें।

आइये हम निम्नलिखित वचनों पर विचार करें।

1 शमूएल 16:14-16,23

14यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया, और यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे घबराने लगा।

15तब शाऊल के कर्मचारियों ने उससे कहा, "सुन, परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट आत्मा तुझे घबराता है।

16हमारा प्रभु अपने कर्मचारियों को जो उपस्थित हैं आज्ञा दे, कि वे किसी अच्छे वीणा बजानेवाले को ढूँढ़ ले आएँ; और जब जब परमेश्वर की ओर से दुष्ट आत्मा तुझ पर चढ़े, तब तब वह अपने हाथ से बजाए, और तू अच्छा हो जाए।"

23और जब जब परमेश्वर की ओर से वह आत्मा शाऊल पर चढ़ता था, तब तब दाऊद वीणा लेकर बजाता; और शाऊल चैन पाकर अच्छा हो जाता था, और वह दुष्ट आत्मा उस में से हट जाता था।

1 शमूएल 18:10-14

10दूसरे दिन परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट आत्मा शाऊल पर बल से उतरा, और वह अपने घर के भीतर नबूवत करने लगा; दाऊद प्रतिदिन के समान

अपने हाथ से बजा रहा था, और शाऊल अपने हाथ में अपना भाला लिए हुए था;
[11]तब शाऊल ने यह सोचकर कि “मैं ऐसा मारूँगा कि भाला दाऊद को बेधकर भीत में धँस जाए,” भाले को चलाया, परन्तु दाऊद उसके सामने से दोनों बार हट गया।
[12]शाऊल दाऊद से डरा करता था, क्योंकि यहोवा दाऊद के साथ था और शाऊल के पास से अलग हो गया था।
[13]शाऊल ने उसको अपने पास से अलग करके सहस्रपति किया, और वह प्रजा के सामने आया जाया करता था।
[14]और दाऊद अपनी समस्त चाल में बुद्धिमानी दिखाता था; और यहोवा उसके साथ साथ था।

1 शमूएल 19:9,10
[9]जब शाऊल हाथ में भाला लिए हुए घर में बैठा था; और दाऊद हाथ से वीणा बजा रहा था, तब यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा शाऊल पर चढ़ा।
[10]शाऊल ने चाहा, कि दाऊद को ऐसा मारे कि भाला उसे बेधते हुए भीत में धँस जाए; परन्तु दाऊद शाऊल के सामने से ऐसा हट गया कि भाला जाकर भीत ही में धँस गया। और दाऊद भागा, और उस रात को बच गया।

हम इन वचनों से क्या समझते हैं?

पवित्र आत्मा शाऊल को छोड़ चुका था, और शाऊल पर एक दुष्ट आत्मा आई। परमेश्वर दाऊद के साथ था और दाऊद परमेश्वर की आत्मा द्वारा अभिषिक्त था। जब दाऊद परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त व्यक्ति के रूप में अपनी वीणा बजा रहा था, तब कष्टदायक आत्मा शाऊल में से निकल गई।

कुछ स्पष्ट प्रश्न जो हमें पूछने चाहिए वे हैं...

- क्या परमेश्वर के पास स्वर्ग में दुष्ट आत्माएँ हैं?
- क्या परमेश्वर शांति का स्रोत है या वह अपने लोगों को कष्ट देता (परेशान करता) है?

- क्या शाऊल परमेश्वर के सामने आज्ञाकारिता पर था या अवज्ञा के स्थान पर था?
- हम इस अध्याय से क्या समझते हैं कि *"यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा शाऊल पर चढ़ा"* (1 शमूएल 19:9)?
- यदि परमेश्वर एक दुष्ट आत्मा द्वारा भेजी गई थी, तो परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त व्यक्ति (दाऊद) अपनी वीणा बजाकर परमेश्वर द्वारा किए जा रहे कार्यों को क्यों रद्द करेगा? क्या यह परमेश्वर का परमेश्वर के विरुद्ध युद्ध नहीं होगा? जैसा कि यीशु ने कहा कि, *"शैतान कैसे शैतान को निकाल सकता है? यदि किसी राज्य में फूट पड़े, तो वह राज्य कैसे स्थिर रह सकता है? और यदि किसी घर में फूट पड़े, तो वह घर कैसे स्थिर रह सकेगा?"* (मरकुस 3:23-25)

यीशु ने दुष्टात्माओं को बाहर निकाला और कभी नहीं कहा कि दुष्टात्माएँ परमेश्वर द्वारा भेजी गई थीं। वास्तव में, आराधनालय में मिली एक स्त्री के लिए, यीशु ने कहा कि दुर्बलता की आत्मा कुछ ऐसी थी जिसे शैतान ने उस में डाली थी (लूका 13:11,16)। यीशु की सेवकाई से, हम जानते हैं कि यह परमेश्वर की आत्मा है जो हमें कष्टदायक, पीड़ादायक और अन्य दुष्टात्माओं को बाहर निकालने का सामर्थ देता है।यीशु ने सिखाया कि हमारा स्वर्गीय पिता उन लोगों को पवित्र आत्मा देता है जो उससे माँगते हैं (लूका 11:11-13) और वह अपने बच्चों को ऐसा कुछ नहीं देगा जो उनके लिए बुरा हो। यीशु शांति का राजकुमार है और वह अपने लोगों को शांति प्रदान करता हैन कि परेशानी। इसलिए, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि दुष्टातमाएं परमेश्वर से या परमेश्वर द्वारा नहीं भेजी जाती हैं। जब शाऊल परमेश्वर की आज्ञाकारिता से बाहर निकला और अनाज्ञाकारिता करने लगा, तो परमेश्वर की आत्मा ने उसे छोड़ दिया, और शाऊल ने स्वयं अपने आपको दुष्टात्माओं के लिए खोल दिया जो उसे परेशान करती थीं। शाऊल ईर्ष्या और घृणा

की गहराई में चला गया जिसने हर तरह के बुरे काम के लिए दरवाज़ा खोल दिया (याकूब 3:16)। परमेश्वर ने शाऊल को अपने निर्णय और चुनाव करने और परिणामों का सामना करने की अनुमति देकर ऐसा होने दिया। हालाँकि, जब पवित्र आत्मा द्वारा अभिषिक्त एक व्यक्ति (दाऊद) ने शाऊल की सेवा की, तो शाऊल को परेशान करने वाली दुष्ट आत्माएँ उसे छोड़कर चली गईं और उसे राहत मिली।

हमारा लक्ष्य यीशु मसीह के व्यक्तित्व, उनके जीवन, उनकी शिक्षाओं और सेवकाई में हमें दिए गए प्रकाश और प्रकाशन के माध्यम से वचनों को समझना और उसकी व्याख्या करना होना चाहिए।

7
पवित्र आत्मा का प्रकाश

पवित्र आत्मा—लेखक और सच्चा वर्णनकर्ता

पवित्र आत्मा वचनों का लेखक है। उसने उनके लेखन को प्रेरित किया। इसलिए, जब हम वचनों का अध्ययन, समझ और व्याख्या करने में अपनी भूमिका निभाते हैं, तो हमारी निर्भरता उस पर होनी चाहिए। हम अपनी समझ को बढ़ाने के लिए उसकी रोशनी की तलाश करते हैं ताकि हम उस सत्य को सही ढंग से समझ सकें और लागू कर सकें जो उसने वचनों को लिखने वाले भविष्यद्वक्ताओं को प्रेरणा के द्वारा दिया था।

सुसमाचार यह है कि प्रभु यीशु ने हमें सिखाया कि जब वह स्वर्ग में उठा लिया जाएगा, तो वह अपने प्रत्येक शिष्य (विश्वासियों) पर पवित्र आत्मा भेजेगा। पवित्र आत्मा उनका निजी शिक्षक, प्रशिक्षक, मार्गदर्शक और प्रकाशन देने वाला बन जाएगा।

यूहन्ना 14:26
परन्तु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।

यूहन्ना 15:26
परन्तु जब वह सहायक आएगा, जिसे मैं तुम्हारे पास पिता की ओर से भेजूँगा, अर्थात् सत्य का आत्मा जो पिता की ओर से निकलता है, तो वह मेरी गवाही देगा;

यूहन्ना 16:13-15
13परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।
14वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।
15जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिये मैं ने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।

पवित्र आत्मा हमें सब बातें सिखाएगा। वह अपना वचन हमें स्मरण कराएगा। वह यीशु के बारे में हमसे बात करता है, यीशु को हमारे सामने प्रकट करता है। वह हमें सब सत्य का मार्ग बताता है।

प्रभु यीशु ने कहा कि पवित्र आत्मा अपने अधिकार के बारे में या अपनी ओर से या अपने बारे में नहीं बोलेगा।

हम यह निर्धारित करने के लिए तीन परीक्षणों की पहचान कर सकते हैं कि जो हमें मिला है वह पवित्र आत्मा से है या नहीं।

1) **क्या यह यीशु मसीह की महिमा करता है?** यीशु ने कहा कि परमेश्वर की आत्मा यीशु की महिमा करेगा। पवित्र आत्मा जो कुछ भी कहता है और करता है, जो वह प्रकट करता है, जो शिक्षा वह लाता है, जो रोशनी वह प्रदान करता है, उसमें प्रभु यीशु की महिमा होती है।

2) **क्या यह मसीह के व्यक्तित्व से जुड़ा है?** पवित्र आत्मा यीशु से जो कुछ भी सुनता है, वही बोलता है। पवित्र आत्मा जो कुछ भी बोलता है, जो रोशनी वह लाता है, वह यीशु के व्यक्तित्व से जुड़ी होगी—यीशु कौन है और यीशु क्या करता है।

3) **क्या यह लिखित वचनों सेसंरेखित है?** पवित्र आत्मा वचनों का मूल लेखक है। इसलिए, आज वह जो रोशनी, अंतर्दृष्टि और समझ के माध्यम से बोलता है, वह वचनों में पहले से प्रस्तुत सत्य से जुड़ा होगा।

परमेश्वर का आत्मा यीशु के प्रत्येक विश्वासी में वास करता है और उनका शिक्षक और मार्गदर्शक बन जाता है। प्रेरित यूहन्ना विश्वासियों को लिखते हुए उन्हें याद दिलाता है कि कुछ लोग “हमारे नहीं हैं” बल्कि वे मसीह विरोधी या मसीह के विरुद्ध हैं। जबकि, विश्वासियों के रूप में, उनके पास पवित्र आत्मा का अभिषेक (व्यक्ति, उपस्थिति और शक्ति) है, जिसे उन्होंने प्रभु यीशु से प्राप्त किया है, और इसलिए, वे “सब कुछ जानते हैं”। यूहन्ना जिस संदर्भ में बात कर रहा है, उसमें विश्वासी जानते हैं कि मसीह कौन का है और कौन नहीं है, क्योंकि उनके अंदर अभिषेक रहता है।

1 यूहन्ना 2:18-21,27
18 हे बालकों, यह अन्तिम समय है; और जैसा कि तुम ने सुना है कि मसीह विरोधी आनेवाला है, वैसे ही अब भी बहुत से मसीह विरोधी आए हैं, जिस से हम जानते हैं कि यह अन्तिम समय है।
19 वे हम में से निकले, परंतु हम में से नहीं थे; क्योंकि यदि वे हम में से होते, तो हमारे साथ रहते; परंतु वे निकले, ताकि यह प्रगट हो जाए कि उनमें से कोई हम में से नहीं है।
20 परंतु तुम्हारा तो पवित्र जन से अभिषेक हुआ है, और तुम सब कुछ जानते हो।
21 मैं ने तुम्हें इसलिये नहीं लिखा कि तुम सत्य को नहीं जानते, परंतु इसलिये कि तुम उसे जानते हो, और इसलिये कि कोई झूठ सत्य से नहीं।
27 परंतु जो अभिषेक तुम ने उस से पाया है, वह तुम में बना रहता है, और तुम्हें इसकी आवश्यकता नहीं कि कोई तुम्हें सिखाए; परंतु जैसा वही अभिषेक तुम्हें सब बातें सिखाता है, और सच्चा है, और झूठ नहीं, और जैसा उसने तुम्हें सिखाया है, वैसे ही तुम उसमें बने रहोगे।

यह अभिषेक जो विश्वासियों के तौर पर हमारे अंदर रहता है, हमें सब बातों की शिक्षा देता है। हमारे भीतर वास करने वाला पवित्र आत्मा हमारा पूर्ण और पर्याप्त शिक्षक है। वह हमें सब बातों के बारे में, हर चीज़ के बारे में सिखाता है। उसकी शिक्षा हमें यीशु में बने रहने और उसके साथ एकता के स्थान पर बने रहने और मसीह में अपने

जीवन को जीने में सहायता करती है।

"और तुम्हें इसका प्रयोजन नहीं कि कोई तुम्हें सिखाएं" (1 यूहन्ना 2:27)। हमें उस शिक्षक की पूर्णता और पर्याप्तता समझना चाहिए जो हमें सब कुछ सिखाने के लिए हमारे अंदर रहता है। जबकि, सुनने, सीखने, आज्ञा मानने और बढ़ने की हमारी जिस प्रकार हमारी क्षमता है उसे विकसित करने की आवश्यकता है। इसलिए, परमेश्वर ने चर्च सेवकाई में प्रेरित, भविष्यवक्ता, पासवान, शिक्षक, सुसमाचार प्रचारक और अन्य कार्यों के वरदान रखे हैं जो विश्वासियों को सिखाने, अनुसरण करने और शिष्य बनाने में सहायता करते हैं। विश्वासियों के रूप में, पवित्र आत्मा हमारा मुख्य शिक्षक है। और हम मसीह की देह में एक दूसरे के माध्यम से ही सीखते और प्राप्त करते हैं। यह वही पवित्र आत्मा है जो हमें दोनों तरह से सिखाता है—हमारे भीतर रहने के द्वारा और दूसरों को हमें सिखाने और सशक्त, दृढ़ बनाने में अपने कार्य के द्वारा।

हम सभी विश्वासी पवित्र आत्मा के प्रकाश पर निर्भर हैं क्योंकि हम वचनों का अध्ययन करते हैं। यह प्रकाश हम में उनके व्यक्तिगत कार्य के माध्यम से आ सकता है और उन लोगों के माध्यम से भी हमारे पास लाया जा सकता है जिन्हें उन्होंने हमारी सेवा करने के लिए सशक्त बनाया है।

परमेश्वर का वचन प्रेरित है। आज, हमें अपनी आँखें खोलने, प्रकाशित करने या प्रबुद्ध होने की आवश्यकता है ताकि हम उन अद्‌त चीजों को देख सकें जो परमेश्वर ने अपने वचन में हमारे लिए प्रकट की हैं। भजनकार की तरह, हम अक्सर प्रार्थना करते हैं, *"मेरी आँखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्‌त बातें देख सकूँ।"* (भजन संहिता 119:18)।

आइये हम पवित्र आत्मा से प्रकाश की आवश्यकता पर आगे चर्चा करें और समझें कि यह वास्तव में क्या है।

स्वाभाविक मनुष्य और स्वाभाविक मन

स्वाभाविक मनुष्य और स्वाभाविक मन प्राकृतिक मनुष्य, जिसने दोबारा जन्म नहीं लिया है और जिसके अंदर पवित्र आत्मा नहीं है, वह परमेश्वर की बातों को सरलता से समझने की स्थिति में नहीं है। बाइबल हमें सिखाती है कि शैतान उन लोगों के दिमाग को अंधा कर देता है जो विश्वास नहीं करते। यीशु मसीह से मिलने से पहले हमारी यही स्थिति थी। *"जिन की बुद्धि इस संसार के ईश्वर ने अंधी कर दी है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके।"* (2 कुरिन्थियों 4:4)।

प्रेरित पौलुस हमारे जीवन में पवित्र आत्मा के कार्य पर जोर देता है ताकि हमें परमेश्वर की बातों को जानने और समझने में सहायता मिले।

1 कुरिन्थियों 2:12-16

12परन्तु हम ने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है जो परमेश्वर की ओर से है कि हम उन बातों को जानें जो परमेश्वर ने हमें दी हैं।
13जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाकर सुनाते हैं।
14परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जाँच आत्मिक रीति से होती है।
15आत्मिक जन सब कुछ जाँचता है, परन्तु वह आप किसी से जाँचा नहीं जाता।
16"क्योंकि प्रभु का मन किसने जाना है कि उसे सिखाए?" परन्तु हम में मसीह का मन है।

शारीरिक मनुष्य अपने शारीरिक मन से परमेश्वर की आत्मा की बातों का स्वागत करने और उसे स्वीकार करने में अयोग्य होता है। वह इन्हें मूर्खतापूर्ण, बेतुका, या नादानी मानता है। आत्मिक बातों को "आत्मिक रूप से समझा जाना चाहिए", अर्थात पवित्र आत्मा की सहायता से समझा जाना चाहिए। शारीरिक मन से काम करने वाले शारीरिक मनुष्य के पास पवित्र आत्मा नहीं है। वह लोग जिन का उद्धार नहीं हुआ है या शारीरिक व्यक्ति वचन के व्याकरण को और अध्याय के अर्थ को मानसिक रीती से समझ सकते हैं, लेकिन वह व्यक्ति जिसका उद्धार नहीं हुआ हो उसके पास आत्मिक सत्य को प्राप्त करने और उस पर कार्य करने की आत्मिक क्षमता नहीं होती।

हालाँकि, विश्वासियों के रूप में, हमें परमेश्वर की आत्मा मिली है जो हमें *"हम ने संसार की आत्मा नहीं, परंतु वह आत्मा पाया है जो परमेश्वर की ओर से है कि हम उन बातों को जानें जो परमेश्वर ने हमें दी हैं।"* (1 कुरिन्थियों 2:12)। पवित्र आत्मा हमें आत्मिक लोगों को आत्मिक बातें बताने और सिखाने में भी सक्षम बनाती है। और हम आत्मिक वचनों से इन आत्मिक सच्चाइयों को बताते हैं। हम पवित्र आत्मा की मदद से आत्मिक बातों को पहचान सकते हैं। और हमारे पास मसीह का मन है। पवित्र आत्मा हमें प्रभु का मन, विचार और इरादे प्रदान करता है।

इसलिए पवित्रशास्त्र और आत्मिक सत्य का अध्ययन, व्याख्या और समझ केवल मानव मन का अभ्यास नहीं है। कोई भी यह दावा नहीं कर सकता कि उनकी शैक्षणिक योग्यता ने उन्हें वचनों की व्याख्या करने और आत्मिक सत्य को समझाने के लिए बेहतर बनाया है। जबकि मानव मन को प्रशिक्षित करना एक अच्छा अभ्यास है, हम आत्मिक चीजों को समझने और आत्मिक सत्य को बताने के लिए

मनुष्यों की बुद्धि पर नहीं, बल्कि पवित्र आत्मा से मिलने वाली बुद्धि पर भरोसा करते हैं।

प्रबुद्ध होना

इफिसियों 1:15-20

15इस कारण, मैं भी उस विश्वास का समाचार सुनकर जो तुम लोगों में प्रभु यीशु पर है और सब पवित्र लोगों पर प्रगट है,
16तुम्हारे लिये धन्यवाद करना नहीं छोड़ता, और अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण किया करता हूँ
17कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान में ज्ञान और प्रकाश की आत्मा दे,
18और तुम्हारे मन की आँखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि उसकी बुलाहट की आशा क्या है, और पवित्र लोगों में उसकी मीरास की महिमा का धन कैसा है,
19और उसकी सामर्थ्य हम में जो विश्वास करते हैं, कितनी महान् है, उसकी शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार
20जो उसने मसीह में किया कि उसको मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर

हम जानते हैं कि पवित्रशास्त्र लिखने की प्रेरणा अतीत में भविष्यवक्ताओं और अन्य लोगों को दी गई थी जिन्हें परमेश्वर ने उपयोग किया था। प्रेरणा सिर्फ एक बार दी जाती है, जबकि रोशनी (ज्ञान, प्रकाशन) बार-बार दिया जाता है।रोशनी से हमारा अर्थ है कि परमेश्वर पवित्र आत्मा आज पाठकों मे अपने वचन को नए सिरे से फूंकता है (प्रेरणा देता है, ज्ञान देता है) ताकि हमें समझने, अंतर्दृष्टि प्राप्त करने और यह जानने में सहायता मिल सके कि उसने अपने वचन में क्या रखा है। रोशनी (ज्ञान, प्रकाशन, अंतर्दृष्टि) तब होती है जब परमेश्वर का वचन आज हमारे लिए जीवित और जीवन से भरा होता है जैसा कि उस समय था जब इसे पहली बार लिखा गया था। यह पवित्र आत्मा का कार्य है।

प्रेरित पौलुस ने इफिसुस के विश्वासियों के लिए प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा उन्हें बुद्धि और प्रकाश प्रदान करे ताकि उनकी समझ की आँखें ज्योतिर्मय हो जाएँ। इसे ही हम ज्योतिर्मय होना, प्रकाशन मिलना या अंतर्दृष्टि प्राप्त करना कहते हैं। ऐसा नहीं है कि हम कुछ नया लेकर आ रहे हैं। इसके अपेक्षा हम अब उस सत्य को देखने, समझने और समाविष्ट करने में सक्षम हैं जो कि हमेशा से वचन में था, और पवित्र आत्मा द्वारा वचनों को फूँका गया था जब उसने पहली बार उन्हें प्रेरित किया था।

पौलुस ने चार चीजों का उल्लेख किया है जिन्हें विश्वासियों को उसके प्रकाशन के द्वारा जानने की आवश्यकता है।

1) **उसे जानें।**
2) **उसके बुलावे की आशा को जानें**–उसके बुलावे के उद्देश्य को जानें।
3) **संतों में उसकी विरासत की महिमा के धन को जानें**–उसने हमें जो विरासत दी है उसकी महानता को जानें, और जो उसने अपने लोगों के रूप में हम में पाया है उसकी समृद्धि को जानें।
4) **हम विश्वासियों के प्रति उसकी शक्ति की अत्यधिक महानता को जानें।**

पवित्र आत्मा के ज्ञान के माध्यम से ही हम विश्वासियों के रूप में मसीह में अपने जीवन के इन चार और अन्य क्षेत्रों के प्रकटीकरण में प्रगति और बढ़ोत्तरी करने में सक्षम हैं।

प्रकाशन प्राप्त करना

मत्ती 16:13-23

13 यीशु कैसरिया फिलिप्पी के प्रदेश में आया, और अपने चेलों से पूछने लगा, "लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं?"

14उन्होंने कहा, "कुछ तो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कहते हैं, और कुछ एलिय्याह, और कुछ यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं।"
15उसने उनसे कहा, "परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?"
16शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।"
17यीशु ने उसको उत्तर दिया, "हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है।
18और मैं भी तुझ से कहता हूँ कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।
19मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगा: और जो कुछ तू पृथ्वी पर बाँधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।"
20तब उस ने चेलों को चिताया कि किसी से न कहना कि मैं मसीह हूँ
21उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा, "अवश्य है कि मैं यरूशलेम को जाऊँ, और पुरनियों, और प्रधान याजकों, और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दु:ख उठाऊँ; और मार डाला जाऊँ; और तीसरे दिन जी उठूँ।"
22इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर झिड़कने लगा, "हे प्रभु, परमेश्वर न करे! तेरे साथ ऐसा कभी न होगा।"
23उसने मुड़कर पतरस से कहा, "हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो! तू मेरे लिये ठोकर का कारण है; क्योंकि तू परमेश्वर की बातों पर नहीं, परन्तु मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है।"

पतरस एक अशिक्षित मछुआरा था। उसे स्वर्ग में पिता से प्रकाशन मिला था कि नासरत का यीशु कौन है। उसको कुछ प्रकाशन मिला। वह जानता था कि यह यीशु मसीह है, जीवित परमेश्वर का पुत्र। क्या वह इस पर तर्क कर सकता था और इसे तार्किक रूप से समझा सकता था? संभवतः नहीं। फिर भी, पतरस यह जानता था। प्रकाशन हमें आत्मिक सत्य को देखने में सक्षम बनाता है।

उपरोक्त अंश में जो दिलचस्प बात यह है कि पतरस को जो आत्मिक प्रकाशन मिला था की यीशु मसीहा है और वह परमेश्वर का पुत्र है उसकी साहसिक घोषणा करने के तुरंत बाद, पतरस ने एक और ऐसा कथन दिया जिसे प्रभु यीशु ने परमेश्वर की ओर से नहीं, बल्कि शैतान की ओर से माना! एक क्षण में, पतरस ने पिता से प्राप्त प्रकाशन

को बोला। अगले ही क्षण, पतरस ने कुछ ऐसा कहा जो परमेश्वर की ओर से नहीं, बल्कि शैतान की ओर से था, और उसने परमेश्वर की बातों पर नहीं, बल्कि मनुष्यों की बातों पर ध्यान दिया था।

एक क्षेत्र में प्रकाश प्राप्त करने का अर्थ यह नहीं है कि हमें सभी क्षेत्रों में पूर्ण प्रकाशन प्राप्त है।

परमेश्वर के बारे में प्रत्येक प्रकाशन (अंतर्दृष्टि, समझ) जिसका प्रचार और शिक्षण किया जाता है, उसका मूल्यांकन और परीक्षण किया जाना चाहिए ताकि यह देखा जा सके कि यह सही, सटीक और सत्य के अनुरूप है या नहीं।

सत्य जानने के लिए वचन में बने रहें

यूहन्ना 8:31,32
31तब यीशु ने उन यहूदियों से जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, कहा, "यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे।
32तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।"

हम अपने विश्वास की आत्मिक यात्रा और पवित्रशास्त्र में परमेश्वर ने हमें जो दिया है, उससे संबंधित सभी विषयों के बारे में सत्य जानने के लिए निरंतर प्रयास करते रहें। यहाँ प्रभु यीशु द्वारा बताई गई एक शर्त है कि हम उनके वचन में बने रहें। इसका अर्थ है कि हम उनके वचन में बने रहें और समय के साथ उनके वचन के साथ बने रहें और उनके वचन को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाएँ।

जबकि परमेश्वर अनपेक्षित दर्शन के माध्यम से सत्य को अवश्य उजागर कर सकता है, पर हमारे लिए यही उचित है कि हम परमेश्वर के वचन के साथ बने रहें, और हम इसे जानना शुरू करें और जानना जारी रखें। जितना अधिक हम परमेश्वर के वचन में बने रहते हैं उतना ही हमारा हृदय और हमारा प्राण पवित्रात्मा के प्रकाशन से भरता जाता है।

इसका अर्थ यह भी है कि परमेश्वर के वचन में जो बातें अभी हमारे लिए इतनी स्पष्ट नहीं हैं, वे हमारे वचन में बने रहने पर स्पष्ट हो जाएँगी। जिन बातों के बारे में हम सोचते हैं कि हम जानते हैं, वे और भी विस्तृत हो जाएँगी और हमारी समझ उन विषयों पर और भी गहरी और व्यापक हो जाएगी क्योंकि हमारे पास पवित्र आत्मा से और भी अधिक रोशनी आती रहेगी।

आज्ञाकारिता, अधिक महान प्रकाशनों के लिए द्वार खोलता है

यूहन्ना 14:21,23

21जिस के पास मेरी आज्ञाएँ हैं और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है; और जो मुझ से प्रेम रखता है उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखूँगा और अपने आप को उस पर प्रगट करूँगा।"

23यीशु ने उसको उत्तर दिया, "यदि कोई मुझ से प्रेम रखेगा तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएँगे और उसके साथ वास करेंगे।

यीशु मसीह का प्रकाशन प्राप्त करने की कुंजी ("मैं उससे प्रेम करूँगा और अपने आप को उसके सामने प्रकट करूँगा") और परमेश्वर की उपस्थिति का निवास ("हम उसके पास आएँगे और उसके साथ अपना घर बनाएंगे") उसकी आज्ञाओं का पालन करना है; और उसके वचन का पालन करना है।

जितना अधिक हम अपने पास प्राप्त प्रकाश का अनुसरण करेंगे और जीएँगे, उतना ही अधिक प्रकाश वह हम पर चमकाएगा।

जितना अधिक हम उसके द्वारा दिए गए प्रकाशन के प्रति आज्ञाकारिता में चलेंगे, वह उतना ही अधिक प्रकाशन हमें देगा।

पवित्र आत्मा से निरंतर प्रकाश (प्रकाशन, ज्ञानवर्धन, अंतर्दृष्टि) प्राप्त करने की दो कुंजियाँ हैं, उसके वचन में बने रहना और उसके वचन के अनुसार जीना।

आत्मा का प्रकाश–सुरक्षा कवच

पवित्र आत्मा के प्रकाशमय कार्य के संदर्भ में ध्यान में रखने योग्य कुछ महत्वपूर्ण बातें यहाँ दी गई हैं।

हमें प्रकाश देने में पवित्र आत्मा की भूमिका का अर्थ यह नहीं है कि किसी केअनुवाद में त्रुटी न हो। हमें पवित्रशास्त्र से अंतर्दृष्टि सहित सभी अन्य विषयों का भी परीक्षण करना चाहिए, जिसके बारे में कोई व्यक्ति पवित्र आत्मा से प्रकाशन प्राप्त होने का दावा कर सकता है। पवित्र आत्मा, हमारा सिद्ध शिक्षक है। जबकि, लोगों के रूप में, हमारे पास अपने स्वयं की पूर्वधारणा हैंऔर इसलिए वचनों का अध्ययन करते समय प्रकाश प्राप्त करने की प्रक्रिया में किसी भी बिंदु पर हम अपने स्वयं के विचारों और पूर्वाग्रहों से चीजों को दूषित कर सकते हैं। इसलिए, हर शिक्षण / उपदेश की जाँच और परीक्षण किया जाना चाहिए।

जबकि पवित्र आत्मा हमें वचनों में प्रकाश, प्रकाशन और अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे हमें वचन के सही अर्थ और साथ में आत्मिक सत्य को समझने में सहायता मिलती है, यह अत्यधिक संदिग्ध है यदि कोई व्यक्ति यह दावा करता है कि उसे पवित्र आत्मा द्वारा विशेष रूप से प्रकट किया गया कोई "छिपा हुआ" अर्थ प्राप्त हुआ है, जो शास्त्र पाठ या वचन के बाकी हिस्सों के अनुरूप नहीं है। सभी "प्रकाशनों" की जांच वचन के प्रकाश में की जानी चाहिए, सामान्य सिद्धांतों को लागू करते हुए जो हमें वचन को सही ढंग से विभाजित करने में सहायता करते हैं।

हमें यह भी समझना चाहिए कि पवित्र आत्मा का प्रकाशन हमें तभी मिलता है जब हम उनके वचन का गहरा अध्ययन करने में समय बिताते हैं और परमेश्वर के वचन पर मनन करते हैं। इसलिए, जैसा कि पौलुस ने तीमुथियुस को चेतावनी दी थी, हम वचन का अध्ययन करने और वचन को सही रीती से समझने में अपना पूरा प्रयास करते हैं, और स्वयं को परमेश्वर के सामने ऐसे कार्यकर्ताओं के रूप में प्रस्तुत करते

हैं जो शर्मिंदा नहीं हैं। जैसे-जैसे हम गहरे अध्ययन के साथ आगे बढ़ते हैं, हम अपनी खोज की यात्रा में पवित्र आत्मा के प्रकाश का स्वागत करते हैं और उस पर निर्भर होते हैं। यह उचित आदर्श है। ऐसा भी हो सकता है कि हमें अचानक से पवित्रात्मा की इच्छा के अनुसार वचन पर गहरे प्रकाशन मिल जाएं जिसकी हमने अपेक्षा न की हो।

जैसा कि आरंभ में कहा गया है, पवित्र आत्मा की शिक्षा, मार्गदर्शन और प्रकाश देने वाला कार्य सभी विश्वासियों के लिए उपलब्ध है। अब यह प्रत्येक विश्वासी पर निर्भर है कि वह पवित्र आत्मा से निरंतर प्रकाश प्राप्त करने के लिए उसका स्वागत करे, उसकी तलाश करे और स्वयं को तैयार करे।

आत्मा की व्याख्या (हर्मेन्युएटिक्स) और अभिव्यक्तियाँ या उपस्थिति

एक ऐसी स्थिति जो प्रायः देखी जाती है कि परमेश्वर का एक सेवक अलौकिक सेवकाई प्रकट करता है, किन्तु उनके संदेश में, ऐसी बातें और विचार होते हैं जो वचन का सही अनुवाद या लागुकरण नहीं करते हैं। अधिकांश लोग यह मान लेते हैं कि अलौकिक चमत्कारों के प्रदर्शनों के कारण जो कुछ भी प्रचारित किया गया वह अच्छा और सटीक है। पर यह खतरनाक और हानिकारक है।

हमें जिस प्रश्न का उत्तर देना चाहिए वह है "क्या कोई उपदेशक ऐसा संदेश दे सकता है जो पवित्रशास्त्र के अध्याय का गलत अनुवाद करता हो और फिर भी अपनी सेवकाई के माध्यम से अलौकिक चिन्ह, चमत्कार, आत्मा के वरदान, चंगाई और चमत्कार प्रकट करता है?" (हम गंभीर सैद्धांतिक त्रुटियों के बारे में बात नहीं कर रहे हैं जो त्रिएक ईश्वरत्व, पवित्रशास्त्र की अचूकता, यीशु मसीह के जन्म या उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान को नकारते हैं।) उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति दाऊद द्वारा गोलियत को मारने की घटना का उपयोग करके एक

शक्तिशाली संदेश का प्रचार कर सकता है, दाऊद को मसीह का एक प्रकार और गोलियत को शैतान का एक प्रकार बता सकता है, यह बताते हुए कि दाऊद ने गोलियत को मारने के लिए जिस पत्थर का इस्तेमाल किया वह क्रूस का प्रतिनिधित्व करता है जिस पर यीशु ने शैतान को हराया था। जबकि यह संदेश बाइबल की घटना का रूपक या अलंकार है और पवित्रशास्त्र के पाठ के साथ ऐसा करना सही नहीं है, उपदेशक बाद में लोगों के लिए प्रार्थना कर सकता है और परमेश्वर की शक्ति की अद्‌त अभिव्यक्तियाँ देख सकता है। तो, हाँ, वास्तव में, एक उपदेशक एक संदेश का प्रचार कर सकता है जो पवित्र शास्त्र के पाठ की व्याख्या करने के विषय में गलत है और फिर भी अपनी सेवकाई के द्वारा अलौकिक संकेत, चमत्कार, आत्मा के वरदान, चंगाई और चमत्कार प्रकट करता है। हमें याद रखना चाहिए कि अलौकिक अभिव्यक्तियाँ विश्वास के कारण होती हैं। *"जो तुम्हें आत्मा दान करता और तुम में सामर्थ्य के काम करता है, वह क्या व्यवस्था के कामों से या सुसमाचार पर विश्वास से ऐसा करता है?"* (गलातियों 3:5)

अतः, हमारे लिए यह जानना ज़रूरी है कि हम जो उपदेश और शिक्षा सुनते हैं, उसे जाँचें कि क्या परमेश्वर का वचन सही तरीके से बांटा जा रहा है, जो प्रकट होने वाले संकेतों और चमत्कारों से स्वतंत्र है। दूसरी ओर, किसी व्यक्ति की वाक्पटुता, संचार कौशल, कहानी कहने का कौशल और बड़ी संख्या में अनुयायियों का होना इस बात का संकेत नहीं हैं कि जो उपदेश दिया और सिखाया जा रहा है, वह सटीक है। यहाँ फिर से, हमें यह देखने के लिए कि क्या परमेश्वर के वचन को सही तरीके से संभाला जा रहा है, प्रस्तुत किया जा रहा है या नहीं, इसका मूल्यांकन करना चाहिए।

अगले अध्यायों में, हम उन सिद्धांतों पर विचार करेंगे जिन्हें हमें पवित्रशास्त्र का अध्ययन और व्याख्या करते समय लागू करेंगे।

8
बाइबल संदर्भ

पवित्रशास्त्र का अनुवाद करते समय, किसी भी गलत व्याख्या से बचने और अध्याय के सही अर्थ को समझने के लिए संदर्भ महत्वपूर्ण है। हमेशा किसी अंश की व्याख्या उसके संदर्भ के प्रकाश में और पवित्रशास्त्र के बाकी हिस्सों में जो कहा गया है उसके प्रकाश में करें।

संदर्भ के पाँच महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं जिन पर बाइबल की सही व्याख्या और गलत उपयोग से बचने के लिए विचार किया जाना चाहिए।

प्रासंगिक व्याख्या में शामिल हैं...

1) **ऐतिहासिक संदर्भ**: ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझें।

2) **सांस्कृतिक संदर्भ:** सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझें।

3) **साहित्यिक संदर्भ:** अंश के भीतर साहित्यिक शैली और विचार के प्रवाह और पुस्तक के भीतर विचार के प्रवाह को पहचानें।

4) **तत्काल संदर्भ:** अध्याय के भीतर वचनों की व्याख्या करें और यह अध्याय पुस्तक के भीतर किस प्रकार समावेशित होता है।

5) **व्यापक संदर्भ:** संपूर्ण बाइबल के व्यापक प्रामाणिक संदर्भ के भीतर वचन की व्याख्या करें।

इन पाँच संदर्भ क्षेत्रों को अधिक से अधिक, और संभवतः सभी को पवित्रशास्त्र के अध्ययन पर लाने से हमें अध्याय की सटीक समझ और व्याख्या करने में सहायता प्राप्त होगी। संदर्भ हमें लेखक के इच्छित अर्थ को समझने में मदद करता है जैसा कि प्रारंभिक श्रोताओं

के सामने प्रस्तुत किया गया है।

बाइबल की टिप्पणियाँ, शब्दों का सम्पूर्ण सारसंग्रह और अध्ययन बाइबल के किसी अंश के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक संदर्भ में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं। बाइबल शब्दकोश हमें विशिष्ट शब्दों और वाक्यांशों के अर्थ को समझने में मदद कर सकते हैं।

हम इन पाँच क्षेत्रों में से प्रत्येक पर संक्षेप में विस्तार से चर्चा करेंगे, और इनमें से कुछ पर बाद के अध्यायों में अधिक विस्तार से विचार किया जाएगा।

1) ऐतिहासिक संदर्भ

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझें। किसी अंश का अर्थ तब बेहतर ढंग से समझा जा सकता है जब हम जानते हैं कि लेखन के समय ऐतिहासिक रूप से क्या हो रहा था। ऐतिहासिक संदर्भ में समय, घटनाएँ, रीति-रिवाज, राजनीति और सामाजिक मानदंडों को समझना शामिल है जिन्होंने लेखक और श्रोताओं को प्रभावित किया। यह पाठ के इच्छित प्राप्तकर्ताओं और उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर विचार करता है। हम पाठ लिखने में लेखक के उद्देश्य, लक्ष्यों और इरादों पर भी ध्यान देते हैं।

अभ्यास:

- **मत्ती 26:17-19** यहूदी फसह पर्व, अंतिम भोज के महत्व और यीशु के क्रूस पर चढ़ाये जाने को समझें।
- **यिर्मयाह 29:10-14** बेबीलोन के निर्वासन पर शोध करें और उस इतिहास को ध्यान में रखते हुए इस पाठ की व्याख्या करें।
- **लूका 2:1-7** यीशु के जन्म के दौरान रोमन कराधान और

जनगणना की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की जाँच करें।

2) सांस्कृतिक संदर्भ

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझें। सांस्कृतिक मानदंडों को समझना मुश्किल अंशों को स्पष्ट करने में मदद कर सकता है। इसमें पाठ में लोगों की सांस्कृतिक प्रथाओं, रीति-रिवाजों, मूल्यों, विश्वासों और परंपराओं को समझना सम्मिलित है। कभी-कभी, उपदेशों के ऐसे अलंकार हो सकते हैं जिनकी सांस्कृतिक प्रासंगिकता होती है जिन्हें उसके सांस्कृतिक संदर्भ में व्याख्या करने की आवश्यकता होती है।

अभ्यास:

- **रूत 3:1-9** बोअज़ के पैरों पर लेटी रूत के सांस्कृतिक महत्व की जाँच करें।
- **यूहन्ना 13:14** प्राचीन निकट पूर्व में पैर धोना आतिथ्य का एक सामान्य कार्य था, जिसे सामान्यतः पर नौकरों द्वारा किया जाता था।
- **1 कुरिन्थियों 11:1-16** महिलाओं के लिए सिर ढकने के सांस्कृतिक मानदंडों और केवल कुरिन्थियन चर्च के लिए सिर ढकने के संबंध में पॉलुस के विशिष्ट आदेश को समझें।

3) साहित्यिक संदर्भ

साहित्यिक शैली और मार्ग के भीतर विचार के प्रवाह और पुस्तक के भीतर विचार के प्रवाह को पहचानें। साहित्यिक शैली और संरचना इस बात को प्रभावित करती है कि हम पाठ की व्याख्या कैसे करते हैं। शैली (कथा, कविता, भविष्यवाणी, पत्र) को पहचानें और कैसे मार्ग अध्याय और पुस्तक में विचार के प्रवाह के भीतर प्रकार समावेशित होता है। लेखक के विचारों और तर्कों की प्रगति का पालन करें। रूपकों, उपमाओं और अन्य आलंकारिक अभिव्यक्तियों के उपयोग को समझें।

अभ्यास:

- **भजन संहिता 23:1** यह परमेश्वर की देखभाल का वर्णन करने के लिए रूपक भाषा का उपयोग करने वाला एक काव्यात्मक मार्ग है।
- **रोमियों 12:1,2** रोमियों में विचार के प्रवाह को पहचानें, धर्मशास्त्रीय चर्चा को कैसे व्यावहारिक लागुकरण में बदले, और आत्मिक परिवर्तन का महत्व।

उत्पत्ति (कथा), नीतिवचन (ज्ञान साहित्य) और रोमियों (पत्रात्मक शैली) के बीच कुछ स्पष्ट अंतर क्या होंगे?

4) तत्काल संदर्भ

अध्याय के भीतर वचनों की व्याख्या करें और अध्याय पुस्तक के भीतर किस प्रकार समावेशित होता है। वचनों को भिन्न-भिन्न नहीं माना जाना चाहिए। उनका अर्थ अक्सर इस बात पर निर्भर करता है कि पहले और बाद में क्या आता है। इसके अर्थ को समझने के लिए अंश के आसपास के वचनों की जाँच करें। अध्याय के भीतर अंश के संदर्भ को समझें। विशिष्ट शब्दों के अर्थ और समग्र विषय से उनके संबंधों का विश्लेषण करें। अध्याय और पुस्तक के संदर्भ में विशिष्ट अंश लिखने के लिए लेखक के उद्देश्य का निर्धारण करें।

अभ्यास:

- **यूहन्ना 3:1-8** नीकुदेमुस की यीशु से भेंट और दोबारा जन्म लेने के बारे में बातचीत के संदर्भ में हम “जल और आत्मा” की व्याख्या कैसे करते हैं? तत्काल संदर्भ में, “जल” प्राकृतिक जन्म को संदर्भित करता है।
- **फिलिप्पियों 4:13** आस-पास के वचन (फिलिप्पियों 4:11,12) दिखाते हैं कि पौलुस यीशु के बारे में बात कर रहा है।

- **इफिसियों 2:8-10** अगर हम वचन 8 को अलग से पढ़ें, तो हम सोच सकते हैं कि हमें कोई “काम” करने की ज़रूरत नहीं है। लेकिन जब हम वचन 10 को पढ़ते हैं, तो हम पहचानते हैं कि हम अच्छे कामों के कारण नहीं बचाएं गए हैं, लेकिन हम अच्छे काम करने के लिए भी बचाए गए हैं।
- **फिलिप्पियों 4:6,7** अगर हम वचन 7 को अलग से पढ़ें, तो हम उस पूर्वापेक्षित कार्य को छोड़ देते हैं जो इस तरह की शांति का अनुभव करने के लिए आवश्यक है।

जॉन कैल्विन (1509-1564) ने पवित्रशास्त्र के वास्तविक अर्थ को लेने पर जोर दिया, और कहा कि हमें अपने विचारों या व्याख्याओं को पाठ पर थोपने के बजाय बाइबल के लेखकों के मूल इरादे को समझने की कोशिश करनी चाहिए। अपनी पुस्तक, **“उत्पत्ति की पुस्तक पर टिप्पणियाँ**", में उन्होंने कहा, *“यह एक व्याख्याकार का पहला काम है कि वह अपने लेखक को वही कहने दे जो वह कहता है, अपेक्षा इसके कि हम उसे वह कहें जो हमें लगता है कि उसे कहना चाहिए।"*

5) व्यापक संदर्भ

संपूर्ण बाइबल के व्यापक विहित संदर्भ में छंदों की व्याख्या करें। संपूर्ण बाइबल को ध्यान में रखते हुए वचनों की व्याख्या करें, इस बात पर विचार करें कि विषय और शिक्षाएँ पवित्रशास्त्र में कैसे जुड़ती हैं। वचन, वचन की व्याख्या करता है, और एक अंश के बारे में हमारी समझ उसी विषय या विषय पर अन्य अंशों के अनुरूप होनी चाहिए। बाइबल में अन्य प्रासंगिक अंशों के साथ अंश की तुलना, अंतर और समझ को जाने। बाइबल के समग्र धार्मिक ढांचे को सम्मिलित करें।

अभ्यास:

- **उत्पत्ति 12:1-3** इस पर इस्राएल के साथ परमेश्वर की वाचा

और मसीह में इसकी पूर्ति (गलातियों 3:16) के व्यापक विषय के प्रकाश में विचार करें।

- यशायाह 53 की तुलना यीशु के क्रूस पर चढ़ने के नए नियम के वृत्तांतों से करें (मत्ती 27)।
- **यूहन्ना 3:1-8** जबकि "पानी" का तात्कालिक संदर्भ प्राकृतिक जन्म को संदर्भित करता है, यह पहचानें कि हम परमेश्वर के वचन (1 पतरस 1:23) द्वारा दोबारा जन्म लेते हैं। इसलिए वचन और आत्मा नए जन्म के लिए मध्यस्थ हैं।
- **रोमियों 3:23** पाप और छुटकारे का विषय उत्पत्ति (आदम और हव्वा के पाप) से लेकर प्रकाशितवाक्य तक पूरी बाइबल में सुसंगत है।

मृतकों के लिए बपतिस्मा (1 कुरिन्थियों 15:29)

"नहीं तो जो लोग मरे हुओं के लिये बपतिस्मा लेते हैं वे क्या करेंगे? यदि मुर्दे जी उठते ही नहीं तो फिर क्यों उनके लिये बपतिस्मा लेते हैं?" (1 कुरिन्थियों 15:29) मृतकों की ओर से बपतिस्मा लेने वाले "वे" (अन्य लोग, गैर-विश्वासी) के बारे में पौलुस के प्रश्न को इसके तात्कालिक संदर्भ और नए नियम के वचनों के व्यापक संदर्भ दोनों को समझा जाना चाहिए। तात्कालिक संदर्भ में, पौलुस उन "वे" (अविश्वासी) की ओर इशारा कर रहा है जो मृतकों की ओर से बपतिस्मा लेते हैं, ताकि यह उजागर किया जा सके कि उन्हें भी मृत्यु के बाद जीवन में विश्वास है, और इसीलिए वे इसका अभ्यास करते हैं। पौलुस इस अभ्यास को मंजूरी नहीं दे रहा है, बल्कि केवल इस अभ्यास को उनके पुनर्जन्म में विश्वास के संकेतक के रूप में संदर्भित कर रहा है। 1 कुरिन्थियों 15:29 को नए नियम के बाकी वचनों के व्यापक संदर्भ में भी समझा जाना चाहिए, जहाँ मसीही बपतिस्मा कभी भी मृतकों के लिए नहीं लिया जाता था।

अध्याय के मूल अर्थ को समझने के लिए संदर्भ महत्वपूर्ण है और इसे आज हमारे जीवन में सही ढंग से लागू करने में सहायता करता है।

मार्टिन लूथर (1438-1546) ने पवित्रशास्त्र की व्याख्या उनके सरलतम, व्याकरणिक करने और वास्तविक अर्थ लेने और पवित्रशास्त्र की व्याख्या करने के लिए पवित्रशास्त्र का उपयोग करने पर जोर दिया।बाइबल के व्याख्याशास्त्र पर लूथर के कुछ मौलिक सिद्धांत, जैसा कि उनके विभिन्न लेखन और टिप्पणियों में देखा जा सकता है, इस प्रकार कहा जा सकता है—*वचनों को यथासंभव उनके सरलतम अर्थ में बनाए रखा जाना चाहिए, और उनके व्याकरणिक और वास्तविक अर्थ में समझा जाना चाहिए, जब तक कि संदर्भ स्पष्ट रूप से मना न करे। अस्पष्ट अंशों को स्पष्ट अंशों के प्रकाश में समझा जाना चाहिए। वचनस्वयं अपना व्याख्याकार है। यह व्याख्या की सही विधि है जो वचनों को सही और उचित तरीके से वचनों के साथ रखती है।*

आइये हम संदर्भ के इस व्याख्यात्मक सिद्धांत को दो अन्य चुनौतीपूर्ण अंशों पर लागू करें।

स्त्रियाँ कलीसियाओं में शांत (चुप) रहें (1 कुरिन्थियों 14:34,35)

1 कुरिन्थियों 14:34,35
34स्त्रियाँ कलीसिया की सभा में चुप रहें, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं, परन्तु अधीन रहने की आज्ञा है, जैसा व्यवस्था में लिखा भी है।
35यदि वे कुछ सीखना चाहें, तो घर में अपने अपने पति से पूछें, क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है।

स्त्रियाँ (यूनानी *'गुने'***)**=यानि किसी भी उम्र की स्त्री, चाहे वह कुंवारी हो, विवाहित हो, या विधवा हो (प्रकाशितवाक्य 19:7; प्रकाशितवाक्य 21:9 में मेमने की पत्नी के लिए इस्तेमाल किया गया

वही शब्द)।

“स्त्रियों” पर शब्द अध्ययन करने से पता चलता है कि इस यूनानी शब्द का इस्तेमाल विवाहित या अविवाहित स्त्रियों के लिए किया जा सकता है। संदर्भ के आधार पर, हम यह पता लगा सकते हैं कि यह विशेष रूप से “पत्नी” को संदर्भित करता है या नहीं। प्रकाशितवाक्य में, जब इसे मसीह की दुल्हन के लिए इस्तेमाल किया जाता है, तो ग्रीक *‘गुने’* का अनुवाद "पत्नी" के रूप में किया जाता है।

1 कुरिन्थियों 14:34,35 के तात्कालिक संदर्भ पर विचार करें। "वे" और "उन्हें" के उपयोग में विचार का प्रवाह स्पष्ट रूप से लोगों के एक ही समूह को संदर्भित करता है।

उन्हें बोलने की अनुमति नहीं है

उन्हें आज्ञाकारी होना चाहिए, **वे** कुछ सीखना चाहते हैं,

उन्हें घर पर अपने पतियों से पूछना चाहिए

सर्वप्रथम, तात्कालिक संदर्भ से यह स्पष्ट है कि पौलुस स्त्रियों को पत्नियों के रूप में संबोधित कर रहा है। वह सामान्य रूप से सभी स्त्रियों को संबोधित नहीं कर रहा है, क्योंकि चर्च में शांत रहने और घर पर अपने पतियों से बात करने का उसका निर्देश सिर्फ उन महिलाओं पर लागू हो सकता है जो विवाहित हैं।

दूसरा, यह भी स्पष्ट है कि जिस मुद्दे पर पौलुस चर्चा कर रहे हैं, वह उन्हें “बोलने की अनुमति नहीं” देने के बारे में नहीं है, बल्कि यह है कि वे कुछ सीखना चाहती हैं। यदि पत्नियों के पास सवाल हैं और वे कुछ सीखना चाहती हैं, तो उन्हें चर्च में अपने पतियों से बात करने की अपेक्षा घर पर अपने पतियों से पूछना चाहिए। जो छवि मस्तिष्क में आती है, वह विश्वासियों की एक सभा की है, जहाँ कोई व्यक्ति प्रचार कर रहा है और वचन की सेवा कर रहा है। एक पत्नी जो उपदेश की

जानेवाली किसी बात को नहीं समझ पाती और चर्च मे बातचीत करना आरंभ कर देती है, और वह उस विषय को स्पष्ट करने के लिए उससे प्रश्न पूछती है। यह ऐसी स्थिति है, जिस पर पौलुस चर्चा कर रहे हैं।

अब संदर्भ को अध्याय के बाकी हिस्सों तक बढ़ाएँ। हम क्या देखते हैं? हमने देखा कि 1 कुरिन्थियों 14 में "चुप रहो" वाक्यांश का तीन बार उपयोग किया गया है।

जब कोई चर्च में एकत्रित होने के लिए अन्य भाषा में संदेश कहता है और व्याख्या करने वाला कोई नहीं होता है, तो पौलुस कहते हैं, *"परंतु यदि अनुवाद करनेवाला न हो, तो अन्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया में शान्त रहे, और अपने मन से और परमेश्वर से बातें करे।"* (1 कुरिन्थियों 14:28)। यहाँ उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि लोग अन्य भाषाओं में दिए गए संदेश का अर्थ समझें।

जब कोई चर्च में एकत्रित होने के दौरान भविष्यवाणी कर रहा होता है और अन्य लोग भविष्यवाणी सुनने के लिए खड़े होते हैं, तो पौलुस कहते हैं, *"परंतु यदि दूसरे पर जो बैठा है, कुछ ईश्वरीय प्रकाश हो तो पहला **चुप हो** जाए"* (1 कुरिन्थियों 14:30)। यहाँ उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी को बारी-बारी से भविष्यवाणी करने का मौका मिले।

चर्च में एकत्रित होने के दौरान अपने पतियों से बात करने वाली पत्नियों से, पौलुस कहते हैं, *"स्त्रियाँ कलीसिया की सभा में **चुप रहें**, क्योंकि उन्हें बातें करने की आज्ञा नहीं, परंतु अधीन रहने की आज्ञा है, जैसा व्यवस्था में लिखा भी है। यदि वे कुछ सीखना चाहें, तो घर में अपने अपने पति से पूछें, क्योंकि स्त्री का कलीसिया में बातें करना लज्जा की बात है।"* (1 कुरिन्थियों 14:34,35)।

"चुप रहने" के ये निर्देश देकर, क्या पौलुस चर्च की सभा में

अन्यभाषा में बोलना या भविष्यवाणी करना हमेशा के लिए बंद कर देता है? बिलकुल नहीं। पौलुस स्पष्ट रूप से यह कहते हुए निष्कर्ष निकालता है, *"अत: हे भाइयो, भविष्यद्वाणी करने की धुन में रहो और अन्य भाषा बोलने से मना न करो; पर सारी बातें शालीनता और व्यवस्थित रूप से की जाएँ"* (1 कुरिन्थियों 14:39,40)।

अतः,"चुप रहने" के लिए पौलुस का निर्देश लोगों को स्थायी रूप से चुप कराने के लिए नहीं है, बल्कि चर्च की सभा में शालीनता और व्यवस्था स्थापित करने के लिए है। 1 कुरिन्थियों में अध्याय 11 से 14 का उद्देश्य और संदर्भ यही है।

अब हम अपने विचार को वचनों के व्यापक संदर्भ में विस्तारित करते हैं—उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक। क्या परमेश्वर ने अपना कार्य करने के लिए महिलाओं का उपयोग किया है? हम दोनों नियमों में देखते हैं कि परमेश्वर ने अपने कार्य और अपने उद्देश्यों में अलग-अलग महिलाओं को भाग लेने और सेवा करने के लिए रखा है। भविष्यवाणी करने के अवसर के साथ पवित्र आत्मा का उंडेला जाना बेटों और बेटियों, दास और दासियों दोनों के लिए है (प्रेरितों के काम 2:17,18)। अनुग्रह के वरदान (रोमियों 12:4-8), सेवकाई कार्य (इफिसियों 4:11) और पवित्र आत्मा के वरदान (1 कुरिन्थियों 12:7-11) केवल पुरुषों तक ही सीमित नहीं हैं। ये वरदान, कार्य और सेवकाई अभिव्यक्तियाँ कलीसिया के अंदर और बाहर होती हैं। महिलाएँ भी इन अभिव्यक्तियों की भागीदार हैं।

अंत में, क्या प्रभु यीशु ने अपनी किसी शिक्षा या सेवकाई में संकेत दिया कि महिलाएँ शामिल नहीं हो सकतीं? हम यूहन्ना 4 में देखते हैं, एक सामरी महिला जिसने यीशु से मिलने के बाद अपने शहर में यीशु का प्रचार किया और कई लोगों ने विश्वास किया (यूहन्ना 4:28-30,39-42)। प्रभु ने उसे किसी भी तरह से डांटा या रोका

नहीं। जोआना, एक धनी महिला जिसने यीशु और उसके शिष्यों का समर्थन किया (लूका 8:3)। मरियम मगदलीनी, एक महिला, प्रभु यीशु द्वारा सीधे नियुक्त की गई पहली व्यक्ति थी *"...परंतु मेरे भाइयों के पास जाकर उनसे कह दे, कि मैं अपने पिता और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूँ।"* (यूहन्ना 20:17)। यदि प्रभु महिलाओं द्वारा उनके संदेश के उद्घोषक होने के पूरी तरह खिलाफ थे, तो उन्होंने यह विशेषाधिकार पुरुषों में से किसी एक को दिया होता!

इसलिए, 1 कुरिन्थियों 14:34,35 को समझने के लिए संदर्भ के व्याख्यात्मक सिद्धांतों को लागू करते हुए, यह निष्कर्ष निकालना सही है कि हमें इस अध्याय का उपयोग महिलाओं को परमेश्वर के वचन का प्रचार करने और सिखाने से रोकने के लिए नहीं करना चाहिए।

स्त्री न उपदेश करे और न पुरुष पर आज्ञा चलाए (1 तीमुथियुस 2:10-15)

1 तीमुथियुस 2:8-15

8इसलिये मैं चाहता हूँ कि हर जगह पुरुष, बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना किया करें।
9वैसे ही स्त्रियाँ भी संकोच और संयम के साथ सुहावने वस्त्रों से अपने आप को संवारे; न कि बाल गूँथने और सोने और मोतियों और बहुमोल कपड़ों से,
10पर भले कामों से, क्योंकि परमेश्वर की भक्ति करनेवाली स्त्रियों को यही उचित भी है।
11स्त्री को चुपचाप पूरी अधीनता से सीखना चाहिए।
12मैं कहता हूँ कि स्त्री न उपदेश करे और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परन्तु चुपचाप रहे।
13क्योंकि आदम पहले, उसके बाद हव्वा बनाई गई;
14और आदम बहकाया न गया, पर स्त्री बहकाने में आकर अपराधिनी हुई।
15तौभी स्त्री बच्चे जनने के द्वारा उद्धार पाएगी, यदि वह संयम सहित विश्वास, प्रेम, और पवित्रता में स्थिर रहे।

यह एक बहुत ही कठिन पद है जिस पर व्यापक रूप से बहस की गई है और अब भी जारी है।

इस पद को समझने के लिए हम इस अध्याय में बताए गए "बाइबल संदर्भ" के व्याख्यात्मक सिद्धांतों और "संस्कृति" और "भाषा—शब्दार्थ और व्याकरण" (आगामी अध्यायों में समझाया जाएगा) के सिद्धांतों को लागू करेंगे।

आइये हम ग्रीक में 'पुरुषों' और 'महिलाओं' के लिए उपयोग किए गए शब्दों के अर्थों की जाँच करें।

- **पुरुष (ग्रीक** *'एनेर'*) = एक पूर्ण आयु और कद का पुरुष व्यक्ति, जो कि एक बच्चे या महिला के विपरीत है।
- **महिला (ग्रीक** *'गुने'*)=किसी भी उम्र की महिला, चाहे वह कुंवारी हो, या विवाहित हो, या विधवा हो (प्रकाशितवाक्य 19:7; प्रकाशितवाक्य 21:9 में मेमने की पत्नी के लिए इस्तेमाल किया गया एक ही शब्द)।

इसे पिछले अनुभाग में समझाया गया है।

तीतुस और 1 और 2 तीमुथियुस को लिखे गए पत्र, प्रेरित पौलुस द्वारा 66-68 ई. के आसपास लिखे गए अंतिम 3 पत्र हैं। यह पिन्तेकुस्त के दिन से लगभग 36 से 38 वर्ष बाद की बात है। आरंभिक चर्च विकसित हो चुका है और अपने कार्य में परिपक्वता की स्थिति में है।

आइये हम 1 और 2 तीमुथियुस से संबंधित ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ पर विचार करें। प्रेरित पौलुस ने अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा के दौरान ई. 66-68 लगभग 3 वर्षों तक इफिसुस में सेवा की थी। इफिसुस शहर को देवी डायना की स्तुति के लिए दिया गया था। इफिसियन देवी डायना, जिसे अक्सर ग्रीक देवी अरतिमिस के बराबर माना जाता है, प्रजनन और प्रसव की देवी के रूप में जुड़ी

और पूजनीय थी। चंद्रमा के साथ उसका जुड़ाव था, जो मासिक धर्म चक्र के समानांतर चलता है, ने इस संबंध को और मजबूत किया। माना जाता था कि डायना प्रसव के दौरान महिलाओं की रक्षा करती थी और गर्भधारण में सहायता करती थी। उनकी मूर्तियों में अक्सर उन्हें कई स्तनों के साथ दर्शाया जाता था, जो एक पोषण और जीवन देने वाली देवी के रूप में उनकी भूमिका का प्रतीक था। इफिसुस में अरतिमिस का मंदिर प्राचीन दुनिया के सात अजूबों में से एक था और भक्तों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल था। शहर की अर्थव्यवस्था, विशेष रूप से चांदी के कारीगर जो देवी के छोटे-छोटे मंदिर बनाते थे, अरतिमिस की पूजा पर बहुत अधिक निर्भर थे।

इफिसुस में एक मजबूत चर्च स्थापित किया गया था, और पौलुस तीमोथियुस को लिख रहा था जो इफिसुस में चर्च की देखरेख कर रहा।

अब 1 तीमुथियुस के व्यापक संदर्भ पर विचार करें। पौलुस तीमुथियुस को मार्गदर्शन दे रहा था कि उसे चर्च की देखरेख कैसे करनी चाहिए और विश्वासियों को उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं का मार्गदर्शन करने के लिए निर्देश प्रदान करना चाहिए। उसका ध्यान इस बात पर नहीं है कि चर्च की सभा के अंदर खुद को कैसे संचालित किया जाए, (जैसा कि 1 कुरिन्थियों अध्याय 11-14 में है) बल्कि इस बात पर है कि चर्च की सभा के अंदर और बाहर विश्वासियों के समुदाय के रूप में जीवन कैसे व्यतीत किया जाए।

1 तीमुथियुस अध्याय 2 अध्याय 1 में संबोधित मामलों से विचार में एक स्पष्ट विराम के साथ शुरू होता है। अध्याय 2 सभी लोगों के लिए प्रार्थना करने के आह्वान के साथ शुरू होता है, विशेष रूप से नागरिक अधिकारियों के लिए। 1 तीमुथियुस 2:8 पुरुषों से हर जगह प्रार्थना करने का आग्रह करता है— हर जगह जीवनशैली को संबोधित करते

हुए (सिर्फ एक चर्च सभा में नहीं)—क्रोध या बहस के बिना पवित्र हाथ उठाना। इसी तरह, पौलुस 1 तीमुथियुस 2:9,10 में महिलाओं और उनके कपड़ों को संबोधित करता है, और इन बातों का पालन हर समय, हर जगह लागू होता है। पौलुस हर समय, हर जगह पुरुषों और महिलाओं की जीवनशैली और आचरण को संबोधित कर रहा है।

और फिर कठिन वचन 11 और 12 आते हैं, *"स्त्री को चुपचाप पूरी अधीनता से सीखना चाहिए। मैं कहता हूँ कि स्त्री न उपदेश करे और न पुरुष पर आज्ञा चलाए, परंतु चुपचाप रहे"* (1 तीमुथियुस 2:11,12)। यह विचार में एक अचानक परिवर्तन प्रतीत होता है।

इसलिए, हमें निम्नलिखित प्रश्न पूछने चाहिए।

1) क्या पौलुस हर जगह पुरुषों और महिलाओं के आचरण को संबोधित करना जारी रखता है, या वह चर्च की सभा में आचरण को संबोधित कर रहा है?

2) क्या पौलुस सामान्य रूप से सभी महिलाओं को संबोधित कर रहा है, या वह विवाहित महिलाओं और उनके पतियों के साथ उनके संबंधों को संबोधित कर रहा है?

3) विचार का प्रवाह क्या है? इन आयतों से पहले और बाद में क्या आता है?

4) इस मामले में समान या समान विषय को संबोधित करने वाले पवित्रशास्त्र का व्यापक संदर्भ क्या है, और पौलुस ने इस विषय पर अपने पत्रों में कहीं और क्या लिखा है?

हम देखते हैं कि पौलुस सामान्य से आगे बढ़ रहा है—सभी स्थानों पर हर समय विश्वास करने वाले पुरुषों और महिलाओं का आचरण—विशिष्ट तौर पर—अपने पतियों के संबंध में विवाहित महिलाओं का आचरण। इसका कारण यह है कि अगला वचन संयोजी संयोजन "के

लिए" शुरू होता है। इसका अर्थ है कि पहले के विचार को (वचन 11,12 में) आदम और हव्वा के बारे में बाद में जो कहा गया है, उसके साथ रखा और समझा जाता है। आदम और हव्वा पहली बार मिलने के समय से ही पति और पत्नी थे। संतानोत्पत्ति का विचार, जिस पर भी चर्चा की गई है, पति-पत्नी के रिश्ते के संदर्भ में समझा जाता है।

इसलिए वचन 11 और 12 को पति और पत्नी के बीच विवाह संबंध के संदर्भ में समझा जाना चाहिए। यह इफिसियों 5:22,23; कुलुस्सियों 3:18 और 1 कुरिन्थियों 14:34,35 पौलुस के लेखन के अनुरूप है। यह आदम-हव्वा, पति-पत्नी के संबंधों के संदर्भ में है जिसमें महिला आज्ञाकारिता, शांति से, अपने पति को न सिखाना या हुक्म न चलाना या उसके अधिकार का अतिक्रमण न करना जैसी आज्ञाओं पर चलती है। और अब पौलुस सांस्कृतिक संदर्भ को सामने लाता है। यदि महिलाएँ (पत्नियाँ) इस तरह से "विश्वास, प्रेम और पवित्रता, आत्म-संयम" के साथ चलती हैं, तो उन्हें गर्भधारण और संतानोत्पत्ति के लिए अपने जीवन में प्रभु के कार्य का आश्वासन मिलता है, उन्हें देवी डायना (या आर्टेमिस) से डरने या उनके पास जाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

इसके अतिरिक्त, हम पवित्रशास्त्र के बाकी हिस्सों के व्यापक संदर्भ, तथा यीशु मसीह के व्यक्तित्व के जीवन, शिक्षाओं और महिलाओं तथा पृथ्वी पर परमेश्वर के कार्य में उनकी भूमिका के बारे में सेवकाई को देखते हैं। इन्हें पिछले खंड में संबोधित किया गया है। और यहाँ दोहराया नहीं गया है।

1 तीमुथियुस 2:8-15 की जाँच करने के लिए व्याख्यात्मक प्रक्रिया को लागू करने से हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि महिलाओं को परमेश्वर के वचन का प्रचार करने और सिखाने से रोकने के लिए 1 तीमुथियुस 2:11,12 का उपयोग करना गलत है।

बचने योग्य त्रुटियाँ

यहाँ कुछ त्रुटियाँ दी गई हैं जिनसे बचना चाहिए, और जानबूझकर पवित्रशास्त्र के संदर्भ में रहना चाहिए जैसा कि हमने इस अध्याय में समझाया है।

प्रूफ़-टेक्स्टिंग

जैसा कि हमने पहले कहा, प्रूफ़-टेक्स्टिंग संदर्भ पर विचार किए बिना किसी बात को साबित करने के लिए अलग-अलग वचनों का उपयोग करना, यह पवित्रशास्त्र को उनके संदर्भ से बाहर ले जाना है। उदाहरण के लिए, यदि कोई यीशु द्वारा दिए गए कथन को उद्‌त करता है, *"यदि कोई मेरे पास आए, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चों और भाइयों और बहिनों वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता"* (लूका 14:26) और यह निष्कर्ष निकालता है कि सच्चा शिष्य बनने के लिए, हमें अपने परिवार से अलग हो जाना चाहिए और सभी सांसारिक उत्तरदायित्व को त्याग देना चाहिए, तो यह इस वचन को संदर्भ से बाहर ले जाना होगा।

संदर्भ बदलना

संदर्भ बदलना इस बात के संदर्भ को थोड़ा बदलना है कि किसे या किस बात को संबोधित किया जा रहा है, किन्तु फिर यह उन अर्थों, अनुमानों और विचारों की ओर ले जाता है जो मूल संदर्भ में अभिप्रेत नहीं हैं। **उदाहरण:** इफिसियों 5:22-33 में, पौलुस् मसीह और चर्च और पति-पत्नी के बीच तुलना कर रहा है। पति-पत्नी का रिश्ता उस संबंधों को दर्शाता है जो मसीह का चर्च के साथ है। संदर्भ संबंध है। अब, क्या होगा यदि हम इसे "मुक्ति" के संदर्भ में बदल दें और फिर निम्नलिखित कथनों पर पहुँचें? "जैसे मसीह ने चर्च के लिए स्वयं को दे दिया, वैसे ही पति को अपनी पत्नी और परिवार के उद्धार के लिए बलिदान देना चाहिए। पति के छुटकारे के बलिदान के माध्यम से पत्नी

और परिवार को बचाया जाता है। पति के बिना, पत्नी को बचाया नहीं जा सकता है, जैसे कि चर्च को मसीह के बिना नहीं बचाया जा सकता है।" ऐसे कथन गलत होंगे और उनका समर्थन नहीं किया जाएगा।

वचनों की व्याख्या करते समय, प्रासंगिक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, तात्कालिक संदर्भ और अध्याय के व्यापक संदर्भ को पहचानना और उसके साथ काम करना महत्वपूर्ण है।

आइये अब हम अपने व्याख्यात्मक ढांचे का निर्माण जारी रखें. क्योंकि हम अगले अध्याय में संस्कृति के महत्व पर चर्चा करेंगे।

9
संस्कृति

बाइबल अपने समय की संस्कृति को दर्शाती है। पवित्रशास्त्र में उस समय की संस्कृति के कई पहलुओं का उल्लेख है जब घटनाएँ घटित हुईं और जब इसे लिखा गया। पवित्रशास्त्र में सांस्कृतिक संदर्भों में घरेलू (पारिवारिक जीवन), भोजन, वस्त्र, धर्म, सामाजिक (समाज), भौगोलिक, आर्थिक, कानूनी, राजनीतिक, कभी-कभी वास्तुकला, सैन्य, आदि प्रथाओं का भी समावेश किया गया है। अतः, वचनों की हमारी समझ और इसकी सही प्रकार से व्याख्या करने और इसे लागू करने की हमारी क्षमता के लिए यह आवश्यक है कि हमें अध्याय में उल्लेखित सांस्कृतिक संदर्भों की समझ भी हो।

इसके अतिरिक्त, और हमें यह पहचानने की आवश्यकता है कि कुछ बाइबल निर्देश और अभ्यास सांस्कृतिक व्यवस्था तक ही सीमित है जो सबसे महत्वपूर्ण बात हैं,अतः, हमारे वर्तमान समय में हस्तांतरणीय नहीं हैं। उन्हें एक विशेष व्यक्ति या समुदाय को अपने बीच और अपने समय के लिए अभ्यास करने के निर्देश के रूप में दिया गया था। अतः हम देखेंगे, पवित्रशास्त्र में हम जो कुछ भी पढ़ते हैं, वह प्रत्यक्ष रूप में आज के लिए सीधे लागू नहीं होता है।

परमेश्वर अंतिम अधिकारी है। उसे यह निर्धारित करने का अधिकार है कि वह किन प्रथाओं का निर्देश देता है, किसे और क्यों; और उसे यह निर्धारित करने का अधिकार है कि यह अस्थायी होना चाहिए या स्थाई या निरंतर। बाइबल परमेश्वर के इस संप्रभु कार्य की अभिव्यक्ति है क्योंकि उसने समय के साथ लोगों और समुदायों के साथ काम किया है।

यह हमें यह प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करता है—कौन से निर्देश और अभ्यास उन लोगों और उस सांस्कृतिक परिवेश के लिए विशिष्ट हैं जिन्हें यह मूल रूप से दिया गया था? हम कैसे निर्धारित करते हैं कि कौन सी शिक्षाएँ, निर्देश और अभ्यास हमारे समय और संस्कृति में स्थानांतरित किए जा सकते हैं और कौन से नहीं? हम उन्हें अपने समय और संस्कृति में, संसार के विभिन्न भागों में किस प्रकार लागू करते हैं?

इसके अतिरिक्त, जब हम किसी विशेष समय पर किसी विशेष लोगों को दिए गए निर्देशों के बारे में पढ़ते हैं और उनकी प्रचलित संस्कृति के संदर्भ में, हम परमेश्वर के हृदय, मन, रीतियों और विचारों के बारे में अंतर्दृष्टि प्राप्त करना चाहते हैं, तब हम सिर्फ "क्या" से परे, यह समझना चाहते हैं कि वह निर्देश या अभ्यास "क्यों" दिया गया था। फिर हम यह निर्धारित करना चाहते हैं कि क्या,"क्यों" के पीछे का सिद्धांत शिक्षण, निर्देश या अभ्यास या कारण आज हमारे लिए प्रासंगिक और लागू होता है। कई उदाहरणों में, जबकि **अभ्यास** सीधे हस्तांतरणीय नहीं है, **सिद्धांत** परमेश्वर के हृदय की अभिव्यक्ति हो सकता है और इसलिए, हमें अपने समय और आज की संस्कृतियों के लिए प्रासंगिक तरीके से अभ्यास करना जारी रखना चाहिए।

हम उनके सांस्कृतिक संदर्भ के संबंध में निर्देशों, प्रथाओं और स्थितियों की तीन श्रेणियों की व्यापक रूप से पहचान कर सकते हैं।

1) अस्थायी अभ्यास

2) स्थायी अभ्यास

3) अस्थायी अभ्यास, निरंतरता का सिद्धांत

1) अस्थायी अभ्यास

यहाँ हम पहचानते हैं कि शिक्षण, निर्देश या अभ्यास किसी विशेष समय पर विशिष्ट लोगों को उनकी संस्कृति के भाग के रूप में दिया

गया था। हम आज इस अभ्यास को जारी नहीं रखते हैं।

इनमें से कुछ निर्देशों को पवित्रशास्त्र में स्पष्ट रूप से **निरस्त** कर दिया गया है और इसलिए, वह वर्तमान के लिए हस्तांतरणीय नहीं हैं।

कुछ निर्देशों को **अलग-अलग** निर्देशों द्वारा प्रतिस्थापित किया गया है और इसलिए, हम उस विषयों या अभ्यास पर दिए गए अंतिम निर्देश का पालन करते हैं।

इनमें से कुछ निर्देश मूसा की व्यवस्था (मोज़ेक लॉ) के तहत दिए गए थे, और चूँकि नए नियम के विश्वासियों के रूप में अब हम व्यवस्था के अधीन नहीं हैं (गलातियों 3:24-26; गलातियों 5:1,18), इसलिए हम इन प्रथाओं को जारी नहीं रखते हैं।

यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

a) **बहुविवाह:** कई पत्नियाँ रखने की प्रथा (उत्पत्ति 16:1-4)। नया नियम एक विवाह का निर्देश देता है (1 कुरिन्थियों 7:2; इफिसियों 5:28,33; 1 तीमुथियुस 3:2)।

b) **अपने बेटे की बलि देना:** कहीं भी मसीही पिताओं को अपने बेटों की बलि देने का आदेश नहीं दिया गया है जैसा कि अब्राहम से कहा गया था, भले ही अब्राहम हमारे विश्वास का पिता है।

c) **लेविरेट (नियोग) विवाह**: एक प्रथा जिसमें एक भाई अपने मृतक भाई की पत्नी से विवाह करता है (व्यवस्थाविवरण 25:5-10)।

d) **लहू का बदला:** परिवार के किसी सदस्य की मौत का बदला लेने की प्रथा (उत्पत्ति 4:15)।

e) **प्रायश्चित के लिए पशु बलि:** पापबलि और प्रायश्चित के लिए पशुओं की बलि (लैव्यव्यवस्था 1:1-4)।

f) **जयंती वर्ष**: हर 50 साल में, कर्ज माफ कर दिए जाते थे और जमीन उसके मूल मालिकों को लौटा दी जाती थी (लैव्यव्यवस्था 25:10)।

g) **निर्णय लेने के लिए चिट्ठियाँ डालना**: निर्णयों में परमेश्वर की इच्छा निर्धारित करने के लिए चिट्ठियाँ डाली जाती थीं (नीतिवचन 16:33; प्रेरितों के काम 1:26)।

h) **गरीबों के लिए कटाई का अधिकार:** किसान अपने खेतों के किनारों को गरीबों के लिए कटाई के बिना छोड़ देते थे (लैव्यव्यवस्था 19:9,10)।

i) **रिश्तेदार (सगे संबंधी):** छुड़ाने वाले की भूमिका: एक करीबी रिश्तेदार के पास परिवार के किसी सदस्य की संपत्ति को छुड़ाने या विधवा से शादी करने का अधिकार और दायित्व होता था (रूत 4:1-10)।

j) **शरण के शहर:** निर्दिष्ट शहर जहाँ कोई व्यक्ति जिसने गलती से किसी दूसरे को मार दिया हो, शरण ले सकता है (गिनती 35:9-15)।

k) **शुद्ध और अशुद्ध भोजन:** उपभोग के लिए स्वच्छ और अशुद्ध जानवरों के बीच अंतर (लैव्यव्यवस्था 11)। यह आहार स्वास्थ्य और स्वच्छता के लिए दिया गया था। हम दुनिया के अपने हिस्सों के लिए जो प्रासंगिक है उसका पालन करते हैं, इसे वचन और प्रार्थना के साथ पवित्र करते हैं (1 तीमुथियुस 4:4,5)।

l) **संपत्ति के स्वामित्व का हस्तांतरण:** जब आप कोई घर खरीदते हैं, तो भूतपूर्व मालिक को अपनी चप्पल उतारकर खरीदार को दे देनी चाहिए (रूत 4:8)। जबकि हम सामान्यतः कानूनी बिक्री दस्तावेज़ पर हस्ताक्षर करते हैं।

m) **पुराने नियम के कपड़ों के नियम:** *"कोई स्त्री पुरुष का पहिरावा न पहिने, और न कोई पुरुष स्त्री का पहिरावा पहिने; क्योंकि ऐसे कामों के सब करनेवाले तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में घृणित हैं। ऊन और सनी की मिलावट से बना हुआ वस्त्र न पहिनना। अपने ओढ़ने के चारों ओर की कोर पर झालर लगाया करना।"* (व्यवस्थाविवरण 22:5,11,12)। यह व्यवस्था के अंतर्गत दिया गया था जिसका अब हम पालन नहीं करते। नया नियम इसी तरह के प्रतिबंध नहीं लगाता है, और केवल हमें शालीनता से कपड़े पहनने का निर्देश देता है (1 तीमुथियुस 2:9,10; 1 पतरस 3:3,4)।

n) **याजकों के लिए वस्त्र नियम:** सिर्फ सन पहनना चाहिए, ऊनी वस्त्र नहीं, सन की पगड़ी, सन की पतलून पहननी चाहिए और पसीना नहीं आना चाहिए (यहेजकेल 44:15-18)। यह व्यवस्था के तहत दिया गया था जिसका हम अब पालन नहीं करते। नए नियम में याजकों के रूप में विश्वासियों के लिए कोई विशेष वस्त्र नियम नहीं दिए गए हैं।

o) **मंदिर-केंद्रित स्तुति आराधना :** यरूशलेम में मंदिर के आसपास केंद्रित आराधना (प्रेरितों के काम 3:1)। हम जहाँ भी हैं, आत्मा और सच्चाई से आराधना करते हैं (यूहन्ना 4:23,24)।

p) **सब्त का पालन:** सब्त के दिन का सख्त पालन, जिसमें काम और यात्रा पर प्रतिबंध सम्मिलित हैं (निर्गमन 20:8-11)। नया नियम हमें यह चुनने की अनुमति देता है कि हम प्रत्येक दिन कैसे व्यवहार करते हैं (रोमियों 14:5,6; कुलुस्सियों 2:16,17)।

q) **लंबे बाल**: एक नाज़ीर को अपने बाल बढ़ने देना था (न्यायियों 13:5; 1 शमूएल 1:11)। पौलुस ने नाज़ीर की शपथ का पालन किया, अपने बाल बढ़ने दिए और फिर उन्हें कटवा दिया (प्रेरितों के काम 18:18)। किन्तु कुरिन्थियों को, उसने लिखा कि एक आदमी के लिए लंबे बाल अपमानजनक माने जाते हैं (1 कुरिन्थियों

11:14)। यहूदी और यूनानी दोनों संस्कृतियों में, पुरुषों के लिए छोटे बाल सामान्य थे। इसलिए, एक आदमी के लिए लंबे बाल रखना अपमानजनक था क्योंकि इसे स्त्री संबंधी माना जाता था। आज, हम पुरुषों को उनके बालों की लंबाई से नहीं आंकते हैं।

r) इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाओ: 12 चेलों को प्रभु का निर्देश (मत्ती 10:5,6) बाद में बदलकर सम्पूर्ण संसार में जाओ (मरकुस 16:15) इस प्रकार कर दिया गया।

s) अपने साथ कुछ भी न ले जाओ: प्रभु ने अपने 12 चेलों को निर्देश दिया कि वे पैसे या थैला आदि न ले जाएँ (मत्ती 10:9,10)। बाद में, इसे बदलकर पैसे, थैला, तलवार, एक थैला और कपड़े ले जाना कर दिया गया (लूका 22:35,36)। हम प्रभु की सेवा करने के लिए जाते समय जो कुछ भी आवश्यक है उसे लेकर इसका अभ्यास करते हैं।

t) पवित्र आत्मा के लिए यरूशलेम में प्रतीक्षा करें: शिष्यों को प्रभु का निर्देश (लूका 24:49; प्रेरितों के काम 1:4,5)। बाद में पवित्र आत्मा सभी प्राणियों पर उंडेला जाना था, जिन्हें प्रभु बुलाता है, जहाँ भी उन्हें बुलाया जाता है (प्रेरितों के काम 2:38,39)।

2) स्थायी अभ्यास

यहाँ हम मानते हैं कि शिक्षण, निर्देश या अभ्यास विशिष्ट लोगों को, किसी विशेष समय पर, उनकी संस्कृति के भाग के रूप में दिया गया था। हम यह भी मानते हैं कि यह अभ्यास अपरिवर्तित रहता है, और हम आज भी इस अभ्यास को अपने समय और संस्कृतियों के लिए प्रासंगिक तरीके से जारी रखते हैं। ये निर्देश स्थायी हैं।

a) मृत्यु दंड: उत्पत्ति 9:6 में दिया गया है और कहीं और निरस्त नहीं किया गया है। इसलिए, इसे आज भी लागू किया जा सकता है।

b) **परमेश्वर के वचन पर ध्यान लगाए रहना:** पुराने नियम में परमेश्वर द्वारा दिया गया (यहोशू 1:8)। नए नियम में इसे नहीं बदला गया है और इसलिए, हम इस प्रथा को जारी रखते हैं।

c) **गायन, नृत्य, ताली और वाद्य यंत्रों के साथ आराधना:** पुराने नियम में दिया गया है (भजन संहिता देखें) और नए नियम में इसे नहीं बदला गया है। इसलिए, हम इसे जारी रखते हैं।

d) **विवाह:** एक पुरुष और एक महिला के बीच मिलन के रूप में विवाह (उत्पत्ति 2:24; इफिसियों 5:22-33)।

e) **जल से बपतिस्मा**: मसीह में विश्वास की सार्वजनिक घोषणा के रूप में बपतिस्मा (मत्ती 28:19; प्रेरितों के काम 2:38)।

f) **कम्युनियन (प्रभु भोज):** यीशु की मृत्यु की याद में रोटी तोड़ने और (दाखरस) पीने की प्रथा (1 कुरिन्थियों 11:23-26)।

g) **प्रार्थना**: प्रार्थना के माध्यम से परमेश्वर के साथ नियमित रूप से बातचीत करना (मत्ती 6:5-13; 1 थिस्सलुनीकियों 5:17)।

h) **दसमांश देना और भेंट चढ़ाना**: परमेश्वर के कार्य के लिए आराधना और समर्थन के रूप में आय का दसवा हिस्सा देना और आर्थिक योगदान देना (मलाकी 3:10; 2 कुरिन्थियों 9:7)।

i) **चर्च की संगति और आराधना:** स्तुति, शिक्षण और संगति के लिए अन्य विश्वासियों के साथ एकत्रित होना (इब्रानियों 10:25; प्रेरितों के काम 2:42)।

j) **सुसमाचार प्रचार और सुसमाचार साझा करना**: यीशु मसीह के माध्यम से उद्धार के संदेश का प्रचार (मत्ती 28:19,20; प्रेरितों के काम 1:8)

k) **क्षमा:** दूसरों को उसी तरह क्षमा करना जैसे परमेश्वर हमें क्षमा करता है (मत्ती 6:14,15; इफिसियों 4:32)।

- **l) पड़ोसियों और शत्रुओं के प्रति प्रेम:** शत्रुओं सहित दूसरों से प्रेम करना, परमेश्वर के प्रेम का प्रतिबिंब है (मत्ती 22:39; लूका 6:27)।
- **m) माता-पिता का सम्मान करना:** माता-पिता का सम्मान करना और उनकी देखभाल करना (इफिसियों 6:2)।
- **n) गरीबों को देना:** आवश्यकता के अनुसार दान देना (मत्ती 19:21)।
- **o) न्याय और धार्मिकता:** न्याय और धार्मिकता का अनुसरण करना (मीका 6:8)।

3) अस्थायी अभ्यास, निरंतर सिद्धांत

यहाँ, हम मानते हैं कि शिक्षण, निर्देश या अभ्यास विशिष्ट लोगों को, किसी विशेष समय पर, उनकी संस्कृति के हिस्से के रूप में दिया गया था। आजकल हम इस अभ्यास को जारी नहीं रखते हैं। जबकि, उस अभ्यास के लिए अंतर्निहित सिद्धांत अभी भी कायम है, और हम आज भी उसी सिद्धांत को अपने समय और संस्कृतियों के लिए प्रासंगिक रूप से व्यक्त और अभ्यास करते हैं। ध्यान में रखने वाली एक महत्वपूर्ण बात यह है कि आज के संदर्भ में इस सिद्धांत का अभ्यास संसार के विभिन्न भागों में भिन्न हो सकता है, और इसलिए, यदि परमेश्वर के वचन का खंडन नहीं किया जाता है, तो हमें "सही और गलत" के न्यायाधीश नहीं बनना चाहिए।

यहाँ उन स्थितियों, निर्देशों या प्रथाओं के उदाहरण दिए गए हैं जो बाइबल के समय की सांस्कृतिक व्यवस्था के लिए प्रासंगिक थे और जिनमें अंतर्निहित सिद्धांत हस्तांतरणीय और अभ्यास योग्य हैं।

- **a) अपने जूते उतारें:** जब मूसा पवित्र भूमि पर परमेश्वर की उपस्थिति में खड़ा था, तो उसने अपनी चप्पल उतार दी (निर्गमन 3:5)। हालाँकि हम हर बार प्रार्थना करते समय अपने जूते उतारने की प्रथा का पालन नहीं करते हैं, किन्तु हम हमेशा परमेश्वर की

उपस्थिति में श्रद्धा का हृदय बनाए रखने के सिद्धांत का पालन करते हैं।

b) **नाज़ीर शपथ:** लोगों ने शराब से दूर रहने और अपने बालों को न कटवाने के साथ-साथ परमेश्वर के लिए अलग होने की शपथ ली (गिनती 6:1-5)। जबकि हम इस प्रथा का पालन नहीं करते, हम परमेश्वर के प्रति समर्पण के सिद्धांत का पालन करते।

c) **पैर धोना:** मेहमानों के पैर धोना आतिथ्य और सेवाभाव का प्रतीक था। प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों के लिए ऐसा किया (यूहन्ना 13:14)। जबकि हम ऐसा हर बार नहीं करते, किन्तु हम हमेशा एक-दूसरे के प्रति नम्रता और समर्पण में चलना सीखते हैं।

d) **विश्राम का दिन:** विश्राम और आराधना का दिन अलग रखना (निर्गमन 20:8-11; मरकुस 2:27)। हम विश्राम और आराधना के सिद्धांत का पालन करते हैं।

e) **एक-दूसरे का अभिवादन करना**: नये नियम में पाँच स्थानों पर विश्वासियों को पवित्र चुंबन के साथ एक-दूसरे का अभिवादन करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है (रोमियों 16:16; 1 कुरिन्थियों 16:20) क्योंकि उस समय अभिवादन का सामान्य तरीका यही था। जबकि हम एक ही रिवाज़ का पालन नहीं करते, किन्तु एक-दूसरे को भाईचारे के प्यार और दया के साथ अभिवादन करने का अंतर्निहित सिद्धांत अपनाते है। यह अभिवादन कैसे व्यक्त किया जाता है यह संसार के विभिन्न-भागों मे भिन्न होगा।

f) **चर्च की सभाओं में स्त्रियाँ अपना सिर ढकती हैं (1 कुरिन्थियों 11:2-16):** यह अंश एक स्त्री के सिर को ढकने की बात करता है। कुरिन्थियन संस्कृति में, एक स्त्री की ओढ़नी उसके पति के अधिकार का प्रतीक थी, और इस तरह वह यह दिखा रही थी कि वह स्वयं को अधिकार के अधीन रख रही है। कुरिन्थ में,

प्रतिमापूजक मंदिरों से जुड़ी वेश्याएँ सिर नहीं ढकती थीं। यह भी उल्लेखनीय है कि यहूदी स्त्रियाँ तब तक सिर नहीं ढकती थीं जब तक कि वे विवाहित न हो जाएँ। ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं थी क्योंकि वे पति के अधिकार के अधीन नहीं थीं। इसलिए, 1 कुरिन्थियों 11 में पौलुस का निर्देश कुरिन्थियन चर्च के लिए बहुत विशिष्ट था, और अन्य चर्चों में इसका पालन नहीं किया जाता था (1 कुरिन्थियों 11:16)। हम देखते हैं कि स्त्रियों द्वारा अपना सिर ढकने का उल्लेख किसी अन्य पत्र में नहीं किया गया है। क्या आज स्त्रियों को चर्च में अपने सिर पर ओढ़नी पहनना चाहिए? नहीं, क्योंकि ग्रीक-रोमन संसार में स्त्रियों के सिर को ढकने का महत्व अब हमारी संस्कृति में नहीं है। किन्तु क्या यहाँ कोई ऐसा सिद्धांत है जिसका पालन किया जाना चाहिए और जिसे हमारी आधुनिक संस्कृति में व्यक्त किया जाना चाहिए? हाँ, पत्नी का अपने पति के प्रति समर्पण का सिद्धांत अभी भी कायम है क्योंकि इस सत्य को पवित्रशास्त्र में और भी अन्य जगह दोहराया गया है (इफिसियों 5:22,23; कुलुस्सियों 3:18; 1 पतरस 3:1,2)

अभ्यास:

यहाँ कुछ प्रथाओं की एक नमूना सूची दी गई है जो हम बाइबल में देखते हैं। प्रत्येक के लिए, इंगित करें कि क्या यह एक अस्थायी प्रथा (**अ प्र**), स्थायी प्रथा (**स्था प्र**) या अस्थायी, लेकिन निरंतर का सिद्धांत (**नि सि**)।

क्रमांक	**संस्कृति**	**अ प्र / स्था प्र/ नि सि**
1.	एक दूसरे को पवित्र चुम्बन से नमस्कार करें (रोमियों 16:16)	

2.	मूर्तियों को बलि किए गए मांस से दूर रहें (प्रेरितों के काम 15:29)	
3.	बपतिस्मा लें (प्रेरितों के काम 2:38)	
4.	एक दूसरे के पैर धोएँ (यूहन्ना 13:14)	
5.	संगति का दाहिना हाथ बढ़ाएँ (गलातियों 2:9)	
6.	हाथ रखकर आज्ञा दें (प्रेरितों के काम 13:3)	
7.	महिलाओं को चर्च की सभा में बोलने से रोकें (1 कुरिन्थियों 14:34)*	
8.	प्रार्थना के लिए निश्चित समय रखें (प्रेरितों के काम 3:1)	
9.	गीत, भजन और आत्मिक गीत गाएँ (कुलुस्सियों 3:16)	
10.	लहू के सेवन से दूर रहें (प्रेरितों के काम 15:29)	
11.	दास अपने सांसारिक स्वामियों की आज्ञा का पालन करें (इफिसियों 6:5)	
12.	प्रभु भोज लें (1 कुरिन्थियों 11:24)	
13.	कोई शपथ न लें (याकूब 5:12)	
14.	खतना करवाएँ (प्रेरितों के काम 15:5)	
15.	चप्पल पहनें, किन्तु अतिरिक्त अंगरखा न पहनें (मरकुस 6:9)	
16.	चर्च के अधिकारियों के लिए चिट्ठी डालें (प्रेरितों के काम 1:26)	

17.	सरकार को कर चुकाएँ (रोमियों 13:1-7)	

उत्तर

1)CP 2)PP 3)PP 4)CP 5)PP 6)PP 7)TP

8)TP 9)PP 10)PP 11)CP 12)PP 13)PP 14)TP

15)TP 16)TP 17)PP

***7) को पिछले अध्याय में पहले ही समझाया जा चुका है।**

10
भाषा—शब्दार्थ और व्याकरण

भाषा के घटकों में स्वरविज्ञान, ध्वनिविज्ञान, प्रवचन, शब्द संरचना, वाक्य-रचना, शब्दार्थ विज्ञान और व्यावहारिकता सम्मिलित है।

स्वरविज्ञान (फोनेटिक्स) स्वरविज्ञान उन तरीकों का अध्ययन है जिनसे वाणी ध्वनियों का निर्माण, वर्गीकरण, संयोजन और बोध होता है।

ध्वनिविज्ञान (फोनोलॉजी) बातचीत में और उच्चारण में विशिष्ट ध्वनियों के व्याकरण (भाषण ध्वनियों की विविधता विभिन्न संदेश भेजती है) का अध्ययन करती है।

प्रवचन या संभाषण (डिस्कोर्स) (जिसे प्रवचन विश्लेषण के रूप में भी जाना जाता है) का उद्देश्य प्रवचन (सुसंगत वाक्यों, कथनों या अध्याय की एक श्रृंखला) के निर्माण और संगठन को नियंत्रित करने वाले व्यवस्थित नियमों की खोज करना और यह पता लगाना है कि सुसंगतता कैसे प्राप्त की जाती है।

शब्द संरचना (मोर्फोलॉजी) अध्ययन करता है कि शब्दों को संरचनात्मक रूप से कैसे बनाया जा सकता है। **उदाहरण:** तीन अलग-अलग अर्थों को इंगित करने के लिए घटित होना, हुआ, घटित होने वाला।

वाक्य-रचना (सिन्टेक्स) वाक्य संरचनाओं का अध्ययन है, वे नियम जो व्याकरणिक वाक्यांशों, खंडों और वाक्यों को बनाने के लिए शब्दों के संयोजन को नियंत्रित करते हैं।

शब्दार्थ विज्ञान (सेमॅन्टिक्स) शब्दों और वाक्यों द्वारा व्यक्त किए गए अंतर्निहित अर्थ पर बारीकी से ध्यान देता है और अध्ययन करता है कि जब शब्द मिलकर वाक्यांश बन जाते हैं, और जब शब्द और वाक्यांश मिलकर वाक्य बन जाते हैं, तो अर्थ कैसे बदल जाता है।

व्यावहारिक विज्ञान (प्रॅग्मेटिक्स) संदर्भों में अर्थ का अध्ययन है—अर्थ जो प्रासंगिक कारकों जैसे कि संचार की स्थिति, बोलने वालों की पहचान और आशय या भाषा तकनीकों जैसे कि बयानबाजी और आलंकारिक उपकरणों के उपयोग पर निर्भर करता है।

भाषा को समझने के लिए व्याकरण भी महत्वपूर्ण है। **व्याकरण** संरचनात्मक नियमों पर ध्यान केंद्रित करता है जो यह नियंत्रित करते हैं कि वाक्य बनाने के लिए शब्दों को कैसे जोड़ा जाता है। व्याकरण के प्रमुख पहलुओं में वाक्य संरचना, क्रिया संयुग्मन, संज्ञा समझौता, काल (भूत, वर्तमान, भविष्य), कर्ता-क्रिया अन्वय, लेख (निश्चित और अनिश्चित), पूर्वसर्ग, विशेषण, क्रियाविशेषण, सर्वनाम, प्रश्न निर्माण, निषेध, और भाषा, मामलों और लिंग समझौते पर निर्भर करता है।

बाइबल परमेश्वर का प्रेरित वचन है, और इसलिए पवित्रशास्त्र का हर शब्द महत्वपूर्ण है। इसलिए, पवित्रशास्त्र के अध्याय का अध्ययन, समझ और व्याख्या करते समय, हमें कम से कम भाषा के घटकों जैसे मूल शब्द अर्थ, काल, क्रिया और संज्ञा उपयोग की मूल बातों पर विचार करना चाहिए। हम शब्दों के अर्थ, रूप, कार्य, शब्दों और वाक्यों के संबंध और उन्हें एक साथ रखने की रीति को ध्यान में रखते हैं। हमारा लक्ष्य मूल विचार को स्पष्ट रूप से और सही ढंग से समझना है जो पवित्र आत्मा द्वारा लेखकों के माध्यम से व्यक्त किया गया है।

शब्दों का अर्थ

कभी-कभी, भिन्न-भिन्न ग्रीक शब्दों का अनुवाद एक ही अंग्रेजी शब्द

का उपयोग करके किया जा सकता है, किन्तु उनके अर्थ अलग-अलग हो सकते हैं। ग्रीक शब्द और उसके प्राथमिक अर्थ को समझने से हमें अध्याय को उचित ढंग से समझने में सहायता मिलेगी।

शक्ति और अधिकार

उदाहरण: ग्रीक *'डुनामिस'* ("शक्ति" का अर्थ है शक्ति, क्षमता, बल, अलौकिक शक्ति), ग्रीक *'एक्सौसिया'* ("शक्ति" का अर्थ है अधिकार, प्रत्यायुक्त अधिकार)

मत्ती 10:1
फिर उसने अपने बारह चेलों को पास बुलाकर, उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार *(एक्सौसिया)* **दिया कि उन्हें निकालें और सब प्रकार की बीमारियों और सब प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करें।**

लूका 9:1
फिर उसने बारहों को बुलाकर उन्हें सब दुष्टात्माओं और बीमारियों को दूर करने की सामर्थ्य *(डुनामिस)* **और अधिकार** *(एक्सौसिया)* **दिया**

लूका 10:19
देखो, मैं ने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को रौंदने का, और शत्रु की सारी सामर्थ्य *(डुनामिस)* **पर अधिकार** *(एक्सौसिया)* **दिया है; और किसी वस्तु से तुम्हें कुछ हानि न होगी।**

प्रेरितों के काम 1:8
परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य *(डुनामिस)* **पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।"**

समय—क्रोनोस और कैरोस

उदाहरण: ग्रीक *'क्रोनोस'* (समय की अवधि), ग्रीक *'कैरोस'* (सही समय, उपयुक्त समय)

प्रेरितों के काम 7:17-20

17"परन्तु जब उस प्रतिज्ञा के पूरे होने का समय *(क्रोनोस)* **निकट आया जो**
परमेश्वर ने अब्राहम से की थी, तो मिस्र में वे लोग बढ़ गए और बहुत हो गए।
18तब मिस्र में दूसरा राजा हुआ जो यूसुफ को नहीं जानता था।
19उसने हमारी जाति से चालाकी करके हमारे बापदादों के साथ यहाँ तक
बुरा व्यवहार किया, कि उन्हें अपने बालकों को फेंक देना पड़ा कि वे जीवित
न रहें।
20उस समय *(क्रोनोस)* **मूसा उत्पन्न हुआ। वह परमेश्वर की दृष्टि में बहुत ही**
सुन्दर था। वह तीन महीने तक अपने पिता के घर में पाला गया।

प्रेरितों के काम 1:6,7

6अत: उन्होंने इकट्ठे होकर उससे पूछा, "हे प्रभु, क्या तू इसी समय *(क्रोनोस)*
इस्राएल को राज्य फेर देगा?"
7उसने उनसे कहा, "उन समयों *(क्रोनोस)* **या कालों** *(कैरोस)* **को जानना,**
जिनको पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं।

गलातियों 4:4

परन्तु जब समय *(कैरोस)* **पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ।**

जीवन

यूनानी शब्द:

- *ज़ोए* = परमेश्वर के पास जो जीवन है,वह विश्वासी को दिया गया अनन्त जीवन का उपहार है
- *बायोस* = शारीरिक जीवन, जैविक जीवन
- *प्सूचे* = जीवन की साँस, प्राकृतिक जीवन, हृदय, मन, आत्मा, व्यक्तित्व का स्थान
- *एनास्ट्रोफ़े* = जीवन जीने का तरीका, व्यवहार, आचरण

प्रेम

यूनानी शब्द:

- *अगापे* = नि:स्वार्थ बलिदान वाला प्रेम, ईश्वरीय प्रेम, वह प्रेम जो हमें दूसरों के प्रति होना चाहिए
- *फिलियो* = कोमल स्नेह, भाईचारे का प्रेम, मित्रों या परिवार के सदस्यों के बीच का प्रेम (तीतुस 2:4)

इसे नए नियम में इस्तेमाल नहीं किया गया:

- *इरोस* = रोमांटिक प्रेम या यौन इच्छा
- *स्टोर्ज* = पारिवारिक प्रेम, माता-पिता और बच्चों के बीच प्रेम

नया

यूनानी शब्द:

- *कैनोस* = प्रकृति में नया, पहले से मौजूद चीज़ों से गुणात्मक रूप से अलग कुछ (नई सृष्टि-2 कुरिन्थियों 5:17, नया मनुष्य-इफिसियों 2:15; इफिसियों 4:24; नई वाचा-इब्रानियों 8:8)।
- *नियोस* = समय में नया, युग में नया, हाल ही में (मत्ती 9:17)।

परिपूर्ण और संपूर्ण

यूनानी शब्द:

- *टेलीओओ* = पूरा करके या परिपूर्ण करके अंत तक लाना, पूर्णता तक लाना (लूका 13:32; इब्रानियों 2:10; इब्रानियों 5:9)
- *कटारटिज़ो* = योग्य बनाना, पूरी तरह से तैयार करना, पूरी तरह से सुसज्जित करना, पूरी तरह से प्रशिक्षित करना (मत्ती 21:16; लूका 6:40; 2 कुरिन्थियों 13:9,11; इफिसियों 4:12)

- *आर्टिओस* = सुसज्जित, पूरा (2 तीमुथियुस 3:17)

जब वचन कहते हैं कि मसीह सिद्ध हुआ, तो इसका मतलब है कि उसकी आज्ञाकारिता पूर्णता में प्रदर्शित हुई, या उसकी आज्ञाकारिता उसके द्वारा जो कुछ उसने सहा उसके माध्यम से पूर्ण या उसने जो कष्ट सहे उसके द्वारा उसकी आज्ञाकारिता पूर्ण और अंतिम स्तर पर पहुंची। एक व्यक्ति के रूप में उसमें कोई कमी नहीं थी। यह उसकी आज्ञाकारिता का पूर्ण रूप से व्यक्त किया जाना था।

जब वचन विश्वासी के सिद्ध होने की बात करते हैं, तो इसका अर्थ है कि विश्वासी उन क्षेत्रों में पूरी तरह से प्रशिक्षित, तैयार और सुसज्जित है, जहाँ विश्वासी की कमी है।

अर्थों की एक विस्तृत श्रृंखला वाले शब्द

कुछ शब्दों के अर्थों की एक विस्तृत श्रृंखला होती है, जो उस अंग्रेजी शब्द से कहीं ज़्यादा होती है, जिसके साथ उसका अनुवाद किया जाता है। इसलिए, हिब्रू या ग्रीक शब्द द्वारा कवर या संबोधित सभी चीज़ों को समझना उपयोगी है।

शांति—शालोम

हिब्रू *'शालोम'* = शांति, शांत, शांतचित्तता, संतोष, आराम, पूर्णता, कल्याण, स्वास्थ्य, तंदुरुस्ती, संपूर्ण होना, संपूर्णता, अच्छे स्वास्थ्य में होना, स्वस्थ, खुश, समृद्ध, यशस्वी, सुरक्षा, निरोग, इसमें छुटकारा, सुरक्षा, उद्धार शामिल है। *शालोम* का सार रूप से अर्थ है संपूर्ण कल्याण। *शालोम* हमें क्रूस (यशायाह 53:5) के माध्यम से प्रदान किया गया है।

उद्धार

ग्रीक *'सोज़ो'* (क्रिया) (जैसा कि संज्ञा *'सोटेरिया'* के साथ है) = अनंत

जीवन को संदर्भित करने के लिए उपयोग किया जाता है (प्रेरितों के काम 16:31; रोमियों 10:13), पाप की क्षमा (मत्ती 1:21), बीमारी से चंगाई (मत्ती 9:21; मरकुस 5:23; लूका 8:48; याकूब 5:15), शैतानी शक्तियों से छुटकारा (लूका 8:36), नुकसान और खतरे से सुरक्षा और संरक्षण (मत्ती 8:25; प्रेरितों के काम 27:24)। इसका मूल विचार **बचाव** और **उद्धार** है।

पैराक्लेटोस

ग्रीक शब्द *'पैराक्लेटोस'* में कई प्रकार के अर्थ शामिल हैं, जैसे सहायक, दिलासा देने वाला, वकील, सलाहकार, मध्यस्थ, मज़बूत करने वाला, स्टैंडबाय। इसका प्रयोग पवित्र आत्मा (यूहन्ना 14:16,26; यूहन्ना 15:26; यूहन्ना 16:7) और यीशु (1 यूहन्ना 2:1) के संदर्भ में किया जाता है।

शब्दों के काल

वचनों का अध्ययन और व्याख्या करते समय, हमें शब्दों के काल के प्रति सचेत रहना चाहिए और काल के प्रति सच्चे रहते हुए अपनी समझ का निर्माण करना चाहिए।

1) जो भूतकाल में होता है उसे पहले से ही किया हुआ माना जाता है और इसलिए, यह एक वर्तमान वास्तविकता है।

- **उसने छुड़ाया है** (गलातियों 3:13)
- **उसने आशीर्वाद दिया है** (इफिसियों 1:3)
- **उसने चंगा किया है** (1 पतरस 2:24)

2) ऐसे उदाहरण हैं जब परमेश्वर का कार्य भूतकाल और वर्तमान काल दोनों में प्रस्तुत किया जाता है। इसलिए, हमें इस कार्य को दोनों दृष्टिकोणों से प्रस्तुत करना चाहिए।

उदाहरण:

पवित्रीकरण (शुद्धिकरण)—विश्वासी को मसीह में परमेश्वर के लिए अलग किया गया है और वह रोज़मर्रा की ज़िंदगी में पवित्रता में परिपूर्ण होने के लिए परमेश्वर के लिए अलग होने की प्रक्रिया से भी गुज़र रहा है।

- पवित्र किया गया, पवित्र किये गए हैं, पवित्र किये जा रहे हैं, पवित्र किया जा चुका है (1 कुरिन्थियों 1:2; 1 कुरिन्थियों 6:11; इब्रानियों 10:10,29)
- पवित्र किया जाना (इब्रानियों 2:11; इब्रानियों 10:14)

3) ऐसे उदाहरण भी हैं जब परमेश्वर का कार्य वर्तमान काल और भविष्य दोनों में प्रस्तुत किया जाता है। इसलिए, हमें इस कार्य को दोनों दृष्टिकोणों से समझना और प्रस्तुत करना चाहिए।

उदाहरण:

छुटकारा —विश्वासी को छुड़ाया गया है। हमारे छुटकारे का एक अनुभव वर्तमान में हो रहा है और हमारे छुटकारे का एक हिस्सा भविष्य में होगा जिसे हम आने वाले समय में प्राप्त करेंगे।

- हमारे पास छुटकारा है (इफिसियों 1:7; कुलुस्सियों 1:14)—एक वर्तमान अनुभव।
- खरीदे गए अधिकार के छुटकारे तक, छुटकारे के दिन के लिए मुहरबंद (इफिसियों 1:14; इफिसियों 4:30)—हमारे छुटकारे के अनुभव की भविष्य की परिणति।

4) ऐसे उदाहरण हैं जब परमेश्वर के कार्य को तात्कालिक, क्षणिक अनुभव के रूप में और दोहराए गए अनुभव के रूप में, साथ ही एक वर्तमान, निरंतर होने वाले अनुभव के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। हमें इसे तीनों दृष्टिकोणों से समझना और प्रस्तुत

करना चाहिए।

उदाहरण:

आत्मा से भरा जाना—जब विश्वासियों को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया जाता है, तो वे पवित्र आत्मा से भी भर जाते हैं (तात्कालिक)। वे पवित्र आत्मा से बार-बार (दैनिक) भरने का अनुभव कर सकते हैं। विश्वासी को हमेशा पवित्र आत्मा से भरा (वर्तमान निरंतर) रहना चाहिए।

- पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा से भरकर (प्रेरितों के काम 2:4), पौलुस पवित्र आत्मा से भर गया (प्रेरितों के काम 9:17)।
- शिष्यों को पवित्र आत्मा से भरे जाने के बार-बार अनुभव हुए (प्रेरितों के काम 4:8,31; प्रेरितों के काम 13:9,52)।
- हमें लगातार पवित्र आत्मा से भरे रहना है, पवित्र आत्मा के अनुसार चलना, जीना और निरंतर उसकी अगुवाई में रहना है (इफिसियों 5:18; गलातियों 5:16,18,25)।

क्रियाएँ और संज्ञाएँ

विश्वास और विश्वास करना

ग्रीक शब्द *'पिस्टिस'*, जिसका अनुवाद "विश्वास" किया गया है, एक संज्ञा है (जिसका अनुवाद 2 थिस्सलुनीकियों 2:13 में "विश्वास" किया गया है)। संज्ञा के रूप में, "विश्वास" "परमेश्वर और उसके वचन और उसके साथ विश्वासी के रिश्ते के प्रति एक दृढ़ विश्वास" की ओर इशारा करता है (वाइन डिक्शनरी)।

ग्रीक शब्द *'पिस्टेउओ'*, जिसका अनुवाद "विश्वास करना" है, एक क्रिया है। "विश्वास करना," विश्वास रखने का कार्य, "विश्वास दिलाना", "भरोसा रखना", "भरोसा करना" है, और यह परमेश्वर और उसके वचन पर पूर्ण निर्भरता से जीने की ओर इशारा करता है।

मरकुस 11:22-24 इसे उल्लेखनीय रूप से दर्शाता है।

मरकुस 11:22-24
[22]यीशु ने उस को उत्तर दिया, "परमेश्वर पर विश्वास रखो।
[23]मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई इस पहाड़ से कहे, 'तू उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़,' और अपने मन में सन्देह न करे, वरन् प्रतीति करे कि जो कहता हूँ वह हो जाएगा, तो उसके लिये वही होगा।
[24]इसलिये मैं तुम से कहता हूँ कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके माँगो, तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिये हो जाएगा।

हम मरकुस 11:22-24 को इस प्रकार सारांशित कर सकते हैं: परमेश्वर और उसके वचन में आस्था और दृढ़ विश्वास रखें। अब उस विश्वास पर काम करना शुरू करें। अपने हृदय में विश्वास करते हुए पहाड़ से बात करें। अपने हृदय में विश्वास करते हुए प्रार्थना में माँगें। अतः, इस अनुच्छेद में, बोलना और प्रार्थना करना ऐसी विधियाँ हैं जिनके द्वारा विश्वास को कार्य में लाया जा सकता है और वह विश्वास बन जाता है।

संदर्भ के आधार पर शब्द का अर्थ

स्वर्गदूत

ग्रीक शब्द *'एंजेलोस'* का सीधा अर्थ है "संदेशवाहक" और इसका उपयोग (नीचे दिए गए केवल कुछ संदर्भों) के लिए किया जाता है।

a) परमेश्वर के दूत (मत्ती 1:20)

b) मानव दूत (मत्ती 11:10; मरकुस 1:2; लूका 7:24,27; प्रकाशितवाक्य 1:20; प्रकाशितवाक्य 2:1,8,12,18; प्रकाशितवाक्य 3:1,7,14)

c) दुष्टात्माएं, शैतान के दूत (मत्ती 25:41; 2 कुरिन्थियों 12:7; 2 पतरस 2:4; यहूदा 1:6)

अतः जिस संदर्भ में इसका उपयोग किया जाता है, उसके आधार

पर हम यह निर्धारित करते हैं कि “दूत” का अर्थ परमेश्वर द्वारा भेजा गया कोई स्वर्गदूत है, कोई मानव या कोई दुष्टात्मा।

अतः पौलुस के शरीर में काँटा (2 कुरिन्थियों 12:7) शैतान का दूत था, एक दुष्टात्मा, कोई बीमारी या रोग नहीं। यह दुष्टात्मा पौलुस को लगातार पीटता रहा (मुट्ठी से घूँसा मारना, हिंसा से व्यवहार करना)। *"इसलिये कि मैं प्रकाशनों की बहुतायत से फूल न जाऊँ, मेरे शरीर में एक काँटा चुभाया गया, अर्थात् शैतान का एक दूत कि मुझे घूँसे मारे ताकि मैं फूल न जाऊँ।"* (2 कुरिन्थियों 12:7)।

एक पार्श्व टिप्पणी के रूप में, हमें इस बात से अवगत होना चाहिए कि ग्रीक शब्द *‘अपोस्टोलोस’* जिसका अर्थ है "एक प्रेरित", कुछ उदाहरणों में "दूत" के रूप में अनुवादित किया गया है (**उदाहरण:** 2 कुरिन्थियों 8:23; फिलिप्पियों 2:25)।

बपतिस्मा

ग्रीक शब्द *‘बपतिस्मा’* (संज्ञा) का अनुवाद “बपतिस्मा” और *‘बपतिस्मा देना’* (क्रिया) के रूप में किया जाता है जिसका अनुवाद “बपतिस्मा देना” होता है, मूल शब्द *‘बैप्टो’* से आता है, जिसका अर्थ है “डुबोना”। यह डूबना और उभरने की क्रिया को संदर्भित करता है। उदाहरण के लिए, इसका उपयोग डाई में डूबे हुए और रंगाई प्रक्रिया के दौरान निकाले गए कपड़े को संदर्भित करने के लिए किया जाता था।

नए नियम में “बपतिस्मा” शब्द का उपयोग कई अलग-अलग संदर्भों में किया जाता है (प्रत्येक के लिए कुछ संदर्भ दिए गए हैं)।

- पानी में बपतिस्मा (मत्ती 3:6; मत्ती 28:19)।
- मसीह की देह में बपतिस्मा (1 कुरिन्थियों 12:13)।
- मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान में बपतिस्मा (रोमियों

6:3,4; गलातियों 3:27; कुलुस्सियों 2:12)।

- पवित्र आत्मा में बपतिस्मा (मत्ती 3:11; प्रेरितों के काम 1:5; प्रेरितों के काम 11:16)।
- कष्ट दुखों में बपतिस्मा (मत्ती 20:22,23)।
- इस्राएल ने मूसा में प्रतीकात्मक रूप से बपतिस्मा लिया (1 कुरिन्थियों 10:1,2)।
- नूह का जहाज़—एक विश्वासी के बपतिस्मा का एक प्रकार और एक प्रतिबिंब है जो अपने दिल को प्रभु की ओर फेरने को व्यक्त करता है (1 पतरस 3:20,21)।
- कभी-कभी, शब्द का उपयोग औपचारिक स्नान के लिए भी किया जाता है (मरकुस 7:4,8; इब्राइनियों 9:10)।

विचार एक ही है। जब हम बपतिस्मा लेते हैं, तो हम किसी चीज़ "में" डूब जाते हैं। जब हम किसी चीज़ या किसी व्यक्ति "में" डूब जाते हैं, तो हम उस चीज़ या व्यक्ति के साथ पूरी तरह से पहचाने जाते हैं। जब लोग पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा (मत्ती 28:19) के नाम "में" बप्तिस्मा लेते हैं, तो उसके साथ पहचाने जाते हैं, और उसके साथ एक हो जाते हैं, बाइबल के परमेश्वर, त्रिएक परमेश्वर के प्रति समर्पित हो जाते हैं।

जब हम मसीह में बपतिस्मा, पानी में बपतिस्मा और पवित्र आत्मा में बपतिस्मा की तुलना करते हैं, तो हम इन टिप्पणियों को इस बात पर आकर्षित कर सकते हैं कि प्रत्येक घटना कब होती है, और इसे विश्वासी / विश्वासीयों के बीच में इसका प्रबंधन कौन कर रहा है और एक विश्वासी कौन सा बप्तिस्मा ले रहा है।

- **मसीह में बपतिस्मा (1 कुरिन्थियों 12:13)** दोबारा जन्म लेने / उद्धार के क्षण में होता है; और पवित्र आत्मा इसे देता है या ऐसा

करता है; तब एक व्यक्ति को मसीह में बपतिस्मा दिया जाता है और वह मसीह की देह का हिस्सा बन जाता है।

- **पवित्र आत्मा में बपतिस्मा (मत्ती 3:11)** दोबारा जन्म लेने / उद्धार के बाद किसी भी समय होता है; प्रभु यीशु इसे एक विश्वासी को देते हैं। किसी विश्वासी को पवित्र आत्मा द्वारा बपतिस्मा दिया जाता है / डुबाया जाता है।
- **जल में बपतिस्मा (मत्ती 28:19)** दोबारा जन्म लेने / उद्धार प्राप्त करने के बाद किसी भी समय होता है; कोई विश्वासी इसे किसी अन्य को विश्वासी को देता है; विश्वासी को पानी में बपतिस्मा दिया जाता है / डुबाया जाता है जो मसीह में उनके बपतिस्मा और उनकी मृत्यु, उनके गाड़े जाने और पुनरुत्थान के साथ पहचान का प्रतीक है।

इफिसियों 4:5 में "एक बपतिस्मा" का उल्लेख है, जबकि इब्रानियों 6:2 में "बपतिस्मा के सिद्धांत" का उल्लेख है। हम इसे कैसे समझते हैं? एक बपतिस्मा है जो सबसे महत्वपूर्ण है और जो हमें बचाता है। यह मसीह में बपतिस्मा है। बपतिस्मा का सिद्धांत नए नियम में विश्वासियों के लिए बताए गए विभिन्न प्रकार के बपतिस्मा से संबंधित एक शिक्षा है।

केरिस और करिश्मा

ग्रीक शब्द *'केरिस'* का अनुवाद "अनुग्रह" किया गया है, जिसका अर्थ इसके संदर्भ के आधार पर अलग-अलग है।

- अनुग्रह का अर्थ है **ईश्वरीय कृपा**, बिना योग्यता के दी गई कृपा जो प्राप्तकर्ता को दी जाती है (रोमियों 3:22; रोमियों 5:2; इफिसियों 2:8)।
- अनुग्रह का अर्थ है **ईश्वरीय सशक्तीकरण,** परमेश्वर एक व्यक्ति

को उसकी अपनी क्षमता से परे सशक्त बनाता है (2 कुरिन्थियों 12:9; इफिसियों 3:2,7; इफिसियों 4:7; 1 पतरस 4:10)।

- अनुग्रह का अर्थ है **ईश्वरीय चरित्र**, परमेश्वर के गुण जो एक व्यक्ति के जीवन के माध्यम से व्यक्त होते हैं (यूहन्ना 1:14; 2 कुरिन्थियों 8:7,9; इफिसियों 4:29; कुलुस्सियों 4:6; 2 पतरस 3:18)।

"अनुग्रह" के तीनों भावों को मानवीय संबंधों में भी समझा जा सकता है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति पर अनुग्रह करता है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से अनुग्रह प्राप्त करता है। एक व्यक्ति बहुत अनुग्रहशील या कृपालु होता है।

ग्रीक शब्द *'करिश्मा'* मूल शब्द *'केरिस'* से लिया गया है, जिसका अर्थ है "अनुग्रह" या "वरदान"।

अतः *'करिश्मा'* का अर्थ है "अनुग्रह का वरदान"। इसका प्रयोग इस प्रकार किया जाता है।

a) **धार्मिकता और अनन्त जीवन के परमेश्वर के उपहार के बारे में** (रोमियों 5:15,16; रोमियों 6:23)

b) **विश्वासियों पर उनके आत्मिक वरदानों के बारे में** (रोमियों 11:29; रोमियों 12:6; 1 कुरिन्थियों 1:7; 1 कुरिन्थियों 12:4,9,28,30,31; 1 तीमुथियुस 4:14; 2 तीमुथियुस 1:6; 1 पतरस 4:10)

c) **मानव सेवकाई / निर्देश के माध्यम से आत्मिक वरदानों के प्रावधान के बारे में** (रोमियों 1:11)।

आत्मिक वरदान *करिश्मा*, अनुग्रह के वरदान या अनुग्रह के उपहार हैं। ये आत्मिक वरदान कमाये नहीं गए हैं या हम इसके योग्य नहीं हैं।

चिह्नों का स्थान

बाइबल के व्याख्याशास्त्र में, विराम चिह्नों का स्थान (जैसे अल्पविराम) कुछ हद तक व्याख्या को प्रभावित कर सकता है। विराम चिह्न प्राचीन हिब्रू और ग्रीक में मूल पांडुलिपियों का हिस्सा नहीं थे, किन्तु अनुवाद के दौरान चीजों को अनुवाद की जा रही भाषा में समझने योग्य बनाने के लिए प्रस्तुत किए गए थे (**उदाहरण:** अंग्रेजी)। यह कोई बड़ी चिंता का विषय नहीं है, किन्तु वचनों का अध्ययन करते समय इसे ध्यान में रखना और किसी भी चुनौती से निपटने के लिए कुछ व्यावहारिक तरीकों को सीखना उपयोगी होगा।

हम दो उदाहरणों पर विचार करेंगे कि विराम चिह्नों का स्थान पाठ के अर्थ को कैसे थोड़ा बदल सकता है और विचार के सही प्रवाह को कैसे निर्धारित किया जाए।

कुलुस्सियों 3:16

कुलुस्सियों 3:16 एक उदाहरण प्रदान करता है कि विराम चिह्न किस तरह से इच्छित अर्थ की व्याख्या को प्रभावित करते हैं।

विकल्प A

कुलुस्सियों 3:16 (एनकेजेवी)
मसीह के वचन को अपने हृदय में भरपूरी से बसने दो, और एक दूसरे को भजन, स्तुतिगान और आत्मिक गीतों के द्वारा सिखाओ और चिताओ, और अपने हृदय में अनुग्रह के साथ प्रभु के लिए गाओ।

विकल्प B

कुलुस्सियों 3:16 (एनएएसबी 2020)
मसीह के वचन को अपने हृदय में भरपूरी से बसने दो, और एक दूसरे को भजन, स्तुतिगान और आत्मिक गीतों के द्वारा सिखाओ और चिताओ, और अपने हृदय में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिए गाओ।

एनकेजेवी बाइबल (और केजेवि बाइबल) शब्द “सारी बुद्धि” के बाद अल्पविराम लगाता है। सभी नहीं बल्कि ज्यादातर अन्य अनुवाद “सारी बुद्धि” से पहले अल्पविराम लगाते हैं जैसा कि ऊपर दिखाया गया है। इसलिए, अर्थ और महत्त्व थोड़ा अलग है। एनकेजेवी बाइबल अनुवाद मसीह के वचन को विश्वासी में भरपूरी से बसाएगा और विश्वासी वचन को बुद्धि से ग्रहण करेगा और वचन से बुद्धि प्राप्त करेगा। एनएएसबी अनुवाद में एक दूसरे के साथ पूरी बुद्धि से शिक्षा देने और वचन को साझा करने पर जोर दिया गया है। अभ्यास में हम दोनों को लेते हैं, इसलिए इसे लागू करना उतना अलग नहीं है।

यह निर्धारित करने के लिए कि कुलुस्सियों 3:16 के संदर्भ में कौन सा वाक्यांश बेहतर फिट बैठता है, हम अब तक सीखे गए कुछ व्याख्यात्मक सिद्धांतों को लागू कर सकते हैं।

1) संदर्भ पर विचार करें

कुलुस्सियों 3:8-17 में ऐसे चरित्र के बारे में बताया गया है जो एक मसीही के लिए उपयुक्त है और प्रेम, दया और शांति में एक साथ बने रहने से संबंधित है। इसलिए, पूरी बुद्धि से शिक्षा देने और चेतावनी देने पर जोर देने का विचार करना सुरक्षित रहेगा।

2) व्याकरण और वाक्य रचना पर विचार करें

ग्रीक में, वाक्यांश "पूरी बुद्धि से" या तो "तुम्हारे अंदर निवास करना" या "सिखाना और चेतावनी देना" की क्रिया को संशोधित कर सकता है। कई विद्वान और अनुवाद, बाद वाले दृष्टिकोण को अपनाते हैं, क्योंकि अक्सर "पूरी बुद्धि से" शिक्षा देने और चेतावनी देने के कार्य से जुड़ा होता है।

3) अनुवादों की तुलना करें

अधिकांश अनुवादों में अल्पविराम को एनएएसबी बाइबल की तरह ही

रखा गया है—*"मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो, और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और चिताओ..."* (कुलुस्सियों 3:16)। यहाँ पर अल्पविराम लगाने से यह संकेत मिलता है कि एक दूसरे को सिखाना और चेतावनी देना पूरी बुद्धि से किया जाना चाहिए।

4) समानांतर अंश

इफिसियों 5:17-21 एक समानांतर अंश प्रतीत होता है जिसमें बुद्धिमान बनने, परमेश्वर की इच्छा को जानने, आत्मा से परिपूर्ण होने का निर्देश दिया गया है और विश्वासियों को इस हाव भाव से, *"और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो"* (इफिसियों 5:19) का निर्देश दिया गया है। इसलिए, यहाँ हम देखते हैं कि बुद्धिमान होना और परमेश्वर की इच्छा को जानना एक दूसरे से बात करने और सेवा करने को प्रभावित करता है, जो कि एनएएसबी बाइबल द्वारा कुलुस्सियों 3:16 के अनुवाद के अनुरूप है।

5) बाकी वचनों के साथ निरंतरता

पौलुस की पत्रियों में, वचन की शिक्षा अक्सर बुद्धि पर जोर देने के साथ होती है। यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैं—*"जिसका प्रचार करके हम हर एक मनुष्य को चेतावनी देते हैं और सारे ज्ञान से हर एक मनुष्य को सिखाते हैं, कि हम हर एक व्यक्ति को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें"* (कुलुस्सियों 1:28)। *"परंतु हम परमेश्वर का वह गुप्त ज्ञान, भेद की रीति पर बताते हैं, जिसे परमेश्वर ने सनातन से हमारी महिमा के लिये ठहराया है"* (1 कुरिन्थियों 2:7)। इसलिए, कुलुस्सियों 3:16 में अल्पविराम लगाना, वचनों की व्यापक शिक्षा के साथ संगत है, ताकि हम एक दूसरे को सारी बुद्धि से सिखा सकें और चेतावनी दे सकें।

इस विषय में, एनएएसबी बाइबल अनुवाद मूल अर्थ के साथ अधिक निकटता से संरेखित प्रतीत होता है, *"मसीह के वचन को अपने*

हृदय में अधिकाई से बसने दो, और सिद्ध ज्ञान सहित एक दूसरे को सिखाओ और चिताओ," (कुलुस्सियों 3:16)। इस प्रकार, वाक्यविन्यास, संदर्भ और समानांतर अंशों का सावधानीपूर्वक विश्लेषण, साथ ही निरंतरता की जाँच करने में सबसे उपयुक्त विराम चिह्नों की स्थिति और व्याख्यात्मक अर्थ निर्धारित करने में मदद कर सकती है।

इफिसियों 4:12

एक और उदाहरण पर विचार करें, इफिसियों 4:12, जहाँ विराम चिह्नों की स्थिति के कारण समझ में थोड़ा अंतर हो सकता है।

इफिसियों 4:12 (केजेवी)
पवित्र लोगों को सिद्ध करने के लिए, सेवकाई के काम के लिए, मसीह की देह के निर्माण के लिए:

इफिसियों 4:12 (एनकेजेवी)
जिस से पवित्र लोग सिद्ध हो जाएँ और सेवा का काम किया जाए और मसीह की देह उन्नति पाए

पवित्र लोगों को सेवकाई के काम के लिए सुसज्जित करने के लिए, मसीह की देह के निर्माण के लिए, केजेवी बाइबल में प्रत्येक वाक्यांश के बाद अल्पविराम होने से ऐसा लगता है कि इनमें से प्रत्येक पांच तरह की सेवकाई द्वारा किया जाता है। पांच प्रकार की सेवकाई करने वाले सेवक संतों को सिद्ध करते हैं, सेवकाई का काम करते हैं और मसीह की देह का निर्माण (उन्नत) करते हैं।

जबकि, अधिकांश अनुवाद एनकेजेवी बाइबल अनुवाद का अनुसरण करते हैं जहाँ अर्थ यह है कि ये पांच तरह की सेवाकाई के लिए एक विश्वासी को सुसज्जित करते हैं ताकि संत सेवकाई का काम करें, और पांच प्रकार की सेवा करने वाले सेवक मसीह की देह का निर्माण (उन्नत) भी करते हैं।

यह अन्य स्थानों पर वचनों की शिक्षा के अनुरूप है जहाँ सभी विश्वासियों को सेवा करने का अनुग्रह दिया गया है (इफिसियों 4:7; रोमियों 12:4-8) और पवित्र आत्मा द्वारा उन्हें एक दूसरे की सेवा करने के वरदानों से सशक्त बनाया गया है (1 कुरिन्थियों 12:7,11)। इसलिए, पाँच प्रकार की सेवा करने वाले सेवक विश्वासियों को सेवकाई में उनके काम के लिए सुसज्जित करते हैं।

पुराने और नए नियम की समतुल्य अवधारणाएँ

जब हम नियमों में किसी अवधारणा / विषय का पता लगाते हैं, और प्रयोग किए गए समतुल्य शब्दों की तुलना करते हैं, तो हमें उस विषय की स्पष्ट समझ मिलती है।

आइये हम हम "नरक" की अवधारणा / विषय पर विचार करें।

नरक—शिओल, हेडिस, गेहेना, स्वर्गलोक, अथाह कुंड (आग की झील) (एबिस)

अथाह कुंड (आग की झील) आइये हम हिब्रू और ग्रीक में "नरक" शब्द का अध्ययन करें। हम हिब्रू शब्द *'शिओल'* की खोज करते हैं जिसका अनुवाद "नरक" और "कब्र" (दफन स्थल) दोनों के रूप में किया जाता है। संदर्भ के आधार पर, हम यह निर्धारित करते हैं कि *'शीओल'* कब "नरक" को संदर्भित करता है और कब यह "कब्र" को संदर्भित करता है। हम पाते हैं कि ग्रीक शब्द *'हेडिस'* हिब्रू शब्द *'शीओल'* के लिए समानार्थी शब्द है। हालाँकि, ग्रीक में, दो शब्द *'हेडिस'* और *'गेहेना'* हैं, जिनका अनुवाद "नरक" किया गया है। *'हेडिस'* और *'गेहेना'* में क्या अंतर है? *'गेहेना'* को आग की जगह, "आग का नरक" और यातना की जगह के रूप में संदर्भित किया जाता है (मत्ती 5:22,29,30; मत्ती 18:8,9; मरकुस 9:43-47)। धनी व्यक्ति और लाजर की कहानी (लूका 16:19-31) के आधार पर, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि *'शीओल'* और *'हेडिस'* मृत्यु

के बाद सचेत अस्तित्व का स्थान था, जिसमें दो खंड थे, एक तरफ, यातना का स्थान (*'गेहेन्ना'*) जो अधर्मी मृतकों द्वारा कब्जा किया गया था, दूसरी तरफ एक बड़ी खाई से अलग किया गया था जहाँ धर्मी मृतकों को अब्राहम की गोद में रखा गया था (जिसे "स्वर्ग" भी कहा जाता है)। यह वही है जिसका उल्लेख प्रभु यीशु ने क्रूस पर से चोर से बात करते समय किया था, उन्होंने कहा, *"मैं तुझ से सच कहता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा"* (लूका 23:43)। जब यीशु की मृत्यु हुई, तो वह *हेडिस* (प्रेरितों के काम 2:27,31; प्रकाशितवाक्य 1:18) में उतरा, यानी *हेडिस* का स्वर्ग खंड (अब्राहम की गोद)। वहाँ से, वह गया और जेल में बंद आत्माओं को उपदेश दिया (1 पतरस 3:19,20) जिसका अर्थ है कि इन आत्माओं को *'गेहेन्ना'* की ओर रखा गया था। वह स्थान जहाँ 2 पतरस 2:4 में इनमें से कुछ स्वर्गदूतों को "नरक में उतारा गया" (*टार्टारू*) है, वह स्थान "टारटारस" या "अथाह कुंड" कहलाता है जहाँ इन स्वर्गदूतों को जंजीरों में जकड़ा गया है (यहूदा 1:6), *'गेहेन्ना'* का सबसे गहरा भाग, नरक की आग वाला भाग। "अथाह कुण्ड" को गहरे या अथाह गड्ढे या जेल के रूप में भी संदर्भित किया जाता है (प्रकाशितवाक्य 9:1,2,11; प्रकाशितवाक्य 11:7; प्रकाशितवाक्य 17:8; प्रकाशितवाक्य 20:1,3)। जब प्रभु यीशु का अपने पुनरुत्थान के बाद स्वर्गारोहण हुआ, तब वे अब्राहम की गोद में रखे गए सभी पुराने नियम के संतों को अपने साथ स्वर्ग ले गए (इफिसियों 4:8-10)। इसलिए नए नियम में, पुनरुत्थान के बाद, हम स्वर्ग में स्थित स्वर्ग को देखते हैं (2 कुरिन्थियों 12:4; प्रकाशितवाक्य 2:7)। महान श्वेत सिंहासन के न्याय के समय, मृत्यु और अधोलोक को आग की झील में डाल दिया जाएगा (प्रकाशितवाक्य 20:14)।

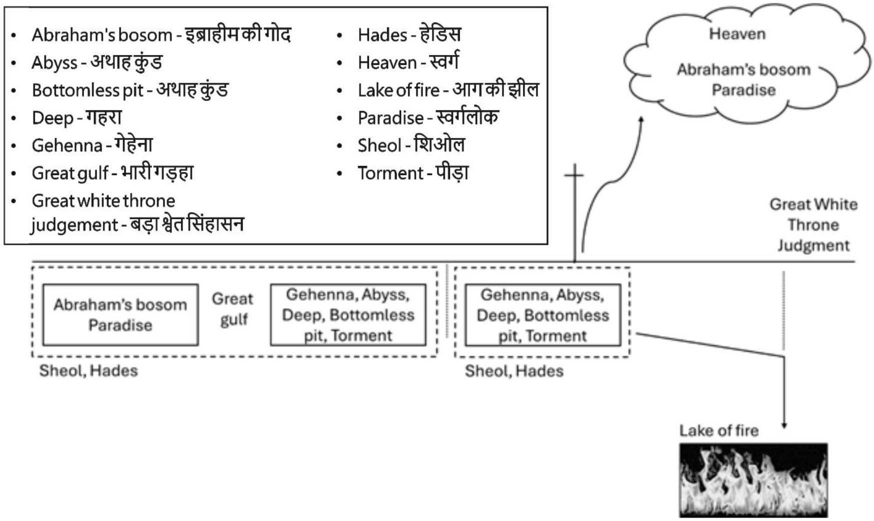

पुराने नियम के वचनों की, नए नियम की व्याख्या

उसने हमारे रोगों और पीड़ाओं को सहा (यशायाह 53:4,5)

यशायाह 53:4,5

4निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दु:खों को उठा लिया;
तो भी हम ने उसे परमेश्वर का मारा–कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा।
5परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के
कामों के कारण कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी,
कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएँ

क्या शारीरिक चंगाई, भावनात्मक चंगाई, और संपूर्ण व्यक्ति के लिए पूर्णता हमें क्रूस पर मसीह की मृत्यु के द्वाराप्रदान की गई है? क्या यह कुछ ऐसा है जिसके लिए यीशु क्रूस पर हमारे लिए मरा?

परंपरागत रूप से, हम यशायाह 53 में प्रयोग किए गए हिब्रू शब्दों का उल्लेख करेंगे, और फिर निष्कर्ष निकालेंगे कि वास्तव में, शारीरिक उपचार, भावनात्मक उपचार, और संपूर्ण व्यक्ति को पूर्णता यीशु मसीह के क्रूस के माध्यम से प्रदान की गई थी।

- हिब्रू *'चोली'* = बीमारी, रोग, बीमारी, दुःख, चिंता, विपत्ति
- हिब्रू *'मकोब'* = दर्द (शारीरिक, मानसिक), पीड़ा, दुःख, पीड़ा, व्यथा, शोक, दुःख
- हिब्रू *'शालोम'* = संपूर्ण कल्याण, समृद्धि, पूर्णता
- हिब्रू *'राफा'* = चंगा करना, स्वस्थ बनाना, चंगाई देने वाला, चिकित्सक, इलाज, आरोग्य होना

इससे भी अधिक रुचिकर बात यह है कि सुसमाचार लेखक मत्ती, पवित्र आत्मा की प्रेरणा के तहत यशायाह 53:4 को कैसे प्रस्तुत करता है।

मत्ती 8:16,17
16जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिनमें दुष्टात्माएँ थीं और उसने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया; और सब बीमारों को चंगा किया।
17ताकि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो: "उसने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया।"

बिना किसी संदेह के, यहाँ दिए गए विवरण में शारीरिक उपचार और शैतानी आत्माओं से मुक्ति को यशायाह 53:4 की पूर्ति के रूप में दर्ज किया गया है। यह अब निर्णायक और निर्विवाद है क्योंकि यह यशायाह 53:4 पर पवित्र आत्मा की प्रेरणा से किया है।

हम समझते हैं कि प्रभु यीशु ने अपने सांसारिक सेवकाई के दौरान पापों को क्षमा किया और लोगों को चंगा किया और मुक्ति दिलाई, जो कि क्रूस पर इसका पूरा दाम पहले से ही चुका दिया गया है। इसलिए, हम पूर्ण निश्चितता के साथ सिखा सकते हैं और प्रचार कर सकते हैं कि शारीरिक चंगाई, भावनात्मक चंगाई और संपूर्ण व्यक्ति को पूर्णता यीशु मसीह के क्रूस के द्वारा दे दी गई है।

अतः, जब हम यशायाह 53 का अध्ययन करते हैं, तो हम उस पर वही लागू कर सकते हैं जो मत्ती 8:16,17 में पवित्र आत्मा की टिप्पणी में प्रकट किया गया है।

एक और अवलोकन जो दिलचस्प है वह यह है कि जब प्रेरित पतरस, पवित्र आत्मा द्वारा, यशायाह 53:4 का संदर्भ देता है, तो वह इसे भूतकाल में बताता है—एक पूर्ण कार्य के रूप में।

1 पतरस 2:24
वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिये मरकर धार्मिकता के लिये जीवन बिताएँ: उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए

शारीरिक चंगाई, भावनात्मक चंगाई, तथा संपूर्ण व्यक्ति के लिए पूर्णता जो यीशु मसीह के क्रूस के माध्यम से हमें प्रदान की गई है, वह एक पूर्ण कार्य है! जहाँ तक विश्वासी का संबंध है, यह पूरा किया जा चुका है।

बालकों के मुँह से (भजन संहिता 8:2)

भजन संहिता 8:2
तू ने अपने बैरियों के कारण बच्चों और दूध
पिउवों के द्वारा सामर्थ्य की नींव डाली है,
ताकि तू शत्रु और पलटा लेनेवालों को
रोक रखे।

शक्ति (हिब्रू *'ओज'*) = शक्ति, बल, सुरक्षा, महिमा, प्रशंसा

यह रुचिकर है कि जब यीशु ने पवित्रशास्त्र के इस वचन को उद्‌त किया, तो उसने "प्रशंसा" पर जोर दिया।

मत्ती 21:15,16
[15]परन्तु जब प्रधान याजकों और शास्त्रियों ने इन अद्‌त कामों को, जो उसने

किए, और लड़कों को मन्दिर में 'दाऊद के सन्तान को होशाना' पुकारते हुए देखा, तो वे क्रोधित हुए,
[16]और उससे कहने लगे, "क्या तू सुनता है कि ये क्या कहते हैं?" यीशु ने उनसे कहा, "हाँ; क्या तुमने यह कभी नहीं पढ़ाः 'बालकों और दूध पीते बच्चों के मुँह से तू ने अपार स्तुति कराई?

अतः, जब हम अब भजन संहिता 8:2 पर वापस जाते हैं, तो हम "सामर्थ्य" को "स्तुति" से बदल सकते हैं और भजन संहिता 8:2 के बाकी भागों को इस संदर्भ में समझ सकते हैं कि परमेश्वर की स्तुति करने से क्या हो सकता है—दुश्मन और बदला लेने वाले को चुप करा देना।

शब्द के अर्थ में निहित बाइबल की छवियाँ या इतिहास

कभी-कभी, शब्द के भीतर निहित बाइबल की छवि या इतिहास शब्द के अर्थ को और अधिक समझने और स्पष्ट करने में मदद करता है और जो बताया जा रहा है उसकी गहरी समझ प्रदान करता है।

छुटकारा (मोचन)

तीन मुख्य ग्रीक शब्द हैं जो "छुटकारा" को समझने में रुचि रखते हैं।

ग्रीक *'अगोराज़ो'* का अर्थ है *'अगोरा'*, अर्थात बाज़ार से ख़रीदना या खरीदा हुआ। प्रतीकात्मक रूप से, मसीह के बारे में कहा जाता है कि उसने अपने छुड़ाए हुए लोगों को खरीदा है, उन्होंने अपने लहू की कीमत देकर हमें अपनी संपत्ति बनाया है (1 कुरिन्थियों 6:20; 1 कुरिन्थियों 7:23; 2 पतरस 2:1)। जबकि *'अगोराज़ो'* का वास्तविक अर्थ है "खरीदना या क्रय (मूल्यवान वस्तु को खरीदना)", इसका अनुवाद प्रकाशितवाक्य 5:9 और प्रकाशितवाक्य 14:3,4 में "छुड़ाया हुआ" के रूप में किया गया है।

जबकि ***'एक्सागोराज़ो'*** में **ग्रीक** वास्तविक अर्थ है "खरीदना

या खरीदना", विशेषतः किसी गुलाम को उसे आज़ाद करने के लिए खरीदना। इसका प्रयोग गलातियों 3:13 और गलातियों 4:5 में हमारे उद्धार के लिए व्यवस्था और उसके अभिशाप के रूपक के रूप में किया गया है।

ग्रीक *'लूट्रो'*, जिसका वास्तविक अर्थ है "फिरौती की कीमत पर रिहा करना"(*लूट्रॉन*, "फिरौती" के समान), का इस्तेमाल लूका 24:21; तीतुस 2:14; 1 पतरस 1:18 में "फिरौती की कीमत देकर रिहा करना, छुड़ाना" के अर्थ में किया गया है। *'लूट्रो'* का संज्ञा रूप—*'लूट्रोसिस'* है जिसका अर्थ है "छुटकारा" और *'एपोलुट्रोसिस'* जिसका अर्थ है "फिरौती के भुगतान पर रिहाई"— का रोमियों 3:24; रोमियों 8:23; 1 कुरिन्थियों 1:30; इफिसियों 1:4,7; इफिसियों 4:30; कुलुस्सियों 1:14; इब्रानियों 9:15 में "छुटकारे" के रूप में अनुवाद किया गया है।

जबकि *'एक्सागोराज़ो'* और *'लूट्रो'* दोनों का अनुवाद "छुटकारा देना" है, *'एक्सागोराज़ो'* कीमत अदा करने की ओर संकेत देता है जबकि *'लूट्रो'* वास्तविक "उद्धार" को दर्शाता है, जो कि स्वतंत्रता की स्थापना है।

इन ग्रीक शब्दों का अध्ययन करने से हमें "छुटकारे" को बेहतर ढंग से समझने में सहायता मिलती है और यीशु ने अपना लहू बहा कर हमारे लिए क्या किया है। हम पापी थे और हमारे ऊपर पाप का बहुत बड़ा कर्ज था जिसने हमें परमेश्वर से अलग कर दिया था। हमारे पाप और परमेश्वर से अलगाव ने शैतान को हमारे ऊपर नियंत्रण दिया और शैतान ने हमें गुलाम बना लिया। प्रभु यीशु ने स्वर्ग में परमेश्वर के सामने अपने लहू को छुड़ौती मूल्य के रूप में रखा (इब्रानियों 9:12,14), हमारे पापों को शुद्ध किया और स्वर्ग में हमारे ऋण को रद्द कर दिया। स्वर्ग में चुकाई गई इस कीमत ने हमारे जीवन पर शैतान की पकड़ को नष्ट कर दिया और प्रभु यीशु ने हमें शैतान की शक्ति से बाहर

निकाला, हमें अपने राज्य में प्रवेश कराया और हमें परमेश्वर के लिए पुत्र और पुत्रियाँ, राजा और याजक बनाया।

बंधुआ मजदूर (दास, गुलाम)

रोमियों 1:1

पौलुस की ओर से जो यीशु मसीह का दास है, और प्रेरित होने के लिये बुलाया गया, और परमेश्वर के उस सुसमाचार के लिये अलग किया गया है

"दास" के लिए कई यूनानी शब्द हैं।

- *'डायकोनोस'* एक सेवक को उसके काम के संबंध में देखता है
- *'डोउलोस'* अपने स्वामी के संबंध में
- *'हुपेरेटेस'* अपने वरिष्ठ के संबंध में
- *'लीटूर्गोस'* लोगों की सेवा के संबंध में

पौलुस ने प्रभु यीशु मसीह की सेवा और सेवकाई में खुद को संदर्भित करने के लिए यूनानी शब्द *'डोउलोस'* का इस्तेमाल किया। *'डोलोस'* का अर्थ है "एक गुलाम, दास, जो अपने स्वामी के पूर्ण स्वामित्व में हो, एक दास की अवस्था वाला व्यक्ति, जो स्वयं को दूसरे की इच्छा के लिए समर्पित करता हो, जो अपने हितों की अनदेखी करते हुए दूसरे के लिए समर्पित हो।"

विजय

कुलुस्सियों 2:15

और उसने प्रधानताओं और अधिकारों को ऊपर से उतारकर उनका खुल्लमखुल्ला तमाशा बनाया और क्रूस के द्वारा उन पर जय-जयकार की ध्वनि सुनाई।

"विजय प्राप्त करना" के लिए अनुवादित यूनानी शब्द *'थ्रियाम्बेउओ'* है जिसका अर्थ है "विजयी जुलूस में नेतृत्व करना।"

चित्र में एक विजयी राजा को दिखाया गया है जो अपने पराजित शत्रुओं को निरस्त्र और शक्तिहीन करके, बंदी बनाकर ले जाते हुए, एक जोरदार, उत्सवपूर्ण जुलूस में अपनी जीत का प्रदर्शन करता है।

कुलुस्सियों 2:15 में, संदर्भ के आधार पर, जिन शत्रुओं पर विजय प्राप्त की गई है, इस मामले में शैतान और उसकी शैतानी शक्तियों का सार्वजनिक रूप से तमशा बनाया गया, यह दिखाते हुए कि उन्हें जीत लिया गया है, पराजित किया गया है और अपमानित किया गया है।

2 कुरिन्थियों 2:14
परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिये फिरता है, और अपने ज्ञान की सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है।

2 कुरिन्थियों 2:14 में उसी यूनानी शब्द का अनुवाद "विजय" में किया गया है। इस संदर्भ में, परमेश्वर हमेशा हमें विजयी जुलूस में ले जा रहा है, जो हमें मसीह में विजेता के रूप में, विजेता से भी बढ़कर प्रदर्शित करता है। ऐसा कोई दिन या क्षण नहीं होता, जब हम विजयी न हों। हम हमेशा इस विजयी जुलूस में होते हैं।

समकालीन विचारों को वापस न भेजें

हमें बाइबल के शब्दों या पदों में अंग्रेजी अर्थ (अंग्रेजी व्युत्पत्ति) को वापस स्थानांतरित करने का प्रयास करते समय सावधान रहना चाहिए। यह सभी विषयों में सही नहीं होगा।

उदाहरण के लिए, ग्रीक शब्द *'डुनामिस'* का अनुवाद "शक्ति" है, जिसका अर्थ हम आज "डायनामाइट" (विस्फोटक) या "डायनेमो" (यांत्रिक ऊर्जा को विद्त ऊर्जा में परिवर्तित करना) शब्दों से नहीं समझते हैं,जबकि वे समान लगते हैं और उनका उपयोग भी समान है।

शब्द अध्ययन के लिए दिशा-निर्देश

- लेखक द्वारा शब्द के स्थापित उपयोग और लेखक द्वारा शब्द काउपयोग किए जाने पर शब्द के प्रचलित अर्थ का निर्धारण करें।
- अध्याय और विचार के प्रवाह के आधार पर उस संदर्भ पर ध्यान दें, जिसमें शब्द का उपयोग किया गया है।
- उसी पुस्तक में उसी लेखक द्वारा शब्द के उपयोग पर ध्यान दें।
- जहाँ भी लागू हो, उसी लेखक द्वारा लिखे अन्य पुस्तकों में उपयोग शब्दों पर ध्यान दें।
- बाइबल में अन्य लेखकों द्वारा उसी शब्द के उपयोग पर ध्यान दें। जबकि, ध्यान रखें कि शब्द का अर्थ सभी घटनाओं में समान नहीं हो सकता, क्योंकि यह संदर्भ के आधार पर भिन्न-भिन्न हो सकता है।

यहाँ शब्द अध्ययन के कुछ और उदाहरण दिए गए हैं जो हमें कुछ अंशों को बेहतर ढंग से समझने में मदद कर सकते हैं।

बलपूर्वक छीन लेते हैं (मत्ती 11:12)

मत्ती 11:12

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य में बलपूर्वक प्रवेश होता रहा है, और बलवान उसे छीन लेते हैं।

लूका 16:16

“व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता यूहन्ना तक रहे; उस समय से परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाया जा रहा है, और हर कोई उस में प्रबलता से प्रवेश करता है।

मत्ती 11:12 में "हिंसा सहना” शब्द एक सकर्मक क्रिया है। सकर्मक क्रियाएँ या तो निष्क्रिय स्वर या मध्यम स्वर हो सकते हैं, और सिर्फ यही संदर्भ आपको यह निश्चित करने में सहायक होगा कि कौन सा अर्थ अभीष्ट है।

क्रिया “प्रबलता से प्रवेश करता है” सिर्फ यहाँ और नए नियम में लूका 16:16 में आता है। क्रिया “प्रबलता से प्रवेश करता है” संज्ञा “स्वर्ग के राज्य” पर आधारित है। इस क्रिया को दोनों रीतियों द्वारा समझा जा सकता है, अर्थात, क) संज्ञा क्रिया का अनुभव करती है, अर्थात, स्वर्ग के राज्य पर बल को तीव्रतापूर्वक थोपा जाता है, स्वर्ग के राज्य को प्राप्त कर लिया जाता है, स्वर्ग के राज्य को तूफ़ानी रूप से प्राप्त किया जाता है। इसे अन्य रूप से इस प्रकार समझ जा सकता है कि ख) संज्ञा क्रिया को प्रभावित करती है। इसमें, स्वर्ग का राज्य तीव्रबल को बढ़ावा देता है, या स्वर्ग का राज्य बलशाली है, या स्वर्ग का राज्य अन्य सभी पर प्रबल हो जाता है।

निष्क्रिय स्वर: यहाँ पर क्रिया के, प्राप्त करता पर ध्यान दिया गया है जो कि यहाँ पर स्वर्ग का राज्य है। अप्रतिरोधी विचार यह है कि राज्य को तीव्र बल द्वारा प्राप्त किया जाता है, उस पर आक्रमण कर दिया जाता है, हिंसा करने वाले लोग "उसे बलपूर्वक अपने अधिकार में ले लेते हैं" या उस स्थान पर विजय प्राप्त करके उस पर अधिकार कर लेते हैं। यह न्यू अमेरिकन स्टैंडर्ड बाइबल (NASB) अनुवाद में बताया गया है। जहां इसमें निहित अर्थ यह है कि लोग राज्य का अनुभव करने, उसका सामना करने और उसे प्राप्त करने के लिए उत्सुक और इच्छुक हैं और इसलिए वे इसमें बलपूर्वक अपना रास्ता बनाते हैं।

मत्ती 11:12 (एनएएसबी)
यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य में बलपूर्वक प्रवेश होता रहा है, और बलवान उसे छीन लेते हैं।

मध्य स्वर: वाक्य का विषय संज्ञा या संज्ञा वाक्यांश है जो क्रिया कर रहा है। इस विषय से क्रिया पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। मध्य स्वर का अर्थ हो सकता है स्वर्ग का राज्य “हिंसा या बल का प्रयोग करता है” या स्वर्ग का राज्य “अपना रास्ता बनाता है” जैसे तेज़ आंधी

या तूफान आता है। यह द पैशन ट्रांसलेशन (TPT) में बहुत स्पष्ट रूप से बताया गया है। यहाँ पर निहितार्थ यह है कि राज्य बलपूर्वक आगे बढ़ता है, शैतान के राज्य पर विजय प्राप्त करता है। स्वर्ग का राज्य प्रकाश का राज्य है। यह जहाँ कहीं भी दिखाई देता है, अंधकार को दूर करता है और पीछे धकेलता है।

मत्ती 11:12 (टीपीटी)
जिस क्षण यूहन्ना ने इस दृश्य पर कदम रखा, तब से लेकर अब तक, स्वर्ग के राज्य का क्षेत्र फूट रहा है, और भावुक लोगों ने इसकी शक्ति को अपने कब्जे में ले लिया है।

हम इस समझ के साथ चल सकते हैं और काम कर सकते हैं कि दोनों ही सत्य हैं। और वास्तव में, ये सत्य हैं। निष्क्रिय स्वर हमें राज्य के विषय में बलपूर्वक आगे बढ़ने की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है, शरीर, संसार और शैतान की सभी बाधाओं को पार करते हुए। दूसरी, मध्य आवाज, हमें प्रोत्साहित करती है, यह जानते हुए कि परमेश्वर का राज्य अन्य सभी राज्यों पर राज करता है और बलपूर्वक आगे बढ़ता है और कोई भी इसे रोक नहीं सकता है। हम इस राज्य के भाग हैं।

इस चट्टान पर, मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा (मत्ती 16:15-20)

मत्ती 16:15-20
15उसने उनसे कहा, “परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो?”
16शमौन पतरस ने उत्तर दिया, “तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।”
17यीशु ने उसको उत्तर दिया, “हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है।
18और मैं भी तुझ से कहता हूँ कि तू पतरस है, और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊँगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।
19मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगा: और जो कुछ तू पृथ्वी पर बाँधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।”
20तब उस ने चेलों को चिताया कि किसी से न कहना कि मैं मसीह हूँ।

यीशु ने जब कहा, *"तुम पतरस हो, और इस चट्टान पर मैं अपना चर्च बनाऊँगा"* (मत्ती 16:18) तो वह किस "चट्टान" की ओर इशारा कर रहा था?

भ्रम इसलिए पैदा होता है क्योंकि ग्रीक में संज्ञा "पीटर" और शब्द "चट्टान" एक ही / समान शब्द से आते हैं।

- ग्रीक में "पीटर" का अर्थ है *'पेट्रोस'* = एक चट्टान या पत्थर
- ग्रीक में "चट्टान" का अर्थ है *'पेट्रा'* = एक चट्टान या एक बड़ा पत्थर (जैसा कि मत्ती 7:24,25; लूका 8:6,13 में है)

इस वाक्य में "चट्टान" शब्द के साथ एक खेल प्रतीत होता है। किन्तु इससे यीशु का क्या अर्थ था? क्या उसका अर्थ यह था कि प्रेरित पतरस वह चट्टान था? या कि पतरस ने अभी-अभी जो प्रकाशन किया, यीशु मसीह के व्यक्तित्व के बारे में सच्चाई, "तुम मसीह हो, जीवित परमेश्वर का पुत्र" वह "चट्टान" है जिस पर चर्च बनाया गया है।

इसके लिए, हमें नए नियम के वचनों के व्यापक संदर्भ को देखना चाहिए जिससे मत्ती 16:18 की हमारी व्याख्या पवित्रशास्त्र में बताई गई अन्य बातों के प्रति सत्य रहे। यहाँ हम नए नियम में देखते हैं—प्रेरित पौलुस स्पष्ट रूप से कहता है, *"क्योंकि जो नींव रखी गई है, उसे छोड़कर कोई और नींव नहीं रख सकता, जो यीशु मसीह है"* (1 कुरिन्थियों 3:11)। यीशु मसीह और सिर्फ वही, विश्वासी और कलीसिया की नींव है। 1 कुरिन्थियों 10:4 में यीशु मसीह को चट्टान (*पेट्रा*) कहा गया है। यीशु मसीह कोने का पत्थर (मुख्य आधारशिला) है (इफिसियों 2:20), जिस पर प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं ने नींव रखी है, और हम भी उसी पर बने हुए हैं। प्रेरित पतरस स्वयं यीशु मसीह को बहुमूल्य कोने का पत्थर और मुख्य आधारशिला के रूप में दर्शाता है (1 पतरस 2:4-7)।

हम नए नियम के अन्य भागों की शिक्षा के आधार पर निष्कर्ष निकालते हैं कि जिस "चट्टान" पर यीशु ने कहा कि वह अपना चर्च बनाएगा, वह स्वयं मसीह है, यह सत्य है कि वह मसीह है, जीवित परमेश्वर का पुत्र। कोई दूसरा आधार नहीं है।

पृथ्वी पर बाँधो, पृथ्वी पर खोलो (मत्ती 16:19)

मत्ती 16:19
मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगा: और जो कुछ तू पृथ्वी पर बाँधेगा, वह स्वर्ग में बंधेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा।"

एनकेजेवी और कुछ अन्य अनुवादों में मत्ती 16:19 को पढ़ने से यह धारणा बनती है कि पहला कार्य विश्वासी द्वारा बाँधने या खोलने के लिए किया जाता है, और फिर स्वर्ग विश्वासी द्वारा किए गए कार्य के अनुरूप हो जाता है। ऐसा लगता है कि यह कार्य पृथ्वी से स्वर्ग की ओर बढ़ रहा है। जबकि, पाठ का वास्तविक अनुवाद यह दर्शाता है कि कार्य की प्रगति स्वर्ग से पृथ्वी की ओर है। स्वर्ग पहले निर्णय लेता है, और फिर पृथ्वी पर, विश्वासी स्वर्ग द्वारा निश्चित किए गए बंधन को बांधता और खोलता है, और फिर यह पृथ्वी पर होता है।

इसे कई अनुवादों में सामने लाया गया है।

मत्ती 16:19 (ई एम वी टी)
(ईएमटीवी) और मैं तुम्हें स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगा, और जो कुछ तुम पृथ्वी पर बाँधोगे वह स्वर्ग में बंधा हुआ होगा, और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे वह स्वर्ग में खुला हुआ होगा।

मत्ती 16:19 (एन ए एस बी)
मैं तुम्हें स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूँगा, और जो कुछ तुम पृथ्वी पर बाँधोगे वह स्वर्ग में बंधा हुआ होगा, और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे वह स्वर्ग में खुला हुआ होगा।

मत्ती 16:19 (टी पी टी)
मैं तुम्हें स्वर्ग के राज्य क्षेत्र की कुंजियाँ दूँगा, ताकि तुम पृथ्वी पर जो कुछ भी निषिद्ध है उसे निषिद्ध करो, और जो कुछ स्वर्ग में खुला हुआ है उसे पृथ्वी पर मुक्त करो।

क्या उसने केवल पुरूषों को वरदान दिये हैं? पाँच प्रकार की सेवकाई में स्त्रियाँ (इफिसियों 4:11)

इफिसियों 4:7,8,11
[7]पर हम में से हर एक को मसीह के दान के परिमाण के अनुसार अनुग्रह मिला है।
[8]इसलिये वह कहता है:
> **"वह ऊँचे पर चढ़ा और बन्दियों को**
> **बाँध ले गया, और मनुष्यों को दान**
> **दिए।"**

[11]उसने कुछ को प्रेरित नियुक्त करके, और कुछ को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कुछ को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कुछ को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया

वचन 8 में "पुरुष" शब्द ग्रीक *'एंथ्रोपोस'* है = एक पुरुष है, यह लिंग विशेष नहीं है। जबकि इसका उपयोग पुरुष के लिए किया जाता है, इसका उपयोग अक्सर लिंग की चिंता किए बिना हर व्यक्ति के लिए किया जाता है (मत्ती 4:4; रोमियों 3:28), और आंतरिक व्यक्ति के लिए भी (रोमियों 7:22; इफिसियों 3:16; 1 पतरस 3:4)।

यदि पौलुस का इरादा पुरुष को निर्दिष्ट करना था, तो वह ग्रीक *'एनर'* का उपयोग कर सकता था। ग्रीक शब्द *'एनर'* का अर्थ है "पुरुष" और इसका उपयोग कभी भी स्त्री लिंग के लिए नहीं किया जाता है। यह एक स्त्री से भिन्न है।

तत्काल संदर्भ पर विचार करें, विशेष रूप से वचन 7 में क्या कहा गया है। प्रत्येक व्यक्ति को, (पुरुष और स्त्री को), परमेश्वर ने मसीह

के वरदान के अनुपात में अनुग्रह दिया है। फिर वचन 8 मसीह के वरदानों के बारे में यह विचार जो पुरुषों और स्त्रियों को दिए गए थे। तब मान्यता यह बनती है कि कुछ *'एंथ्रोपोस'* (पुरुष और महिला) को प्रेरित, भविष्यवक्ता, सुसमाचार प्रचारक, पासवान और शिक्षक होने जैसे वरदान दिए गए हैं।

जब हम वचनों के व्यापक संदर्भ पर विचार करते हैं, तो हम दोनों नियमों में देखते हैं कि परमेश्वर ने अपनी आत्मा के द्वारा पुरुषों और स्त्रियों दोनों को बुलाहट और वरदान बुलावा दिया है ताकि वे उन्हें सौंपे गए कार्य को कर सकें।

अतः, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि कुछ पुरुषों और स्त्रियों को प्रेरित, भविष्यवक्ता, प्रचारक, पासवान और शिक्षक के रूप में सेवा करने के लिए प्रभु द्वारा अनुग्रह और वरदान दिया गया है।

प्रेरित स्त्री जिसका नाम "जुनिया" है (रोमियों 16:7)

रोमियों 16:7

अन्द्रनीकुस और यूनियास को जो मेरे कुटुम्बी हैं, और मेरे साथ कैद हुए थे और प्रेरितों में नामी हैं, और मुझ से पहले मसीही हुए थे, नमस्कार।

हम जानते हैं कि "यूनियास" एक स्त्री का नाम है। अब प्रश्न यह है कि क्या इस वचन का अर्थ यह है कि अन्द्रनीकुस और यूनियास प्रेरितों द्वारा उल्लेखनीय हैं, अतः वे प्रेरितों द्वारा जाने जाते हैं? या क्या यह वचन संकेत देता है कि अन्द्रनीकुस और यूनियास प्रेरितों में से हैं, स्वयं प्रेरित हैं, और उत्कृष्ट या उल्लेखनीय (ध्यान देने योग्य) प्रेरित हैं?

प्रासंगिक यूनानी वाक्यांश है, *'एपिसेमोई एन टोइस एपोस्टोलॉइस'*

- *एपिसेमोई* = प्रतिष्ठित, उल्लेखनीय, या उत्कृष्ट
- *एन* = का अर्थ “बीच” में या “को” हो सकता है

- *टोइस एपोस्टोलॉइस* = प्रेरितों

ग्रीक का वास्तविक अनुवाद होगा, *"अन्द्रनीकुस और यूनियास को जो मेरे कुटुम्बी हैं, और मेरे साथ कैद हुए थे और प्रेरितों में नामी हैं, और मुझ से पहले मसीही हुए थे, नमस्कार।"*

रोमियों 16:7 (ई एम टी वी)
मेरे रिश्तेदार और मेरे साथी बंदी एन्ड्रोनीकस और यूनिया को नमस्कार, जो प्रेरितों में उल्लेखनीय हैं, जो मुझसे पहले मसीह में थे।

रोमियों 16:7 (टी पी टी)
सुनिश्चित करें कि मेरे रिश्तेदार एन्ड्रोनीकस और यूनिया का सम्मान किया जाए, क्योंकि वे मेरे साथी बंदी हैं, जो उत्कृष्ट और प्रसिद्ध प्रेरित होने की विशिष्ट पहचान रखते हैं, और जो मुझसे पहले अभिषिक्त व्यक्ति में शामिल हो गए थे।

यूनानी निर्माण को स्वाभाविक रूप से "प्रेरितों के बीच उल्लेखनीय" के रूप में पढ़ा जाता है। यदि पौलुस का अर्थ "प्रेरितों के लिए उल्लेखनीय" था, तो संभवतः एक भिन्न पूर्वसर्ग या वाक्यांश का प्रयोग किया गया होगा।

सबसे सीधा अर्थ यह है कि एन्ड्रोनिकस और यूनियास को प्रेरित माना जाता था और वे उनके बीच आदरणीय थे। वैकल्पिक व्याख्या यह है कि वे स्वयं प्रेरित न होते हुए भी प्रेरितों में लोकप्रिय थे, जो की इसे भाषा शैली में कम बताता है।

जॉन क्रिसोस्टॉम जैसे आरंभिक चर्च के पिताओं ने यूनियास को एक स्त्री प्रेरिता के रूप में स्वीकार किया, जो इस दृष्टिकोण का समर्थन करता है। *"प्रेरित होना एक बड़ी बात है। परंतु प्रेरितों के बीच उत्कृष्ट होना—विचार कीजिए यह प्रशंसा का कितना बड़ा गीत है! वे अपने कामों और पुण्य कार्यों के आधार पर उत्कृष्ट थे। वास्तव में, यह*

स्त्री कितनी बुद्धिमान रही होगी कि उसे प्रेरित की उपाधि के योग्य माना गया।" —जॉन क्रिसोस्टॉम, **"रोमियों पर धर्मोपदेश, धर्मोपदेश 31 (AD 386–398),"** एंटीओक चर्च के प्रेस्बिटर। क्रिसोस्टॉम की स्वीकृति आरंभिक चर्च में व्यापक समझ को दर्शाती है कि यूनियास एक स्त्री थी और एक प्रतिष्ठित प्रेरिता थी।

प्रभु की ताड़ना (इब्रानियों 12:5-13), यह क्या हो सकती है?

इब्रानियों 12:5-13

5और तुम उस उपदेश को, जो तुम को पुत्रों के समान दिया जाता है, भूल गए हो:

> **"हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी**
> **बात न जान,**
> **और जब वह तुझे घुड़के तो साहस न छोड़।**

6क्योंकि प्रभु जिससे प्रेम करता है, उसकी
ताड़ना भी करता है,
और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको कोड़े
भी लगाता है।"

7तुम दु:ख को ताड़ना समझकर सह लो; परमेश्वर तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है। वह कौन सा पुत्र है जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता?

8यदि वह ताड़ना जिसके भागी सब होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान ठहरे।

9फिर जब कि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते थे और हमने उनका आदर किया, तो क्या आत्माओं के पिता के और भी अधीन न रहें जिससे हम जीवित रहें।

10वे तो अपनी–अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिये ताड़ना करते थे, पर वह तो हमारे लाभ के लिये करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएँ।

11वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है; तौभी जो उसको सहते–सहते पक्के हो गए हैं, बाद में उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।

12इसलिये ढीले हाथों और निर्बल घुटनों को सीधे करो,

13और अपने पाँवों के लिये सीधे मार्ग बनाओ कि लंगड़ा भटक न जाए पर भला चंगा हो जाए।

इस अंश को पढ़ते समय प्रश्न यह उठता है कि प्रभु अपने लोगों को ताड़ना कैसे दे सकते हैं, जिनसे वे प्रेम करते हैं?

सर्वप्रथम, हम समझते हैं कि इब्रानियों के लेखक नीतिवचन 3:11,12 का अनुसरण करते हुए कह रहे हैं, *"हे मेरे पुत्र, यहोवा की शिक्षा से मुँह न मोड़ना, और जब वह तुझे डाँटे, तब तू बुरा न मानना, क्योंकि यहोवा जिस से प्रेम रखता है उसको डाँटता है, जैसे कि बाप उस बेटे को जिसे वह अधिक चाहता है।"*

हम यह भी देखते हैं कि पुराने और नए नियम के दोनों अंशों में प्रभु की ताड़ना को पिता द्वारा अपने प्रिय पुत्र के सुधार के संदर्भ में रखा गया है।

नए नियम के अंश में निर्देश है कि हम समझें कि प्रभु की ताड़ना अपनी संतान के प्रति एक पिता के हृदय की अभिव्यक्ति है, जो हमें इसे स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करती है, भले ही यह कठिन हो, और यह समझने के लिए है कि इसका परिणाम हमारे भले के लिए है।

यूनानी भाषा में "दंडित करना" शब्द *'पैडिया'* है = शिक्षा, प्रशिक्षण, पोषण, निर्देश, बच्चे का पालन-पोषण, अनुशासन, और इसका उपयोग इफिसियों 6:4 में बच्चों के "पालन-पोषण" और 2 तीमुथियुस 3:16 में परमेश्वर के वचन से धार्मिकता में "निर्देश" के लिए किया जाता है।

नया नियम यह स्पष्ट करता है कि परमेश्वर हमें अपने वचन (2 तीमुथियुस 3:16), अपनी आत्मा (1 यूहन्ना 2:20,27) और उन लोगों के द्वारा निर्देश देता है जिन्हें उसने हमारे आस-पास रखा है (कुलुस्सियों 3:16)। इस तरह स्वर्गीय पिता अपनी संतान को प्रेम पूर्वक अनुशासित, सुधार, प्रशिक्षित, पोषित और निर्देशित करता

है। हमारे स्वर्गीय पिता से हमें जो सुधार और अनुशासन मिलता है, वह उनके वचन, उनकी आत्मा और हमारे आस-पास के। आत्मिक लोगों के माध्यम से हमें मिलता है। जब हम जीवन में चुनौतियों का सामना करते हैं, तब यह हमें जीवन की चुनौतियों पर विजय पाने के लिए सक्षम बनाता है, और इससे हमारी सहनशीलता बढ़ती है है (रोमियों 5:3,4)।

हमें अपने प्रभु यीशु की इस शिक्षा को ध्यान में रखना चाहिए कि हमारा स्वर्गीय पिता सांसारिक पिताओं से कहीं अधिक महान और श्रेष्ठ है (मत्ती 6:31,32; मत्ती 7:7-11)। क्या कोई सांसारिक पिता अपने बच्चों को अनुशासित करने और उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए जानबूझकर उनके साथ कुछ विनाशकारी करेगा, उदाहरण के लिए, उन्हें किसी घातक बीमारी से पीड़ित करना, उन्हें भूख से मरने के लिए सड़क पर छोड़ देना, उन्हें किसी भयानक दुर्घटना में पड़ने देना, आदि? सांसारिक पिता, चाहे हम कितने भी बुरे क्यों न हों, अपनी संतान के साथ ऐसे भयानक काम नहीं करेंगे, बल्कि जिन्हें हम प्यार करते हैं और जो हमें प्रसन्न करते हैं, उन्हें प्रशिक्षित करने या अनुशासित करने वाले क्षेत्र में भी। यहाँ तक कि सांसारिक पिता भी जानते हैं कि प्रत्येक संतान को प्यार से कैसे अनुशासित किया जाए और उसके साथ इस तरह से काम किया जाए कि बच्चा उसे समझ सके, उसका पालन-पोषण और प्रशिक्षण किया जाए। अतः, यह बेतुका है और शास्त्र की शिक्षा और सरल सामान्य ज्ञान दोनों के विपरीत प्रतीत होता है कि हमारा स्वर्गीय पिता परमेश्वर अपने बच्चों को बीमारी, विपत्तियों, दुर्घटनाओं, असफलता, अभाव, अपर्याप्तता, अप्राकृतिक मृत्यु आदि से पीड़ित करेगा, ताकि उन्हें प्यार से अनुशासित कर सके या उन्हें धार्मिकता में प्रशिक्षित कर सके। हमारा स्वर्गीय पिता इससे कहीं उत्तम है।

व्यर्थता के बंधन में सृष्टि (रोमियों 8:18-23)

रोमियों 8:18-23 (2 कुरिन्थियों 4:16 और 2 कुरिन्थियों 5:5 भी देखें)
18क्योंकि मैं समझता हूँ कि इस समय के दु:ख और क्लेश उस महिमा के सामने, जो हम पर प्रगट होनेवाली है, कुछ भी नहीं हैं।
19क्योंकि सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है।
20क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं पर अधीन करनेवाले की ओर से, व्यर्थता के अधीन इस आशा से की गई
21कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी।
22क्योंकि हम जानते हैं कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है;
23और केवल वही नहीं पर हम भी जिनके पास आत्मा का पहला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने की, अर्थात् अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं।

निरर्थकता (**यूनानी** *'मातायोटेस'*) = दिखावा, खालीपन, दुष्टता, सत्य और औचित्य से रहित, विकृतता।

व्यर्थता (**यूनानी** *'फथोरा'*) = क्षय, बर्बादी, भ्रष्टाचार, विनाश, नाश, व्यर्थता, अनैतिकता

बाइबल यह स्पष्ट करती है कि सारी सृष्टि व्यर्थता के बंधन / अधीनता में है। आदम के पतन के समय सृष्टि भ्रष्टाचार के अधीन हो गई। उस समय से, सारी सृष्टि पतन की स्थिति में है, जो पूर्णतः, शांति और व्यवस्था की मूल स्थिति से भटक रही है जिसमें परमेश्वर ने इसे रचा था। सृष्टि के समय प्रकृति में मूल रूप से जो व्यवस्थाएँ स्थापित की गई थीं, वे अब व्यर्थता के बंधन में हैं, अपने मूलरूप के विचलन के अधीन हैं। यह परमेश्वर की इच्छा नहीं थी और परमेश्वर ने इसे स्वेच्छा से नहीं बल्कि इस आशा या प्रत्याशा में होने दिया कि यह भी पलट

जाएगा। वह परिणाम जानता था—कि एक दिन, सृष्टि इस बंधन से मुक्त हो जाएगी।

यह व्याख्या करता है कि हमारे शरीर क्यों बूढ़े होते हैं। हमारे शरीर बूढ़े इसलिए नहीं होते क्योंकि शैतान उन्हें बूढ़ा कर रहा है, बल्कि इसलिए होते हैं क्योंकि सृष्टि व्यर्थता के बंधन में है। हमारी बाहरी मानवता नष्ट हो रही है। यह ये भी समझाता है कि सुनामी, भूकंप, तूफान आदि क्यों होते हैं। ये सभी परमेश्वर या शैतान के कारण नहीं होते। जब तक परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं किया है कि वह लोगों के एक समूह का न्याय कर रहा है, हमें यह नहीं कहना चाहिए कि पमेश्वर उस विनाशकारी मौसम की स्थिति का कारण है। इसी तरह, जब तक पवित्र आत्मा द्वारा यह स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं किया जाता है कि इसके पीछे शैतान है, हम शैतान को दोष नहीं दे सकते। अधिकांश विषयों में ये बातें इसलिए होती हैं क्योंकि सारी सृष्टि व्यर्थता के अधीन है और अपनी मूल व्यवस्था और पूर्णता की स्थिति से निरंतर दूर होती जा रही है, जिस स्थिति में वह बनाई गई थीं।

सृष्टि को अभी भी व्यर्थता की अधीनता से मुक्त किया जाना बाकी है और इसे भविष्य में मुक्त किया जाएगा। एक समय आएगा जब, परमेश्वर की संतान के रूप में, हम अपनी देह (नए महिमामयी देह) का उद्धार प्राप्त करेंगे और जब सृष्टि व्यर्थता के वर्तमान बंधन से मुक्त होगी। नया आकाश और नई पृथ्वी होगी (2 पतरस 3:5-14; प्रकाशितवाक्य 21:1-5)।

आज, यीशु की तरह, हम हमारे जीवन की स्थितियों को प्रभावित करने के लिए परमेश्वर की शक्ति लाने के लिए आगे बढ़ते हैं। यीशु ने जन्म से अंधे व्यक्ति को देखा और उसने परमेश्वर के कार्य किए, जो इस विषय में अंधेपन को दूर करना था (यूहन्ना 9:1-7)। जब समुद्र में तूफान उठे, तो यीशु ने उन्हें शांत किया। परमेश्वर, अपनी शक्ति से,

कुछ स्थितियों में, आगे आता है और भ्रष्टाचार के इस बंधन के प्रभावों को पलट देता है। हम इसे चमत्कार कहते हैं! यह परमेश्वर की आत्मा की शक्ति से होता है। हम इन स्थितियों में परमेश्वर की शक्ति को प्रदर्शित करने के लिए यहाँ पर परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त हैं।

पवित्र आत्मा हमारी दुर्बलताओं में सहायता करता है (रोमियों 8:26,27)

रोमियों 8:26,27

26इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है: क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर, जो बयान से बाहर हैं, हमारे लिये विनती करता है;
27और मनों का जाँचनेवाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार विनती करता है।

"सहायता करता है " (यूनानी शब्द *'सुनंतिलम्बनोमाई'*) = दो शब्दों से बना एक मिश्रित शब्द

- *सन* = संयुक्त रूप से, एक साथ और
- *एंटीलम्बनोमाई* = पकड़ना

तो, ग्रीक शब्द *'सुनंतिलम्बनोमाई'* का अर्थ है "किसी के साथ पकड़ना, किसी को पकड़े रहना; सहारा देना, मदद करना, सहायता करना, सहयोग करना, मदद करना, साथ में पकड़ना।"

"मध्यस्थता करता है" (यूनानी शब्द *'हुपेरेन्टुगचानू'*) एक मिश्रित शब्द = किसी की ओर से मध्यस्थता करना, किसी के लिए मध्यस्थता करना।

"अकथनीय (जो कहा नहीं जा सकता)" (यूनानी शब्द *'अलालेटोस'*) = न कहा जाना, न शब्दों में व्यक्त किया जाना, अवर्णनीय, शब्दों के लिए बहुत गहरा।

पवित्र आत्मा हमारी कमज़ोरियों में हमारी सहायता करता है, ताकि वह हमारी कमज़ोरियों पर हमारा साथ दे।

पौलुस किन कमज़ोरियों की बात कर रहा है? यह विचार रोमियों 6 में आरंभ है, जब पौलुस हमारे शरीर में पाप के कारण हमारे शरीर में होने वाली कमज़ोरी की बात करता है (रोमियों 6:19; रोमियों 8:3)।

एक तरिका जिसके द्वारा पवित्र आत्मा हमारी कमज़ोरियों पर विजय पाने में हमारी मदद करते हैं वह है प्रार्थना। हम नहीं जानते कि किस चीज़ के लिए प्रार्थना करनी है। पवित्र आत्मा हमारे लिए मध्यस्थता करता है। यह मध्यस्थता हमसे स्वतंत्र नहीं है, बल्कि हमारे साथ है। हम इसे दो कारणों से करते हैं।

1) पवित्र आत्मा हमारी कमज़ोरियों के विरुद्ध हमारे साथ मिलकर काम कर रहा है। इसलिए, जो प्रार्थना की जा रही है वह पवित्र आत्मा है जो हमारी कमज़ोरियों पर विजय पाने के लिए हमारे साथ मिलकर काम करता है।

2) अगले वचन 27 में कहा गया है कि परमेश्वर हृदयों की खोज करता है, अर्थात् परमेश्वर हमारे हृदयों को देखता है, जो यह दर्शाता है कि पवित्र आत्मा की सहायता से हमारे हृदयों से मध्यस्थता उठ रही है। परमेश्वर आत्मा के मन को समझता है, अर्थात् वह समझता है कि पवित्र आत्मा हमारे साथ मिलकर मध्यस्थता में क्या जारी कर रहा है।

"ऐसी कराहें जो बयान नहीं की जा सकतीं" क्या हैं?
इसे हम दो रीतियों द्वारा समझते हैं।

1) गहरी आहें और कराहना पिछले वचनों से एक निरंतर जुड़ा विचार है। रोमियों 8:22,23 में, पौलुस ने कहा है, *"क्योंकि हम जानते हैं कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी*

तड़पती है; और केवल वही नहीं पर हम भी जिनके पास आत्मा का पहला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने की, अर्थात् अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं।" पौलुस ने उल्लेख किया है कि सृष्टि "प्रसव पीड़ा के समान कराहती और कष्ट सहती है" और हम विश्वासी होने के नाते "अपने भीतर कराहते हैं"। जबकि रोमियों 8:18-23 (व्यर्थता के बंधन) का संदर्भ रोमियों 8:26,27 (हमारी कमज़ोरियों) के संदर्भ से भिन्न है, कराहने का विचार गहरी आंतरिक आहों, आंतरिक पीड़ाओं, संघर्षों और प्रसव के दौरान स्त्री को होने वाली पीड़ाओं को संदर्भित करता है। इसे प्रायः कराहने, पीड़ादायक प्रार्थना, रोने, आहें भरने, परमेश्वर से आत्मिक प्रसव पीड़ा की अभिव्यक्तियों में व्यक्त किया जा सकता है।

2) कराहना और आहें भरना इतना गहरा है कि हम उन्हें अपने शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते। हम इसे स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में असमर्थ हैं। हम अपनी कमज़ोरियों को जानते हैं और हम उनके बारे में विलाप करते हैं, किन्तु हम नहीं जानते कि हमें किस बात के लिए प्रार्थना करनी चाहिए और इसे प्रार्थना में शब्दों में कैसे व्यक्त करना चाहिए। इसलिए, पवित्र आत्मा हमें हमारे लिए, हमारे साथ मिलकर, मध्यस्थता करने के लिए शब्द देता है। यहीं पर अन्य भाषा में प्रार्थना करना, पवित्र आत्मा के साथ प्रार्थना करना आता है। यह यहूदा द्वारा पवित्र आत्मा में प्रार्थना करने के बारे में लिखे गए उस लेख से मेल खाता है, जिसमें उसने कामुक लोगों से स्वयं को बचाने, स्वयं को विकसित करने, स्वयं को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखने, भटकने वालों को बचाने, स्वयं को शरीर की बातों से दूर रखने के बारे में लिखा था। *"ये वे हैं जो फूट डालते हैं; ये शारीरिक लोग हैं, जिनमें आत्मा नहीं। पर हे प्रियो, तुम अपने अति पवित्र विश्वास में उन्नति करते हुए और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए, अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखो;*

और अनन्त जीवन के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की बाट जोहते रहो। उन पर जो शंका में हैं दया करो; और बहुतों को आग में से झपटकर निकालो; और बहुतों पर भय के साथ दया करो, पर उस वस्त्र से भी घृणा करो जो शरीर के द्वारा कलंकित हो गया है" (यहूदा 1:19-23)।

ज़च्चा की सी पीड़ाएँ—आत्मिक कष्ट (गलातियों 4:19)

गलातियों 4:19

हे मेरे बालको, जब तक तुम में मसीह का रूप न बन जाए, तब तक मैं तुम्हारे लिये फिर ज़च्चा की सी पीड़ाएँ सहता हूँ।

पवित्रशास्त्र में, "प्रसव पीड़ा" या "प्रसव पीड़ा" का उपयोग आत्मिक जन्म और आत्मिक सेवकाई के माध्यम से आत्मिक गठन के संदर्भ में एक रूपक के रूप में किया जाता है।

गलातियों 4:19 में, प्रेरित पौलुस ने फिर से ज़च्चा की सी पीड़ा का उल्लेख किया है जब तक कि मसीह उनमें, अर्थात् गलातिया के विश्वासियों में नहीं बन जाता। हम परिदृश्य को समझते हैं। पौलुस ने आरंभ में इन लोगों को मसीह में विश्वास करने के लिए प्रेरित किया था। ऐसा करने के लिए, उसने पहली बार ज़च्चा की सी पीड़ा सही थी। ये नए विश्वासी वापस व्यवस्था के अधीन रहने लगे। इसलिए अब, पौलुस को उनमें मसीह को और परिपक्व बनते देखने के लिए फिर से ज़च्चा की सी पीड़ा को सहन करना पड़ा, जब तक कि वे यीशु मसीह में अपने विश्वास में परिपक्व नहीं हो गए। आत्माओं को राज्य के लिए बचाने की तुलना प्रायः आत्मिक जन्म के रूप में की जाती है (1 कुरिन्थियों 4:15; फिलेमोन 1:10)। प्रेरित पौलुस आत्मिक जन्म की प्रक्रिया से गुजरा, उसने इन आत्माओं को परमेश्वर के राज्य में आते हुए देखने के लिए आत्मिक प्रसव पीड़ा (प्रसव पीड़ा) का अनुभव किया। और अब, दूसरी बार, वह मसीह को उनमें पूरी तरह से बनते हुए देखने के लिए आत्मिक प्रसव पीड़ा से गुज़र रहा है।

पौलुस द्वारा परमेश्वर के वचन का प्रचार और शिक्षण, पवित्र आत्मा की सहायता से लोगों की सेवा करना, और लोगों के लिए प्रार्थना करना और मध्यस्थता में संलग्न होना—सेवा के इन सभी पहलुओं की तुलना लोगों में मसीह को बनते हुए देखने के लिए "प्रसव पीड़ा" से की जाती है। यही मसीही सेवकाई है। लोगों को परिपक्वता तक लाते हुए, अर्थात् मसीह के पूर्ण कद तक पहुंचते देखना प्रसव पीड़ा को सहने जैसा है।

मध्यस्थता—दीवार बनाना, बीच में खड़े होना (यहेजकेल 22:29,30)

यहेजकेल 22:29,30

[29]देश के साधारण लोग भी अन्धेर करते और पराया धन छीनते हैं, वे दीन दरिद्र को पीसते और न्याय की चिन्ता छोड़कर परदेशी पर अन्धेर करते हैं।
[30]मैं ने उन में ऐसा मनुष्य ढूँढ़ना चाहा जो बाड़े को सुधारे और देश के निमित्त नाके में मेरे सामने ऐसा खड़ा हो कि मुझे उसका नाश न करना पड़े, परन्तु ऐसा कोई न मिला।

यशायाह 59:14-16

[14]न्याय पीछे हटाया गया और धर्म दूर खड़ा रह गया; सच्चाई बाजार में गिर पड़ी, और सिधाई प्रवेश नहीं करने पाती।
[15]हाँ, सच्चाई खो गई, और जो बुराई से भागता है वह शिकार हो जाता है।यह देखकर यहोवा ने बुरा माना, क्योंकि न्याय जाता रहा।
[16]उसने देखा कि कोई भी पुरुष नहीं, और इस से अचम्भा किया कि कोई विनती करने वाला नहीं; तब उसने अपने ही भुजबल से उद्धार किया, और अपने धर्मी होने के कारण वह सम्भल गया।

यहाँ उपयोग की गई छवि प्राचीन नगरों की है जहाँ लोगों की सुरक्षा और सुरक्षा के लिए नगर की दीवारें महत्वपूर्ण थीं। दीवार में एक दरार (छेद) नगर को असुरक्षित बना देती थी।

आत्मिक अर्थ में, लोगों के पाप और भ्रष्टता ने उन्हें आत्मिक

रूप से एक ही स्थिति में बना छोड़ दिया है। उनकी दुष्टता के कारण परमेश्वर का न्याय आने पर है। परमेश्वर एक ऐसे व्यक्ति की तलाश कर रहा है जो देश की खातिर परमेश्वर के सामने "दीवार बने" और "खाई में खड़ा हो जाए"। समानान्तर अंशों (यशायाह 59:14-16; यिर्मयाह 5:1; यहेजकेल 13:5) को देखें तो एक व्यक्ति प्रार्थना और मध्यस्थता के माध्यम से परमेश्वर के सामने "दीवार बन सकता है" और "खाई में खड़ा हो" सकता है। एक व्यक्ति के द्वारा की गई मध्यस्थता भी आत्मिक सुरक्षा लाएगी जो लोगों को परमेश्वर के न्याय से बचाएगी और विनाश को रोकने के लिए दीवार में दरार को भर देगी।

11
साहित्यिक शैलियाँ

हमें यह पहचानना चाहिए कि बाइबल में भिन्न साहित्यिक शैलियाँ हैं—ऐतिहासिक / कथा, कविता, भविष्यवाणी, ज्ञान साहित्य, पत्रियां (पत्र), दृष्टांत और अंतिम समय की भविष्यवाणी (सर्वनाश से संबंधित) साहित्य। प्रत्येक के लिए विशिष्ट व्याख्यात्मक सिद्धांतों की आवश्यकता होती है। प्रत्येक पुस्तक साहित्यिक शैलियों का एक अनूठा संयोजन है। जब हम पवित्रशास्त्र पढ़ते हैं, तब हमें इनमें उपयोग की जा रही विभिन्न साहित्यिक शैलियों के बारे में जागरूक रहना चाहिए और प्रासंगिक व्याख्यात्मक सिद्धांतों को लागू करना चाहिए।

हम बाइबल में उपयोग की जाने वाली कुछ सामान्य साहित्यिक शैलियों का संक्षिप्त विवरण और प्रत्येक साहित्यिक शैली में पवित्रशास्त्र अध्ययन में अपनी पकड़ को मजबूत बनाने के लिए कुछ रीतियों पर मार्गदर्शन प्रस्तुत करते हैं।

1) ऐतिहासिक / कथा

ये अंश कहानी के रूप में वास्तविक ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन करते हैं, जो प्रायः व्यक्तियों एवं परमेश्वर की बातचीत पर ध्यान केंद्रित करते हैं। पवित्रशास्त्र का अध्ययन वास्तविक व्यक्तियों और स्थानों से जुड़ी घटनाओं का कालानुक्रमिक (समयानुसार क्रम में दिए गए है), विवरण है जो कथाओं में बुने गए धार्मिक विषयों के साथ ऐतिहासिक रूप से भी सटीक हैं।

व्याख्या मार्गदर्शन:

- इसका एक ऐतिहासिक विवरण के रूप में अध्ययन, सांस्कृतिक

और ऐतिहासिक संदर्भ पर ध्यान देते हुए अध्ययन कीजिए।

- लेखक के उद्देश्य और अध्ययन किए जाने वाले अध्यायों पर विचार कीजिए।
- सीधे लागू करने की अपेक्षा धार्मिक सिद्धांतों की ओर देखीए।
- वर्णनात्मक और निर्देशात्मक (अनुदेशात्मक) तत्वों के बीच अंतर करें।

उदाहरण: उत्पत्ति, लूका का सुसमाचार, प्रेरितों के काम की पुस्तक

2) कविता

बाइबल में कविताएं बहुधा भजन संहिता, नीतिवचन और अन्य पुस्तकों में मिलती हैं। यह भावनाओं, आराधना और ज्ञान को व्यक्त करने के लिए कल्पना, रूपकों, उपमाओं, प्रतीकात्मकता, भावनात्मक अभिव्यक्ति, लयबद्ध भाषा और समानता का उपयोग करते हुए आलंकारिक भाषा का उपयोग करता है। बाइबल में कविता गीतों (भजन संहिता, श्रेष्ठगीत), ज्ञान (नीतिवचन, सभोपदेशक, अय्यूब) और भविष्यवाणी अध्याय (यशायाह, यिर्मयाह और अन्य हिब्रू भविष्यवक्ताओं) के रूप में है। कविता के इन सभी प्रकारों में लय और उद्देश्य हैं।

व्याख्या मार्गदर्शन:

- काव्यात्मक युक्तियाँ (उदाहरण के लिए, रूपक, उपमा, समानता) और उनके अभिप्राय अर्थ पर ध्यान दीजिए।
- आलंकारिक भाषा को पहचानें और शाब्दिक व्याख्याओं से बचिये।
- कविता के भावनात्मक प्रभाव पर विचार कीजिए।
- व्यक्त किए जा रहे विषयों, संदेशों और सत्य की तलाश कीजिए।

उदाहरण: भजन संहिता 23

पवित्र शास्त्र में कविता उस तुकबंदी और लय से भिन्न है जिसका हम बहुधा उपयोग करते हैं।

पवित्र शास्त्र में, हम विभिन्न प्रकार की कविताएँ देखते हैं जिनमें से कुछ कविताओं के समावेश निम्नलिखित हैं ...

(A) समरूपता (पॅर्लेलिज्म) —विचारों की लय

(B) अक्षरबद्ध (एक्रोस्टिक)—आरंभ होने वाली प्रत्येक पंक्ति या खंड का प्रथम शब्द हिब्रू वर्णमाला से

(C) समावेशात्मक (इनक्लूसियो)—कविता के आरंभ और अंत में एक ही पंक्ति रखना

(A) समरूपता (पॅर्लेलिज्म)

समरूपता के बिना किसी छंद या लय के कविता का एक रूप है। समरूपता ध्वनियों या शब्दों की तुकबंदी की तुलना में **विचारों की लय** से अधिक संबंधित है। हिब्रू समरूपता एक काव्यात्मक संरचना है जिसका उपयोग पुराने नियम में व्यापक रूप से किया जाता है, विशेष रूप से भजन और नीतिवचन में। जबकि समरूपता के विभिन्न प्रकार हैं, सबसे सामान्य हैं...

- समानार्थी समरूपता (दोहराव),
- विरोधी समरूपता (विपरीत),
- सिंथेटिक (कृत्रिम) समरूपता (बढ़ाना) और
- प्रतीकात्मक समरूपता (रूपक)।

समानार्थी समरूपता (दोहराना) (सिनोनिमस पॅर्लेलिज्म)

दूसरी पंक्ति अलग-अलग शब्दों में इसे फिर से बताकर पहली पंक्ति को समझाने या उसमें रंग भरने में मदद करती है।

उदाहरण:

भजन संहिता 100:4
उसके फाटकों से धन्यवाद,
और उसके आँगनों में स्तुति करते हुए
प्रवेश करो,
उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को
धन्य कहो!

नीतिवचन 6:4
तू न तो अपनी आँखों में नींद,
और न अपनी पलकों में झपकी आने दे;

योएल 1:5
हे मतवालो, जाग उठो, और रोओ; और हे सब दाखमधु पीनेवालो, नये दाखमधु के लिये हाय, हाय, करो; क्योंकि वह तुम को अब न मिलेगा।

विपरीत समरूपकता (विपरीत) (एन्टिथेटिकल पॅर्लेलिज्म)

प्रथम पंक्ति द्वितीय पंक्ति के विपरीत या विरुद्ध विचार प्रस्तुत करती है।

उदाहरण:

नीतिवचन 10:1
सुलैमान के नीतिवचन।
बुद्धिमान पुत्र से पिता
आनन्दित होता है,
परन्तु मूर्ख पुत्र के कारण माता
उदास रहती है।

नीतिवचन 13:4
आलसी का प्राण लालसा तो करता है,
और उसको कुछ नहीं मिलता,
परन्तु काम–काजी हृष्ट पुष्ट हो जाते हैं।

नीतिवचन 15:1
कोमल उत्तर सुनने से गुस्सा ठण्डा
हो जाता है,
परन्तु कटुवचन से क्रोध भड़क उठता है।

सभोपदेशक 3:2
जन्म का समय, और मरन का भी समय;
बोने का समय; और बोए हुए को उखाड़ने
का भी समय है;

कृत्रिम समरूपकता (बढ़ावा देना) (सिन्थेटिक पॅर्लेलिज्म)

दूसरी पंक्ति पहली पंक्ति के विचार को विस्तृत रूप से आगे बढ़ाती या पूर्ण करती है।

उदाहरण:

भजन संहिता 23:1
यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ
घटी न होगी।

नीतिवचन 4:7
बुद्धि श्रेष्ठ है इसलिये उसकी प्राप्ति के लिये
यत्न कर;
जो कुछ तू प्राप्त करे उसे प्राप्त तो कर
परन्तु समझ की प्राप्ति का यत्न
घटने न पाए।

नीतिवचन 4:18
परंतु धर्मियों की चाल उस चमकती हुई
ज्योति के समान है,
जिसका प्रकाश दोपहर तक अधिक अधिक
बढ़ता रहता है।

यशायाह 24:1
सुनो, यहोवा पृथ्वी को निर्जन और सुनसान करने पर है,
वह उसको उलटकर उसके रहनेवालों को तितर बितर करेगा।

प्रतीकात्मक समरूपकता (रूपक) (एम्ब्लेमेटिक पॅर्लेलिज्म)

एक पंक्ति रूपक या छवि का उपयोग करती है, और दूसरी पंक्ति उसका अर्थ बताती है।

उदाहरण:

नीतिवचन 25:25
जैसा थके मांदे के प्राणों के लिये
ठण्डा पानी होता है,
वैसा ही दूर देश से आया हुआ
शुभ समाचार भी होता है।

काव्य (कविता) का अध्ययन करते समय, समझिये, पवित्रशास्त्र की पंक्तियों के बीच विचारों का एक संबंध (पुनरावृत्ति, विपरीतता, प्रवर्धन या रूपक) है। अतः, अंश को एक विचार के रूप में देखें और अंश के अभिप्राय की जाँच करें। समानता का उपयोग केंद्रीय सत्य और आत्मिक अंतर्दृष्टि की पुष्टी करता है। यह काव्य या कविता की संरचना में संतुलन लाता है, लय और अध्ययन क्षमता को बढ़ाता है। संबंधित विचारों को समानांतर रूप से प्रस्तुत करके, यह उनके बीच संबंधों पर ध्यान और चिंतन की ओर आमन्त्रित करता है।

(B) अक्षरबद्ध (एक्रोस्टिक)

एक काव्यात्मक संरचना जिसमें प्रत्येक पंक्ति या खंड हिब्रू वर्णमाला के अनुक्रमिक अक्षरों से आरंभ होता है। इसका उपयोग इसलिए किया जाता था क्योंकि इससे याद रखने और जोर देकर समझने में सहायता प्राप्त होती है।

उदाहरण:

भजन संहिता 119, जहाँ प्रत्येक खंड हिब्रू वर्णमाला के एक भिन्न अक्षर से शुरू होता है।

(C) समावेशात्मक (इनक्लूसियो)

एक साहित्यिक युक्ति जिसमें एक अनुच्छेद समान शब्दों या विषयों के साथ शुरू और समाप्त होता है, जो पाठ के चारों ओर एक रूपरेखा बनाता है। इसका उपयोग रूपरेखा के अनुभाग के भीतर सामग्री पर ज़ोर देने के लिए किया जाता है।

उदाहरण:

भजन संहिता 8, जो एक ही दोहे के अंतिम शब्द से आरंभ और समाप्त होता है।

भजन संहिता 8:1 (और वचन 9)
हे यहोवा हमारे प्रभु, तेरा नाम सारी पृथ्वी
पर क्या ही प्रतापमय है!
तू ने अपना वैभव स्वर्ग पर दिखाया है।

3) भविष्यवाणी

भविष्यवाणी की पुस्तकें अपने लोगों को परमेश्वर के संदेशों की घोषणा प्रदान करती हैं, प्रायः न्याय की चेतावनी या भविष्य की पुनर्स्थापन करती हैं। भविष्यवाणियों के संदेश, दर्शन, स्वप्न और परमेश्वर से बातचीत के अन्य रूपों (उदाहरण के लिए, स्वर्गदूतों के संदेश, प्रभुप्रकाश, आदि) के माध्यम से प्राप्त होते हैं। ये संदेश बोले गए शब्दों, प्रतीकात्मक क्रियाओं और कभी-कभी काव्यात्मक भाषा के माध्यम से व्यक्त किए जाते हैं। भविष्यवाणियों तुरंत भी पूरी हो सकती हैं और उन्हें पूरा होने में देर भी लग सकती है। कुछ भविष्यवाणियों की दोहरी पूर्ति हो सकती है।

व्याख्या मार्गदर्शन:

- भविष्यवक्ता और संबोधित किए जा रहे श्रोताओं के ऐतिहासिक संदर्भ को समझिये।
- भविष्यवाणी के मुख्य संदेश और उद्देश्य की पहचान कीजिए।
- भविष्यसूचक और निर्देशात्मक भविष्यवाणी के बीच अंतर कीजिए।
- हमेशा वचनों के शेष हिस्सों का उपयोग करके भविष्यसूचक कल्पना की व्याख्या करें।
- अटकलबाजी या अदाज़ों वाली व्याख्याओं से बचें।

उदाहरण: यशायाह 53

4) ज्ञान साहित्य

ये मुख्य रूप से नीतिवचन और सभोपदेशक की पुस्तकें हैं। ये पुस्तकें प्रभु के भय में निहित दैनिक जीवन के लिए व्यावहारिक अंतर्दृष्टि और मार्गदर्शन प्रदान करती हैं। ये नीतिवचन (बुद्धिमानी कथन) और वचन या नियम (सत्य या सिद्धांत की संक्षिप्त अभिव्यक्ति) हैं जो विवेक, ज्ञान और समझ के महत्व पर जोर देती हैं। इनमें काव्यात्मक संरचना का उपयोग किया जाता है।

व्याख्या मार्गदर्शन:

- काव्यात्मक भाषा के माध्यम से व्यक्त किए जा रहे मुख्य सिद्धांत को पहचानें।
- अनंत कालीन की व्याख्या और उसे लागू करने के समय की सांस्कृतिक बारीकियों को समझें।

उदाहरण: नीतिवचन

5) पत्रियां (पत्र)

ये प्रेरितों द्वारा चर्चों या व्यक्तियों को लिखे गए पत्र हैं जो धर्मशास्त्र, मसीही जीवन, और चर्च जीवन को संबोधित करते हैं। अधिकांश पत्र व्यक्तिगत अभिवादन, शिक्षण और उपदेश की तार्किक संरचना का पालन करते है, जो प्रायः विशिष्ट स्थितियों और मुद्दों को संबोधित करते हैं। पत्रों में तर्क और उपदेश जैसे कई साहित्यिक युक्तियों का उपयोग करता है।

व्याख्या मार्गदर्शन:

- लेखक और प्राप्तकर्ताओं की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संरचनाओं को समझें।
- लेखक के उद्देश्य को पहचानें।
- मूल रूप से अध्याय और पद्य के सीमांकन के बिना। विचार के तार्किक प्रवाह पर ध्यान दें।
- स्थायी सिद्धांतों और सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट निर्देशों के बीच अंतर करें।
- वर्तमान समय में शिक्षण के अनुप्रयोग पर विचार करें।

उदाहरण: रोमियों

6) दृष्टांत

दृष्टांत आत्मिक सत्य को दर्शाने के लिए उपयोग में की जाने वाली छोटी कहानियाँ या उपमाएँ हैं। ये कहानियाँ प्रायः दैनिक जीवन की स्थितियों और सामान्य पात्रों से ली जाती हैं। अंतर्निहित आत्मिक सत्य को समझने के लिए इन कहानियों की व्याख्या की जानी चाहिए।

व्याख्या मार्गदर्शन:

- दृष्टांत के श्रोताओं या दर्शकों और संदर्भ पर विचार कीजिए।
- दृष्टांत के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ पर विचार कीजिए।
- हर विवरण को बढ़ा-चढ़ाकर बताए किए बिना मुख्य बिंदु की पहचान कीजिए।
- वर्तमान समय में सत्य के अनुप्रयोग पर विचार कीजिए।

उदाहरण: यीशु के दृष्टांत

7) अंत-समय की भविष्यवाणी (विनाशकारी) साहित्य

अंत-समय की भविष्यवाणी करने वाले पवित्रशास्त्र के ग्रंथ प्रायः कल्पना और प्रतीकात्मकता का उपयोग करके मानव जाति के लिए परमेश्वर की योजना को प्रकट करते हैं। वे भविष्य की घटनाओं, विशेष रूप से अंतिम समय की भविष्यवाणी करते हैं।

व्याख्या मार्गदर्शन:

- जहाँ प्रासंगिक हो, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भों को समझें।
- प्रतीकात्मक भाषा को पहचानें और अत्यधिक शाब्दिक व्याख्याओं से बचें।
- बाइबल में अंत-समय की भविष्यवाणियों के अन्य अंशों की तुलना करें और उनके साथ सुसंगत रहें।
- कभी-कभी, दोहरी पूर्ति (वर्तमान और भविष्य की घटनाएँ) हो सकती है।

उदाहरण: प्रकाशितवाक्य की पुस्तक

इनमें से कुछ साहित्यिक शैलियों पर आने वाले अध्यायों में अधिक विस्तार से विचार किया गया है।

12
साहित्यिक युक्तियाँ

बाइबल के व्याख्याशास्त्र में, बाइबल में प्रयुक्त प्राचीन साहित्यिक तकनीकों (युक्तियों) को समझना सटीक व्याख्या करने के लिए महत्वपूर्ण है। ये साहित्यिक युक्तियाँ उस समय के सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक संदर्भ को दर्शाती हैं और किसी अंश के अभिप्राय को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं। इन युक्तियों के बारे में जागरूकता हमें गलत धारणाओं से बचने, गहरे अर्थ निकालने और बाइबल के अध्याय की कलात्मकता प्रसंशा करने में सहायता करती है। ये साहित्यिक तकनीकें (युक्तियाँ) अर्थ की प्रत्येक परतों को प्रकट करती हैं, व्याख्या का मार्गदर्शन करती हैं और यह सुनिश्चित करती हैं कि बाइबल के लेखकों के मूल आशय का आदर किया जाए और उसे समझा जाए।

यहाँ पवित्रशास्त्र में प्रयुक्त कुछ प्रमुख साहित्यिक तकनीकों का सारांश दिया गया है, जिनकी उचित व्याख्या करने के लिए हमें जानना अवश्यक है। हम आगामी अध्यायों में कुछ अधिक महत्वपूर्ण तकनीकों (युक्तियों) का विस्तृत रूप से अध्ययन करेंगे।

1) व्यतिक्रम (पदबंधात्मक संरचना) (कियास्मस-कियास्टिक संरचना))

पदबंध संरचनाएँ, या विरोधी समानताएँ, वे साहित्यिक साधन हैं जो विचारों को एक ही प्रतिरूप में व्यवस्थित करके समरूपता बनाते हैं, उदाहरण के लिए, A-B-C-B′-A′ या A-B-C-C′-B′-A′। इस प्रतिरूपता का नाम ग्रीक अक्षर ची (X) के नाम पर रखा गया है, जो एक X जैसे दिखता है, जो विचारों के गुजरने समाप्त या विपरीत होने का प्रतिनिधित्व करता है। यह विपरीत संरचना पाठक का ध्यान

कियास्म के मध्य तत्व की ओर आकर्षित करके केंद्रीय विषय या केंद्र बिंदु को उजागर करने में सहायता करती है। कियास्टिक संरचनाओं का उपयोग अक्सर मुख्य अवधारणाओं पर जोर देने, समरूपता बनाने और अध्यायों में विभिन्न विचारों या क्रियाओं के बीच समानता को उजागर करने के लिए किया जाता है।

यह एक अंश के केंद्रीय विषय पर भी ध्यान आकर्षित करता है, और पाठक को एक मुख्य विचार की ओर निर्देशित करता है और संतुलन बनाता है। यह विचारों के बीच विरोधाभास और तुलना करने में सहायता करता है। यह पैटर्न (प्रतिरूपता) वाली संरचना अंशों को याद रखना और सुनाना सरल बनाती है, जो मौखिक संस्कृति में महत्वपूर्ण है।

कियास्टिक संरचना या पदबंधात्मक संरचना के **उदाहरण**

उत्पत्ति 9:6
जो कोई मनुष्य का लहू बहाएगा उसका लहू मनुष्य ही से बहाया जाएगा, क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप के अनुसार बनाया है।

संरचना:

A: मानव का लहू बहाना

B: मानव द्वारा, रक्तपात होगा

C: परमेश्वर की छवि

B′: परमेश्वर द्वारा बनाया गया मनुष्य या मानव

A′: रक्तपात का परिणाम (मुख्य विचार)

मानव जीवन पवित्र है क्योंकि वह परमेश्वर की छवि को दर्शाता है।

यशायाह 6:10
तू इन लोगों के मन को मोटा और उनके कानों को भारी कर, और उनकी

आँखों को बन्द कर, ऐसा न हो कि वे आँखों से देखें, और कानों से सुनें, और मन से बूझें, और मन फिराएँ और चंगे हो जाएँ।"
A: इस लोगों के दिल को सुस्त कर दो, (मन को मोटा)
B: और उनके कानों को भारी कर दो,
C: और उनकी आँखें बंद कर दो;
C′: ऐसा न हो कि वे अपनी आँखों से देखें,
B′: और अपने कानों से सुनें,
A′: और अपने दिल से समझें,
और फिरकर चंगे हो जाएँ।

आत्मिक अंधापन और बहरापन समझ न पाने और परमेश्वर की चंगाई के प्रावधान से वंचित होने की ओर ले जाता है।

मत्ती 6:24
"कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।
A: "कोई भी दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता;
B: क्योंकि या तो वह एक से घृणा करेगा और दूसरे से प्रेम करेगा,
B′: या फिर वह एक के प्रति वफादार रहेगा और दूसरे को तुच्छ समझेगा।
A′: तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।

यहाँ, A और A′ तत्व दो स्वामियों (परमेश्वर और धन) की सेवा करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि B और B′ तत्व प्रत्येक स्वामी के प्रति दृष्टिकोण का वर्णन करते हैं। समानांतर संरचना पाठक को विकल्पों के बीच स्पष्ट अंतर को देखने में सहायता करती है।

मरकुस 2:27
तब उसने उनसे कहा, "सब्त का दिन मनुष्य के लिये बनाया गया है, न कि मनुष्य सब्त के दिन के लिये।
A: "सब्त
B: मनुष्य के लिए बनाया गया था,
B′: और मनुष्य को

A′: सब्त के लिए।

सब्त लोगों की सेवा करता है, न कि इसके विपरीत।

2) अलंकार: उपमा (सिमिले) और रूपक (मेटाफोर) अलंकार

जहाँ एक विषय की तुलना दूसरे से की जाती है "जैसे" या "जैसा" (उपमा) या एक विषय को दूसरे के रूप में वर्णित किया जाता है (रूपक)। इसका उपयोग परिचित, मूर्त छवियों का उपयोग करके आत्मिक सत्यों या अवधारणाओं का स्पष्ट वर्णन करने के लिए किया जाता है।

उदाहरण:

उपमा ("जैसे" या "जैसा" का उपयोग करके तुलना करना)

भजन संहिता 1:3
वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों
के किनारे लगाया गया है,
और अपनी ऋतु में फलता है,
और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं।
इसलिये जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल
होता है।

यशायाह 1:8
और सिय्योन की बेटी दाख की बारी में की झोपड़ी के समान छोड़ दी गई है, या ककड़ी के खेत में के मचान या घिरे हुए नगर के समान अकेली खड़ी है।

यरूशलेम की कमज़ोरी का वर्णन करता है।

यशायाह 40:31
परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएँगे, वे उकाबों के समान उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे।

यशायाह 53:6
हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।

मत्ती 10:16
"देखो, मैं तुम्हें भेड़ों के समान भेड़ियों के बीच में भेजता हूँ, इसलिये साँपों के समान बुद्धिमान और कबूतरों के समान भोले बनो

रूपक ("जैसे" या "जैसा" का उपयोग किए बिना एक सीधी तुलना)

भजन संहिता 23:1
यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी।

मत्ती 5:13,14
13"तुम पृथ्वी के नमक हो; परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इसके कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए।
14तुम जगत की ज्योति हो। जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता।

मत्ती 11:30
क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हल्का है।"

यूहन्ना 10:11
अच्छा चरवाहा मैं हूँ; अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है।

यूहन्ना 15:5
मैं दाखलता हूँ: तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।

3) अलंकार: अतिशयोक्ति (हाइपरबलि) (प्रभावित करने के लिए अतिशयोक्ति)

अतिशयोक्ति एक बढ़ा चढ़ा कर बताने की एक युक्ति है जिसका उपयोग किसी संदेश के महत्व या गंभीरता पर जोर देने के लिए जोर देने या प्रभाव डालने के लिए किया जाता है।

उदाहरण:

- शहर की दीवारों की ऊंचाई के बारे में अतिशयोक्ति (बढ़ा चढ़ा कर बताया जाना)।

व्यवस्थाविवरण 1:28
.....और वहाँ के नगर बड़े बड़े हैं, और उनकी शहरपनाह आकाश से बातें करती हैं;.....

- निम्नलिखित अतिशयोक्ति पाप से बचने की आवश्यकता पर जोर देती है, न कि शाब्दिक कार्य पर।

मत्ती 5:29,30
29 यदि तेरी दाहिनी आँख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर फेंक दे; .....
30 यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उस को काटकर फेंक दे;....

- फरीसियों के पाखंड को उजागर करने वाली अतिशयोक्ति।

मत्ती 23:24
हे अंधे अगुवो, तुम मच्छर को तो छान डालते हो, परन्तु ऊँट को निगल जाते हो।

लूका 18:25
परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से, ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।

- यीशु के कार्यों को दर्ज करने के लिए आवश्यक पुस्तकों की संख्या के बारे में अतिशयोक्ति।

यूहन्ना 21:25
और भी बहुत से काम हैं, जो यीशु ने किए; यदि वे एक एक करके लिखे जाते, तो मैं समझता हूँ कि पुस्तकें जो लिखी जातीं वे संसार में भी न समातीं।

- पौलुस को देने के लिए अपनी आँखें निकालने के बारे में अतिशयोक्ति, मूल रूप से पौलुस के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करना।

गलातियों 4:15
तो वह तुम्हारा आनन्द मनाना कहाँ गया? मैं तुम्हारा गवाह हूँ कि यदि हो सकता तो तुम अपनी आँखें भी निकालकर मुझे दे देते।

4) अलंकार: मानवीकरण (पर्सनिफिकेशन) (मानवीय गुणों को अमानवीय वस्तुओं में शामिल करना)

- बुद्धि को पुकारने के रूप में मानवीकृत किया गया है।

नीतिवचन 8:1-3
1क्या बुद्धि नहीं पुकारती है,
क्या समझ ऊँचे शब्द से नहीं बोलती है?
2वह तो ऊँचे स्थानों पर मार्ग की एक ओर
और तिर्मुहानियों में खड़ी होती है;
3फाटकों के पास नगर के पैठाव में,
और द्वारों ही में वह ऊँचे स्वर से
कहती है,

- प्रकृति ने गायन और ताली बजाने जैसी मानवीय क्रियाएँ दी हैं।

यशायाह 55:12
"क्योंकि तुम आनन्द के साथ निकलोगे, और शान्ति के साथ पहुँचाए जाओगे; तुम्हारे आगे आगे पहाड़ और पहाड़ियाँ गला खोलकर जयजयकार करेंगी, और मैदान के सब वृक्ष आनन्द के मारे ताली बजाएँगे।

- सृष्टि को प्रत्यक्ष रूप में कराहते हुए दर्शाया गया है।

रोमियों 8:22
क्योंकि हम जानते हैं कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है;

5) टाइपोलॉजी (प्रकार और छाया)

एक विधि जहाँ पुराने नियम में कुछ घटनाएँ, व्यक्ति या संस्थाएँ नए नियम की वास्तविकताओं के पूर्वसूचनाएँ, प्रकार या पूर्वाभास हैं। ये मानव निर्मित नहीं हैं। इन्हें पवित्र आत्मा द्वारा पवित्रशास्त्र में स्पष्ट रूप से पहचाना गया है ताकि परमेश्वर की योजना की निरंतरता और पूर्ति दिखाई जा सके।

उदाहरण:

फसह का मेमनामेमना (निर्गमन 12) मसीह के एक प्रकार के रूप में, सच्चा फसह का मेमनामेमना (1 कुरिन्थियों 5:7)।

6) प्रतीकवाद (सिम्बोलोज्म) और भविष्यसूचक कल्पना

वस्तुएँ, रंग, संख्याएँ या क्रियाएँ जो गहरे अर्थों का प्रतिनिधित्व करती हैं। अक्सर इसका इस्तेमाल तब किया जाता है जब परमेश्वर भविष्यद्वक्ताओं से दर्शन और सपनों में बात करते थे, खास तौर पर यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल, दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य जैसी किताबों में। इसका इस्तेमाल परमेश्वर के लोगों को संदेश देने के लिए भी किया जाता है ताकि आत्मिक सत्य या भविष्यसूचक संदेश गूंजें और प्रभाव डालें।

उदाहरण:

- **यिर्मयाह 18** कुम्हार का चाक।
- **दानिय्येल 7** में चार पशु विभिन्न साम्राज्यों का प्रतीक हैं।
- **प्रकाशितवाक्य** में सात कलीसियाओं का प्रतिनिधित्व करने वाली दीवटें।

- प्रकाशितवाक्य में यहूदा के गोत्र का सिंह और मेमना मसीह के प्रतीक हैं।

7) व्यंग्य (आइरनी) और कटुता (सॅर्काज्म)

जो कहना है उसके विपरीत कहना, अक्सर जोर देने के लिए। एक ऐसी युक्ति है जिसमें अर्थ या अभिप्राय वास्तविक अर्थ के विपरीत होता है, प्रायः मानवीय मूर्खता को उजागर करने के लिए, या शक्तिशाली रीति से सुधारने के लिए उपयोग किया जाता है।

- मूर्तियों की ओर मुड़ने के लिए परमेश्वर इस्राएल को व्यंग्यात्मक रूप से फटकारता है।

न्यायियों 10:14
जाओ, अपने माने हुए देवताओं की दोहाई दो; तुम्हारे संकट के समय वे ही तुम्हें छुड़ाएँ।"

- मीकल ने व्यंग्यात्मक रूप से दाऊद की आराधना की आलोचना की।

2 शमूएल 6:20
...आज इस्राएल का राजा जब अपना शरीर अपने कर्मचारियों की दासियों के सामने ऐसा उघाड़े हुए था...

- एलिय्याह ने बाल के भविष्यद्वक्ताओं का मज़ाक उड़ाया।

1 राजाओं 18:27
..."ऊँचे शब्द से पुकारो, वह तो देवता है; वह तो ध्यान लगाए होगा, या कहीं गया होगा, या यात्रा में होगा, या हो सकता है कि सोता हो और उसे जगाना चाहिए।

- अय्यूब ने व्यंग्यात्मक रूप से अपने मित्रों की सलाह का उत्तर दिया।

अय्यूब 12:2
"नि:सन्देह मनुष्य तो तुम ही हो
और जब तुम मरोगे तब बुद्धि भी जाती रहेगी।

- आमोस ने व्यंग्यात्मक रूप से इस्राएल को झूठी उपासना करने के लिए आमंत्रित करता है।

आमोस 4:4
बेतेल में आकर अपराध करो, और गिलगाल में आकर बहुत से अपराध करो;

- पौलुस व्यंग्यात्मक रूप से कुरिन्थियों के अहंकार का सामना करता है।

1 कुरिन्थियों 4:8
तुम तो तृप्त हो चुके, तुम धनी हो चुके, तुम ने हमारे बिना राज्य किया;...

8) अलंकारिक प्रश्न (रिटॉरिकल)

जानकारी के लिए नहीं बल्कि किसी बात को स्पष्ट करने या चिंतन को प्रेरित करने के लिए पूछे गए प्रश्न। इस शैली का उद्देश्य श्रोताओं को आकर्षित करना और सत्य पर जोर देना है।

रोमियों और अन्य पत्रियों को लिखने में पौलुस ने इस शैली का प्रेरक युक्ति के रूप में व्यापक रूप से उपयोग किया है। पौलुस के अलंकारिक प्रश्न प्रायः सैद्धांतिक सत्यों पर जोर देने, गलत धारणाओं को चुनौती देने और अपने पाठकों को चिंतन में संलग्न करने का काम करते हैं।

उदाहरण:

रोमियों 6:1,2
1तो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह बहुत हो?
2कदापि नहीं! हम जब पाप के लिये मर गए तो फिर आगे को उसमें कैसे जीवन बिताएँ?

रोमियों 8:31
अत: हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्‍वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?

1 कुरिन्थियों 1:13
क्या मसीह बँट गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया? या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला?

1 कुरिन्थियों 6:19
क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्‍वर की ओर से मिला है; और तुम अपने नहीं हो?

1 कुरिन्थियों 15:55
हे मृत्यु, तेरी जय कहाँ रही?
हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ रहा?"

गलातियों 3:1,2
1हे निर्बुद्धि गलातियो, किसने तुम्हें मोह लिया है? तुम्हारी तो मानो आँखों के सामने यीशु मसीह क्रूस पर दिखाया गया!
2मैं तुम से केवल यह जानना चाहता हूँ कि तुम ने आत्मा को, क्या व्यवस्था के कामों से या विश्‍वास के समाचार से पाया?

इनमें से कुछ साहित्यिक तकनीकों पर आगे के अध्यायों में विस्तार से चर्चा की जाएगी।

13
व्याख्या के स्वरूप

अलंकार एक शब्द या वाक्यांश है जिसका उपयोग उसके वास्तविक प्राकृतिक अर्थ के साथ कुछ और बताने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी में, हम "सूरज की तरह प्रकाशमान", "बारिश हो रही है", "मधुमक्खी की तरह व्यस्त", आदि का उपयोग कर सकते हैं। जैसा कि हमने पिछले अध्यायों में देखा है, उपमा, रूपक, मानवीकरण, अतिशयोक्ति, विडंबना और व्यंग्य सभी को भाषण के विभिन्न अलंकारों के रूप में प्रयोग में लाया जा सकता है।

हम कैसे निर्धारित करते हैं कि कोई अभिव्यक्ति आलंकारिक है या वास्तविक?

1) हमेशा किसी अंश को उसके वास्तविक अर्थ में लें, जब तक कि अध्याय को आलंकारिक मानने का कोई अच्छा कारण न हो, न कि शाब्दिक।

2) आलंकारिक अर्थ तब अभिप्रेत होता है जब शाब्दिक अर्थ में असंभवता का समावेश हो।

- परमेश्वर का मेमना आलंकारिक अर्थ में यीशु मसीह को संदर्भित करता है, न कि किसी पशु को (यूहन्ना 1:29)।
- यिर्मयाह ने एक लोहे का खंभा बनाया और एक कांस्य की दीवार जो आलंकारिक रूप से शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है (यिर्मयाह 1:18)।

3) आलंकारिक अर्थ तब अभिप्रेत है जब वास्तविक अर्थ बेतुका या बिना किसी अर्थ के हो।

- पेड़ ताली बजा रहे हैं (यशायाह 55:12)।

4) आलंकारिक अर्थ तब लें यदि जब वास्तविक अर्थ में ऐसे कार्य की आवश्यकता हो जिसे शाब्दिक रूप से बयान नहीं किया जा सकता।

- यीशु ने कहा कि हमें उसका मांस खाना है और उसका लहू पीना है (यूहन्ना 6:53-58)।
- प्रतिदिन अपना क्रूस उठाओ और यीशु का अनुसरण करो (लूका 9:23)।

5) कभी-कभी, आलंकारिक अभिव्यक्ति के बाद एक व्याख्यात्मक कथन वास्तविक होता है।

- जो लोग सो जाते हैं (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-15) वे ऐसे लोग हैं जो मर चुके हैं (वचन 16)।

हमें अलंकारों (फिगर्स ऑफ स्पीच) की व्याख्या कैसे करनी चाहिए?

1) निर्धारित करें कि क्या अलंकार शामिल है।

मत्ती 7:6
"पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो, और अपने मोती सूअरों के आगे मत डालो; ऐसा न हो कि वे उन्हें पाँवों तले रौंदें और पलटकर तुम को फाड़ डालें।

2 तीमुथियुस 2:3-6
3मसीह यीशु के अच्छे योद्धा के समान मेरे साथ दु:ख उठा।
4जब कोई योद्धा लड़ाई पर जाता है, तो इसलिये कि अपने भरती करनेवाले को प्रसन्न करे, अपने आप को संसार के कामों में नहीं फँसाता।
5फिर अखाड़े में लड़नेवाला यदि विधि के अनुसार न लड़े तो मुकुट नहीं पाता।
6जो किसान परिश्रम करता है, फल का अंश पहले उसे मिलना चाहिए।

2) अलंकार में छवि और वास्तविक अर्थ को ढूँढना।

- **मत्ती 7:6** पवित्र चीज़ों को अपवित्र लोगों को न सौंपें
- **2 तीमुथियुस 2:3-6** आस्तिक की तुलना सैनिक, खिलाड़ी, किसान से की गई है

यूहन्ना 2:19
'यीशु ने उनको उत्तर दिया, "इस मन्दिर को ढा दो, और मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूँगा।"

यहाँ "मंदिर" का अर्थ मसीह के भौतिक शरीर से है।

3) तुलना के बिंदुओं को समझें।

भजन संहिता 1:3
वह उस वृक्ष के समान है, जो बहती नालियों
के किनारे लगाया गया है,
और अपनी ऋतु में फलता है,
और जिसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं।
इसलिये जो कुछ वह पुरुष करे वह सफल होता है।

सुरक्षित, समृद्ध, फलदायी

4) ध्यान रखें कि एक ही अलंकार का अर्थ अलग-अलग हो सकता है। इसके उपयोग के संदर्भ पर विचार करते हुए अलंकार की व्याख्या करें।

- **शेर:** शैतान दहाड़ते हुए शेर की तरह छिपकर घूमता है। यीशु यहूदा के गोत्र का सिंह है, जो साहसी और राजसी है।
- **चोर:** शैतान चोरी करने, मारने और नष्ट करने के लिए आता है। यीशु की वापसी रात में चोर की तरह होगी, अप्रत्याशित और अघोषित।

5) अर्थ और मुख्य अंतर्दृष्टि निकालें।

- **मत्ती 7:6** पवित्र चीज़ों को अपवित्र लोगों को न सौंपें।
- **2 तीमुथियुस 2:3-6** विश्वासी की तुलना एक सैनिक, खिलाड़ी, किसान से की गई है और उसे इस तरह से जीना चाहिए।
- **यूहन्ना 2:19** मसीह को क्रूस पर चढ़ाओ और वह जी उठेगा।
- **भजन संहिता 1:3** ऐसा व्यक्ति, सफल, फलदायी और समृद्ध होगा।

6) अर्थ और मुख्य अंतर्दृष्टि निकालते समय सामान्य ज्ञान, तर्क और संचार के नियमों को लागू करते हुए आंकड़ों पर वैध सीमाएँ या नियंत्रण रखें।

- 1 थिस्सलुनीकियों 5:2 में, जब पौलुस लिखता है, *"प्रभु का दिन, रात के चोर की तरह आता है"* इसका अभिप्राय है कि प्रभु अचानक से आ जायेंगे, न कि वे हमसे कुछ चुराने आएंगे। इसका अर्थ यह भी नहीं है कि वह आधी रात को 12:00 बजे आएंगे।
- *"वह पृथ्वी को हिलाकर उसके स्थान से अलग करता है, और उसके खम्भे काँपने लगते हैं।"* (अय्यूब 9:6)। यहाँ पृथ्वी के खंभों का काँपना पृथ्वी के पहाड़ों को संदर्भित करता है और इसका अर्थ यह नहीं है कि पृथ्वी खंभों पर टिकी हुई है।

14
प्रकार और प्रतिरूप

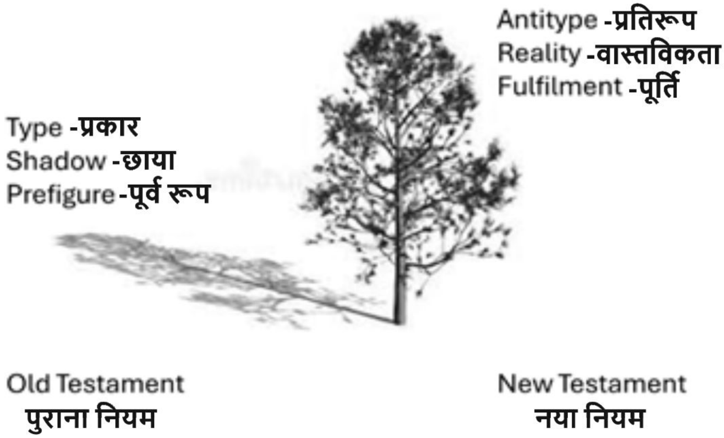

नया नियम हमें संकेत देता है कि पुराने नियम में कुछ लोग, पात्र या घटनाएँ अधिक वास्तविकता (प्रतिरूप, वास्तविकता या पूर्ति) के पूर्वरूप, प्रकार और छाया थे।

रोमियों 5:14
तौभी आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज्य किया, जिन्होंने उस आदम, जो उस आनेवाले का चिह्न है, के अपराध के समान पाप न किया।

आदम को मसीह का "एक प्रकार" कहा जाता है, जो सच्चा, प्रतिरूप, वास्तविकता या पूर्ति है। हम इसे कुरिन्थियों को लिखे पौलुस के पत्र में आगे तुलना करते हुए देखते हैं, ऐसा ही लिखा भी है, कि *"प्रथम मनुष्य, अर्थात् आदम जीवित प्राणी बना" और अन्तिम आदम, जीवनदायक आत्मा बना। परन्तु पहले आत्मिक न था पर स्वाभाविक था, इसके बाद आत्मिक हुआ। प्रथम मनुष्य धरती से अर्थात् मिट्टी का*

था; दूसरा मनुष्य स्वर्गीय है" (1 कुरिन्थियों 15:45-47)

कुलुस्सियों 2:16,17
[16]इसलिये खाने–पीने या पर्व या नए चाँद, या सब्त के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करे।
[17]क्योंकि ये सब आनेवाली बातों की छाया हैं, पर मूल वस्तुएँ मसीह की हैं।

पौलुस पुराने नियम के अभ्यासों और पालन की ओर भी संकेत देता है और उन्हें आनेवाली वस्तुओं की छाया के रूप में संदर्भित करता है, किन्तु मूल तत्व मसीह का है।

गलातियों 4:21-26
[21]तुम जो व्यवस्था के अधीन होना चाहते हो, मुझे बताओ, क्या तुम व्यवस्था की नहीं सुनते?
[22]यह लिखा है कि अब्राहम के दो पुत्र हुए; एक दासी से और एक स्वतंत्र स्त्री से।
[23]परंतु जो दासी से हुआ, वह शारीरिक रीति से जन्मा; और जो स्वतंत्र स्त्री से हुआ, वह प्रतिज्ञा के अनुसार जन्मा।
[24]इन बातों में दृष्टान्त है: ये स्त्रियाँ मानो दो वाचाएँ हैं, एक तो सीनै पहाड़ की जिससे दास ही उत्पन्न होते हैं; और वह हाजिरा है।
[25]और हाजिरा मानो अरब का सीनै पहाड़ है, और आधुनिक यरूशलेम उसके तुल्य है, क्योंकि वह अपने बालकों समेत दासत्व में है।
[26]पर ऊपर की यरूशलेम स्वतंत्र है, और वह हमारी माता है।

यहाँ, गलातियों में, पौलुस हाजिरा और सारा की ओर इशारा करता है, और बेटे इश्माएल और इसहाक, दो वाचाओं का प्रतीक हैं।

इब्रानियों 8:5
वे स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप और प्रतिबिम्ब की सेवा करते हैं; जैसे जब मूसा तम्बू बनाने पर था, तो उसे यह चेतावनी मिली, "देख, जो नमूना तुझे पहाड़ पर दिखाया गया था, उसके अनुसार सब कुछ बनाना।"

इब्रानियों 10:1
क्योंकि व्यवस्था, जिसमें आनेवाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है पर उनका असली स्वरूप नहीं, इसलिये उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा जो प्रतिवर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आनेवालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकती।

इब्रानियों के लेखक पुराने नियम के तम्बू और बलिदानों को दर्शाते हैं, जो स्वर्गीय वस्तुओं और आनेवाली अच्छी वस्तुओं की नकल और छाया हैं।

अतः, यह हमारे लिए स्पष्ट हो जाता है कि पुराने नियम के कुछ लोग, व्यवहार और घटनाएँ; नए नियम में हमारे सामने प्रस्तुत वास्तविकता का एक प्रकार और छाया थीं।

ये "प्रकार और छाया" किस उद्देश्य की पूर्ति करती हैं?

कल्पना कीजिए, हम एक पेड़ की छाया देखते हैं। हम पूरे विश्वास के साथ इसे एक पेड़ के रूप में पहचान सकते हैं। यह हमें बताता है कि एक वास्तविक पेड़ है, जबकि हम केवल पेड़ की छाया देख रहे हैं। हम पेड़ के बारे में कुछ विचार प्राप्त करने में सक्षम हो सकते हैं, शायद पहचान सकते हैं कि यह किस प्रकार का पेड़ है, कितनी शाखाएँ हैं, क्या उस पर पत्तियाँ हैं, क्या उस पर फल हैं। जबकि, पेड़ के बारे में कई विवरण ऐसे होते हैं जो छाया से निर्धारित नहीं किए जा सकते हैं। किन्तु जब हम पेड़ को देखते हैं, तो हम वास्तविकता को देखते हैं। हम बहुत कुछ देखते हैं, हम रंग और बहुत कुछ देखते हैं।

पुराने नियम में प्रकार और छाया पूर्वाभास हैं जो हमें नए नियम में प्रस्तुत सत्य या वास्तविकता को दर्शाती है। हम प्रकारों और छाया से बहुत कुछ सीख सकते हैं जो नए नियम में हमारे सामने आने वाली वास्तविकता को उचित रूप से समझने में सहायता करते हैं।

बाइबल आधारित प्रतीक या छाया की निम्नलिखित विशेषताएं हैं।

1) **समानता**: इस प्रकार की पहली विशेषता यह है कि इसके प्रकार और उसके प्रतिरूप (पूर्ति, वास्तविकता) के बीच समानताएँ होती हैं।

2) **ऐतिहासिक वास्तविकता**: पुराने नियम में व्यक्ति, घटनाएँ या वस्तुएं जो नए नियम में वस्तुओं के प्रकार हैं, उनमें ऐतिहासिक वास्तविकता थी।

3) **पूर्वाभास**: यह प्रकार हमें बताता है कि वास्तविकता हमारे सामने है। सार रूप में यह एक पूर्वानुमान या पूर्वाभास तत्व होता है। यह प्रतिरूप को दर्शाता है। यह एक प्रकार की छाया है जो वास्तविकता को दर्शाती है।

4) **अत्युक्ति करना:** टाइपोलॉजी में, प्रतिरूप (पूर्ति, वास्तविकता) एक प्रकार से बड़ा और श्रेष्ठ होता है।

5) **ईश्वरीय रचना:** रचना (डिज़ाइन) प्रकार मात्र सादृश्य या दृष्टांत नहीं हैं जिन्हें हम बनाते हैं। बल्कि, ये परमेश्वर द्वारा नियोजित समानताएँ हैं। यह प्रकार इस तरह से रचा गया था कि यह प्रतिरूप (पूर्ति) के समान हो।

6) **परमेश्वर द्वारा निर्दिष्ट**: प्रकार और छाया हम, पवित्र शस्त्र के पाठकों द्वारा नहीं बनाई गई हैं। बल्कि प्रकार और छाया हमें शास्त्र में स्पष्ट रूप से बताई गई हैं। वचनों को किसी तरह से यह संकेत देना चाहिए कि कोई वस्तु या कोई व्यक्ति एक प्रकार है।

प्रकार और छाया और उनके प्रतिरूपों (पूर्ति) की संक्षिप्त सूची

जैसा कि हमने उल्लेख किया है, प्रकार और छाया परमेश्वर द्वारा बनाई गई हैं, परमेश्वर द्वारा निर्दिष्ट की गई हैं और वचनों में बताई गई हैं।

(यह पूरी सूची नहीं है।)

- आदम, मसीह का एक प्रकार, और अंतिम आदम है (रोमियों 5:14; 1 कुरिन्थियों 15:45-49)
- मेल्कीसेदेक (याजक और राजा) जिसका याजकीय पद लेवी के याजकीय पद से पहले का है और वह मसीह का प्रतीक है, जो कि अनंतकाल तक का महायाजक है (उत्पत्ति 14:18-20; इब्रानियों 7:1-17)।
- खतना, जो वाचा का एक भौतिक संकेत था, हृदय के आत्मिक खतने का प्रतीक है (उत्पत्ति 17:10; रोमियों 2:29)।
- फसह, मेमने के लहू के द्वारा इस्राएल का छुटकारा मसीह–की प्रायश्चित मृत्यु का एक चिन्ह है और मसीह-हमारे फसह का प्रतीक है (निर्गमन 12; यूहन्ना 1:29; 1 कुरिन्थियों 5:7)।
- लाल सागर पानी से बपतिस्मा का एक प्रकार है (निर्गमन 14:21-31; 1 कुरिन्थियों 10:1,2)
- स्वर्ग से मन्ना मसीह का एक प्रकार है, जो जीवन की रोटी है (निर्गमन 16:4-35; यूहन्ना 6:32-35)
- पीतल का सर्प, जिसे इस्राएल की चंगाई के लिए ऊंचा उठाया गया था, वह मसीह का एक प्रतीक है, जिसे मनुष्य के उद्धार के लिए क्रूस पर चढ़ाया गया था (गिनती 21:4-9; यूहन्ना 3:14,15)।
- इस्राएल के पीछे चलने वाली चट्टान मसीह का एक प्रकार है, जो जीवित जल का स्रोत है (1 कुरिन्थियों 10:4)
- तम्बू, जो परमेश्वर का अपने लोगों के बीच निवास स्थान था, वह मसीह का एक प्रतीक है, जो परमेश्वर की अंतिम उपस्थिति है और कलीसिया उसकी देह है (निर्गमन 25-40; इब्रानियों 9:11,12)।
- वाचा का संदूक और अनुग्रह का आसन, जो परमेश्वर की

उपस्थिति, वाचा और बैठक के स्थान का प्रतिनिधित्व करते हैं, मसीह का एक प्रतीक है, जो वाचा को पूरा करता है और परमेश्वर की उपस्थिति को दर्शाता है, मसीह स्वयं हमारे लिए अनुग्रह का आसन बना है (निर्गमन 25:10-22; रोमियों 3:25)।

- बलिदान प्रणाली, मसीह के बलिदान का एक प्रकार है (लैव्यव्यवस्था 1-7; इब्रानियों 9:13,14; इब्रानियों 10:1-10)।
- महायाजक, जो पाप के लिए बलिदान चढ़ाने वाला मध्यस्थ था, मसीह का एक प्रकार है जो कि हमारा सिद्ध महायाजक है (लैव्यव्यवस्था 16; इब्रानियों 4:14-16; इब्रानियों 5:4,5)।
- पहली फसल का पर्व, पहली फसल की भेंट मसीह के प्रथम फल के रूप में पुनरुत्थान का एक प्रतीक है (लैव्यव्यवस्था 23:9-14; 1 कुरिन्थियों 15:20-23)।
- अखमीरी रोटी का पर्व विश्वासियों के पवित्र जीवन का प्रतीक है (निर्गमन 12; 1 कुरिन्थियों 5:6-8)।
- प्रायश्चित का दिन (योम किप्पुर) जो पाप के लिए प्रायश्चित का वार्षिक दिन था, मसीह के एक बार के प्रायश्चित का प्रतीक है (लैव्यव्यवस्था 16; इब्रानियों 9:24-26)।
- वायदे का देश (कनान), विश्राम और विरासत का स्थान, मसीह में कामों से विश्राम और मसीह में हमारी विरासत का एक प्रतीक है (यहोशू 1:1-9; इब्रानियों 4:8-10)।
- पुराने नियम का मंदिर, जो परमेश्वर का भौतिक निवास स्थान था, आत्मिक मंदिर, कलीसिया का एक प्रकार है (1 राजाओं 6; 1 कुरिन्थियों 3:16; इफिसियों 2:21,22)।
- सिय्योन पर्वत, जो परमेश्वर का पवित्र पर्वत है, स्वर्गीय यरूशलेम का प्रतीक है(भजन संहिता 2:6; इब्रानियों 12:22-24)।

- योना नबी, जो मछली के पेट में तीन दिनों तक था, मसीह की मृत्यु और उसके पुनरुत्थान का प्रतीक है (योना 1:17; मत्ती 12:39-41)।
- विवाह, पुरुष और महिला का मिलन, कलीसिया के साथ मसीह के मिलन का एक प्रकार है (उत्पत्ति 2:24; इफिसियों 5:31,32)।

बाइबल के प्रतीकों और छायाओं से अलग चित्रण

रोमियों 15:4
जितनी बातें पहले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गईं हैं कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा आशा रखें।

1 कुरिन्थियों 10:6,11
[6]ये बातें हमारे लिये दृष्टान्त ठहरीं, कि जैसे उन्होंने लालच किया, वैसे हम बुरी वस्तुओं का लालच न करें;
[11]परंतु ये सब बातें, जो उन पर पड़ीं, दृष्टान्त की रीति पर थीं; और वे हमारी चेतावनी के लिये जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गईं हैं।

बाइबल हमें यह भी सिखाती है कि पुराने नियम में लिखी गई बातें हमारे सीखने और हमारे उदाहरण के लिए लिखी गई हैं। इसलिए, हम पुराने नियम (और नए नियम) की कहानियों का उपयोग सबक सीखने, अंतर्दृष्टि प्राप्त करने और अपने विश्वास की यात्रा में आगे बढ़ने के लिए कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, हम दाऊद द्वारा गोलियत से लड़ने की घटना को परमेश्वर में दृढ़ विश्वास और अपनी वाचा के प्रति परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को एक उदाहरण या चित्रण के रूप में उपयोग कर सकते हैं।

बाइबल की कहानियों को दृष्टांतों और प्रतीकों और छाया के रूप में उपयोग करने के बीच मुख्य अंतर यह है कि दृष्टांतों और प्रतीकों

की वास्तविकता की पूर्ति नए नियम में होती है और उन्हें पवित्रशास्त्र में इसी रूप में निर्दिष्ट किया गया है। पुराने नियम में प्रतीकों और छाया और नए नियम में पूर्ति के बीच संबंध को पवित्रशास्त्र में दर्शाया गया है। हालाँकि, जब हम पवित्रशास्त्र में वर्णित कहानियों को दृष्टांत के रूप में उपयोग करते हैं, तो हम अपने अध्ययन और पवित्र आत्मा की सहायता से अंतर्दृष्टि और सत्य की पहचान करते हैं, और फिर देखते हैं कि हम उन्हें अपने दैनिक जीवन में कैसे लागू कर सकते हैं।

प्रतीकों और छाया को व्यवहार में लाते समय और बाइबलके दृष्टांतों का उपयोग करते समय, हमें सावधान रहना चाहिए कि जो कहा गया है उससे परे अध्याय को न पढ़ें। हमें स्वयं को पवित्रशास्त्र में बताई गई बातों और सिखाई गई बातों के अनुरूप ही रखना चाहिए।

प्रतीकों और छायाओं को व्यवहार में लाते समय तथा बाइबल की घटनाओं को दृष्टांत के रूप में उपयोग करते समय **रूपक-प्रयोग से बचना** चाहिए।

हम इस महत्वपूर्ण सिद्धांत को एक भिन्न अध्याय में संबोधित करेंगे।

15
दृष्टांत

दृष्टांत आलंकारिक भाषा का एक रूप है। यह कहानी के रूप में एक विस्तारित सादृश्य है। दृष्टांत हमारे संसार की कहानियाँ हैं जो आत्मिक सत्य को दर्शाती या प्रकाशित करती हैं। दृष्टांत में ऐसी कहानी का उपयोग किया जा सकता है जो वास्तव में घटित हुई हो या इसमें कोई काल्पनिक कहानी या सामान्य दिन-प्रतिदिन की घटना का प्रयोग किया जा सकता है जो आत्मिक सत्य को दर्शाती हो।

ग्रीक में "दृष्टांत" का अर्थ है *'पैराबोल'* = बगल में रखना; एक वस्तु को दूसरी वस्तु के बगल में रखना। इस प्रकार, यह एक ऐसी कहानी है जिसे सत्य को दर्शाने के लिए साथ-साथ रखा जाता है। ग्रीक *'पैराबोल'* का अर्थ छोटे कथन और कहावतें भी हो सकता है।

यीशु ने दृष्टांतों में बातें क्यों की?

मत्ती 13:10-17

10चेलों ने पास आकर उससे कहा, "तू लोगों से दृष्टान्तों में क्यों बातें करता है?"

11उस ने उत्तर दिया, "तुम को स्वर्ग के राज्य के भेदों की समझ दी गई है, पर उनको नहीं।

12क्योंकि जिसके पास है, उसे दिया जाएगा, और उसके पास बहुत हो जाएगा; पर जिसके पास कुछ नहीं है, उससे जो कुछ उसके पास है, वह भी ले लिया जाएगा।

13मैं उनसे दृष्टान्तों में इसलिये बातें करता हूँ कि वे देखते हुए नहीं देखते और सुनते हुए नहीं सुनते, और नहीं समझते।

14उनके विषय में यशायाह की यह भविष्यद्वाणी पूरी होती है:

'तुम कानों से तो सुनोगे, पर समझोगे नहीं; और आँखों से तो देखोगे, पर तुम्हें न सूझेगा।*

[15]क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है,और वे कानों से ऊँचा सुनते हैं और उन्होंने
अपनी आँखें मूंद ली हैं; कहीं ऐसा न हो कि वे आँखों से देखें, और कानों से सुनें और मन से समझें, और फिर जाएँ, और मैं उन्हें चंगा करूँ।'
[16]पर धन्य हैं तुम्हारी आँखें, कि वे देखती हैं; और तुम्हारे कान कि वे सुनते हैं।*
[17]क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं ने और धर्मियों ने चाहा कि जो बातें तुम देखते हो, देखें, पर न देखीं; और जो बातें तुम सुनते हो, सुनें, पर न सुनीं।

मत्ती 13:34,35
[34]ये सब बातें यीशु ने दृष्टान्तों में लोगों से कहीं, और बिना दृष्टान्त वह उनसे कुछ न कहता था,
[35]कि जो वचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो:"मैं दृष्टान्त कहने को अपना मुँह खोलूँगा:
मैं उन बातों को जो जगत की उत्पत्ति से गुप्त रही हैं प्रकट करूँगा

उस समय के लोगों की आत्मिक स्थिति का वर्णन करते हुए, प्रभु यीशु ने यशायाह 6:9,10 से उदाहरण दिया। न्याय में, परमेश्वर ने लोगों को एक अलग आत्मिक स्थिति में रखा, जहाँ वे देख, सुन या समझ नहीं सकते थे। यदि वे ऐसा करते, तो वे प्रभु की ओर मुड़ते और चंगे हो जाते। यीशु की पृथ्वी पर की गई सेवकाई के दौरान लोगों पर भी यही आत्मिक परिस्थितियाँ हावी थीं। जबकि, उनके अनुयायी जो उनका अनुसरण करते थे, उन्हें परमेश्वर द्वारा देखने, सुनने और समझने का विशेषाधिकार प्राप्त था। *"उसी घड़ी वह पवित्र आत्मा में होकर आनन्द से भर गया, और कहा, "हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगट किया। हाँ, हे पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा। मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंप दिया है; और कोई नहीं जानता कि पुत्र कौन है केवल पिता, और पिता कौन है यह भी कोई नहीं जानता केवल पुत्र के और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे।" तब चेलों की ओर मुड़कर अकेले में कहा, "धन्य*

हैं वे आँखें, जो ये बातें जो तुम देखते हो देखती हैं। क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं और राजाओं ने चाहा कि जो बातें तुम देखते हो देखें पर न देखीं, और जो बातें तुम सुनते हो सुनें पर न सुनीं।" (लूका 10:21-24)।

क्या यीशु ने जानबूझकर अपने सुनने वालों से सत्य छिपाने के लिए दृष्टांतों में बात की? यह उसके विपरीत होगा जो वह था और है। यीशु *"सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है,"* (यूहन्ना 1:9)। यीशु ही वह व्यक्ति था जिसके बारे में कहा गया था, *"जो लोग अंधकार में बैठे थे, उन्होंने महान ज्योति देखी, और जो लोग मृत्यु के देश में और छाया में बैठे थे, उन पर ज्योति चमकी"* (मत्ती 4:16)। जगत की ज्योति होने के नाते, उनका उद्देश्य लोगों को अंधकार में रखना नहीं था, बल्कि उन्हें प्रकाश देखने, आत्मिक सत्य देखने में सक्षम बनाना था।

प्रभु यीशु भविष्यवाणी को पूरा कर रहे थे (भजन संहिता 78:2)। इस भजन के अनुसार दृष्टांतों का उद्देश्य उन वस्तुओं को उजागर करना था जिन्हें संसार की नींव रखने के समय से गुप्त रखा गया था।

दृष्टांतों का उद्देश्य रहस्यों को उजागर करना है, रहस्यों को छिपाना नहीं। दृष्टांतों का उद्देश्य सुनने वालों के लिए राज्य के रहस्यों को सुलभ बनाना है।

यीशु ने दृष्टांतों में बातें क्यों की?

प्रभु यीशु यहाँ कहते हैं कि उनके चेलों को परमेश्वर ने ऐसी आँखें दी हैं जो देख सकती हैं, और ऐसे कान दिये हैं जो सुन सकते हैं, ऐसा हृदय दिया है जो स्वर्ग के परमेश्वर के राज्य के रहस्यों को समझ सकता है। इसलिए, जब उन्होंने अपने दृष्टांत प्रस्तुत किए, तो शिष्य परमेश्वर के राज्य के सत्य को देख, सुन और समझ सकते थे क्योंकि

ऐसा करने के लिए उन्हें दिया गया था। वे कहानियों को याद कर सकते थे, और राज्य के आत्मिक सत्य, रहस्यों और सिद्धांतों को समझ सकते थे।

यीशु के पास आने वाले लोगों की भीड़ आत्मिक सत्य या स्वर्ग के राज्य के रहस्यों को देख, सुन या समझ नहीं सकती थी। यह उनकी वर्तमान आत्मिक स्थिति थी। फिर उन्हें दृष्टांत प्रस्तुत करने का उद्देश्य क्या था जिसमें कहानी का भीतरी सत्य छिपा हुआ था? उनकी आँखें, कान और हृदय पहले से ही सुस्त थे,और कहानी के अंदर और ज्यादा सत्य छिपा हुआ था। उन्हें दृष्टांत प्रस्तुत करने का उद्देश्य यह था कि वे कहानी के माध्यम से कहानी में निहित सत्य का सामना कर सकें और इस प्रकार अपने सुस्त हृदय, आँखें और कान खोल सकें।

दृष्टांतों में कहानी में छिपा हुआ सत्य होता है, इसलिए कहानी सत्य तक पहुँचने, सत्य को समझने और सत्य को बनाए रखने का माध्यम बन जाती है।

दृष्टांत बताने का एक प्रभावी तरीका था, क्योंकि कहानियों के रूप में, वे सामान्य एवं दैनिक जीवन के तत्वों से निपटते थे और तुरंत सुनने वालों का ध्यान आकर्षित करते थे। कहानियों से जुड़ना, याद रखना सरल था और यह लोगों को सोचने के लिए प्रोत्साहित करता था।

यहाँ कुछ सामान्य बातें दी गई हैं जिनके बारे में यीशु ने अपने दृष्टांतों में बात की थी।

- दो घर (मत्ती 7:24-27; लूका 6:46-49)
- कोरा कपड़ा और नयी दाखरस (मत्ती 9:16,17; मरकुस 2:21,22; लूका 5:36-38)

- बोनेवाला (मत्ती 13:3-9,18-23; मरकुस 4:3-9,13-20; लूका 8:5-8,11-15)
- जंगली दाने / जंगली पौधे (मत्ती 13:24-30,36-43)
- राईका बीज (मत्ती 13:31,32; मरकुस 4:30-32; लूका 13:18,19)
- खमीर / ख़मीर (मत्ती 13:33; लूका 13:20,21)
- छिपा हुआ ख़ज़ाना (मत्ती 13:44)
- बहुमूल्य मोती (मत्ती 13:45,46)
- मछली पकड़ने का जाल (मत्ती 13:47-50)
- क्षमा न करने वाला दास (मत्ती 18:23-35)
- दाख की बारीमें काम करने वाले (मत्ती 20:1-16)
- दो बेटे (मत्ती 21:28-32)
- दाख की बारी के दुष्ट किसान (मत्ती 21:33-46; मरकुस 12:1-12; लूका 20:9-19)
- विवाह भोज (मत्ती 22:1-14)
- दो सेवक / विश्वासयोग्य और दुष्ट सेवक (मत्ती 24:45-51; लूका 12:42-48)
- दस कुँवारियाँ (मत्ती 25:1-13)
- तोड़े (मत्ती 25:14-30; लूका 19:11-27)
- गुप्त रूप से उगने वाला बीज (मरकुस 4:26-29)
- द्वारपाल (मरकुस 13:33-37)
- असभ्य बालक (मत्ती 11:16-19; लूका 7:31-35)
- दो कर्जदार (लूका 7:40-43)
- अच्छा सामरी (लूका 10:30-37)

- आधी रात को मदद करने वाला मित्र को दोस्त (लूका 11:5-8)
- धनी मूर्ख (लूका 12:16-21)
- फल न देने वाला अंजीर का पेड़ (लूका 13:6-9)
- महान भोज (लूका 14:15-24)
- अधूरा गढ़ और राजा का उग्र युद्ध (लूका 14:28-33)
- खोई हुई भेड़ (मत्ती 18:12-14; लूका 15:3-7)
- खोया हुआ सिक्का (लूका 15:8-10)
- उड़ाऊ पुत्र (लूका 15:11-32)
- चतुर भण्डारी (लूका 16:1-13)
- सेवकों का प्रतिफल (लूका 17:7-10)
- अधर्मी न्यायी और विधवा का बारबार आना (लूका 18:1-8)
- फरीसी और चुंगी लेनेवाला (लूका 18:9-14)
- मुहरें / मिनास (लूका 19:11-27)

दृष्टांतों की व्याख्या करने के लिए दिशा-निर्देश

1) यदि कई सुसमाचारों में दृष्टांत / चित्रण मिलता है, तो उसे पढ़ें। सभी सुसमाचार लेखन में जो कहा गया है, उसे सम्मिलित करें और दृष्टांत का तत्काल अर्थ समझें।
2) दृष्टांत के उद्देश्य और उपयोग की गई उपमाओं को पहचानें।

दृष्टांत में चयनित तत्व क्या दर्शाते हैं?

बोने वाले के दृष्टांत में उदाहरण:

बीज = परमेश्वर का वचन; **भूमि** = हृदय; **हवा के पक्षी** = शैतान;

पथरीली भूमि = कठिनाइयाँ, कष्ट;

काँटे = संसार की चिंता और अन्य चीजों की चाहत; आदि।

हर विवरण में अर्थ निकालने की कोशिश करके दृष्टांतों को रूपक में न बदलें। सिर्फ उन उपमाओं का उपयोग करें जिन्हें स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है।

1) दृष्टांत के माध्यम से बताए जा रहे मुख्य सत्यों को निर्धारित करें।
2) पुष्टि करें कि प्राप्त सत्य और अंतर्दृष्टि पवित्रशास्त्र की बाकी शिक्षाओं के अनुरूप हैं या नहीं।
3) विचार करें कि दृष्टांत के माध्यम से दिए गए सत्य और अंतर्दृष्टि को रोजमर्रा की जिंदगी में कैसे लागू किया जा सकता है।

16
रूपक से बचें

शिक्षा एवं उपदेश देते समय आपको पवित्रशास्त्र के अध्याय का रूपकात्मक प्रयोग नहीं करना चाहिए!

रूपक बनाना (ऐलगराइज़िंग)

हम कहते हैं कि कोई व्यक्ति पवित्रशास्त्र के अध्यायों का रूपक बना रहा है जबकि वास्तविक अर्थ को अनदेखा किया जाता है और अध्याय को एक ऐसा बलपूर्वक या छिपा हुआ अर्थ दिया जाता है, जो लेखक द्वारा अभिप्रेत नहीं था और पाठ का स्वाभाविक विस्तार नहीं है। **रूपक** अध्याय से असंबंधित और बाहरी विचारों को उभारना है,और जिसे वचन द्वारा सीधे सांकेतिक या सचित्र नहीं किया गया है। रूपक बनाते समय, उपदेशक आलंकारिक अर्थ और व्याख्या जोड़ता है जो लेखक का अभिप्राय नहीं है।

जबकि पवित्रशास्त्र के अध्याय को रूपक के रूप में प्रस्तुत करना और फिर भी धार्मिक रूप से सही रहना संभव है, किन्तु यह पवित्रशास्त्र की उचित व्याख्या नहीं है।

प्रायः, पवित्र शास्त्र केअध्याय को रूपक बनाने से गलत व्याख्याएँ और गलत विचार सामने आते हैं। रूपक बनाने से प्रायः **ईसेजेसिस** (अध्यय में वह पढ़ना जो वहाँ नहीं है, और इसके परिणाम स्वरुप पवित्र शास्त्र के वचन की गलत समझ पैदा होती है) और,यह एक **व्यक्तिपरक व्याख्या** (व्यक्तिगत अनुभव, प्रकाशन, विचार, राय या रुचियों को पवित्र शास्त्र में पढ़ना) बन जाती है।

गलत व्याख्याशास्त्र (हर्मेन्युटिक्स), सही धर्मशास्त्र

हालाँकि प्रायः उपदेश देते समय, उपदेशक रूपक द्वारा वचनों की गलत रीतियों से व्याख्या की जाती है, फिर भी सामने लाए गए विचार धर्मशास्त्रीय रूप से सही हो सकते हैं। ऐसी स्थितियों में, जब पवित्र शास्त्र के वचन को संभालने की यह सही रीति नहीं होती, फिर भी हम कुछ हद तक "सुरक्षित" हैं। फिर भी, जब रूपक असत्य और धर्मशास्त्रीय विषयांतर की ओर ले जाता है, तो लोग गलती कर सकते हैं और भटक सकते हैं। हमारा लक्ष्य यही होना चाहिये कि हम पवित्र शास्त्र के वचन की व्याख्या उसी प्रकार से करें जिस प्रकार से परमेश्वर चाहता है—हमें सही धर्मशास्त्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छे व्याख्याशास्त्र का उपयोग करना चाहिये, ताकि परमेश्वर की महिमा हो सके और लोगों को उनके विश्वास की यात्रा में शिक्षित किया जा सके।

रूपक के उदाहरण (इलस्ट्रेशन)—हमें वचनों के साथ क्या नहीं करना चाहिए

निम्नलिखित रूपक के कुछ उदाहरण हैं। ये उदाहरण के रूप में दिए गए हैं कि हमें क्या **<u>नहीं</u>** करना चाहिए। इन उदाहरणों के जैसे, शास्त्र वचन के किसी भी अंश का रूपक बनाते समय इसकी व्याख्या गलत रीति से की जा सकता है, और हमें ऐसा करने से बचना चाहिए।

अब्राहम, एलीएजेर, रिबका, इसहाक का रूपक चित्रण (उत्पत्ति 24)

अब्राहम ने अपने सेवक, संभवतः एलीएजेर (उत्पत्ति 15:2) को अपने देश वापस जाने और इसहाक के लिए दुल्हन खोजने का काम सौंपा। एलीएजेर ने रिबका को पाया और उसे इसहाक की पत्नी बनने के लिए लाया। हम निश्चित रूप से इस कहानी का उपयोग यह दर्शाने और समझने के लिए कर सकते हैं कि जब हम विश्वास में आगे बढ़ते हैं तो कैसे परमेश्वर हमें जीवन में मार्गदर्शन दे सकता है, परिस्थितियों को

व्यवस्थित कर सकता है और हमें अपने उद्देश्यों की ओर ले जा सकता है। अब्राहम के सेवक के शब्द वास्तव में विश्वास करने और आज्ञा मानने के लिए एक महान प्रोत्साहन हैं, *"यहोवा ने मुझ को ठीक मार्ग पर चलाकर..."* (उत्पत्ति 24:27)। यदपि, इस घटना को रूपक बनाना और उसे कुछ प्रतीकात्मक बनाना, अब्राहम को मसीह का एक प्रकार बनाना, एलीएजेर को पवित्र आत्मा का एक प्रकार बनाना, रिबका को चर्च का एक प्रकार बनाना, इसहाक को मसीह का एक प्रकार बनाना, पवित्रशास्त्र के वचन की गलत तरीके से व्याख्या करने जैसा होगा। जबकि सार धार्मिक रूप से सही है, अर्थात, पवित्र आत्मा वास्तव में चर्च को तैयार कर रहा है और उस दूल्हे के लिए दुल्हन बना रहा है जो मसीह है, इनमें से कोई भी उत्पत्ति 24 की कहानी में अभिप्रेत नहीं है, और न ही यह पवित्रशास्त्र में कहीं और कहा गया है। ये संबंध पूरी तरह से अच्छी कल्पना का काम होते हुए भी, यह वचनों की अनुचित व्याख्या है।

गोलियत के विरुद्ध जाते समय दाऊद के पाँच चिकने पत्थरों का रूपक

"तब उसने अपनी लाठी हाथ में ली, और नाले में से पाँच चिकने पत्थर छाँटकर अपनी चरवाही की थैली, अर्थात् अपने झोले में रखे; और अपना गोफन हाथ में लेकर पलिश्ती के निकट गया।" (1 शमूएल 17:40)।

दाऊद का गोलियत से लड़ने के लिए जाना साहस, परमेश्वर में विश्वास और परमेश्वर पर निर्भरता आदि के उदाहरण के **रूप** में उपयोग किया जा सकता है। इस कथा को एक उदाहरण के रूप में उपयोग करना और लोगों को प्रोत्साहित करना वचनों की उचित व्याख्या करना है। हमारे लिए यह इंगित करना कि दाऊद ने गोलियत से लड़ने के लिए अपनी लाठी, पाँच चिकने पत्थर और अपना गोफन लिया और लोगों को प्रोत्साहित किया कि वे अपने गोलियत पर विजय

पाने के लिए परमेश्वर द्वारा उन्हें जो कुछ भी दिया गया है उसका उपयोग करें, यह पूरी तरह से सही है। इस दृष्टिकोण में, हम आत्मिक सबक को उजागर करने के लिए एक ऐतिहासिक कहानी का उपयोग कर रहे हैं जिसका हम अनुसरण कर सकते हैं।

हालाँकि, यदि कोई उपदेशक कहता है कि पवित्र आत्मा ने उसे एक विशेष प्रकाशन दिया था कि दाऊद के पाँच चिकने पत्थरों में से प्रत्येक निम्नलिखित का प्रतिनिधित्व करता है: पहला पत्थर परमेश्वर का वचन है, दूसरा पत्थर यीशु का नाम है, तीसरा पत्थर यीशु का खून है, चौथा पत्थर पवित्र आत्मा है, और पाँचवाँ पत्थर विश्वास है; और प्रत्येक विश्वासी को अपने गोलियत से लड़ने के लिए इन पाँच पत्थरों को लेना चाहिए, तो यह **रूपक का एक सही उदाहरण** है। इस मामले में, जो कहा गया था उसका सार सही है, अर्थात, ये वास्तव में आत्मिक हथियार हैं जो परमेश्वर ने सभी विश्वासियों को दिए हैं। हालाँकि, यह पाठ का उचित संचालन नहीं है, क्योंकि a) यह 1 शमूएल 17:40 का **मूल उद्देश्य नहीं था** और b) हमारे पास पवित्रशास्त्र में कोई अन्य स्थान नहीं है जहाँ इस तरह की तुलना बताई गई हो, और c) कोई अन्य व्यक्ति पाँच पत्थरों में से प्रत्येक के लिए कुछ अलग नाम दे सकता है (उदाहरण के लिए, प्रत्येक पत्थर स्तुती, आराधना, उपासना, प्रार्थना, दान और उपवास का प्रतिनिधित्व करता है) और दावा करता है कि यह परमेश्वर से प्राप्त प्रकाशन है, और कोई और व्यक्ति दिव्य प्रकाशन का दावा कर सकता है और कुछ अन्य पदनाम दे सकता है (उदाहरण के लिए, प्रत्येक पत्थर प्रेरित, भविष्यवक्ता, पासवान, शिक्षक और प्रचारक जैसे पाँच प्रकार की सेवकाई में से एक का प्रतिनिधित्व करता है)। यह निर्धारित करने का कोई तरीका नहीं है कि इनमें से कौन सा "निजी प्रकाशन" सही है। वास्तव में, इनमें से कोई भी सही नहीं है, क्योंकि उन्हें पवित्रशास्त्र में ऐसा कहीं भी नहीं कहा गया है।

दाऊद और उसके शक्तिशाली लोगों का रूपक बनाना

दाऊद ने गोलियत को मार डाला। उसके शक्तिशाली लोगों में से एक, एल्हानान ने गोलियत के भाई को मार डाला (2 शमूएल 21:19; 1 इतिहास 20:5)। दाऊद यीशु का प्रतिनिधित्व करता है जिसने शैतान को हराया। एल्हानान और दाऊद के शक्तिशाली लोग चर्च का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसे गोलियत के भाई (दानवों) को हराना होगा। यह रूपक बनाना है और पवित्रशास्त्र के वचन का अनुचित उपयोग है क्योंकि पात्रों को एक काल्पनिक अर्थ दिया गया है जो लेखक का अभिप्राय नहीं था, न ही यह पवित्रशास्त्र में कहीं और प्रमाणित किया गया है।

विधवा, उसके तेल के बर्तन और चमत्कार का रूपक (2 राजाओं 4:1-7)

परमेश्वर द्वारा भविष्यवक्ता एलीशा के द्वारा एक विधवा का कर्ज चुकाने, उसकी और उसके दो बेटों की देखभाल करने के लिए चमत्कार करना, हमारे लिए एक अद्भुत अभिलेख है, जिससे हम विश्वास कर सकें कि परमेश्वर हमारे समय में भी इसी प्रकार के वित्तीय चमत्कार कर सकता है। परमेश्वर द्वारा भविष्यवक्ता एलीशा के माध्यम से विधवा का ऋण चुकाने, उसे और उसके दो बेटों की देखभाल करने के लिए चमत्कार करना, हमारे लिए एक अद्भुत रिकॉर्ड है, जिससे हम यह विश्वास कर सकते हैं कि परमेश्वर हमारे समय में भी इसी तरह के वित्तीय चमत्कार कर सकता है। हमारा परमेश्वर अब भी वही परमेश्वर है जो ऋण माफी और प्रावधान के चमत्कार करता है। इस कहानी को उसी रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए, जैसा कि यह बताता है, और इससे प्रेरणा और प्रोत्साहन प्राप्त किया जा सकता है जो आज परमेश्वर के लोगों के दिलों में इसी तरह के चमत्कारों पर विश्वास करने के लिए प्रेरित करता है। हालाँकि, प्रत्येक पात्र को आलंकारिक अर्थ देना, उदाहरण के लिए, विधवा चर्च का प्रतिनिधित्व करती है, तेल का

बर्तन पवित्र आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है, घर हमारी प्रार्थना कोठरी का प्रतिनिधित्व करता है, बर्तन अन्य लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनमें हम आत्मा का तेल उंडेलते आदि। यह इस पाठ का रूपक बनाने और अनुचित तरीके से इस्तेमाल करने का एक उदाहरण है।

अच्छे सामरी के दृष्टांत का रूपक (लूका 10:25-37)

अच्छे सामरी का दृष्टांत यह दर्शाने के लिए दिया गया था कि हमें अपने सामाजिक, सांस्कृतिक, जातीय और अन्य मतभेदों की चिंता किए बिना लोगों की देखभाल कैसे करनी चाहिए। हालाँकि, मान लें कि हम इस दृष्टांत में अलग-अलग पात्रों को आलंकारिक अर्थ देते हैं, इसे इस प्रकार से रूपक बना सकते हैं:

- जिस व्यक्ति को पीटा गया और लूटा गया वह पापियों का प्रतिनिधित्व करता है,
- चोर शैतान का प्रतिनिधित्व करते हैं,
- अच्छा सामरी विश्वासी का प्रतिनिधित्व करता है,
- मलहमपट्टी परमेश्वर के वचन का एक प्रकार है,
- तेल और दाखरस पवित्र आत्मा और प्रभु की मेज का एक प्रकार है,
- गधा मसीही सेवकाई का एक प्रकार है,
- सराय स्थानीय चर्च का एक प्रकार है,
- जो पैसा चढ़ाया गया वह दशमांश है और
- चढ़ावा स्थानीय चर्च को दिए गए विश्वासियों का प्रतिनिधित्व करता है।

हालांकि यह एक अच्छा उपदेश हो सकता है, और खूब तालियाँ बज सकती हैं, और कुछ मंडलियों में, इसे गहरे “प्रकाशन ” के रूप

में भी देखा जा सकता है, किन्तु यह बेतुका है! इस तरह का रूपक शास्त्र के वचन का गलत उपयोग है, जो कि वक्ता (प्रभु यीशु) का आशय नहीं था।

दृष्टांतों के रूप में पवित्रशास्त्र की कहानियों का उपयोग करना

बाइबल की कहानियों को दृष्टांतों के रूप में उपयोग करते समय, उन्हें रूपक के रूप में प्रस्तुत किए बिना, यहाँ कुछ दिशा-निर्देश दिए गए हैं जो हमें पवित्रशास्त्र के पाठ की अखंडता का सम्मान करने में मदद करते हैं, साथ ही ऐसी अंतर्दृष्टि लाते हैं जो आज के संदर्भ में लोगों को प्रेरित करती हैं।

1) मूल ऐतिहासिक विवरण के प्रति सचेत रहें।

याद रखें कि बाइबल की कहानियाँ वास्तविक घटनाओं का वर्णन करती हैं जो परमेश्वर के चरित्र और लोगों के साथ उसके व्यवहार को प्रकट करती हैं। लोग, उनके समय और संस्कृति को समझें ताकि उचित प्रकार से समझ सकें कि क्या हुआ था।

2) आत्मिक शिक्षा, अंतर्दृष्टि और सिद्धांतों पर ध्यान दें।

प्रत्येक कथा हमें परमेश्वर के बारे में, वह कौन है, उसकी रीतियां, लोगों के रूप में अपने बारे में, और हम परमेश्वर के साथ कैसे चल सकते हैं, के बारे में सिखा सकती है। इन अंतर्दृष्टियों को बाहर निकालने पर ध्यान दें जो समय, संस्कृति और लोगों से परे हैं, और उन्हें आधुनिक समय के संदर्भ में लागू करें।

3) लंबी कहानियों को छोटे-छोटे खंडों में विभाजित करें।

कभी-कभी लंबी कहानी को छोटे-छोटे हिस्सों में देखना और मुख्य अंतर्दृष्टि को सामने लाना परमेश्वर के व्यापक रीतियों और कामकाज को समझने में मदद करता है। यह इन सिद्धांतों को प्रासंगिक बनाने

में भी मदद करता है और उन्हें सरल और साधारण रीतियों से प्रस्तुत करता है जिन्हें याद रखा जा सकता है।

4) रूपक व्याख्याओं से बचें।

हमें आधुनिक अवधारणाओं के लिए पात्रों या घटनाओं की व्याख्या करने से बचना चाहिए जब तक कि पवित्रशास्त्र में स्पष्ट रूप से न कहा गया हो। ऐसे संबंध, आलंकारिक अर्थ आदि न जोड़ें जो मूल पाठ में अभिप्रेत न हों या पवित्रशास्त्र में कहे और बताए न गए हों।

5) परमेश्वर के बारे में अधिक जानने पर ध्यान दें।

पवित्रशास्त्र के अध्ययन में हमारा लक्ष्य परमेश्वर के बारे में और अधिक जानना है और वह कैसे चाहता है कि हम उसका अनुसरण करें। इन अंतर्दृष्टियों और व्यावहारिक सिद्धांतों को प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करें।

समझें कि कब कोई चीज़ प्रतीकात्मक है और कब नहीं

हम जानते हैं कि "तेल" पवित्र आत्मा का प्रतीक है। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि जब भी बाइबल में "तेल" शब्द का प्रयोग किया जाता है, तो यह पवित्र आत्मा का प्रतिनिधित्व करता है। "तेल" का उपयोग खाना पकाने, भेंट चढ़ाने, जलाने, अभिषेक करने और प्रतीकात्मक रूप से शक्ति, दया, हर्ष आदि के प्रतीक के रूप में भी किया जाता है।

"आग" का उपयोग खाना पकाने, बलिदान चढ़ाने, भूसा जलाने आदि के लिए किया जाता है, या कई अलग-अलग वस्तुओं के प्रतीक के रूप में किया जाता है, जैसे पवित्र आत्मा, परमेश्वर का शुद्धिकरण कार्य, परमेश्वर का न्याय, परमेश्वर द्वारा बलिदान की स्वीकृति, परमेश्वर की उपस्थिति, परमेश्वर के लिए हमारा बलिदान, आदि।

हमने जो व्याख्यात्मक सिद्धांत सीखे हैं, उन्हें लागू करें, ताकि यह

निर्धारित किया जा सके कि कोई चीज़ प्रतीकात्मक है या वास्तविक।

यहाँ कुछ दिशा-निर्देश दिए गए हैं, जो हमें यह निर्धारित करने में सहायता करेंगे कि कोई वस्तु कब प्रतीकात्मक है और कब शाब्दिक है।

1) प्रासंगिक विश्लेषण

संदर्भ को समझें। ऐतिहासिक कहानियों को वास्तविक रूप से लिया जाना चाहिए और उन्हें रूपक के बिना चित्रण के रूप में उपयोग में लाया जा सकता है।

2) साहित्यिक भाषा शैली को पहचानें

बाइबल के अंदर विभिन्न साहित्यिक शैलियाँ (कविता, कहानी, भविष्यवाणी, पत्र) और भाषा का उपयोग भिन्न भिन्न रूप से करती हैं। उदाहरण के लिए, भजन संहिता की काव्यात्मक भाषा प्रायः रूपकों और उपमाओं का उपयोग करती है (उदाहरण के लिए, भजन संहिता 23:1 *"प्रभु मेरा चरवाहा है"*), जो एक प्रतीकात्मक व्याख्या को दर्शाता है। इसके विपरीत, यीशु के चमत्कारों के वृत्तांत जैसी ऐतिहासिक कथाओं को वास्तविक रूप से लिया जाता है।

3) भाषा तकनीक (युक्तियों) को पहचानें

उपयोग की जा रही भाषा की युक्तियों को पहचानें। उदाहरण के लिए, यीशु के दृष्टांतों को पढ़ते समय, हम समझते हैं कि ये दृष्टांत सत्य के साथ हैं, और हम दृष्टांतों की सही व्याख्या करने के लिए दिशानिर्देशों का पालन करते हैं।

4) शेष पवित्रशास्त्र के साथ सुसंगत और सहमत रहें

वचनों को पवित्रशास्त्र की व्याख्या करनी चाहिए। अर्थ और व्याख्याओं के साथ बने रहें जिससे पवित्रशास्त्र के अन्य भागों के साथ समर्थन

किया जा सके। प्रायः, प्रतीकात्मक या आलंकारिक तत्वों की व्याख्या पवित्रशास्त्र में अन्य स्थानों पर की जाती है। उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य 1:20 बताता है कि सात सितारे सात चर्चों के स्वर्गदूतों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो अध्याय में पहले एक प्रतीकात्मक संदर्भ पर स्पष्टता प्रदान करते हैं।

5) दोहरे अर्थ को पहचानें

कुछ ऐसे समय भी होते हैं जब पवित्रशास्त्र का पाठ प्रतीकात्मक / आलंकारिक भाषा का उपयोग करता है लेकिन इसकी वास्तविक पूर्ति होती है। इसका एक उदाहरण यहेजकेल 37:1-14 (सूखी हड्डियों की घाटी) में होगा; जबकि यह एक ऐसे दर्शन का वर्णन करता है जिसमें प्रतीकात्मक तत्व (सूखी हड्डियाँ जो इस्राएल की निराशा को दर्शाती हैं) शामिल हैं, यह इस्राएल के लिए पुनर्स्थापना का एक वास्तविक वचन भी व्यक्त करता है।

व्याख्या, रूपक और प्रकार और छाया के उदाहरण

पिछले अध्यायों में हमने प्रकार और छाया, व्याख्या और रूपक के बीच अंतर को समझाया है।

आइये हम इनमें अंतर को समझने में सहायता के लिए इन उदाहरणों के एक और सेट पर विचार करें।

उत्पत्ति 3:7
तब उन दोनों की आँखें खुल गईं, और उनको मालूम हुआ कि वे नंगे हैं; इसलिए उन्होंने अंजीर के पत्ते जोड़ जोड़ कर लंगोट बना लिये।

उत्पत्ति 3:21
और यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिये चमड़े के अँगरखे बनाकर उनको पहिना दिए।

गिनती 21:8,9
[8]यहोवा ने मूसा से कहा, "एक तेज विषवाले साँप की प्रतिमा बनवाकर खम्भे पर लटका; तब जो साँप से डसा हुआ उसको देख ले वह जीवित बचेगा।"
[9]अत: मूसा ने पीतल का एक साँप बनवाकर खम्भे पर लटकाया; तब साँप के डसे हुओं में से जिस जिस ने उस पीतल के साँप की ओर देखा वह जीवित बच गया।

यूहन्ना 3:14,15
[14]और जिस रीति से मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए;
[15]ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाए।

जब आदम और हव्वा ने पाप किया, तो उन्होंने अंजीर के पत्तों का लंगोट बनाया। बाद में, परमेश्वर ने उन्हें चमड़े के अंगरखे लाकर पहनाए, जो यह संकेत देते थे कि पाप को ढकने के लिए जानवरों को मारना पड़ता है, और उनका खून बहाना पड़ता है। नया नियम इन विशिष्ट घटनाओं का उल्लेख नहीं करता।

प्रकार और छाया नहीं: इसलिए, उत्पत्ति 3:7,21 की घटनाएँ "प्रकार और छाया" होने की आवश्यकता को पूरा नहीं करती हैं क्योंकि नया नियम स्पष्ट रूप से उनकी ओर संकेत नहीं करता है।

व्याखाया करना: उत्पत्ति 3:7,21 की घटनाओं का उपयोग उपदेश और शिक्षा में एक उदाहरण के रूप में किया जा सकता है कि हम अपने मानवीय प्रयासों के माध्यम से अपने पाप को कैसे ढकने का प्रयास करते हैं, लेकिन केवल वही पाप को ढक सकता है जो परमेश्वर के रक्त के बहाने के द्वारा प्रदान किया गया है। यह मूल संदर्भ के अनुरूप है और बाइबल के बाकी हिस्सों की शिक्षा के अनुरूप है।

रूपक: यदि कोई कहता है कि अंजीर के पत्ते इज़राइल राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हैं और इसलिए, पुरानी वाचा, और चमड़े के अंगरखे

चर्च और नई वाचा का प्रतिनिधित्व करते हैं, तो यह रूपक होगा और घटना को ऐसे अर्थ दिए जाएँगे जो मूल संदर्भ के अनुरूप नहीं हैं, और पवित्रशास्त्र में कहीं और इसको समर्थन नहीं दिया गया है।

प्रकार और छाया: मूसा द्वारा पीतल के साँप को ऊंचा उठाये जाने की घटना एक प्रकार और छाया है। इस मामले में, नए नियम में, प्रभु यीशु स्वयं इसका उल्लेख करते हैं जिसका अर्थ चंगाई और उद्धार के मूल संदर्भ के अनुरूप है, और इस घटना को क्रूस पर उनके कार्य की ओर इंगित करता है और अधिक प्रकाश डालता है।

17
असंबंधित वाक्यांशों को जोड़ने से बचें

वचन की व्याख्या उसके संदर्भ में करें। शब्दों या वाक्यांशों को उनके संदर्भ से बाहर न निकालें और उन्हें आपस में न जोड़ें या असंबद्ध पाठों का प्रति सन्दर्भ लेकर धार्मिक निष्कर्ष और कथनों पर न पहुँचें। अक्सर, ये गलत व्याख्या और गलत शिक्षा की ओर ले जाते हैं।

यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैं कि हमें क्या **नहीं करना चाहिए।**

परमेश्वर का सामर्थ

व्यवस्थाविवरण 8:18 परमेश्वर हमें धन कमाने की शक्ति देता है।

रोमियों 1:16 सुसमाचार में परमेश्वर की शक्ति या सामर्थ है।

गलत कथन: परमेश्वर ने हमें धन कमाने के लिए सुसमाचार दिया है।

गुजरना या पार करना

निर्गमन 12:13,24 परमेश्वर मिस्र में अपने लोगों के घरों के द्वार से गुजर कर गया जब उनकी रक्षा के लिए लहू लगाया गया था।

रोमियों 3:25 अपनी सहनशीलता के कारण परमेश्वर ने उन पापों पर ध्यान नहीं दिया।

गलत कथन: मिस्र में, परमेश्वर वास्तव में लोगों के पापों पर ध्यान नहीं दे रहा था ताकि वे नाश होने से बच जाएं।

जल द्वारा जन्मा

यूहन्ना 3:5 परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के लिए आपको जल और पवित्र आत्मा से जन्म लेना जरूरी है।

मरकुस 16:16 आपको विश्वास करना चाहिए और जल में बपतिस्मा लेना चाहिए।

गलत कथन: आपको दोबारा (नया जन्म) जन्म लेने और बचाए जाने के लिए पानी में बपतिस्मा लेना चाहिए।

विश्वास एक सेवक है

लूका 17:5,6 यीशु ने विश्वास और इसका उपयोग करने की रीतियों के बारे में बात की।

लूका 17:7-10 यीशु ने उस सेवक के बारे में बात की जो उसके द्वारा सौंपा गया काम करता है।

गलत कथन: विश्वास हमारा सेवक है जो बाहर जाता है और वही करता है जो हम उससे करवाना चाहते हैं।

परमेश्वर की सात आत्माएँ

प्रकाशितवाक्य 1:4; प्रकाशितवाक्य 3:1; प्रकाशितवाक्य 4:5; प्रकाशितवाक्य 5:6 परमेश्वर की सात आत्माओं का उल्लेख करता है

यशायाह 11:2 में सात आत्माओं का उल्लेख है जो (1) यहोवा की आत्मा, (2) बुद्धि की आत्मा, (3) समझ की आत्मा, (4) परामर्श की आत्मा, (5) शक्ति की आत्मा, (6) ज्ञान की आत्मा और (7) यहोवा के भय की आत्मा हैं।

गलत कथन: पवित्र आत्मा सात भिन्न भिन्न आत्माओं से बनी है। सात आत्माएँ हैं जो मिलकर पवित्र आत्मा बनाती हैं।

परमेश्वर की लाठी

निर्गमन 4:20; निर्गमन 17:9 मूसा की लाठी को परमेश्वर की लाठी कहा जाता था।

यशायाह 11:1,4; प्रकाशितवाक्य 12:5; प्रकाशितवाक्य 19:15 यीशु यिशै के ठूँठ में से निकली एक डाली है जो अपने मुँह की लाठी

से पृथ्वी पर प्रहार करेगा। यीशु लोहे का राज दंड लिए सब जातियों पर राज करेगा।

<u>गलत कथन:</u> मूसा की लाठी मसीह का प्रतीक थी।

शब्दों और वाक्यांशों को जोड़ने और पवित्रशास्त्र के ग्रंथों को क्रॉस-रेफ़रेंस करते समय दिशा-निर्देश

शब्दों और वाक्यांशों को जोड़ने और पवित्रशास्त्र के वचनों को प्रति सन्दर्भ करते समय, व्याख्या से सम्बन्धित सिद्धांतों का पालन करना आवश्यक है जो बाइबल के वचनों की सटीक व्याख्या और अनुप्रयोग सुनिश्चित करते हैं।

शब्दों और वाक्यांशों को जोड़ने और क्रॉस-रिफ्रेंस जानने के लिए यहां कुछ प्रमुख दिशानिर्देश दिए गए हैं।

1) संदर्भ को समझें

क्रॉस-रेफ़रेंस प्रति निर्देश करते समय, दोनों अंशों के संदर्भ को समझना महत्वपूर्ण है। एक ही शब्द या वाक्यांश को उसके उपयोग के संदर्भ के आधार पर अलग-अलग रीतियों से लागू किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि हम क्रूस के बारे में अध्ययन कर रहे हैं, तो याद रखें कि इसका उपयोग विभिन्न संदर्भों में किया जाता है। जब क्रूस पर यीशु द्वारा उद्धार के कार्य का उल्लेख किया जाता है, और वह क्रूस जिसे एक शिष्य को प्रतिदिन यीशु का अनुसरण करने के लिए उठाने के लिए कहा जाता है।

यीशु द्वारा दिए गए इस कथन पर विचार करें। यह वही कथन है किन्तु दो भिन्न संदर्भों में दिया गया है।

- प्रकाशित वाक्य से संबंधित संदर्भ

मत्ती 13:12
क्योंकि जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा और उसके पास बहुत कुछ होगा; परंतु जिसके पास नहीं है, उससे जो उसके पास है, वह भी छीन लिया जाएगा।

- भण्डारीपन और फलदायी (सम्पन्न) होने से संबंधित संदर्भ

मत्ती 25:29
क्योंकि जिसके पास है, उसे और दिया जाएगा और उसके पास बहुत कुछ होगा; परंतु जिसके पास नहीं है, उससे जो उसके पास है, वह भी छीन लिया जाएगा।

इसलिए, हमें दिए गए संदर्भ के अंतर्गत कथन की व्याख्या करनी होगी। हम यह भी समझते हैं कि राज्य का सिद्धांत वही रहता है। परमेश्वर उन लोगों को प्रतिफल देता है जो अपने पास जो कुछ है उसमें विश्वासयोग्य और फलदायी हैं, चाहे वह राज्य के प्रकाशन के संदर्भ में हो या राज्य की "प्रतिभाओं" (संसाधन, वरदान, उत्तरदायित्व आदि) को सौंपे जाने के संदर्भ में।

2) विषयों को समझिए

संबंधित अंशों को क्रॉस-रेफ़रेंस (प्रतिनिर्देशवचन) करने से उस है विषय पर गहरी अंतर्दृष्टि मिल सकती है जिसका अध्ययन किया जा रहा है। उदाहरण के लिए, भजनकार कहता है, "प्रभु मेरा चरवाहा है।" नए नियम में, यीशु ने कहा "अच्छा चरवाहा मैं हूँ"। यहाँ विषय वही हैं—कि परमेश्वर हमारा चरवाहा है।

3) प्रगतिशील प्रकटीकरण या प्रकाशन को पहचानिए।

पहचानें कि परमेश्वर का प्रकाशन समय के साथ प्रकट होता है। बाद के ग्रंथों में और बाद के प्रकाशन के प्रकाश में प्रयोग किया गया एक ही शब्द या वाक्यांश समझ को बढ़ा सकता है। पुराने नियम में तम्बू में अनुग्रह के सिंहासन का उपयोग किया गया है। रोमियों 4 में मसीह को

हमारे अनुग्रह के सिंहासन के रूप में संदर्भित किया गया है। रोमियों में, यीशु मसीह के माध्यम से प्रायश्चित और मुक्ति की समझ में वृद्धि हुई है।

4) वचनों के वास्तविक उपयोग

वचनों का स्पष्ट अर्थ लिया जाना चाहिए जब तक कि स्पष्ट संकेत न हो कि यह एक आलंकारिक या प्रतीकात्मक व्याख्या का आशय है। एक अध्याय में शब्द या वाक्यांश का वास्तविक उपयोग करना और दूसरे भाग में इसे आलंकारिक रूप से उपयोग करना त्रुटि का कारण बन सकता है।

5) आलंकारिक भाषा के साथ काम करते समय, व्याख्या के साथ सुसंगत रहिए

उदाहरण के लिए, यदि हम परमेश्वर के संदर्भ में प्रयुक्त शब्द "प्रकाश" का क्रॉस-रेफरेंस (प्रतिनिर्देश वचन) लें और कुछ वचनों पर विचार करें जैसे कि भजन संहिता 27:1, *"यहोवा परमेश्वर मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है;"* यूहन्ना 8:12, जहाँ यीशु ने कहा है, *"जगत की ज्योति मैं हूँ;"* और याकूब 1:17, *"...और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।"* यह तब तक सही है जब तक हम रूपक "ज्योति" की व्याख्या "सत्य, प्रकाशन, मार्गदर्शन, अंधकार की अनुपस्थिति और अंधकार को दूर करने" के रूप में निरंतर करते हैं। यदि हम इसमें प्रकाशितवाक्य 22:5 जोड़ते हैं, जिसमें कहा गया है *"फिर रात न होगी, और उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले की अवश्यकता न होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा"*, तो हमें यहाँ ध्यान देना चाहिए कि "ज्योति" का प्रयोग वास्तविक अर्थ में किया गया है, न कि आलंकारिक रूप से। यदि हम इस कथन पर पहुँचते हैं कि *'मुझे दीपक या सूर्य के उजियाले की आवश्यकता नहीं है क्योंकि प्रभु मुझे*

उजियाला देते हैं', और अंधेरे में घूमते हैं, तो यह एक बेतुका कथन होगा, भले ही हमने उन वचनों का संदर्भ लिया हो जो परमेश्वर को हमारा उजियाला बताते हैं।

6) बाकी अन्य वचनों के साथ सुसंगत रहिए

जब पवित्र शस्त्र के अध्यायों के में शब्दों और वाक्यांशों का संदर्भ देते हुए और उन्हें जोड़ते हुए, आप जो समझ और अर्थ प्राप्त करते हैं, उसमें बाकी अन्य वचनों के साथ सुसंगत रहें।

7) प्रति निर्देश सम्बन्ध को जबरदस्ती थोपने से बचें।

ऐसे वचनों या वचनों के व्याख्यान के बीच जबरदस्ती कोई सम्बन्ध न जोड़ें जो संदर्भ या विषयगत रूप से संबंधित न हों।

18
शब्दावली और वाक्यांशों के उपयोग को समझना

पवित्र शास्त्र में, हमें कुछ ऐसे शब्द, वचन या वाक्यांश मिलते हैं जिन्हे कभी-कभी लेखक द्वारा बार-बार दोहराया जाता है। शब्द या वाक्यांश और उसके उपयोग की विभिन्न रीतियों को समझना, हमें पवित्र शास्त्र के अध्ययन में की अपनी समझ और व्याख्या में एकरूप रहने में सहायक होता है, विशेषतः जब एक ही लेखक हो। यह भविष्यवक्ताओं या पत्रियों के अध्ययन में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

आइये हम कुछ उदाहरण देखें।

"प्रभु से पूछना, प्रभु से पूछा"

इस वाक्यांश को पुराने नियम में कई बार उपयोग में लाया गया है जो हमें सिखाता है कि लोग कठिन समय और परिस्थितियों में उत्तर, दिशा-निर्देश और परामर्श के लिए परमेश्वर की ओर देखते हैं। रिबका अपने गर्भ में पल रहे बच्चों के बारे में प्रभु से पूछने गई और परमेश्वर ने उसे जन्म लेने वाले जुड़वाँ बच्चों के द्वारा अपनी योजनाओं के बारे में बताया (उत्पत्ति 25:22,23)। इसके पश्चयात, अगुओं और कभी-कभी लोगों ने ऊरीम और तुम्मीम (गिनती 27:21; न्यायियों 20:18,27) का उपयोग करके याजकों के द्वारा पूछताछ की। और फिर लोगों और राजाओं ने भविष्यवक्ताओं के द्वारा प्रभु से पूछना आरंभ किया (1 शमूएल 9:6,9; 1 राजाओं 22:5-8)। राजा दाऊद को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है जो अपने द्वारा लिए जाने वाले प्रत्येक निर्णयों में प्रायः प्रभु से पूछता था (1 शमूएल 10:22;

1 शमूएल 22:10; 1 शमूएल 23:2,4; 1 शमूएल 28:6; 1 शमूएल 30:8; 2 शमूएल 2:1; 2 शमूएल 5:19,23; 2 शमूएल 21:1; 1 इतिहास 14:10)। परमेश्वर की खोज और पूछताछ करना उसका जुनून प्रतीत होता था (भजन संहिता 27:4)। हम पुराने नियम में परमेश्वर से पूछने, उससे सुनने की प्रतीक्षा करने और उसके निर्देशों का पालन करने के बारे में इन उदाहरणों से बहुत कुछ सीख सकते हैं। जब हम नए नियम में प्रवेश करते हैं, तो हमारे पास वह अद्भुत विशेषाधिकार है जहाँ प्रत्येक विश्वासी परमेश्वर की आत्मा और परमेश्वर के वचन द्वारा हमारा मार्गदर्शन होता है।

"प्रभु को धन्य कहो"

पुराने नियम में इसे कई बार उपयोग में लाया गया है, विशेषतः भजन संहिता में, जो हमें प्रभु की स्तुति, आराधना, सम्मान और महिमा करने और उन्हें महिमा देने का निर्देश देता है।

"इस्राएल का पवित्र"

पुराने नियम में यह लगभग 31 बार मिलता है, जिनमें से 25 बार यशायाह की पुस्तक में हैं। भविष्यवक्ता यशायाह को परमेश्वर की पवित्रता का व्यक्तिगत प्रकाशन और रोमांच प्राप्त होता है, जो यशायाह 6 में उनके स्वयं के आह्वान और आदेश से आरंभ होता है। वह प्रायः इसका उपयोग यह दिखाने के लिए करता है कि जो बोल रहा है वह पवित्र है और उसे अद्भुत विस्मय और श्रद्धा से देखा जाना चाहिए।

"सिय्योन की पुत्री, सिय्योन की पुत्रियाँ"

वाक्यांश "सिय्योन की पुत्री" (या "सिय्योन की पुत्रियाँ") अधिकांशतः पुराने नियम में दिखाई देता है और संदर्भ के आधार पर इसका वास्तविक और रूपक दोनों अर्थ होता है।

अपने वास्तविक अर्थ में, "सिय्योन" शब्द यरूशलेम नगर या,

अधिक व्यापक रूप से, इस्राएल राष्ट्र को संदर्भित करता है। "सिय्योन की बेटी" यरूशलेम के निवासियों या पूरे इस्राएल के लोगों को संदर्भित करने की एक काव्यात्मक या मानवीकृत रीति है। यह परमेश्वर और उसके चुने हुए लोगों के बीच वाचा के संबंध को दर्शाती है, प्रायः उन्हें उसकी देखभाल में एक पुत्री के रूप में चित्रित करता है।

एक रूपक अर्थ में, यह वाक्यांश प्रतीकात्मकता से परिपूर्ण है और संदर्भ के आधार पर विभिन्न विचारों को व्यक्त करता है—अपने लोगों के साथ परमेश्वर का कोमल संबंध जहाँ एक पिता अपनी पुत्री की रक्षा और उसे अनुशासित करता है, परमेश्वर यरूशलेम और अपने लोगों के लिए अपनी चिंता या परवाह व्यक्त करता है (जकर्याह 2:10)। कभी-कभी, वह उनके अधर्म और पापों को दूर करने के लिए फटकारता है और न्याय की चेतावनी देता है (यशायाह 1:21)। यह सदा एक आशा और पुनर्स्थापना के वचन के साथ किया जाता है (जकर्याह 9:9)।

जब बहुवचन में उपयोग किया जाता है, तो "सिय्योन की पुत्रियाँ" यरूशलेम या इज़राइल की स्त्रियों के सम्पूर्ण समूह को संदर्भित करती हैं और कभी-कभी,इसमें चेतावनी या शोक का स्वर होता है (यशायाह 3:16,17; विलापगीत 2:19)।

"प्रभु का हाथ"

यह वाक्यांश पुराने नियम में लगभग 35 बार, यशायाह में लगभग **छः बार** और यहेजकेल में **सात बार** और नए नियम में **तीन बार** मिलता है। वाक्यांश "प्रभु का हाथ" का उपयोग विभिन्न स्थितियों में परमेश्वर के कार्यों को दर्शाने के लिए किया जाता है और इसका उपयोग परमेश्वर की शक्ति और पराक्रम, परमेश्वर की उपस्थिति, परमेश्वर के निर्णय, परमेश्वर की आशीष और परमेश्वर के मार्गदर्शन को संदर्भित करने के लिए किया जाता है।

- परमेश्वर की शक्ति सामर्थ और अधिकार (यहोशू 4:24; भजन संहिता 118:15,16; यशायाह 19:16; यशायाह 25:10; यशायाह 41:20; यशायाह 62:3; यशायाह 66:14)।
- परमेश्वर की उपस्थिति, सशक्तीकरण और अभिषेक (1 राजाओं 18:46; 2 राजाओं 3:15; यहेजकेल 1:3; यहेजकेल 3:14,22; यहेजकेल 8:1; यहेजकेल 33:22; यहेजकेल 37:1; यहेजकेल 40:1; लूका 1:66; प्रेरितों के काम 11:21; प्रेरितों के काम 13:11)।
- परमेश्वर का न्याय और अनुशासन (निर्गमन 9:3; निर्गमन 16:3; व्यवस्थाविवरण 2:15; यहोशू 22:31; न्यायियों 2:15; रूत 1:13; 1 शमूएल 5:6,9; 1 शमूएल 7:13; 1 शमूएल 12:15; 2 शमूएल 24:14; 1 इतिहास 21:13; अय्यूब 12:9; भजन संहिता 75:8; यशायाह 51:17)।
- परमेश्वर की आशीष और अनुग्रह (एज्रा 7:6,28; नहेम्याह 2:18)।
- परमेश्वर का मार्गदर्शन (नीतिवचन 21:1)।

"मसीह में, उसमें, जिसमें, उसके द्वारा”

प्रेरित पौलुस की पत्रियों में कुछ ऐसे वाक्यांश हैं जो हमारे सामने प्रस्तुत कुछ प्रमुख प्रकाशनों को दर्शाते हैं। हम यहाँ इनमें से कुछ का उल्लेख कर रहे हैं। “मसीह में” शब्द और संबंधित शब्दों का उपयोग प्रेरित पौलुस द्वारा नए नियम में मुख्य प्रकाशनों के उजागरण में से एक के बारे मे बताता है। जिन वचनों में इन तत्वों के समावेश होता है, वे हमें मसीह में हमारी पहचान और जीवन के बारे में बताते हैं।

“अनुग्रह और शांति”

प्रेरित पौलुस द्वारा अपनी पत्रियों में किया जाने वाला एक सामान्य आरंभिक अभिवादन उसके श्रोताओं के लिए परमेश्वर के अनुग्रह और परमेश्वर की शांति की घोषणा करता है।

“रहस्य / रहस्यों”

“रहस्य” और “रहस्यों” शब्दों की 27 घटनाओं में से, ये 20 बार प्रेरित पौलुस के लेखन में आते हैं। “रहस्य” और “रहस्यों” (यूनानी शब्द *‘मिस्टीरियन’* से) शब्द आत्मिक सत्य को संदर्भित करते हैं जो पहले छिपे हुए थे परंतु अब परमेश्वर द्वारा प्रकट किए गए हैं।

यहाँ कुछ दृष्टिकोण दिए गए हैं जिनका पौलुस ने अपनी पत्रियों में “रहस्य” या “रहस्यों” शब्दों के माध्यम से उल्लेख किया है।

- पहले से छिपी हुई सच्चाइयों का अनावरण अब प्रेरितों और उनकी शिक्षाओं के माध्यम से ज्ञात हुआ (इफिसियों 3:3-5; रोमियों 16:25,26)।
- मसीह के बारे में रहस्य और उसके द्वारा उद्धार की परमेश्वर की शानदार योजना (कुलुस्सियों 1:26,27)।
- मानव जाति के लिए परमेश्वर की योजना और उद्देश्य (इफिसियों 1:9; इफिसियों 3:1-11)।
- कलीसिया एक रहस्य है जिसका अब अनावरण हो चुका है जिसके माध्यम से स्वर्गदूत भी सीख रहे हैं (इफिसियों 3:1-11)।
- अधर्म का भेद, मसीह विरोधी का आना (2 थिस्सलुनीकियों 2:7)।
- पवित्र आत्मा द्वारा सक्षम अन्यभाषा में प्रार्थना करते समय भेदों को प्रकट करना (1 कुरिन्थियों 14:2)।

"प्रथम फल"

पोलुस, याकूब और यूहन्ना द्वारा उपयोग किया गया, शब्द *"प्रथम फल"* का उपयोग नए नियम में **सात बार** किया गया है। इसका उपयोग उन लोगों के पहले समूह को संदर्भित करने के लिए किया जाता है जिन्होंने विश्वास किया है (रोमियों 8:23; रोमियों 16:5; 1 कुरिन्थियों 16:15; याकूब 1:18)। इसका उपयोग मसीह को संदर्भित करने के लिए भी

किया जाता है जो मृतकों में से सबसे पहले जी उठा है और फिर कभी नहीं मरेगा (1 कुरिन्थियों 15:20,23) और 144,000 यहूदियों को क्लेश से पुनर्जीवित होने वाले पहले व्यक्तियों के रूप में संदर्भित किया जाता है (प्रकाशितवाक्य 14:4)।

"आत्मा में प्रार्थना करना"

1 कुरिन्थियों 14 में *"आत्मा में प्रार्थना करें"* वाक्यांश के उपयोग पर विचार करते समय, यह स्पष्ट है कि जब पौलुस बाद में इफिसियों में "आत्मा में प्रार्थना करना" वाक्यांश का उपयोग करता है, तो वह अन्यभाषा में बोलने या अन्यभाषा में प्रार्थना करने का उल्लेख कर रहा है। यह यहूदा द्वारा लिखे गए पत्र में *"पवित्र आत्मा में प्रार्थना करना"* वाक्यांश के बारे में भी सच है।

1 कुरिन्थियों 14:2,13-18
2 क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है वह मनुष्यों से नहीं परंतु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिये कि उसकी बातें कोई नहीं समझता, क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है।
13इस कारण जो अन्य भाषा बोले, वह प्रार्थना करे कि उसका अनुवाद भी कर सके।
14इसलिये यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूँ, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है परंतु मेरी बुद्धि काम नहीं देती।
15अत: क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूँगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूँगा; मैं आत्मा से गाऊँगा, और बुद्धि से भी गाऊँगा।
16नहीं तो यदि तू आत्मा ही से धन्यवाद करेगा, तो फिर अज्ञानी तेरे धन्यवाद पर आमीन कैसे कहेगा? क्योंकि वह तो नहीं जानता कि तू क्या कहता है?
17तू तो भली भाँति धन्यवाद करता है, परंतु दूसरे की उन्नति नहीं होती।
18मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ, कि मैं तुम सबसे अधिक अन्य भाषाओं में बोलता हूँ।

इफिसियों 6:18
हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो, और इसी लिये जागते रहो कि सब पवित्र लोगों के लिये लगातार विनती किया करो,

यहूदा 1:20,21
[20]पर हे प्रियो, तुम अपने अति पवित्र विश्वास में उन्नति करते हुए और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए,
[21]अपने आप को परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखो; और अनन्त जीवन के लिये हमारे प्रभु यीशु मसीह की दया की बाट जोहते रहो।

ऐसे कई अन्य वाक्यांश हैं जिनकी जांच और अध्ययन किया जा सकता है। महत्वपूर्ण बात यह समझना है कि इन वाक्यांशों, शब्दार्थों या शब्दों का उपयोग किसी व्यक्तिगत लेखक या उसके विभिन्न संदर्भों द्वारा कैसे किया जाता है और फिर संदर्भ को ध्यान में रखते हुए उस शब्द या वाक्यांश की व्याख्या की जाती है।

अभ्यास:

1) प्रेरित पौलुस द्वारा इफिसियों 5:15-21, गलातियों 5:16-26 और रोमियों 8:1-17,26,27 में दिए गए आत्मा से परिपूर्ण जीवन के विषय का अध्ययन कीजिए। वे कौन से शब्द और वाक्यांश हैं जो दोहराए गए प्रतीत होते हैं?
2) प्रेरित यूहन्ना द्वारा यूहन्ना के सुसमाचार और 1,2, और 3 यूहन्ना में "प्रेम", "बने रहना", "ज्योति" और "संसार" शब्दों के उपयोग का अध्ययन करें। प्रेरित यूहन्ना इन शब्दों के बार-बार उपयोग के द्वारा कौन से सत्य प्रकट करता है?
3) नए नियम में "परमेश्वर की संपूर्णता" और "आंतरिक मनुष्य" / "अन्दर का मनुष्य" वाक्यांश का अध्ययन करें। आप किन अंशों का प्रतिनिर्देश लेंगे और आप किन अंतर्दृष्टियों तक पहुँच पाएंगे?
4) नए नियम में "आंतरिक मनुष्य", "अन्दर का मनुष्य" वाक्यांश का अध्ययन करें। आप किन अंशों का प्रतिनिर्देश लेंगे और आप किन अंतर्दृष्टियों तक पहुँच पाएंगे?

19
बाइबल भविष्यवाणी की व्याख्या करना

बाइबल की भविष्यवाणी की व्याख्या करना हमेशा सरल नहीं होता, विशेषतः अंतिम समय की भविष्यवाणी। हम यहाँ बाइबल की भविष्यवाणी पर कार्य करते समय विचार करने के लिए कुछ मुख्य सिद्धांत साझा कर रहे हैं और फिर कुछ अंशों को संबोधित करेंगे जो हमारे लिए रुचिकर हो सकते हैं।

बाइबल की भविष्यवाणी को समझने और व्याख्या करने हेतु प्रमुख सिद्धांत

1) घटनाओं का क्रम

बाइबल की भविष्यवाणी कैलेंडर तिथियों के साथ नहीं दी जाती है। इसलिए बाइबल की भविष्यवाणी की व्याख्या करने और यह निर्धारित करने में कि वे कब पूरी होने की संभावना है, हमें पवित्र शास्त्र के सम्पूर्ण वचनों को देखना चाहिए, उस भविष्यवाणी के वचन के आस पास की हर वस्तु पर विचार करना चाहिए।

इस बात पर विचार करें कि आदम और हव्वा के पाप करने के ठीक बाद अदन की वाटिका में परमेश्वर ने क्या घोषणा की थी—*"और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा"* (उत्पत्ति 3:15)। इसकी पूर्ति का सही समय लगभग 4000 साल बाद था। *"परंतु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्पन्न हुआ"* (गलातियों 4:4)।

एक ही कथन में, भविष्यवाणी के वचन के विभिन्न भागों की पूर्ति के समय में भिन्नता हो सकती है। एक वाक्य या अनुच्छेद में भिन्न भिन्न समय-सीमाओं का संदर्भ दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यशायाह 9:6,7 पर विचार करें।

यशायाह 9:6,7
6 क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके काँधे पर होगी, और उसका नाम अद्‌भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्‍वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।
7 उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिये वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिये न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा।

यीशु के जन्म से लगभग 700 वर्ष पहले, भविष्यवक्ता यशायाह द्वारा यह शब्द कहे गए थे। उस भविष्यवाणी के कथन का एक भाग 700 वर्ष बाद यीशु मसीह के जन्म के साथ पूर्ण हुआ। और इन भविष्यवाणियों का कुछ भाग अभी भी 2700 वर्ष बाद पूरा होना बाकी है। इसका संबंध मसीहा के शासन से है, जिसमें सरकार उसके कंधों पर होगी और मसीहा दाऊद के सिंहासन और उसके राज्य पर बैठेगा। हम इस भविष्यवाणी वचन को प्रकाशितवाक्य 20:1-6 में दोहराते हुए देखते हैं। एक और उदाहरण पर विचार करें।

यशायाह 65:17-25 में, वचन 17-19 “नया आकाश और नई पृथ्वी” की बात करते हैं और वचन 20-25 सहस्राब्दि, अर्थात् पृथ्वी पर मसीह के 1000-वर्ष के शासन की बात करते हैं। 2 पतरस 3:7-13 और प्रकाशितवाक्य 21:1 में भी नए स्वर्ग और नई पृथ्वी का उल्लेख किया गया है। यशायाह 2:1-5, यशायाह 11:1-16 और प्रकाशितवाक्य 20:1-6 में भी सहस्राब्दि शासन का उल्लेख किया गया है। हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में अनुक्रम से जानते हैं कि

नया स्वर्ग और नई पृथ्वी यीशु मसीह के 1000-साल के शासन के बाद आएगी। अतः, जबकि यशायाह 65:17-25 में, वचन 17-19 में "नए स्वर्ग और नई पृथ्वी" का आरंभ में ही उल्लेख में किया गया है, किन्तु इसकी पूर्ति सहस्राब्दि के पश्चयात ही (वचन 20-25 के बाद) होगी। (इसे बातों की प्रगति के अंत की ओर दर्शाने हेतु आरंभ में ही प्रस्तुत किया गया है)। यह एक और उदाहरण है जहाँ समय रेखा (या घटनाओं का क्रम) वचनों के अन्य भागों के साथ तुलना करके स्थापित किया गया है जो स्पष्ट रूप से अनुक्रम को दर्शाते हैं।

2) भविष्यसूचक कल्पना (इमेजरी)

बाइबल की भविष्यवाणी में प्रायः भविष्यसूचक कल्पना का उपयोग किया जाता है। इसमें आलंकारिक या प्रतीकात्मक भाषा होती है। हमारे सामने यह प्रश्न है कि इन प्रतीकों या आकृतियों की सही व्याख्या कैसे की जाए।

प्रायः भविष्यसूचक छवियों (आकृतियों या प्रतीकों) को उसी अध्याय में, उसी पुस्तक में या बाइबल में कहीं और समझाया जाता है। पवित्रशास्त्र में प्रयुक्त भविष्यसूचक कल्पना को समझने हेतु हमेशा बाइबल का उपयोग करें।

आइये हम कुछ उदाहरणों पर विचार करें।

अंतिम समय—दानिय्येल में आने वाले राज्य

भविष्यसूचक कल्पना के माध्यम से, जिसे समझना कभी-कभी बहुत कठिन होता है, परमेश्वर ने दानिय्येल को आने वाले राज्यों के बारे में दिखाया (प्रकट) किया। जब हम दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य में प्रकट की गई बातों की तुलना करते हैं, तो हम बातों को बहुत स्पष्ट रूप से देखना आरंभ करते हैं। विशिष्ट राज्यों की पहचान या नाम से उनका उल्लेख किया गया। भविष्यसूचक कल्पना तब स्पष्ट हो जाती है जब हम भविष्यसूचक वचनों में प्रकट की गई बातों को एक साथ रखते हैं।

दानिय्येल 2 (नबूकदनेस्सर का स्वप्न)	**दानिय्येल 7 (पशु)**	**दानिय्येल 8,9,11 (पशु)**	**साम्राज्य (प्रकाशितवाक्य 13, प्रकाशितवाक्य 17)**
दानिय्येल 2:36-38 सोने का सिर **बेबीलोन साम्राज्य**	**दानिय्येल 7:4** उकाब के पंखों वाला शेर, दिल और दो पैरों वाला पुरुष नबूकदनेस्सर का प्रतिनिधि दानिय्येल 4:27-37		बेबीलोन साम्राज्य
दानिय्येल 2:39 चाँदी की छाती और भुजाएँ	**दानिय्येल 7:5** मुँह में तीन पसलियाँ वाला भालू	**दानिय्येल 8:3,20; दानिय्येल 11:2** दो सींग वाला मेढ़ा, एक दूसरे से लंबा। **मादी और फारस के राजा।**	मादी-फारसी साम्राज्य
दानिय्येल 2:39 पेट और पीतल की जाँघें	**दानिय्येल 7:6** चार पंखों और चार सिर वाला तेंदुआ	**दानिय्येल 8:5,8,21,22;** **दानिय्येल 11:3,4** पश्चिम से नर बकरा, एक उल्लेखनीय सींग, बड़ा सींग टूटा हुआ और चार उल्लेखनीय सींग निकले। **ग्रीस का राज्य।** बड़ा सींग - इसका **पहला राजा।** पूरा हुआ - सिकंदर महान, और उसके 4 सेनापति।	ग्रीसियन साम्राज्य

दानिय्येल 2 (नबूकदनेस्सर का स्वप्न)	दानिय्येल 7 (पशु)	निय्येल 8,9,11 (पशु)	साम्राज्य (प्रकाशितवाक्य 13, प्रकाशितवाक्य 17)
दानिय्येल 2:40 लोहे के पैर	**दानिय्येल 7:7,19,23** भयानक पशु, लोहे के दाँत, जिनसे 10 सींग निकलते हैं, कांसे के नाखून		रोमन साम्राज्य **प्रकाशितवाक्य 17:9,10** वह राज्य जो वर्तमान में युहन्ना के समय में, स्पष्ट रूप से रोमन साम्राज्य के रूप में पहचाना जाता है।
दानिय्येल 2:41,43 लोहे और मिट्टी के पैर			पुनर्गठित क्षेत्र, पूर्व रोमन साम्राज्य के क्षेत्र में ढीले (शिथिल)ढंग से संचालित राष्ट्र
दानिय्येल 2:42 दस पंजे	**दानिय्येल 7:7,20,24** 10 सींग		**प्रकाशितवाक्य 13:1; प्रकाशितवाक्य 17:12-14** लोहे और मिट्टी के क्षेत्र से उत्पन्न हुए 10 नेता

दानिय्येल 2 (नबूकदनेस्सर का स्वप्न)	दानिय्येल 7 (पशु)	निय्येल 8,9,11 (पशु)	साम्राज्य (प्रकाशितवाक्य 13, प्रकाशितवाक्य 17)
	दानिय्येल 7:8,11,20,21,24-26 छोटा सींग, मनुष्य की आंखें, घमंडी बोलने वाले, मसीह के आने पर नष्ट हो जाएंगे	**दानिय्येल 8:9-14,23; दानिय्येल 9:27; दानिय्येल 11:36-45; दानिय्येल 2:11,12** 4 में से एक सींग से एक छोटा सींग किला जिसने शानदार भूमि की ओर अपना प्रभाव डाला।"अंतिम समय में" पूरा होगा। राजकुमारों के राजकुमार के खिलाफ उठेगा। मानवीय साधनों के बिना तोड़ा जाएगा। 7 साल के लिए वाचा बाँधेगा किन्तु बीच में ही उसे तोड़ देगा।	मसीह विरोधी चीते, भालू और शेर जैसा पशु। **प्रकाशितवाक्य 13; प्रकाशितवाक्य 17:11; मत्ती 24:15; 2 थिस्सलुनीकियों 2:3-10**
दानिय्येल 2:44-45 स्वर्ग से पत्थर से बना पहाड़ जो मानव हाथों से नहीं गढ़ा गया है	**दानिय्येल 7:13,14,18,22,27** मसीह का अपने संतों के साथ सहस्राब्दी शासन		मसीहा का राज्य **प्रकाशितवाक्य 20:1-6; यशायाह 2:1-5; यशायाह 11:1-16**
	दानिय्येल 7:9,10 महान श्वेत सिंहासन न्याय		

अंतिम समय—स्त्री, नर बालक, और अजगर (प्रकाशितवाक्य 12:1-6)

प्रकाशितवाक्य 12:1-6

1 फिर स्वर्ग में एक बड़ा चिह्न दिखाई दिया, अर्थात् एक स्त्री जो सूर्य ओढ़े हुए थी, और चाँद उसके पाँवों तले था, और उसके सिर पर बारह तारों का मुकुट था।
2 वह गर्भवती हुई, और चिल्लाती थी, क्योंकि प्रसव की पीड़ा में थी।
3 एक और चिह्न स्वर्ग में दिखाई दिया; और देखो, एक बड़ा लाल अजगर था, जिसके सात सिर और दस सींग थे, और उसके सिरों पर सात राजमुकुट थे।
4 उसकी पूंछ ने आकाश के तारों की एक तिहाई को खींचकर पृथ्वी पर डाल दिया। वह अजगर उस स्त्री के सामने जो ज़च्चा थी, खड़ा हुआ कि जब वह बच्चा जने तो उस बच्चे को निगल जाए।
5 वह बेटा जनी जो लोहे का दण्ड लिये हुए सब जातियों पर राज्य करने पर था, और वह बच्चा एकाएक परमेश्वर के पास और उसके सिंहासन के पास उठाकर पहुँचा दिया गया;
6 और वह स्त्री उस जंगल को भाग गई जहाँ परमेश्वर की ओर से उसके लिये एक जगह तैयार की गई थी कि वहाँ वह एक हज़ार दो सौ साठ दिन तक पाली जाए।

इस अंश में तीन पात्रों, स्त्री, नर बालक और अग्निमय लाल अजगर के बारे में बहुत अटकलें लगाई गई हैं। हम इस सिद्धांत का पालन करते हैं कि हम भविष्यसूचक छवियों की व्याख्या करने के लिए बाइबल के अंदर ही रहते हैं।

इसी अध्याय में वचन 9 में, हमने निम्नलिखित कहा है—*"तब वह बड़ा अजगर, अर्थात् वही पुराना साँप जो इब्लीस और शैतान कहलाता है और सारे संसार का भरमानेवाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया, और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए"* (प्रकाशितवाक्य 12:9)। अतः, यह स्पष्ट है कि अग्निमय लाल अजगर शैतान है।

नर बालक लोहे के राजदंड से सभी राष्ट्रों पर राज्य करेगा। इस विवरण के साथ सिर्फ एक ही है, और वह है परमेश्वर का पुत्र यीशु

मसीह। इस वाक्यांश का प्रयोग सीधे यीशु के संदर्भ में किया जाता है। *"और वह लोहे का राजदण्ड लिये हुए उन पर राज्य करेगा, जिस प्रकार कुम्हार के मिट्टी के बर्तन चकनाचूर हो जाते हैं: मैं ने भी ऐसा ही अधिकार अपने पिता से पाया है;"* (प्रकाशितवाक्य 2:27)। *"जाति जाति को मारने के लिये उसके मुँह से एक चोखी तलवार निकलती है। वह लोहे का राजदण्ड लिये हुए उन पर राज्य करेगा, और सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भयानक प्रकोप की जलजलाहट की मदिरा के कुंड में दाख रौंदेगा"* (प्रकाशितवाक्य 19:15)।

नर बालक स्पष्ट रूप से यीशु मसीह है। और यह इस अंश में जो हम पढ़ते हैं, उससे भी सहमत है—*"... और वह बच्चा एकाएक परमेश्वर के पास और उसके सिंहासन के पास उठाकर पहुँचा दिया गया;"* (प्रकाशितवाक्य 12:5)।

स्त्री कौन है? प्रायः, कई लोग स्त्री को चर्च मानते हैं। किन्तु इस अंश में दो महत्वपूर्ण संकेत हैं कि स्त्री कौन है। पहला संकेत प्रकाशितवाक्य 12:1 में है, जहाँ स्त्री सूर्य और चंद्रमा से सुसज्जित है, और उसके गले में 12 तारों की माला है। यह उत्पत्ति 37:9-11 में यूसुफ के सपने की ही कल्पना है। दूसरा संकेत यह है कि महिला ने नर बच्चे को जन्म दिया। यीशु का जन्म चर्च से नहीं, बल्कि इस्राएल राष्ट्र से हुआ था। प्रभु यीशु ने अपने पुनरुत्थान के बाद कलीसिया की स्थापना की। तीसरा संकेत प्रकाशितवाक्य 12:6 में है, जहाँ स्त्री को 1260 दिनों (3 ½ वर्ष) के लिए जंगल में परमेश्वर द्वारा संरक्षित किया जाता है। अन्य संकेत अध्याय में बाद वाले वचनों में प्रकाशितवाक्य 12:13,14 में देखे जाते हैं, जहाँ अजगर को पृथ्वी पर गिराए जाने पर वह स्त्री को एक समय (1 वर्ष), दो बार (2 वर्ष) और आधे समय (1/2 वर्ष, जो कुल 3 ½ वर्ष) तक सताता है। इसलिए,स्त्री स्पष्ट रूप से इस्राएल राष्ट्र है, जो पवित्रशास्त्र के अन्य भागों के अनुरूप है (**उदाहरण:** दानिय्येल 9:24-27 में दानिय्येल का 70वाँ सप्ताह)।

प्रकाशितवाक्य 12:1-6 में दी गई छवियों को पवित्रशास्त्र में दिए गए अर्थों का उपयोग करके स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।

आइये हम एक और उदाहरण पर विचार करें।

अंतिम समय—बहुत से पानियों पर बैठी बड़ी वेश्या (प्रकाशितवाक्य 17:1,15)

प्रकाशितवाक्य 17:1,15

1जिन सात स्वर्गदूतों के पास वे सात कटोरे थे, उनमें से एक ने आकर मुझ से यह कहा, "इधर आ, मैं तुझे उस बड़ी वेश्या का दण्ड दिखाऊँ, जो बहुत–से पानी पर बैठी है,
15फिर उस ने मुझ से कहा, "जो पानी तू ने देखे, जिन पर वेश्या बैठी है, वे तो लोग और भीड़ और जातियाँ और भाषाएँ हैं।

यह दर्शाने के लिए एक और उदाहरण है कि प्रायः पवित्रशास्त्र के अध्यायों में भविष्यसूचक छवियों की व्याख्या की जाती है। प्रकाशितवाक्य 17:1 में "बहुत से जल" पर बैठी बड़ी वेश्या के बारे में बताया गया है। "बहुत से जल" का क्या मतलब होगा? उसी अध्याय में बाद के वचन 15 में, हमें यह अर्थ मिलता है कि जल सभी राष्ट्रों और भाषाओं के लोग हैं।

आइये हम उसी अध्याय के दूसरे भाग को देखें।

अंतिम समय—पहाड़, राजा, सींग, पशु, वेश्या (प्रकाशितवाक्य 17:9-13)

प्रकाशितवाक्य 17:9-13

9 उस बुद्धि के लिये जिसमें ज्ञान है, यही अवसर है; वे सातों सिर सात पहाड़ हैं जिन पर वह स्त्री बैठी है।
10 वे सात राजा भी हैं, पाँच तो हो चुके हैं, और एक अभी है, और एक अब तक आया नहीं, और जब आएगा तो कुछ समय तक उसका रहना भी अवश्य है।

[11] जो पशु पहले था, और अब नहीं है, वह आप आठवाँ है और उन सातों में से उत्पन्न हुआ, और विनाश में पड़ेगा।
[12] जो दस सींग तू ने देखे वे दस राजा हैं जिन्होंने अब तक राज्य नहीं पाया, पर उस पशु के साथ घड़ी भर के लिये राजाओं का सा अधिकार पाएँगे।
[13] ये सब एक मन होंगे, और वे अपनी अपनी सामर्थ्य और अधिकार उस पशु को देंगे।

एस्कैटोलॉजी (जो किसी अन्य पुस्तक का विषय है) का विस्तृत अध्ययन किए बिना, हम यह बताना चाहेंगे कि इस अंश में भविष्यसूचक कल्पना की व्याख्या कैसे की जाए। इनमें से कुछ वास्तविक रूप से लिया जाता है और कुछ भविष्यसूचक कल्पना माना जाता है। दानिय्येल 2:35,44 में देखे गए पहाड़, राज्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। **यहाँ हम पुराने नियम का संदर्भ देते हैं जिससे यह समझ सकें कि पहाड़ों की छवि का क्या अर्थ है।** सात सिर सात पहाड़ हैं जो सात राज्य हैं।

सात राजा इन सात राज्यों के मुख्य राजा हैं। इनमें से पाँच राजा और राज्य गिर चुके हैं (अस्तित्व में थे और गुजर गए), छठवां रोमन राज्य है (जो उस समय अस्तित्व में था जब यूहन्ना को प्रकाशन मिला था), और दूसरा, सातवाँ अभी तक नहीं आया है (पूर्व रोमन साम्राज्य का शिथिल रूप से नियंत्रित क्षेत्र), और उसके पास थोड़ा समय, साढ़े तीन साल का होगा।

प्रतीकात्मक भाषा को समझने के लिए, हमें दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य और बाइबल के इतिहास के बारे में थोड़ा समझना चाहिए। बहुत अधिक विवरण में जाने बिना, दानिय्येल ने जो बताया था उसके आधार पर, पाँच साम्राज्यों को मिस्र, असीरिया, बेबीलोन, मादी -फारस और यूनानियों के रूप में गिना जा सकता है। छठवां रोमन साम्राज्य था, जो यूहन्ना के समय में प्रबल था। सातवाँ दानिय्येल 2:41-43, का लोहे और मिट्टी का मिश्रण है, जो पिछले राज्यों के समान क्षेत्र

में देशों के ढीले-ढाले क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है। आठवाँ नेता, पशु, मसीह विरोधी है, जो दानिय्येल ने भविष्यवाणी की थी कि वह इसी क्षेत्र से आएगा। दस सींग, दस राजा, दानिय्येल 2 में दस पैर की उंगलियों के समानांतर हैं, जो मसीह विरोधी का समर्थन करेंगे और उसके साथ काम करेंगे। महान वेश्या, रहस्यमय बेबीलोन जो इन सात राज्यों में समय के साथ अस्तित्व में थी, जो झूठे धर्म का प्रतिनिधित्व करती है, जिसने अब प्रकाशीतवाक्य 13 के अनुसार स्वयं मसीह विरोधी का रूप ले लिया है।

अतः, इस तरह के एक अंश को समझने के लिए, हम अंतिम समय की बाइबल भविष्यवाणी पर पुराने और नए नियम के दोनों शास्त्रों को एक साथ लाते हैं, क्योंकि ये निकटता से जुड़े हुए हैं, और पुराने और नए नियम के दोनों वचनों के लिए सही रहते हुए भविष्यवाणी की छवियों की व्याख्या करते हैं।

3) समय

बाइबल की भविष्यवाणी में, कभी-कभी समय वास्तविक रूप से दिया जाता है, और कभी-कभी, समय को आलंकारिक रूप से दिया जाता है। जब समय को आलंकारिक रूप से दिया जाता है, तो हमें वचन के अंदर दिए गए अर्थ को खोजने की आवश्यकता होती है।

परमेश्वर ने फिरौन को जो सपना दिया, उसमें सात मोटी गायें और सात दुबली गायें प्रत्येक सात साल का प्रतिनिधित्व करती हैं (उत्पत्ति 41:25-30)। यहाँ, सात वर्षों का समय उपयोग किए जा रहे प्रतीकों के माध्यम से दिया गया था।

अंतिम समय—एक समय, कई समय, और आधा समय

यह रुचिकर है कि कैसे अंतिम समय की बाइबल भविष्यवाणी अपनी प्रतीकात्मक भाषा को स्पष्ट करती है। हमारे पास अंतिम समय की

बाइबल भविष्यवाणी में उपयोग किया गया वाक्यांश "एक समय, समय और आधा समय" है। हमने नीचे पवित्रशास्त्र के संदर्भ दिए हैं। इसका क्या अर्थ होगा? हम देखते हैं कि इस वाक्यांश के संबंध में, प्रायः एक ही पुस्तक या एक ही अध्याय में, 42 महीने भी उपयोग किए गए हैं, साथ ही 1260 दिन भी हैं। 42 महीने 3 ½ साल होते हैं। 1260 दिन भी 3 ½ साल होते हैं। इसलिए, यह हमें इस निष्कर्ष पर ले जाता है कि वाक्यांश समय (1 वर्ष), समय (2 वर्ष), आधा समय (1/2 वर्ष) 3 ½ साल तक जुड़ते हैं, जो 42 महीने और 1260 दिनों के साथ सहमत हैं। नीचे दिए गए वचनों के संदर्भों में, ध्यान दें कि ये दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य में हैं। अतः, ये अंतिम समय की भविष्यवाणी के समय के समान संदर्भ में हैं।

- एक समय, समय और आधा समय

दानिय्येल 7:25
और वह परमप्रधान के विरुद्ध बातें कहेगा, और परमप्रधान के पवित्र लोगों को पीस डालेगा, और समयों और व्यवस्था के बदल देने की आशा करेगा, वरन् साढ़े तीन साल तक वे सब उसके वश में कर दिए जाएँगे।

दानिय्येल 12:7
तब जो पुरुष सन का वस्त्र पहिने हुए नदी के जल के ऊपर था, उसने मेरे सुनते दाहिना और बायाँ, अपने दोनों हाथ स्वर्ग की ओर उठाकर, सदा जीवित रहनेवाले की शपथ खाकर कहा, "यह दशा साढ़े तीन काल तक ही रहेगी; और जब पवित्र प्रजा की शक्ति टूटते टूटते समाप्त हो जाएगी, तब ये सब बातें पूरी होंगी।"

प्रकाशितवाक्य 12:14
'पर उस स्त्री को बड़े उकाब के दो पंख दिए गए कि साँप के सामने से उड़कर जंगल में उस जगह पहुँच जाए, जहाँ वह एक समय और समयों, और आधे समय तक पाली जाए।'

- 42 महीने

प्रकाशितवाक्य 11:2
पर मन्दिर के बाहर का आँगन छोड़ दे; उसे मत नाप क्योंकि वह अन्यजातियों को दिया गया है, और वे पवित्र नगर को बयालीस महीने तक रौंदेंगी।

प्रकाशितवाक्य 13:5
बड़े बोल बोलने और निन्दा करने के लिये उसे एक मुँह दिया गया, और उसे बयालीस महीने तक काम करने का अधिकार दिया गया।

- 1260 दिन

प्रकाशितवाक्य 11:3
मैं अपने दो गवाहों को यह अधिकार दूँगा कि टाट ओढ़े हुए एक हज़ार दो सौ साठ दिन तक भविष्यद्वाणी करें।"

प्रकाशितवाक्य 12:6
और वह स्त्री उस जंगल को भाग गई जहाँ परमेश्वर की ओर से उसके लिये एक जगह तैयार की गई थी कि वहाँ वह एक हज़ार दो सौ साठ दिन तक पाली जाए।

अंतिम समय—70 सप्ताह और अंतिम 7 वर्ष (दानिय्येल 9:24-27)

दानिय्येल की पुस्तक से एक अंश जिसके साथ "समय" जुड़ा हुआ है, वह है दानिय्येल 9:24-27।

आइये हम जानते हैं कि, बाइबल की भविष्यवाणी के इस अंश में दिए गए समय की व्याख्या किस प्रकार की जाए।

दानिय्येल 9:24-27
24 "तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर के लिये सत्तर सप्ताह ठहराए गए हैं कि उनके अन्त तक अपराध का होना बन्द हो, और पापों का अन्त और अधर्म का प्रायश्चित किया जाए, और युगयुग की धार्मिकता प्रगट हो; और दर्शन की बात पर और भविष्यद्वाणी पर छाप दी जाए, और परमपवित्र का अभिषेक किया जाए।

25 इसलिये यह जान और समझ ले, कि यरूशलेम को फिर बसाने की आज्ञा के निकलने से लेकर अभिषिक्त प्रधान के समय तक सात सप्ताह बीतेंगे। फिर बासठ सप्ताहों के बीतने पर चौक और खाई समेत वह नगर कष्ट के समय में फिर बसाया जाएगा।
26 उन बासठ सप्ताहों के बीतने पर अभिषिक्त पुरुष काटा जाएगा : और उसके हाथ कुछ न लगेगा; और आनेवाले प्रधान की प्रजा नगर और पवित्रस्थान को नष्ट तो करेगी। परंतु उस प्रधान का अन्त ऐसा होगा जैसा बाढ़ से होता है; तौभी उसके अन्त तक लड़ाई होती रहेगी; क्योंकि उसका उजड़ जाना निश्चय ठान लिया गया है।
27 वह प्रधान एक सप्ताह के लिये बहुतों के संग दृढ़ वाचा बाँधेगा, परंतु आधे ही सप्ताह के बीतने पर वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा; और कंगूरे पर उजाड़नेवाली घृणित वस्तुएँ दिखाई देंगी और निश्चय ही ठनी हुई बात के समाप्त होने तक परमेश्वर का क्रोध उजाड़नेवाले पर पड़ा रहेगा।

स्वर्गदूत जिब्राएल ने दानिय्येल के पास भविष्य की घोषणा करते हुए एक अद्‌त वचन लाया। जिब्राएल ने 70 सप्ताहों का उल्लेख किया और कहा कि ये 70 सप्ताह यहूदी लोगों, यरूशलेम शहर के बारे में हैं।

70 सप्ताहों की यह अवधि अंततः निम्नलिखित में परिणत होगी:

- अपराध को समाप्त करना (खत्म करना)
- पापों का अंत करना—पाप और विद्रोह का अंत करना
- अधर्म का प्रायश्चित करना —सभी पापों के लिए प्रायश्चित करना
- अनंत धार्मिकता लाना—इस्राएल और यरूशलेम में धार्मिकता स्थापित करना
- दर्शन और भविष्यवाणी को मुहर बंद करना—या भविष्यवाणी के वचन की पुष्टि करना
- परम पवित्र का अभिषेक करना—परम पवित्र का अभिषेक करना और परम पवित्र स्थान का अभिषेक करना, अर्थात मंदिर को सभी

अशुद्धता, अपवित्रता से शुद्ध करना, अभिषेक करना और मंदिर (सहस्राब्दी मंदिर) की स्थापना करना।

किन्तु 70 सप्ताह का क्या अर्थ है?

शब्द "सप्ताह" (हिब्रू *'शाबुआ'*) का उपयोग सात दिनों या वर्षों की अवधि को दर्शाने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 29:27,28 में इसका अर्थ सात वर्ष है। *"इसका सप्ताह तो पूरा कर; फिर दूसरी भी तुझे उस सेवा के लिये मिलेगी जो तू मेरे साथ रहकर और सात वर्ष तक करेगा। याक़ूब ने ऐसा ही किया, और लिआः के सप्ताह को पूरा किया; तब लाबान ने उसे अपनी बेटी राहेल भी दी कि वह उसकी पत्नी हो"* (उत्पत्ति 29:27,28)। इसलिए इस प्रयोग के आधार पर, हम दानिय्येल के 70 सप्ताहों को 70 x 7 वर्ष, यानी 490 वर्षों की समयावधि के रूप में दर्शाते हैं।

दानिय्येल 9:25 में, जिब्राएल ने कहा कि यरूशलेम को फिर से बनाने और वापस लौटने के आदेश से लेकर राजकुमार मसीहा के आने तक 7 + 62 = 69 सप्ताह होंगे। जिब्राएल ने घोषणा की 69 सप्ताह या 69 x 7 साल, इसका अर्थ यह है कि यहूदियों के यरूशलेम को फिर से बनाने के लिए वापस जाने की घोषणा से लेकर राजकुमार मसीहा के आने तक 483 वर्ष हो जाएंगे। कुस्रू के नेतृत्व में फारसी साम्राज्य ने लगभग 539 ईसा पूर्व में बेबीलोन पर विजय प्राप्त की। यह कोई सटीक तिथि नहीं है, बल्कि इतिहासकारों द्वारा निर्धारित और अनुमानित तिथि है। जैसा कि यशायाह (यशायाह 44:28; यशायाह 45:1) ने भविष्यवाणी की थी, कुस्रू ने लगभग 538 ईसा पूर्व में यहूदियों को अपने वतन लौटने और मंदिर (एज्रा 1:1-4) का पुनर्निर्माण करने की अनुमति देते हुए एक आदेश जारी किया। इसकी तुलना ज़िब्रायेल द्वारा दानिय्येल को बताई गई बातों से करते हैं —483 वर्ष। के आस पास! मैं यह मानना चाहूँगा कि जिब्राएल सटीक था और जो अनुमान

लगाया गया है वह अनुमानित है।

दानिय्येल 9:26 में, जिब्राएल ने कहा कि 7 + 62 के बाद, अतः कुल 69 सप्ताह, 483 वर्ष, मसीहा को हटा दिया जाएगा, किन्तु स्वयं के लिए नहीं, और नगरों और पवित्र स्थान (मंदिर) नष्ट हो जाएगा। यीशु मसीह को वास्तव में सम्पूर्ण संसार के पापों के लिए सूली पर चढ़ाया गया था। रोमन सम्राट नीरो और उनके जनरल टाइटस ने 70 ईस्वी में मंदिर और यरूशलेम शहर को नष्ट कर दिया था।

इसलिए, जिब्राएल ने जिन 490 वर्षों के बारे में बात करने का इरादा किया था, उनमें से 483 साल की अवधि को संबोधित किया गया है। अब 7 वर्ष और बचे हैं।

दानिय्येल 9:27 में जिब्राएल ने "तब" शब्द का उपयोग जारी रखा। हम समझते हैं कि "तब" शब्द उस समय से है जब मसीहा को मार दिया गया था। और शहर और मंदिर नष्ट हो चुके थे। किन्तु "तब" शब्द कब (किस समय) है? शेष 7 वर्षों की शुरुआत के लिए हमें "तब" शब्द को कहाँ रखना चाहिए? आइये हम इसका उत्तर वचन 27 में बताई गई बातों के शेष भाग को देखने के बाद दें।

दानिय्येल 9:27 में, जिब्राएल ने कहा था कि "वह" मसीह विरोधी (छोटा सींग जो परमेश्वर के विरुद्ध ईशनिंदा की बातें करता है जैसा कि अध्याय 7-8 में दानिय्येल को बताया गया था) बताते हुए— "एक सप्ताह के लिए कई लोगों के साथ वाचा की पुष्टि करेगा"। इसे सरल शब्दों में कहें तो, मसीह विरोधी इस्राएल के साथ 7 वर्षों के लिए एक वाचा (शांति संधि) करेगा। हम दानिय्येल 9:24 में वर्णित घटना के समय में रह रहे हैं *"तेरे लोगों और तेरे पवित्र नगर के लिए"*, अतः, यह वाचा मसीह विरोधी और इस्राएल के बीच है। हम "एक सप्ताह" को 7 वर्षों के रूप में भी रखते हैं, जो 70 सप्ताहों के शेष वर्षों की संख्या है। इन अंतिम 7 वर्षों को प्रायः **दानिय्येल के 70वें सप्ताह** के रूप में

संदर्भित किया जाता है। जिब्राएल ने आगे कहा, कि "सप्ताह के मध्य में", जिसका अर्थ यह है कि 3 ½ वर्षों के बाद, 3 ½ वर्ष शेष रहने पर, मसीह विरोधी बलिदान और भेंट बंद कर देगा। वह मंदिर में स्तुति और आराधना बंद कर देगा, जिसका अर्थ है कि ऐसा होने के लिए मंदिर के लिए एक स्थान होगा। मसीह विरोधियों का विस्तार उनके द्वारा घृणित कार्यों को करते हुए तेजी से होगा, जो बरबादी लाते हैं, जब तक कि उसक अंतिम न्याय नहीं किया जाता। यह हमें पिछले 7 वर्षों के बारे में और विशेष रूप से पिछले 3 ½ वर्षों के बारे में दिए गए विवरण हैं। रुचिकर बात यह है कि 3 ½ वर्षों के बारे में पवित्रशास्त्र में अन्य स्थानों पर बात की गई है जैसा कि पहले के संदर्भों में **एक काल, समय और आधा समय,** या **42 महीने** या **1260 दिन** के रूप में दिखाया गया है।

तो, जिब्राएल ने दानिय्येल 9:27 में जिस "तब" का उल्लेख किया है वह किस समय का है? प्रभु यीशु ने दानिय्येल 9:27 का संदर्भ दिया और मत्ती 24:15 में पवित्र स्थान में खड़े होकर बरबाद करने वाली घृणित वस्तु के बारे में बात की। प्रेरित पौलुस ने भी 2 थिस्सलुनीकियों 2:3-9 में उनके बारे में लिखा गया है। मंदिर को 70 ईस्वी में नष्ट कर दिया गया था। यदपि, इसे दानिय्येल 9:27 की पूर्ति नहीं माना गया क्योंकि लगभग 96 ईस्वी में, जब यूहन्ना को प्रकाशन मिल रहा था, तब मंदिर और शहर को रौंदने का उल्लेख भविष्य की ओर देखते हुए किया गया है (प्रकाशितवाक्य 11:1,2)। ध्यान रहे कि ईस्वी सन् 96 में कोई मंदिर नहीं था। अधर्मी, मसीह विरोधी के आने का विवरण प्रकाशितवाक्य 13 में दिया गया है। इसलिए, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि "तब" की पूर्ति पहली शताब्दी ईस्वी के अंत तक नहीं हुई थी। 2 थिस्सलुनीकियों 2:7,8 में प्रेरित पौलुस के लेखन से हमें पता चलता है कि अधर्मी, मसीह विरोधी तब प्रकट होगा जब उसे मार्ग से हटा दिया जाएगा जो उसे रोकता है। यह मसीह को संदर्भित नहीं कर सकता क्योंकि प्रेरित पौलुस द्वारा वचनों को लिखे जाने से पहले

ही उसका स्वर्गारोहण हो चुका था। यह पवित्र आत्मा को संदर्भित नहीं कर सकता क्योंकि पवित्र आत्मा दानिय्येल के अंतिम 7 वर्षों के दौरान अभी भी काम कर रहा होगा जैसा कि हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक और जकर्याह 12:10 और यहेजकेल 39:29 में देखते हैं। और इसलिए, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि कलीसियाको मार्ग से हटा दिए जाने के बाद मसीह विरोधी प्रकट होगा।

जबकि इसमें सम्मिलित विषयों पर अंतिम समय से संबंधित बहुत ज्यादा गंभीर वचन हैं, हम इसे अंतिम समय पर एक अलग पुस्तक के लिए छोड़ देते हैं। हालाँकि, हम जो मुख्य विचार लाना चाहते हैं वह यह है कि जब भविष्यवाणी के समय को समग्र दृष्टिकोण का उपयोग करके इसे आलंकारिक रूप से दिया जाता है, तो उसकी व्यायाखा को किस प्रकार किया जाए, अर्थात, निष्कर्ष और व्याख्या पर पहुँचने के लिए सभी भविष्यवाणी के वचनों पर विचार करना।

अंतिम समय पर बाइबल की भविष्यवाणी की व्याख्या करने के लिए दिशा-निर्देश

1) व्याख्याशास्त्र के सामान्य सिद्धांतों का पालन कीजिए, अध्ययन करते समय और व्याख्या पर पहुँचते समय इतिहास, संस्कृति और संदर्भ पर ध्यान दीजिए।

2) भविष्यवाणी के वचनों को उनके सामान्य, व्याकरणिक अर्थ में लीजिए।

3) साहित्यिक तत्व पर विचार करें और आलंकारिक या प्रतीकात्मक भाषा के उपयोग को पहचानिए।

   भविष्यवाणी के अधिकांश भाग में भविष्य की घटनाओं के बारे में प्रकाशन दिया गया है। भविष्यवाणी में अत्याधिक प्रतीकात्मक सामग्री होती है जिससे व्याख्या करना कठिन हो जाता है। जहाँ तक संभव हो हम बातों को वास्तविक अर्थ में लेते हैं। यदि कथन

को वास्तविक अर्थ में लेना असंभव या अतार्किक होगा, तो इसमें आलंकारिक भाषा का उपयोग किया गया होगा और इसलिए, इसकी व्याख्या इस रीति से की जानी चाहिए।

4) भविष्यवाणी के अनुक्रम को पहचानें।

भविष्यवक्ता जिन्होंने मसीह के पहले और दूसरे आगमन के बारे में भविष्यवाणी की थी, वे प्रायः यह नहीं समझ पाए कि यह सब किस प्रकार घटित होगा (1 पतरस 1:10-12)। हो सकता है कि भविष्यवक्ता ने केवल A, B और Z घटनाएँ देखी हों, और B और Z के बीच जो कुछ भी होने वाला था, उसका कोई प्रकटीकरण न हुआ हो। साथ ही, हो सकता है कि भविष्यवक्ता ने पहले Z, फिर B और फिर A देखा हो, जबकि उनकी पूर्ति का क्रम A, B और बाद में Z होगा। इसलिए, हमें भविष्यवाणी की व्याख्या करते समय इसका ध्यान रखना चाहिए।

5) परमेश्वर की प्रकट व्याख्याओं को देखें

कई उदाहरणों में, प्रतीकात्मक तत्वों से परिपूर्ण भविष्यवाणी में वचनों या संदेशों की व्याख्या की जाती है और इसके बाद में या उसी पुस्तक में दिए गए अंशों में अर्थ दिया होता है। पहले इन्हें देखें और जो अर्थ दिया गया है, उसी पर बने रहें। पहले से दिए गए अर्थ से विचलित न हों।

6) समानांतर अंशों की तुलना करें।

भविष्यसूचक शास्त्रों या वचनों को एक साथ रखा जाना चाहिए और पूर्ण रूप से जांच की जानी चाहिए। जब हम उन अंशों को देखते हैं जो एक ही भविष्यवाणी की घटना के बारे में बताते हैं, तो ये विवरण प्रस्तुत किए जाते हैं और इससे संपूर्ण समझ आती है।

उदाहरण:

प्रकाशितवाक्य 13 का अध्ययन दानिय्येल 9:24-27 के साथ

किया जाना चाहिए।

योएल 2:18-32 का अध्ययन प्रकाशितवाक्य 19 के साथ किया जाना चाहिए।

7) संसार, इस्राएल और कलीसिया।

इस बात पर ध्यान दें कि परमेश्वर किससे बात कर रहा है, चाहे भविष्यवाणी में विवरण सामान्य रूप से मानव जाति के लिए हो या विशेष रूप से इस्राएल के लिए या विशेष रूप से कलीसिया के लिए। यह भी ध्यान रखें कि कुछ भविष्यवाणियों की आत्मिक पूर्ति कलीसिया में होती है, और बाद में इस्राएल में वास्तविक पूर्ति होती है।

उदाहरण:

पवित्र आत्मा का उंडेला जाना (योएल 2:28,29)।

- आत्मिक रूप से पूर्ण हुआ और कलीसिया में पूरा हो रहा है (प्रेरितों के काम 2:16-18)।
- इस्राएल के लिए वास्तविक रूप से पूरा होगा (जकर्याह 12:10; यहेजकेल 39:29)।

दाऊद के तम्बू का पुनर्निर्माण करना ताकि अन्यजाति के लोग प्रभु की खोज करें (आमोस 9:11-13)।

- आत्मिक रूप से पूर्ण होगा और कलीसिया में पूरा होता रहेगा (प्रेरितों के काम 15:15-18)।
- तीसरे मंदिर और सहस्राब्दि मंदिर तथा यीशु मसीह के राज्य के साथ वस्तुत: इस्राएल में पूरा होगा (यशायाह 2:1-5; जकर्याह 14:16,17)।

प्रभु के महान और भयानक दिन से पहले संकेत (योएल 2:30-32)।

- क्लेश के दौरान दुनिया के लिए पूरा होगा (प्रकाशितवाक्य 6:12; प्रकाशितवाक्य 8:12)।

8) उन भविष्यवाणियों को देखें जो पूरी हो चुकी हैं और उन भविष्यवाणियों को देखें जिनका पूरा होना बाकी है। जैसा कि हमने कुछ उदाहरणों में देखा, एक भविष्यवाणी कथन के कुछ हिस्से पहले ही पूरे हो चुके हैं, और उसी कथन के अन्य हिस्से अभी पूरे होने बाकी हैं।

उदाहरण: यशायाह 9:6,7

अंतिम समय—क्रमानुसार प्रकाशन

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का अध्ययन करते समय, हम देखते हैं कि पुस्तक को किस तरह प्रस्तुत किया गया है और हमें प्रदान किया गया है। पुस्तक का आरंभ *"वे बातें, जिनका शीघ्र होना अवश्य है," और"समय निकट है"* (प्रकाशितवाक्य 1:1,3) कथनों से होती है। समय को परमेश्वर के दृष्टिकोण से समझना चाहिए। परमेश्वर समय से परे रहता है। क्योंकि *"प्रभु के यहाँ एक दिन हज़ार वर्ष के बराबर है, और हज़ार वर्ष एक दिन के बराबर है"* (2 पतरस 3:8)। उसने कहा *"देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ!"* (प्रकाशितवाक्य 22:7), और तब से लगभग 2000 वर्ष बीत चुके हैं।

जैसे ही प्रभु यूहन्ना को आने वाली घटनाओं को प्रकट करने की तैयारी करते हैं, वे यूहन्ना को सूचित करते हैं ...

प्रकाशितवाक्य 1:19
इसलिये जो बातें तू ने देखीं हैं और जो बातें हो रही हैं और जो बातें इसके बाद होनेवाली हैं, उन सब को लिख ले।

यूहन्ना ने जो देखा है वह जी उठे और महिमावान यीशु मसीह हैं और प्रकाशितवाक्य अध्याय 1 में दर्ज हैं। "जो चीजें हैं," अतः वर्तमान, वे उन सात कलीसियाओं से संबंधित हैं जो उस समय अस्तित्व में थीं, जिन्हें प्रभु ने प्रकाशितवाक्य अध्याय 2 और 3 में संबोधित किया था। भविष्य में जो चीजें हैं प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 से शुरू होकर अंत तक।

प्रकाशितवाक्य 4:1
इन बातों के बाद जो मैं ने दृष्टि की तो क्या देखता हूँ कि स्वर्ग में एक द्वार खुला हुआ है, और जिसको मैं ने पहले तुरही के से शब्द से अपने साथ बातें करते सुना था, वही कहता है, "यहाँ ऊपर आ जा; और मैं वे बातें तुझे दिखाऊँगा, जिनका इन बातों के बाद पूरा होना अवश्य है।"

प्रकाशितवाक्य 4:1 स्पष्ट रूप से इस कथन के साथ आरंभ होता है कि यूहन्ना को जो दिखाया जाएगा उसका संबंध भविष्य की घटनाओं से है।

इसलिए, भविष्य में कभी-कभी, प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 और 5 वास्तव में घटित होंगे। प्रकाशितवाक्य अध्याय 5 में, हम देखते हैं कि पिता द्वारा नियुक्त समय पर, प्रभु यीशु मसीह मुहरों और पुस्तक को खोलेंगे, यह दर्शाता है कि उस बिंदु से, जो कुछ लिखा गया है उसका पूरा होना शुरु हो जाएगा।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक उन घटनाओं का अनावरण या प्रकाशन है जो क्रमानुसार दिया गया हैं। अतः, प्रकाशितवाक्य को पढ़ने और व्याख्या करने की सर्वोत्तम रीति यह है कि हमें जो क्रम दिया गया है, उसी के अनुसार इसका अध्ययन किया जाए।

हम यह भी मानते हैं कि प्रकाशितवाक्य में कुछ ऐसे अंश हैं ...

- कुछ निश्चित कोष्ठकीय अंश, उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य 10, जहाँ यूहन्ना को पुस्तिका (पत्रिका) को खाने के लिए कहा जाता है,

- कुछ वचन जो ऐतिहासिक घटना की ओर संकेत करते हैं, उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य 12 में, लूसिफ़र और एक तिहाई स्वर्गदूतों का गिराया जाना (वचन 3,4), यीशु मसीह का जन्म, और उनका स्वर्ग में उठा लिया जाना (वचन 5),
- कुछ वचन या अध्याय पूरे 3 ½ वर्षों को संक्षेप मे समाप्त होते हैं, उदाहरण के लिए, प्रकाशितवाक्य 11 दो गवाहों और उनकी 3 ½ साल की सेवकाई का वर्णन करता है, प्रकाशितवाक्य 13 वर्णन करता है कि क्लेश के दूसरे 3 ½ वर्षों के समय के दौरान मसीह विरोधी और झूठे भविष्यद्वक्ता क्या करेंगे।

अंतिम समय—वर्तमान राज्य, आने वाला राज्य

मत्ती 4:17
उस समय से यीशु ने प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, "मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।"

यूहन्ना 18:36
यीशु ने उत्तर दिया, "मेरा राज्य इस संसार का नहीं; यदि मेरा राज्य इस संसार का होता, तो मेरे सेवक लड़ते कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता: परंतु मेरा राज्य यहाँ का नहीं।"

प्रकाशितवाक्य 20:4-6
4 फिर मैं ने सिंहासन देखे, और उन पर लोग बैठ गए, और उनको न्याय करने का अधिकार दिया गया। मैं ने उनकी आत्माओं को भी देखा, जिनके सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे, और जिन्होंने न उस पशु की, और न उसकी मूर्ति की पूजा की थी, और न उसकी छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी। वे जीवित होकर मसीह के साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करते रहे।
5 जब तक ये हज़ार वर्ष पूरे न हुए तब तक शेष मरे हुए न जी उठे। यह तो पहला पुनरुत्थान है।
6 धन्य और पवित्र वह है, जो इस पहले पुनरुत्थान का भागी है। ऐसों पर दूसरी मृत्यु का कुछ भी अधिकार नहीं, पर वे परमेश्वर और मसीह के याजक होंगे और उसके साथ हज़ार वर्ष तक राज्य करेंगे।

जब यीशु ने अपनी सांसारिक सेवकाई शुरू की, तो उन्होंने पृथ्वी पर परमेश्वर के राज्य के आगमन की घोषणा की। अतः, यह पृथ्वी पर लोगों के हृदय और जीवन में परमेश्वर का एक आत्मिक शासन और राज्य है। परमेश्वर का राज्य हमारे अंदर है (लूका 17:20,21) और हम परमेश्वर के राज्य में हैं (कुलुस्सियों 1:13)। यह आज पृथ्वी पर उसके अनंतकालीन राज्य की आत्मिक अभिव्यक्ति है। उसके राज्य के पुत्र और पुत्रियों के रूप में (मत्ती 13:38), आज, हमें नमक और ज्योति बनने के लिए बुलाया गया है, हम जहाँ भी जाते हैं, पर्मेश्वर के राज्य-प्रभाव लाते हैं। भविष्य में एक समय आएगा, जैसा कि प्रकाशितवाक्य 20:4-6 में कहा गया है, जब हम पृथ्वी पर यीशु के सहस्राब्दी शासनकाल के दौरान उसके साथ शासन करेंगे और राज करेंगे। यह आने वाला राज्य है।

समस्या तब उत्पन्न होती है जब हम परमेश्वर की स्पष्ट रूप से बताई गई समय-सीमा और अनुक्रम को सही ढंग से नहीं समझते और बातों, घटनाओं को मिला देते हैं। यह "किंगडम नाउ / डोमिनियन थियोलॉजी" की त्रुटि है जो इस विचार पर जोर देती है कि यीशु परमेश्वर के वापस आने से पहले मसीही लोग वास्तविक रूप से पृथ्वी पर राज्य करेंगे और संसार में परमेश्वर के राज्य को स्थापित करेंगे। इस प्रकार पवित्र शास्त्र को गलत रूप से बताया जाता है कि हमें जीवन के हर क्षेत्र—राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक—पर अब, यीशु के आने से पहले—इन सभी क्षेत्रों में परमेश्वर के लोगों की अगुवाई करके परमेश्वर का वास्तविक राज्य लाना चाहिए। विश्वासियों के रूप में, हम जहाँ भी जाते हैं, परमेश्वर के राज्य को साथ लेकर आते हैं। हमें जहाँ भी जाना है, नमक और प्रकाश बनना है। हमें अपने आस-पास के संसार में व्याप्त होना है। यधपि, इसके लिए यह आवश्यक नहीं है कि हम "प्रभार संभालें," और नमक और प्रकाश बनने के लिए अभी "राज करने वाला" बनें। परमेश्वर हमें सभी स्तरों पर नमक और प्रकाश बनने के लिए बुलाता है, यह हम उसी स्थान

पर रह कर भी कर सकते है जहां हम हैं। हम जो प्रभाव लाते हैं, वह लोगों के ह्रदय और जीवन में परमेश्वर के राज्य की आत्मिक उन्नति को आगे बढ़ाना है। बिल्कुल, जब लोग परिवर्तित होंगे, तो उनकी जीवनशैली भी परिवर्तित होगी, और इसके परिणामस्वरूप, समुदाय और सामाजिक परिवर्तन भी होंगे। किन्तु ये लोगों के ह्रदय और जीवन में परमेश्वर के राज्य की आत्मिक उन्नति के कारण आते हैं। हमारा लक्ष्य "प्रभार संभालकर," "राजा" बनकर राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक परिवर्तन लाना नहीं है। हमारा लक्ष्य लोगों को सुसमाचार के माध्यम से यीशु मसीह से मिलवाना है। इसके परिणामस्वरूप सम्पूर्ण संसार में परिवर्तन होगा।

पवित्रशास्त्र बहुत स्पष्ट हैं कि जब मसीह विरोधी को रास्ते से हटा दिया जाएगा, और जब मसीह अपना राज्य स्थापित करेगा, तब हम यीशु के साथ शासन करेंगे और राज करेंगे। प्रकाशितवाक्य 20:4-6 के अलावा, दानिय्येल 7:25-27 यह बहुत स्पष्ट करता है कि मसीह विरोधी का न्याय करके उसे हटा दिए जाने के बाद, *"**तब** राज्य और तब राज्य और प्रभुता और धरती पर के राज्य की महिमा, परमप्रधान ही की प्रजा अर्थात् उसके पवित्र लोगों को दी जाएगी, उसका राज्य सदा का राज्य है, और सब प्रभुता करनेवाले उसके अधीन होंगे और उसकी आज्ञा मानेंगे। प्रभुता और सारे आकाश के नीचे के राज्यों की महानता परमप्रधान के लोगों को अर्थात् पवित्र लोगों को दी जाएगी। उसका राज्य सदा का राज्य है, और सब प्रभुताएँ उसकी सेवा करेंगी और उसकी आज्ञा मानेंगी"* (दानिय्येल 7:27)। यह वह समय है जब संत संसार का न्याय करेंगे (1 कुरिन्थियों 6:2)।

कुछ लोग तर्क दे सकते हैं कि हम *"आने वाले युग की सामर्थ्य का स्वाद चख चुके हैं"* (इब्रानियों 6:5) और इसलिए, हमारे पास अभी प्रभुता है और हमें अभी कार्यभार संभालना चाहिए। "स्वाद लेना" एक छोटी सी झलक और पूर्वावलोकन है। यह आने वाले युग में जो नियुक्त

किया गया है उसकी पूर्णता में जीना नहीं है।

हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि प्रभु यीशु द्वारा हमें जो आदेश और अधिकार दिया गया है, उस पर बने रहें और पवित्र आत्मा की शक्ति के द्वारा सामर्थ, चंगाई और चमत्कारों के साथ प्रदर्शन करते हुए सुसमाचार का प्रचार करें, खोए हुए लोगों को वापस लाएं। हमारा लक्ष्य मसीह के समान परिपक्व होना है ताकि हम बेदाग एवं छोटी-मोटी समस्या रहित एक भव्य चर्च बना सकें। आने वाले युग के लिए परमेश्वर ने जो आदेश दिया है, हमें उसे वहीं छोड़ देना चाहिए और उसे इस समयावधि का हिस्सा नहीं समझना चाहिए।

अंतिम समय—पूर्ववाद (प्रेटरिज्म) विरूद्ध युगानुकूल सहस्त्राब्दिवाद (डिस्पन्सेशनल मिलेनिअलिज्म)

पूर्ववाद का मानना है कि नए नियम की कई या सभी भविष्यवाणियाँ, विशेष रूप से प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में, साथ ही पुराने नियम के भविष्यसूचक अंश, अतीत में पूरी हुई थीं। पूर्ववर्तीवादियों का मानना है कि महान क्लेश, मसीह विरोधी और न्याय में मसीह के आने सहित बाइबल की कई भविष्यवाणियाँ, यरूशलेम और यहूदी मंदिर के विनाश के साथ ईस्वी सन् 70 में पूरी हुई थीं। वे मुख्य रूप से यह दावा करके अपनी स्थिति का समर्थन करते हैं कि...

a) प्रकाशितवाक्य की पुस्तक प्रेरित यूहन्ना द्वारा ईस्वी सन् 68 तक लिखी गई थी।

b) वे यह भी तर्क देंते हैं कि बाइबल की कई भविष्यवाणियाँ, विशेष रूप से प्रकाशितवाक्य में, पहले ही पूरी हो चुकी हैं और अन्य भविष्य की घटनाओं की वास्तविक भविष्यवाणियां न होकर प्रतीकात्मक हैं।

पूर्ववर्तीवादियों का दावा होगा कि प्रकाशितवाक्य में वर्णित

घटनाएँ आत्मिक युद्धों और प्राचीन दुनिया पर परमेश्वर के न्याय का प्रतीक हैं।

डिस्पेंसेशनल मिलेनियलिज्म (युगानुकूल सहस्राब्दिवाद) एक उत्साह की शिक्षा देता है, जहाँ विश्वासियों को क्लेश से पहले स्वर्ग ले जाया जाएगा, एक भविष्य, वास्तविक, सात साल का क्लेश और पृथ्वी पर मसीह का वस्तुत: एक हजार साल तक राज करना।

हम जानते हैं कि मंदिर 70 ईस्वी में नष्ट हो गया था, जबकि प्रकाशित वाक्य की पुस्तक प्रेरित यूहन्ना द्वारा 96 ईस्वी के आसपास दी गई थी। 96 ईस्वी का यह दिनांक इस तथ्य से दृढ़ता से प्रमाणित होती है कि ....

a) प्रेरित यूहन्ना को रोमन सम्राट डोमिशियन के तहत उत्पीड़न की अवधि के दौरान इफिसुस से पटमोस (प्रकाशितवाक्य 1:9) के द्वीप पर लगभग 94-96 ईस्वी में निर्वासित किया गया था, और सम्राट डोमिनियन ने 81 से 96 ईस्वी तक शासन किया था।

b) प्रारंभिक चर्च के पिता इरेनियस (130-202 ईस्वी) और चर्च के इतिहासकार जैसे कि यूसेबियस (265-339 ईस्वी) ने प्रकाशित वाक्य को डोमिनियन शासनकाल के अंत में लिखे जाने की पुष्टि की।

यद्यपि हम भूतपूर्ववाद का प्रतिकार करने के लिए अंतिम समय पर पूर्ण अध्ययन करने का प्रयास नहीं करेंगे, फिर भी आइये हम हम एक सरल बुनियादी व्याख्यात्मक दृष्टिकोण से कुछ बिंदुओं पर विचार करें।

- प्रेरित यूहन्ना से बात करते हुए, यीशु के शब्द थे, *"... वे बातें, जिनका शीघ्र होना अवश्य है"* (प्रकाशितवाक्य 1:1) *"... जो बातें इसके बाद होनेवाली हैं,"* (प्रकाशितवाक्य 1:19) *और "मैं वे बातें*

तुझे दिखाऊँगा, जिनका इन बातों के बाद पूरा होना अवश्य है" (प्रकाशितवाक्य 4:1)। ये शब्द साफ और स्पष्ट हैं कि यूहन्ना को जो बताया गया था, वे ऐसी घटनाएँ थीं जो भविष्य में होने वाली थीं। यह कहना कि यीशु ने जो कहा, उसका अर्थ वह नहीं था (उसने झूठ बोला?!), और वह केवल इतिहास का वर्णन कर रहा था, यह पूरी तरह से बेतुका है।

- प्रकाशितवाक्य में बताई गई बहुत सी बातें पहली शताब्दी (प्रकाशितवाक्य 13,17,18) के दौरान घटित नहीं हो सकती थीं।
- अंतिम समय की कई घटनाएँ घटित नहीं हुई हैं और उन्हें सिर्फ प्रतीकात्मक मानकर खारिज करना व्याख्यात्मक रूप से उचित नहीं है और अस्वीकार्य है। यह व्याख्यात्मक सिद्धांतों के साथ असंगत है और यदि हमें इसे स्वीकार करना है, तो पवित्रशास्त्र के वचनों की किसी भी और सभी बातों को प्रतीकात्मक और आलंकारिक रूप में माना जा सकता है।

अंतिम समय—क्या तीसरा मंदिर होगा?

क्या यरूशलेम में वास्तविक रूप से कोई तीसरा भौतिक मंदिर होगा? यह एक ऐसा प्रश्न है जो अधिकांशतः पूछा जाता है, और कुछ लोगों ने प्रस्तावित किया है कि मसीह विरोधी के संबंध में जिस मंदिर की बात की गई है, वस्तुतः वह मंदिर नहीं है, बल्कि एक आत्मिक मंदिर है, और कुछ लोग यह भी सुझाव देते हैं कि यह कलीसिया हो सकता है। दानिय्येल 8 और 9 को पढ़ने पर, तथा यीशु (मत्ती 24:15), प्रेरित पौलुस (2 थिस्सलुनीकियों 2:4) और प्रेरित यूहन्ना (प्रकाशितवाक्य 11:1,2) के वचनों से एक भौतिक मंदिर की उपस्थिति का संकेत मिलता है, जहाँ दैनिक बलिदान बंद कर दिए जाते हैं (दानिय्येल 8:11,13; दानिय्येल 9:27), और मसीह विरोधी स्वयं को परमेश्वर के रूप में स्थापित करता है। जो स्पष्ट रूप से कहा गया है उसे पूरा करने के लिए, एक

वास्तविक भौतिक मंदिर होना चाहिए और यह निश्चित रूप से चर्च की ओर संकेत नहीं कर सकता है, क्योंकि यहाँ कोई दैनिक बलिदान नहीं चढ़ाया जाता है और यह कोई भी भौतिक स्थान नहीं है जो चर्च के रूप में पहचाना जाता है।

20
नए नियम में पुराना नियम

नए नियम में पुराने नियम से लगभग 250 से 300 हवाले लिये गए हैं। लगभग सभी विषयों में, हम पुराने नियम के संदर्भ को जानते हैं। कुछ संदर्भ सटीक शब्दों में नहीं हैं और इसलिए, कुछ विषयों में, हम निश्चित नहीं हैं कि यह एक हवाला था या नहीं। (**उदाहरण:** यूहन्ना 7:38, कोई सटीक संदर्भ नहीं बताया जा सकता। संभावित संदर्भ यशायाह 55:1 है)।

जैसा कि हमने पहले उल्लेख किया है, प्रभु यीशु ने स्वयं पुराने नियम के वचनों द्वारा हवाले दिए। उन्होंने पढ़ा और उनका अध्ययन किया, उनका संदर्भ लिया और शैतान और प्रलोभन पर विजय पाने के लिए अपने जीवन में इसका उपयोग किया। प्रभु यीशु ने कहा, *"यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ, लोप करने नहीं, परंतु पूरा करने आया हूँ "* (मत्ती 5:17)।

पहले कुछ दशकों में, आरंभिक चर्च ने अपने विश्वास को पुराने नियम के वचनों की शिक्षाओं पर आधारित किया, साथ ही प्रेरितों ने प्रभु यीशु द्वारा उनकी पृथ्वी पर सेवकाई के दौरान उन्हें जो सिखाया था, उस पर शिक्षा दी। इसके बाद, जब नए नियम की पुस्तकें विभिन्न लेखकों द्वारा लिखी गईं, जिनमे पुराने नियम के वचनों का संदर्भ दिया गया, जो उनकी पूर्ति को दर्शाते हैं, या पुराने नियम में जो कहा गया था, उसे समझाते हैं, या कुछ उदाहरणों में, पुराने नियम के वचनों के आधार पर नए नियम की सच्चाई को समझाते हैं।

एक कहावत है, *नया पुराने में छिपा है, पुराना नए में प्रकट है।*

यह कथन बहुत ही संक्षिप्त और प्रभावी ढंग से दोनों नियमों के परस्पर संबंध, आंतरिक संयोजन (आंतरिक रूप से जुड़े रहने) और इनके महत्व को बताते है।

नियमों में क्या बदला और क्या नहीं बदला

यद्यपि नियम बदल गए हैं किन्तु, बाइबल का परमेश्वर नहीं बदला है। परमेश्वर ने कहा है, *"क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं;"* (मलाकी 3:6)। परमेश्वर कौन है, उसका स्वभाव, उसका चरित्र, उसकी शक्ति, उसके कार्य नहीं बदले हैं। वह अब भी वही परमेश्वर है।

वाचाएँ बदल गई हैं। एक वाचा संबंधों का उल्लेख करती है और वाचा में दो पक्ष एक दूसरे से कैसे संबंधित होंगे। पुरानी वाचा व्यवस्था पर आधारित थी, जबकि नई वाचा अनुग्रह पर आधारित है। *"इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई, परंतु अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुँची"* (यूहन्ना 1:17)। इस वाचा के अंतर्गत, परमेश्वर अपने लोगों के साथ कैसे संबंध रखेगा और उनके साथ किस प्रकार कार्य करेगा, यह बदल गया है। प्रभु यीशु स्वयं *"नई वाचा का मध्यस्थ ठहरा"* (इब्रानियों 8:6; इब्रानियों 12:24)। यह नई वाचा उत्तम वाचा पर स्थापित एक उत्तम वचन (प्रतिज्ञा) है (इब्रानियों 8:6; इब्रानियों 7:22)। प्रभु यीशु स्वयं नई वाचा के गारंटर (उत्तरदायी) के रूप में खड़े हैं (इब्रानियों 7:22)। *"जब वह कहता है, नई वाचा की स्थापना से उसने प्रथम वाचा को पुरानी ठहरा दिया"* (इब्रानियों 8:13)।

हमारा लक्ष्य नई वाचा को समझना और इस वाचा के अंतर्गत उसके लोगों के रूप में जीना सीखना होना चाहिए। साथ ही, जब हम पुराने नियम को पढ़ते हैं, तो हमें परमेश्वर और उसके तरीकों के बारे में सीखना जारी रखना चाहिए और नए नियम के लोगों के रूप में सत्य को लागू करना सीखना चाहिए। यदि पुराने नियम की प्रथाएँ नई वाचा के लोगों के लिए नहीं थीं, तो हमें उनका अनुसरण

करने का प्रयास करके उलझनों में पड़कर अव्यवस्थित नहीं होना चाहिए। नए नियम के विश्वासियों को पुराने नियम की ऐसी प्रथाओं के अधीन रहकर उसका निरंतर अनुसरण करते रहना गलत होगा, जिन्हें करते रहने का कोई अभिप्राय न हो। *"इसलिये व्यवस्था मसीह तक पहुँचाने के लिये हमारी शिक्षक हुई है कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें। परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो हम अब शिक्षक के अधीन न रहें"* (गलातियों 3:24,25)।

नए नियम के विश्वासी के रूप में पुराने नियम का अध्ययन करने के लिए सरल दिशा-निर्देश

संस्कृति पर हमारे पिछले अध्याय में, हमने सांस्कृतिक दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित करते हुए इनमें से कुछ सिद्धांतों को वहाँ संबोधित किया है।।नए नियम के विश्वासी के रूप में पुराने नियम को पढ़ते समय विचार करने के लिए यहाँ कुछ अतिरिक्त दिशा-निर्देश दिए गए हैं।

नए नियम के विश्वासियों को पुराने नियम की प्रथाओं को हस्तांतरित करने के लिए सावधानीपूर्वक विवेक और बाइबल के व्याख्याशास्त्र का पालन करने की आवश्यकता होती है। जबकि पुराना नियम, नए नियम को समझने के लिए आधारभूत है, किन्तु सभी अभ्यास नए नियम के तहत विश्वासियों पर सीधे लागू नहीं होते हैं।

यहाँ कुछ महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिए गए हैं।

1) परमेश्वर के स्वभाव और चरित्र को समझें

जब हम पुराने नियम का अध्ययन करते हैं, तो परमेश्वर के स्वभाव और चरित्र को समझने का प्रयास करें। पुराने नियम के माध्यम से उसको, उसके हृदय को और उसकी रीतियों को जानने की इच्छा रखें।

2) नए नियम के प्रकटीकरण (प्रकाशन) की दृष्टि के माध्यम से पुराने नियम की व्याख्या करें

पुराने नियम को समझने और यह जानने के लिए कि पुराने नियम की कौन सी प्रथाएँ आज हमारे लिए लागू होती हैं, व्याख्यात्मक मार्गदर्शिका के रूप में नए नियम के प्रकाशन का उपयोग करें। यीशु मसीह के व्यक्तित्व और क्रूस की केंद्रीयता बनाए रखें जिसके माध्यम से हम पुराने नियम को पढ़ते हैं, उसका अध्ययन करते हैं और उसकी व्याख्या करते हैं। याद रखें कि पुराने नियम का ध्यान अनिवार्य रूप से मसीह के व्यक्तित्व पर है। *"तुम पवित्रशास्त्र में खोजते हो, क्योंकि समझते हो कि उसमें अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है; और ये वही हैं जो मेरी गवाही देते हैं"* (यूहन्ना 5:39)। उदाहरण के लिए, हम पुराने नियम (उत्पत्ति 17:10-14) के तहत अनिवार्य खतना के बारे में पढ़ते हैं। नए नियम में, हम मसीह में होने पर हृदय के आत्मिक खतना के बारे में सीखते हैं (रोमियों 2:28,29; कुलुस्सियों 2:11)।

3) नए नियम की आज्ञाओं पर ध्यान दें

नए नियम के विश्वासियों के रूप में, हमें पुराने नियम के लोगों की तरह पवित्रता और शुद्धता, करुणा, सच्चाई, न्याय में चलने के लिए बुलाया गया है। जबकि, यह आह्वान हमें प्रेम और अनुग्रह के संदर्भ में दिया गया है। *"मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ, कि तुम एक दूसरे से प्रेम करो"* (यूहन्ना 13:34)। *"एक दूसरे का भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरा करो"* (गलातियों 6:2)। *"आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है। प्रेम पड़ोसी की कुछ बुराई नहीं करता, इसलिये प्रेम रखना व्यवस्था को पूरा करना है"* (रोमियों 13:8,10)।

4) आत्मिक, नैतिक, बलिदान, अनुष्ठान और नागरिक जीवन पर निर्देशों के बीच अंतर जानें

जैसा कि हम पुराने नियम को पढ़ते हैं, हमें उन निर्देशों के बीच अंतर करना चाहिए जो दैनिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों पर लागू होते हैं, चाहे वे आत्मिक, नैतिक, बलिदान, औपचारिक और नागरिकता के हों। अंतर्दृष्टि, शिक्षा, निर्देश जो आत्मिक और नैतिक हैं, वे आज हमारे लिए प्रासंगिक होंगे, जब तक कि इसे पवित्रशास्त्र में स्पष्ट रूप से परिवर्तित न किया गया हो।

- विश्वास, आज्ञाकारिता, ध्यान, स्तुति, आराधना, आदि के आत्मिक सिद्धांत आज भी लागू हैं क्योंकि हम इन्हें अपने समय के लिए प्रासंगिक मानते हैं। सब्त का पालन करने जैसी प्रथाएँ मसीह के विश्राम में पूरी होती हैं (मत्ती 11:28-30; इब्रानियों 4:9,10)। हालाँकि, विश्राम और आराधना के सिद्धांत लाभदायक बने हैं जिनका हम अब भी अभ्यास करते हैं।
- नैतिक नियम (उदाहरण के लिए, दस आज्ञाएँ) परमेश्वर के अपरिवर्तनीय चरित्र को दर्शाते हैं और हमारे लिए, नए नियम के विश्वासियों के लिए यह अब भी प्रासंगिक हैं, जिनका हम प्रेम और अनुग्रह में चलते हुए पालन करते हैं (रोमियों 13:8-10)। **उदाहरण:** *"दूसरे से प्रेम रखना"* (लैव्यव्यवस्था 19:18) को नए नियम में उद्त किया गया है *"एक दूसरे से अपने ही समान प्रेम रखना;" "तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख"* (मत्ती 22:39) पुराने नियम से नए नियम तक इस नैतिक निर्देश की निरंतरता पर जोर देता है।
- बलिदान संबंधी नियम (**उदाहरण:** लैव्यव्यवस्था 1-7 में लेवी के बलिदान) यीशु में पूरे हुए (इब्रानियों 10:10-12) और इसलिए, हम इनका पालन नहीं करते हैं।
- अनुष्ठान संबंधी नियम (**उदाहरण:** आहार प्रतिबंध, शुद्धिकरण

संस्कार) इज़राइल में उपासना के लिए विशिष्ट थे और नए नियम के तहत बाध्यकारी नहीं हैं। लैव्यव्यवस्था 11 में आहार संबंधी नियम अब बाध्यकारी नहीं हैं (मरकुस 7:19; प्रेरितों के काम 10:15)। *"इसलिये खाने–पीने या पर्व या नए चाँद, या सब्त के विषय में तुम्हारा कोई फैसला न करे। क्योंकि ये सब आनेवाली बातों की छाया हैं, पर मूल वस्तुएँ मसीह की हैं"* (कुलुस्सियों 2:16,17)।

- नागरिक व्यवस्था इस्राएल राष्ट्र को नियंत्रित करते थे और सीधे लागू नहीं होते, किंतु न्याय और निष्पक्षता के सिद्धांत प्रदान करते हैं।

5) पुराने नियम की प्रथाओं के संदर्भ, सिद्धांतों और उद्देश्य को समझें

जैसा कि हमने संस्कृति पर पिछले अध्याय में जोर दिया था, भले ही विशिष्ट प्रथाएँ लागू न हों, हम उनके पीछे के सिद्धांतों पर विचार करते हैं कि कौन सा सिद्धांत प्रासंगिक हैं। **उदाहरण:** गरीबों के लिए बीनने का नियम उदारता और गरीबों की देखभाल करना सिखाता है (लैव्यव्यवस्था 19:9,10)। जबकि इन प्रथाओं को सीधे हम पर लागू नहीं किया जा सकता है, हम अंतर्निहित सिद्धांतों से पवित्रता, न्याय, करुणा, अनुशासन आदि के बारे में अध्यायों से सीख सकते हैं।

6) अनुग्रह पर जोर दें, व्यवस्था पर नहीं

कभी-कभी, यदि हम सावधान नहीं हैं, तो हम पुराने नियम के अभ्यासों को उद्धार की आवश्यकताओं या धार्मिकता या दैनिक जीवन के मानकों के रूप में लागू करते हैं। हमें यह समझना चाहिए कि अनुग्रह ने हमें बंधन के जूए से मुक्त कर दिया है (गलातियों 5:1) और हम व्यवस्था द्वारा कार्यों से नहीं बल्कि यीशु मसीह में विश्वास से न्यायसंगत ठहराए गए हैं (गलातियों 2:16)। नए नियम में, परमेश्वर ने

हममें से प्रत्येक को अपने चुनाव करने की स्वतंत्रता और जिम्मेदारी दी है (रोमियों 14:5,6) और व्यवस्था के अनुसार जीने के बजाय पवित्र आत्मा के नेतृत्व में चलने की जिम्मेदारी दी है (गलातियों 5:18)।

नए नियम में पुराने नियम के संदर्भों की व्याख्या करने के लिए सरल दिशा-निर्देश

नए नियम में, पुराने नियम के अध्यायों के कुछ वचनों के साथ काम करते समय उदाहरणों के साथ कुछ दिशा-निर्देश यहां दिए गए हैं।

1) पुराने नियम के अंश को समझें

पुराने नियम के अंश को उसके मूल संदर्भ में स्पष्ट रूप से समझने के लिए व्याख्यात्मक सिद्धांतों को लागू करें।

पुराने नियम में वह न पढ़ें जो मूल लेखक नहीं जानते थे और जिसे केवल नए नियम में ही प्रकट किया गया है।

2) निर्धारित करें कि नए नियम का अंश पुराने नियम के संदर्भ का उपयोग कैसे कर रहा है

इसे उचित रीति से करने के लिए, नए नियम के संदर्भ को समझें जहाँ पुराने नियम का संदर्भ पाया जाता है।

नए नियम के लेखक द्वारा पुराने नियम के वचनों का संदर्भ देने के उद्देश्य को निर्धारित करें।

- पुराने नियम की भविष्यवाणी की पूर्ति को दर्शाने के लिए

उदाहरण: यूहन्ना 19:24; भजन संहिता 22:18 की ओर इशारा करता है; मत्ती 8:16 का संदर्भ यशायाह 53:4

- परमेश्वर द्वारा निर्धारित टाइपोलॉजी (प्रतीक और छाया) की ओर इंगित करना

उदाहरण: 1 कुरिन्थियों 5:7 का संदर्भ निर्गमन 12:21-23

- पुराने नियम के सिद्धांत का उपयोग करके नए नियम की विस्तारपूर्वक व्याख्या करना

उदाहरण: 1 कुरिन्थियों 9:9 का संदर्भ व्यवस्थाविवरण 25:4

- नए नियम के अभ्यास में पुराने नियम की सत्यता / अभ्यास की निरंतरता को दर्शाना

उदाहरण: मत्ती 22:39 का संदर्भ लैव्यव्यवस्था 19:18

- परमेश्वर की योजना और उद्देश्य की निरंतरता को दर्शाना

उदाहरण: गलातियों 3 का संदर्भ उत्पत्ति 12

फिर पुराने नियम के अंश से उसके नए नियम के उपयोग के लिए प्रासंगिक अंतर्दृष्टि प्राप्त करें।

3) पहचानें कि पुराने नियम के अध्याय का प्रयोग वास्तविक रूप से या प्रतीकात्मक रूप से किया गया है या दोनों है

व्यवस्थाविवरण 25:4 *" दाँवते समय चलते हुए बैल का मुँह न बान्धना"* यानि जब बैल अनाज को रौंदता है तो उसका मुंह न बांधना। 1 कुरिन्थियों 9:9 और 1 तीमुथियुस 5:17,18 में वस्तुतः व्यावहारिक सत्य को बताने हेतु उद्‌त किया गया है, केवल इसके कि एक उदाहरण में, इसका संबंध पशुओं से है और दूसरे उदाहरण में, इसका संबंध चर्च के सेवकों के साथ उचित व्यवहार से है।

भजन संहिता 118:22, *"राजमिस्त्रियों ने जिस पत्थर को निकम्मा ठहराया था वही कोने का सिरा हो गया है"* इस वचन को को मत्ती 21:42 और 1 पतरस 2:7,8 में प्रतीकात्मक तरीके से उद्‌त किया गया है जो पुराने नियम के वचन की पूर्ति के रूप में मसीह को अस्वीकार

करने और प्रशंसा करने को दर्शाता है।

4) नए नियम की सत्यता की विस्तारपूर्वक व्याख्या करना

प्रायः नया नियम परमेश्वर की पूर्ति और उसके महान कार्य को दर्शाता है, उदाहरण के लिए, एक उत्तम वाचा, उत्तम वचन (प्रतिज्ञा) वायदे, आदि। नए नियम की सच्चाई को प्रस्तुत करें और मसीह में परमेश्वर ने हमारे लिए जो महान कार्य किया है, उसे उजागर करें।

आइये हम कुछ उदाहरणों पर विचार करें और देखें कि हम इन सिद्धांतों को कैसे लागू करते हैं।

व्यवस्था (नियम) का अभिशाप—क्या हम इससे मुक्त हैं (गलातियों 3:13,14)?

गलातियों 3:13,14

13 मसीह ने जो हमारे लिये शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया, क्योंकि लिखा है, "जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह शापित है।"

14 यह इसलिये हुआ कि अब्राहम की आशीष मसीह यीशु में अन्यजातियों तक पहुँचे, और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें जिसकी प्रतिज्ञा हुई है।

यहाँ हमारा लक्ष्य यह समझना है कि प्रेरित पौलुस का क्या अभिप्राय था जब उसने पुराने नियम के वचन का संदर्भ दिया और नए नियम के विश्वासियों के लिए घोषणा की कि, मसीह ने हमें (नियम) व्यवस्था के श्राप से मुक्त कर दिया है। संदर्भ बिल्कुल स्पष्ट है। गलातियों की सबसे अधिक संभावना पौलुस की पहली पत्री है, जो 49 ईस्वी में यरूशलेम परिषद के ठीक बाद लिखी गई थी। उसने विशेष रूप से गलातिया के चर्चों को लिखा था जहाँ यीशु मसीह में यहूदी विश्वासियों को, यहूदी भाइयों द्वारा भ्रमित किया गया था जो इस बात पर जोर देते थे कि उन्हें व्यवस्था का पालन करना था, या सभी

रीति-रिवाजों और प्रथाओं का पालन करना था। उन्होंने गलातियों को विशेष रूप से यह बताने के लिए लिखा कि वे नियमों या व्यवस्था से मुक्त हैं। पौलुस ने यह बहुत स्पष्ट रूप से और कुछ मजबूत शब्दों में कहा कि उन्हें बचाए जाने और धर्मी बनाए जाने के लिए नियमों या व्यवस्था का पालन करने की आवश्यकता नहीं है। *"पर अब जो तुम ने परमेश्वर को पहचान लिया वरन् परमेश्वर ने तुम को पहचाना, तो उन निर्बल और निकम्मी आदि–शिक्षा की बातों की ओर क्यों फिरते हो, जिनके तुम दोबारा दास होना चाहते हो?"* (गलातियों 4:9)। *"मसीह ने स्वतंत्रता के लिये हमें स्वतंत्र किया है; अत: इसी में स्थिर रहो, और दासत्व के जूए में फिर से न जुतो"* (गलातियों 5:1)।

ऐसा करते समय, पौलुस ने नियमों या व्यवस्था के शाप का भी उल्लेख किया जो यीशु मसीह द्वारा क्रूस पर समाप्त कर दिया गया था ताकि अब्राहम का आशीर्वाद और पवित्र आत्मा का वचन (प्रतिज्ञा) अब अन्यजातियों के लिए उपलब्ध हो।

गलातियों 3:13 में "हम" का सीधा संदर्भ यहूदी विश्वासियों से है जिन्हें पौलुस संबोधित कर रहा है। व्यवस्था का अभिशाप व्यवस्था तोड़ने की सजा के संदर्भ में है, जिसका उल्लेख पौलुस ने वचन 10 में किया था, *"इसलिये जितने लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा रखते हैं, वे सब शाप के अधीन हैं, क्योंकि लिखा है, "जो कोई व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हुई सब बातों के करने में स्थिर नहीं रहता, वह शापित है"* (गलातियों 3:10)। सीधे शब्दों में कहें तो, अगर हम व्यवस्था का पालन करने की कोशिश कर रहे हैं, तो हम "अभिशाप" के अधीन हैं। यह कौन सा अभिशाप होगा? वचन 10 में पौलुस ने जिस अभिशाप का उल्लेख किया है, वही "नियम या व्यवस्था का अभिशाप" है जिसका उल्लेख उसने वचन 13 में किया है।

तो, आइये हम पुराने नियम के संदर्भ को देखें जिसका उपयोग

पौलुस यहाँ गलातियों 3:10,13 में कर रहा है।

व्यवस्थाविवरण 21:22,23
22 "फिर यदि किसी से प्राणदण्ड के योग्य कोई पाप हुआ हो जिससे वह मार डाला जाए, और तू उसके शव को वृक्ष पर लटका दे,
23 तो वह शव रात को वृक्ष पर टंगा न रहे, अवश्य उसी दिन उसे मिट्टी देना, क्योंकि जो लटकाया गया हो वह परमेश्वर की ओर से शापित ठहरता है; इसलिये जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके देता है उसकी भूमि को अशुद्ध न करना।

व्यवस्थाविवरण 27:26
शापित हो वह जो इस व्यवस्था के वचनों को मानकर पूरा न करे।' तब सब लोग कहें, 'आमीन।'

पेड़ पर लटका हुआ आदमी नियम तोड़ने की दण्ड भुगत रहा है। और इसके बाद में व्यवस्थाविवरण 27 में, हम देखते हैं कि नियम का पालन न करने पर शाप की घोषणा की जाती है। फिर तुरंत अगले ही अध्याय में, व्यवस्थाविवरण 28 में, हमें नियम का पालन करने का आशीष और नियम पालन न करने पर शाप की सूची दी गई है।

- व्यवस्थाविवरण 28:1-14 में आशीषों की सूची दी गई है

  व्यवस्थाविवरण 28:2
  फिर अपने परमेश्वर यहोवा की सुनने के कारण ये सब आशीर्वाद तुझ पर पूरे होंगे।

- व्यवस्थाविवरण 28:15-68 में सभी शापों की सूची दी गई है

  व्यवस्थाविवरण 28:15
  परंतु यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की बात न सुने, और उसकी सारी आज्ञाओं और विधियों के पालने में जो मैं आज सुनाता हूँ चौकसी नहीं करेगा, तो ये सब शाप तुझ पर आ पड़ेंगे।

पौलुस द्वारा संदर्भित पुराने नियम के वचनों के संदर्भ से यह स्पष्ट

है कि गलातियों 3:10 का "शाप" और गलातियों 3:13 का "व्यवस्था का अभिशाप" व्यवस्थाविवरण 27:26 में घोषित शाप है, जिसमें व्यवस्थाविवरण 28:15-68 में शापों की सूची दी गई है। मसीह ने हमें व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया है ये सभी श्राप व्यवस्थाविवरण 28:15-68 में सूचीबद्ध हैं।

अब्राहम की आशीष और पवित्र आत्मा का वादा उन सभी के लिए उपलब्ध है जो मसीह में हैं, यहूदी और अन्यजाति दोनों के लिए (गलातियों 3:14)। और, क्योंकि मसीह का उद्धार का कार्य सभी लोगों के लिए है, इसलिए हम पूरे विश्वास के साथ कह सकते हैं कि हम (मसीह में रहने वाले सभी लोग, यहूदी और अन्यजाति) नियम या व्यवस्था के अभिशाप से, (व्यवस्थाविवरण 28:15-68 में सूचीबद्ध सभी श्रापों) से छुटकारा प्राप्त कर चुके हैं।

दशमांश देना—क्या नए नियम के विश्वासी इसका पालन करते हैं?

हम समझते हैं कि यह एक ऐसा विषय रहा है जिस पर बहुत विवाद हुए है। हमारा लक्ष्य हेर्मेनेयुटिक्स के सिद्धांतों को लागू करना है और देखना है कि जब हम इस प्रश्न पर विचार करते हैं कि "क्या नए नियम के विश्वासी को दशमांश देना चाहिए, अतः अपनी आय का 10% स्थानीय चर्च और परमेश्वर के राज्य के कार्य के लिए देना चाहिए?"

तो हम किस तार्किक निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं? इस पर वाद विवाद इसलिए होता है क्योंकि नए नियम में विश्वासियों को दशमांश देने का स्पष्ट निर्देश नहीं दिया गया है। जब हम अपना अध्ययन करते हैं, तो हमें यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि नए नियम में स्पष्ट रूप से आराधना स्तुति के लिए संगीत वाद्ययंत्रों के उपयोग की अनुमति या निषेध नहीं दिया गया है। इसलिए, हम पुराने नियम पर विचार करते

हैं और देखते हैं कि संगीत वाद्ययंत्रों का उपयोग आराधना में किया जाता था, और हम ऐसा ही करते रहते हैं। नया नियम स्पष्ट रूप से विश्वासियों को परमेश्वर के वचन में ध्यान लगाने की शिक्षा नहीं देता है। इसलिए, हम पुराने नियम पर विचार करते हैं और देखते हैं कि परमेश्वर के वचन में ध्यान लगाना एक अभ्यास है जिसे कई स्थानों पर दोहराया जाता है, और हम भी ऐसा ही करते हैं। नया नियम स्पष्ट रूप से सृष्टि के प्रबंधन और सृष्टि की देखभाल की शिक्षा नहीं देता है। जबकि, हम इसे पुराने नियम के वचनों से सीखते हैं, और हम परमेश्वर की सृष्टि के अच्छे प्रबंधक बने रहते हैं।

आइये हम पहले पुराने नियम से और फिर नए नियम से दशमांश पर विचार करें। संक्षेप में, हम इसे सारांश रूपरेखा के रूप में प्रदान कर रहे हैं जिसका उपयोग आगे के अध्ययन के लिए किया जा सकता है।

दशमांश के संबंध में हम पुराने नियम में निम्नलिखित देखते हैं

- दशमांश का अभ्यास अब्राहम द्वारा नियम व्यवस्था से पहले किया जाता था, जो विश्वास का पिता है, जिसके कदमों का हम, नए नियम के विश्वासियों को अनुसरण करना है (रोमियों 4:12)। अब्राहम ने उत्पत्ति 14:20 में मलिकिसिदक को दशमांश दिया। याकूब ने प्रभु को दसवां भाग देने के लिए दसवां भाग देने का वचन पूरा किया (उत्पत्ति 28:22)।
- दशमांश को परमेश्वर के लोगों के लिए एक अभ्यास के रूप में स्थापित किया गया था। दशमांश का उद्देश्य था अ) लोगों द्वारा परमेश्वर का सम्मान करना, आ) परमेश्वर के कार्य और परमेश्वर के लिए सेवा करने वाले लोगों का समर्थन करना और इ) गरीबों और ज़रूरतमंदों की सहायता करना। दशमांश पवित्र था और

परमेश्वर का था। परमेश्वर ने स्वर्ग की खिड़कियाँ खोलने और अपने लोगों पर आशीषों की वर्षा करने का वादा किया, क्योंकि वे उन्हें अपना दशमांश देने के लिए उनकी आज्ञाकारिता के उत्तरदायी थे। लैव्यव्यवस्था 27:30-32; गिनती 18:28; व्यवस्थाविवरण 14:23; व्यवस्थाविवरण 26:12,13; नहेम्याह 10:37,38; मलाकी 3:10,11।

हम नए नियम में दशमांश के बारे में क्या देखते हैं?

- जबकि प्रभु यीशु ने व्यवस्था द्वारा सिखाए गए न्याय, दया और विश्वास जैसे अधिक महत्वपूर्ण विषयों की उपेक्षा करने के लिए फरीसियों को फटकार लगाई, प्रभु यीशु ने कहा कि दशमांश भी व्यवस्था द्वारा सिखाए अनुसार किया जाना चाहिए।
- न तो पुराने नियम में और न ही नए नियम में दशमांश को स्पष्ट रूप से समाप्त किया गया है। जबकि व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया है, हमने देखा है कि व्यवस्था से पहले कुलपिता अब्राहम और याकूब (और संभवतः इसहाक और अन्य लोगों) द्वारा दशमांश दिया जाता था। निम्नलिखित पर विचार करें—अब्राहम ने व्यवस्था से पहले दशमांश और खतना का अभ्यास किया। दशमांश और खतना व्यवस्था के एक भाग के रूप में अभ्यास किया जाता रहा। नए नियम में, खतना को स्पष्ट रूप से समाप्त कर दिया गया है (प्रेरितों के काम 15:23-29; रोमियों 2:29; गलातियों 5:6,11; गलातियों 6:15; कुलुस्सियों 2:11)। जबकि, नए नियम में दशमांश को समाप्त नहीं किया गया है।
- इब्रानियों 7:1-10 एक महत्वपूर्ण अंश है, जो इस समझ का दृढ़ता से समर्थन करता है कि नए नियम के विश्वासियों द्वारा दशमांश देना अभी भी जारी रखा जाना है। जब इब्रानियों के लेखक ने दो याजकों, पुराने नियम के लेवी याजकों और यीशु मसीह के याजकीय की तुलना की, तो उन्होंने दशमांश को याजकीय सेवकाई के एक अभिन्न अंग के रूप में उल्लेख किया। ध्यान दें

कि इस अंश में कितनी बार दशमांश का उल्लेख किया गया है।

इब्रानियों 7:1-10

1 यह मलिकिसिदक शालेम का राजा, और परमप्रधान परमेश्वर का याजक, सर्वदा याजक बना रहता है। जब अब्राहम राजाओं को मारकर लौटा जाता था, तो इसी ने उससे भेंट करके उसे आशीष दी।

2 इसी को अब्राहम ने सब वस्तुओं का दसवाँ अंश भी दिया। यह पहले अपने नाम के अर्थ के अनुसार, धर्म का राजा, और फिर शालेम अर्थात् शान्ति का राजा है।

3 जिसका न पिता, न माता, न वंशावली है, जिसके दिनों का न आदि है और न जीवन का अन्त है; परंतु परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप ठहर कर वह सदा के लिये याजक बना रहता है।

4 अब इस पर ध्यान करो कि वह कैसा महान् था जिसको कुलपति अब्राहम ने लूट के अच्छे से अच्छे माल का दसवाँ अंश दिया।

5 लेवी की सन्तान में से जो याजक का पद पाते हैं, उन्हें आज्ञा मिली है कि लोगों, अर्थात् अपने भाइयों से, चाहे वे अब्राहम ही की देह से क्यों न जन्मे हों, व्यवस्था के अनुसार दसवाँ अंश लें।

6 पर इसने, जो उनकी वंशावली में का भी न था, अब्राहम से दसवाँ अंश लिया, और जिसे प्रतिज्ञाएँ मिली थीं उसे आशीष दी।

7 इसमें संदेह नहीं कि छोटा बड़े से आशीष पाता है।

8 और यहाँ तो मरनहार मनुष्य दसवाँ अंश लेते हैं, पर वहाँ वही लेता है जिसकी गवाही दी जाती है कि वह जीवित है।

9 तो हम यह भी कह सकते हैं कि लेवी ने भी, जो दसवाँ अंश लेता है, अब्राहम के द्वारा दसवाँ अंश दिया।

10 क्योंकि जिस समय मलिकिसिदक ने उसके पिता से भेंट की, उस समय वह अपने पिता की देह में था।

इब्रानियों 7:8 एक महत्वपूर्ण वचन है जो बताता है कि मलिकिसिदक ने दशमांश प्राप्त किया, और वह जीवित है, अर्थात मलिकिसिदक महायाजक, वह महायाजक जो अनंतकालीन है, जिसका न कोई आरंभ है और न कोई अंत, निरंतर जारी है। यीशु मसीह एक ऐसा अनंतकालीन याजक है, और यह सिर्फ एक तार्किक निष्कर्ष है कि प्रभु यीशु, मलिकिसिदक की रीती के अनुसार एक

महायाजक आज दशमांश प्राप्त करता है। यह बहुत महत्वपूर्ण है। प्रभु यीशु, हमारे महायाजक आज हमारे दशमांश प्राप्त करते हैं!

- नए नियम के विश्वासियों द्वारा सेवाकाई के कार्य के लिए वित्तीय रूप से दान देने के संदर्भ में, प्रेरित पौलुस ने विश्वासियों को प्रभु के कार्य के लिए दान देने के बारे में सिखाने हेतु पुराने नियम से हवाला दिया है। इसलिए, हम सुरक्षित रूप से दशमांश और भेंट के दृष्टिकोण को सम्मिलित कर सकते हैं, जबकि इसके बारे में स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है, यह नए नियम के विश्वासियों के लिए देने के अभ्यास का एक हिस्सा है (1 कुरिन्थियों 9:7-11; व्यवस्थाविवरण 25:4; 2 कुरिन्थियों 9:6-9; भजन संहिता 112:9; 1 तीमुथियुस 5:17,18)।
- अंत में, हमें दशमांश और प्रभु को देने के लिए अंतर्निहित सिद्धांत पर विचार करना चाहिए। ये सिद्धांत अब भी लागू हैं, भले ही संदर्भ बदल गया हो। दशमांश का उद्देश्य था अ) लोगों द्वारा परमेश्वर का सम्मान करना और आ) परमेश्वर के काम और परमेश्वर के लिए सेवा करने वाले लोगों का समर्थन करना इ) गरीबों और ज़रूरतमंदों की मदद करना।

दशमांश प्रभु का था, जो परमेश्वर का सम्मान करने, परमेश्वर के काम का समर्थन करने और लोगों की देखभाल करने के लिए परमेश्वर को दिया जाता था। हम आज भी अपने धन से परमेश्वर का सम्मान करते हैं। दशमांश देना सबसे छोटी रकम है जो हम कर सकते हैं! हमें दशमांश से अधिक देना चाहिए!

स्त्रियों द्वारा आभूषण और उत्तम वस्त्र पहनना (1 पतरस 3:1-6)

1 पतरस 3:1-6

1 हे पत्नियो, तुम भी अपने पति के अधीन रहो, इसलिये कि यदि इन में से कोई ऐसे हों जो वचन को न मानते हों,

2 तौभी तुम्हारे भय सहित पवित्र चालचलन को देखकर बिना वचन के अपनी–

अपनी पत्नी के चालचलन के द्वारा खिंच जाएँ।
[3] तुम्हारा श्रृंगार दिखावटी न हो, अर्थात् बाल गूँथना, और सोने के गहने, या भाँति भाँति के कपड़े पहिनना,
[4] वरन् तुम्हारा छिपा हुआ और गुप्त मनुष्यत्व, नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित रहे, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में इसका मूल्य बड़ा है।
[5] पूर्वकाल में पवित्र स्त्रियाँ भी, जो परमेश्वर पर आशा रखती थीं, अपने आप को इसी रीति से संवारती और अपने–अपने पति के अधीन रहती थीं।
[6] जैसे सारा अब्राहम की आज्ञा में रहती और उसे स्वामी कहती थी

1 तीमुथियुस 2:9,10
[9] वैसे ही स्त्रियाँ भी संकोच और संयम के साथ सुहावने वस्त्रों से अपने आप को संवारे; न कि बाल गूँथने और सोने और मोतियों और बहुमोल कपड़ों से,
[10] पर भले कामों से, क्योंकि परमेश्वर की भक्ति करनेवाली स्त्रियों को यही उचित भी है।

वचन सिखाते हैं कि स्त्रियों को शालीनता, विवेक, सादगी, समझदारी और उचित वस्त्र पहनने चाहिए, और जो ईश्वरीयता को प्रदर्शित करते हैं। स्त्रियों के लिए प्राथमिक आह्वान ईश्वरीयता और हृदय की सुंदरता पर ध्यान केंद्रित करना है, जो परमेश्वर के सामने बहुत कीमती है, न कि उनके बाहरी पहनावे पर।

जबकि, क्या हम उपरोक्त अंशों का उपयोग सोने, मोतियों, आभूषणों और सुन्दर कपड़ों के उपयोग को दूर करने के लिए कर सकते हैं?

यहाँ फिर से, हम पुराने नियम में सारा के लिए किए गए संदर्भ पर विचार करते हैं (और हम पुराने नियम से परमेश्वर की अन्य पवित्र स्त्रियों की भी जाँच कर सकते हैं)। क्या सारा ने सोना और आभूषण पहनने से पूरी तरह परहेज़ किया? इसका उत्तर स्पष्ट रूप से "नहीं" है। बल्कि आरंभ में वचन जो दर्ज किया गया है वह यह है, *"अब्राम भेड़–बकरी, गाय–बैल, और सोने–रूपे का बड़ा धनी था"* (उत्पत्ति

13:2)। हम सिर्फ कल्पना कर सकते हैं कि इस चांदी और सोने का अधिकांश हिस्सा आभूषणों के रूप में था जिसे अब्राहम और सारा ने स्वयं पहना था।

जब अब्राहम का दास इसहाक के लिए दुल्हन खोजने निकला और रिबका और उसके परिवार से मिला, तो वह चांदी और सोने, आभूषणों, नाक की अंगूठी, कंगन आदि के भव्य उपहार लेकर आया। अगर सारा के पास सोने और चांदी के आभूषण नहीं होते तो वह ऐसा नहीं करता। हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि सारा और रिबका और पुराने समय की अन्य महिलाओं ने आभूषणों का इस्तेमाल किया था।

उत्पत्ति 24:22,35,47,53
22 जब ऊँट पी चुके, तब उस पुरुष ने आधा तोला सोने का एक नथ निकालकर उसको दिया, और दस तोले सोने के कंगन उसके हाथों में पहिना दिए;
35 'यहोवा ने मेरे स्वामी को बड़ी आशीष दी है, इसलिये वह महान् पुरुष हो गया है; और उसने उसको भेड़–बकरी, गाय–बैल, सोना–रूपा, दास–दासियाँ, ऊँट और गदहे दिए हैं।'
47 तब मैं ने उससे पूछा, 'तू किसकी बेटी है?' उसने कहा, 'मैं तो नाहोर के जन्माए मिल्का के पुत्र बतूएल की बेटी हूँ,' तब मैं ने उसकी नाक में वह नथ और उसके हाथों में वे कंगन पहिना दिए।
53 फिर उस दास ने सोने और रूपे के गहने, और वस्त्र निकालकर रिबका को दिए; और उसके भाई और माता को भी उसने अनमोल अनमोल वस्तुएँ दीं।

अतः, 1 पतरस 3:1-6 पर लौटकर, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि निर्देश गहने पहनने से पूरी तरह दूर रहने का नहीं है, बल्कि ईश्वरीय भक्ति और हृदय की पवित्रता पर ध्यान केंद्रित करने का है।

21
तर्क के सिद्धांत

इस अध्याय में, हम पवित्रशास्त्र में देखे गए तर्क के सिद्धांतों को संक्षेप में बताते हैं, जिन्हें हम वचनों के अध्ययन, व्याख्या और अनुप्रयोग में अपने व्याख्यात्मक रूपरेखा के रूप में लागू करते हैं।

तर्क के इन सिद्धांतों में से कुछ रब्बी सिद्धांतों या वचनों की व्याख्या यहूदी रीतियों द्वारा प्राप्त हुए हैं या उनके समान हैं। ये तार्किक सिद्धांत हमें वचनों के अध्ययन मे सही निर्णय और विचार के साथ पकड़ बनाए रखने में सहायक हैं। इनमें से कुछ सिद्धांतों को पहले के अध्यायों में भी संबोधित किया गया है, किन्तु इनकी पूर्णता हेतु यहाँ दोहराया गया है। ये सिद्धांत परस्पर अनन्य नहीं हैं और इसलिए, इसे सही ढंग से समझने, व्याख्या करने और लागू करने हेतु विभिन्न सिद्धांतों को एक साथ वचन पर लागू किया जाता है।

1) कम से अधिक

यदि कोई बात छोटी या कम स्थिति में सत्य है, तो यह बड़ी या अधिक स्थिति में भी सत्य होगी।

मत्ती 7:11
अत: जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएँ देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने माँगनेवालों को अच्छी वस्तुएँ क्यों न देगा?

यदि मानव माता-पिता बुरे होते हुए भी अच्छे उपहार देते हैं, तो स्वर्गीय पिता अपनी संतान के लिए कितना अधिक प्रदान करेगा।

2) अधिक से कम

यदि कोई वस्तु अधिक या बड़ी स्थिति में सत्य है, तो यह कम या छोटी स्थिति में भी सत्य होगी।

रोमियों 8:32
जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परंतु उसे हम सब के लिये दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्यों न देगा?

यदि परमेश्वर ने हमें अपना पुत्र (सबसे बड़ा उपहार) दिया है, तो यह तार्किक रूप से इस बात का अनुसरण करता है कि वह छोटी-छोटी आवश्यकताओं को भी पूरा करेगा।

3) निरंतरता का सिद्धांत

यदि कोई सिद्धांत एक स्थिति में लागू होता है, तो उसे समान स्थितियों में निरंतर लागू होना चाहिए जब तक कि स्पष्ट रूप से अन्यथा न कहा गया हो।

1 कुरिन्थियों 9:9,10 में, पौलुस व्यवस्थाविवरण 25:4 के सिद्धांत को लागू करता है (*"दाँवते समय चलते हुए बैल का मुँह न बान्धना।"*) सेवकों के अपने श्रम के लिए सहायता प्राप्त करने के अधिकार के लिए तर्क देने के लिए।

निरंतरता का सिद्धांत यह है कि मजदूर, चाहे वे पशु हों या लोग, प्रावधान के हकदार हैं।

4) समरूपता से तर्क (एनेलॉजी)

सत्य को समझाने या चित्रित करने के लिए दो समान स्थितियों के बीच तुलना करना।

यूहन्ना 3:14,15
[14] और जिस रीति से मूसा ने जंगल में साँप को ऊँचे पर चढ़ाया, उसी रीति से अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए;
[15] ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाए।

यीशु ने अपने क्रूस पर चढ़ने को उद्धार का माध्यम बनने के रूप में समझाने के लिए गिनती 21:9 में सर्प के काटने से चंगाई का माध्यम बने पीतल के सर्प की उपमा का उपयोग किया।

5) विरोधाभास द्वारा प्रमाण

किसी कथन की सत्यता को यह दर्शाकर प्रदर्शित करना कि इसे अस्वीकार करने से बेतुका या विरोधाभासी निष्कर्ष निकलता है।

1 कुरिन्थियों 15:13,14
[13] यदि मरे हुओं का पुनरुत्थान है ही नहीं, तो मसीह भी नहीं जी उठा;
[14] और यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमारा प्रचार करना भी व्यर्थ है, और तुम्हारा विश्वास भी व्यर्थ है।

पौलुस तर्क देते हैं कि पुनरुत्थान को अस्वीकार करने से विरोधाभासी निष्कर्ष निकलता है जो संपूर्ण मसीही धर्म को कमजोर करता है।

6) सामान्य से विशिष्ट तक

व्यापक सिद्धांत से विशिष्ट अनुप्रयोगों की ओर बढ़ना।

निर्गमन 20:13-16 (दस आज्ञाएँ) सामान्य सिद्धांत प्रदान करता है (**उदाहरण**: *"तू हत्या न करना"* (निर्गमन 20:13)), जिन्हें बाद में लैव्यव्यवस्था 24:17-21 में विशिष्ट अनुप्रयोगों के साथ विस्तारित किया गया है।

व्यापक सिद्धांत (जीवन के प्रति सम्मान) विशेष रूप से हत्या,

आकस्मिक हत्या या व्यक्तिगत चोट जैसी स्थितियों पर लागू होता है।

7) विशिष्ट से सामान्य

विशिष्ट उदाहरणों से सामान्य सिद्धांत निकालना।

मत्ती 22:37-40 में, यीशु ने व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं को परमेश्वर से प्रेम करने और दूसरों से प्रेम करने के सामान्य सिद्धांत के साथ सारांशित किया, जो व्यवस्थाविवरण 6:5 और लैव्यव्यवस्था 19:18 जैसी विशिष्ट आज्ञाओं से लिया गया है।

विशिष्ट आज्ञाओं को व्यापक सिद्धांतों में परिवर्तित किया जाता है।

8) तुलनात्मक समावेशन का सिद्धांत (क्रॉस-रेफ़रेंसिंग)

एक व्यापक या एकीकृत सिद्धांत को प्रकट करने के लिए समान विषयों या अंशों को मिलाना।

रोमियों 3:10-18 में, पौलुस ने पुराने नियम के कई संबंधित अंशों को जोड़ा (**उदाहरण:** भजन संहिता 14:1-3; यशायाह 59:7,8) ताकि सभी लोगों के पाप को दर्शाया जा सके।

इन संबंधित ग्रंथों को समूहीकृत करके, पौलुस एक सुसंगत बाइबल विषय को प्रदर्शित करता है।

9) प्रगतिशील प्रकाशन का सिद्धांत

अंत के अंश, पहले अंशों का विस्तृत रूप से स्पष्ट, या पूर्ण उल्लेख करते हैं।

इब्रानियों 10:1
क्योंकि व्यवस्था, जिसमें आनेवाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है पर उनका असली स्वरूप नहीं, इसलिये उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा जो प्रतिवर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आनेवालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकती।

पुराने नियम की बलिदान प्रणाली मसीह के अंतिम बलिदान की ओर इशारा करती है।

10) टाइपोलॉजी (प्रतीक और संकेत) का सिद्धांत

पुराने नियम में व्यक्तियों, घटनाओं या संस्थाओं को "प्रकार" के रूप में पहचानना नए नियम में भविष्य की वास्तविकताओं का पूर्वाभास देना है।

रोमियों 5:14
तौभी आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगों पर भी राज्य किया, जिन्होंने उस आदम, जो उस आनेवाले का चिह्न है, के अपराध के समान पाप न किया।

आदम को मसीह के एक प्रतीक के रूप में पहचाना जाता है, जो मानवता का प्रतिनिधित्व करता है, मसीह ने उस स्थान पर उद्धार लेकर आए जहाँ आदम पाप लेकर आया था।

11) प्रासंगिक प्रवाह (संदर्भ) का सिद्धांत

किसी अनुच्छेद के तात्कालिक और व्यापक संदर्भ को समझकर अर्थ निकालना।

फिलिप्पियों 4:13
जो मुझे सामर्थ्य देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।

संदर्भ में, यह सभी परिस्थितियों में संतोष को संदर्भित करता है जैसा कि फिलिप्पियों 4:11,12 में दर्शाया गया है। हम विशिष्ट से सामान्य (सभी परिस्थितियों में सभी बातों) की ओर बढ़ सकते हैं, मूल संदर्भ को ध्यान में रखते हुए, दिव्य सशक्तिकरण के इस सिद्धांत का विस्तार कर सकते हैं।

12) कारण और प्रभाव का सिद्धांत

वचनों मे निहित अर्थों को समझने के लिए वचनों में बताए गए कारण-और-प्रभाव के संबंधों को पहचानें।

गलातियों 6:7
धोखा न खाओ; परमेश्वर ठट्ठों में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा।

यह आत्मिक जीवन में कार्यों और उनके परिणामों के बीच कारण-और-प्रभाव के संबंध को उजागर करता है।

13) दो या अधिक का सिद्धांत

प्रत्येक विषय, सिद्धांत या सत्य को कम से कम दो या अधिक वचनों पर स्थापित किया जाना चाहिए।

2 कुरिन्थियों 13:1
अब तीसरी बार मैं तुम्हारे पास आता हूँ: दो या तीन गवाहों के मुँह से हर एक बात ठहराई जाएगी।

उत्पत्ति 41:32
और फ़िरौन ने जो यह स्वप्न दो बार देखा है इसका भेद यही है कि यह बात परमेश्वर की ओर से नियुक्त हो चुकी है, और परमेश्वर इसे शीघ्र ही पूरा करेगा।

विषय चाहे पाप का हो या न्याय के लिए हो (व्यवस्थाविवरण 19:15; 1 तीमुथियुस 5:19,20), कोई विवाद सुलझाना हो (मत्ती 18:16), कोई स्वप्न / भविष्यसूचक वचन पुष्टि के लिए हो, कोई शिक्षा ग्रहण करनी हो, कोई सत्य या सिद्धांत स्थापित करना हो, उसके लिए दो या अधिक गवाह / वचन होने चाहिए।

14) आनुपातिकता का सिद्धांत

यीशु मसीह के व्यक्तित्व, कार्य, और शिक्षा प्रत्येक के लिए प्रासंगिकता और महत्व के अनुपात में होना चाहिए, इस पर हमें बलपूर्वक ध्यान देना चाहिए।

मरकुस 7:9,13
9 उसने उनसे कहा, "तुम अपनी परम्पराओं को मानने के लिये परमेश्वर की आज्ञा कैसी अच्छी तरह टाल देते हो!
13 इस प्रकार तुम अपनी परम्पराओं से, जिन्हें तुम ने ठहराया है, परमेश्वर का वचन टाल देते हो; और ऐसे ऐसे बहुत से काम करते हो।"

मत्ती 23:24
हे अंधे अगुवो, तुम मच्छर को तो छान डालते हो, परंतु ऊँट को निगल जाते हो।

किसी सत्य या सिद्धांत की व्याख्या और वचनों के प्राथमिक फोकस पर बल देने के लिए इसकी प्रासंगिकता और महत्व अनुपात में होने चाहिये जो कि यीशु मसीह का व्यक्तित्व और कार्य, लोगों का क्रूस और उद्धार है। किसी एक वचन या अस्पष्ट विचार पर इस तरह बल नहीं दिया जाना चाहिए कि वह प्राथमिक महत्व की बात पर ध्यान केंद्रित न कर पाए।

15) मौन से तर्क

जो वचनों में स्पष्ट रूप से नहीं कहा गया है, उसके आधार पर निष्कर्ष निकालना।

इब्रानियों 7:3
जिसका न पिता, न माता, न वंशावली है, जिसके दिनों का न आदि है और न जीवन का अन्त है; परंतु परमेश्वर के पुत्र के स्वरूप ठहर कर वह सदा के लिये याजक बना रहता है।

मलिकिसिदक की वंशावली के बारे में चुप्पी का उपयोग मसीह के अनंतकालीन याजकीय तत्व के साथ समानताओं की ओर ले जाने के लिए किया जाता है।

अभ्यास:

इस अध्याय में दिए गए तर्क के 15 सिद्धांतों में से प्रत्येक के लिए, क्या आप पवित्रशास्त्र में से कम से कम दो उदाहरण सोच सकते हैं।

22
जब बाइबल चुप रहती है

ऐसे कई विषय हैं, कुछ सरल और कुछ जटिल हैं जिनके लिए हमें बाइबल के उत्तरों की आवश्यकता है। जबकि, इन विषयों का उल्लेख विशेष रूप से वचनों में नहीं किया गया है। जब बाइबल किसी विशेष विषय के बारे में चुप रहती है तो हम परमेश्वर के मन को कैसे जाने ?

इस अध्याय में, हम अपनी सोच को निर्देशित करने के लिए एक सरल रूपरेखा प्रदान कर रहे हैं, जहाँ हम वचनों में प्रकट की गई बातों को उन विषयों पर लागू कर सकते हैं जो पवित्रशास्त्र में विशेष रूप से नहीं बताए गए हैं।

1) परमेश्वर के व्यक्तित्व और स्वभाव से शुरू करें

ऐसे विषयों पर विचार करते समय, हमें सबसे पहले परमेश्वर के व्यक्तित्व और स्वभाव से आरंभ करना चाहिए जैसा कि पवित्रशास्त्र में प्रकट किया गया है, विशेष रूप से नए नियम में, जिसके अंतर्गत हम जीते हैं और जिसके अनुसार हम अपना व्यवहार करते है।

इसके अलावा, उन विषयों में जो अन्य लोगों, उनकी आवाज़ों और उनकी पसंद से संबंधित हैं, इस बात पर विचार करें कि पापियों के रूप में परमेश्वर हमारे साथ कैसा व्यवहार करता है।

- परमेश्वर मानव इच्छा की अवहेलना नहीं करता है। उसने आदम और हव्वा को नियंत्रित नहीं किया और उन्हें पाप करने से नहीं रोका।
- परमेश्वर सही और गलत क्या है, यह व्यक्त करता है और हमें सही

चुनने के लिए आमंत्रित करता है (व्यवस्थाविवरण 30:19)।

- परमेश्वर हमारे साथ तर्क करने के लिए तैयार है (यशायाह 1:18; यशायाह 43:26)।
- परमेश्वर सभी के साथ प्रेम और निष्पक्ष रहता है। (मत्ती 5:43-45)।
- परमेश्वर अपने आप से समझौता नहीं करता। वह सत्य, पवित्र, न्यायी और प्रेमी है। वह अपने प्रेम में, अपनी पवित्रता से समझौता नहीं करता। अपनी कृपा में, वह अपनी सच्चाई से समझौता नहीं करता।

2) संबंधित वचनों पर विचार करें

जब किसी विषय पर विशेष रूप से बोलने वाले वचन नहीं होते तब, हम देख सकते हैं कि क्या ऐसे वचन हैं जो समान या संबंधित विषयों पर बात करते हैं, या वचन में कोई सामान्य निर्देश या प्रकाशन है जो प्रासंगिक होगा।

3) सर्वोत्तम निर्णय का उपयोग करें

हम परमेश्वर के व्यक्तित्व और स्वभाव से संबंधित, वचन की अपनी समझ को जोड़ते हैं और फिर उस पर अपना सर्वोत्तम निर्णय लागू करते हैं। हम पिछले अध्याय में बताए गए तर्क के सिद्धांतों का उपयोग करते हैं। जब दूसरे लोग सम्मिलित होते हैं, तब हमें परमेश्वर के प्रेम में चलकर, न्यायपूर्ण, निष्पक्ष और अच्छा काम करना चाहिए, और सत्य या धार्मिकता के लिए अपने रुख से समझौता किए बिना व्यक्तिगत रूप से उनकी पसंद का सम्मान करना चाहिए।

यहाँ कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

सिगरेट पीना

बाइबल विशेष रूप से सिगरेट पीने के बारे में नहीं बताती है।

चिकित्सा के दृष्टिकोण से, हम समझते हैं कि धूम्रपान हमारे शरीर के लिए हानिकारक है। हम संबंधित वचनों से अवगत हैं जो हमें सिखाते हैं कि हमारा शरीर परमेश्वर का मंदिर है। हमें अपने शरीर को नष्ट नहीं करना चाहिए। हमें अपने शरीर को सम्मान में, पवित्र बर्तन के रूप में रखना चाहिए (1 कुरिन्थियों 3:16,17; 1 कुरिन्थियों 6:19; 2 तीमुथियुस 2:19-21)। इस तर्क के आधार पर, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि विश्वासियों के रूप में, हमें सिगरेट पीने से बचना चाहिए।

टैटू (गोदना)

टैटू के बारे में बाइबल क्या कहती है? क्या एक विश्वासी के लिए टैटू बनवाना ठीक है?

पुराने नियम में ऐसे कई संदर्भ हैं जहाँ परमेश्वर ने काटने, निशान बनाने या टैटू न बनाने की बात कही है। लैव्यव्यवस्था 19:24-37; व्यवस्थाविवरण 14:1; यिर्मयाह 16:6; यिर्मयाह 41:5।

लैव्यव्यवस्था 19:28
मुर्दों के कारण अपने शरीर को बिलकुल न चीरना, और न उसमें छाप लगाना; मैं यहोवा हूँ।

परमेश्वर ने शरीर को अप्राकृतिक रूप से विकृत करने—काटने, निशान बनाने, टैटू बनाने पर रोक लगाई है। इनमें से कुछ अन्य जनजातियों द्वारा मृतकों के लिए शोक मनाने या अपने देवताओं की उपासना करने के संकेत के रूप में किए जाते थे। ऐसे काम न करने का मूल कारण यह था कि परमेश्वर नहीं चाहता था कि उसके लोग मृतकों के लिए शोक व्यक्त करने या झूठे देवताओं की उपासना करने के समान तरीके अपनाएँ। ध्यान रखें कि लोग झुमके और नाक की नथनियाँ पहनते थे, जिन्हें संभवतः उनके शरीर में छेद करके डाला जाता था। साथ ही, खतने की प्रथा में त्वचा को काटना (अपने शरीर पर निशान बनाना) सम्मिलित था, किन्तु यह परमेश्वर के प्रति श्रद्धा में

किया जाता था।

हमारे समकलीन संसार में, ऐसे कई कारण हैं जिनसे कोई व्यक्ति अपनी त्वचा पर टैटू बनवाना चुन सकता है जैसे कि आत्म-अभिव्यक्ति, किसी घटना या व्यक्ति की स्मृति, विश्वासों की अभिव्यक्ति, पहचान, किसी समूह से संबंधित होना, फैशन, स्टेटस सिंबल, कभी-कभी अपनी त्वचा पर किसी निशान को छिपाने के लिए और अन्य कारण। इनमें से अधिकतर टेटुओं का देवताओं की उपासना से कोई लेना-देना नहीं है।

आइये हम हम उन सिद्धांतों को लागू करें जो हमने सीखे हैं और एक तार्किक निष्कर्ष पर पहुँचें हैं।

नया नियम टैटू के बारे में कुछ भी विशेष रूप से नहीं बताता है। नए नियम में, हमें अपने शरीर में परमेश्वर की महिमा करने का निर्देश है, जिसे परमेश्वर ने खरीदा है और अब इसमें पवित्र आत्मा की उपस्थिति है (1 कुरिन्थियों 6:19,20)। यह व्यक्तिगत विश्वास एवं आस्था पर निर्भर करता है कि वह अपने शरीर में, टैटू के साथ या उसके बिना, धार्मिकता से जीवन जीते हुए, परमेश्वर की महिमा करे।

हम व्यक्तिगत रूप से उन विश्वासी लोगों का न्याय या निंदा नहीं करते, जिनके पास टैटू हैं। यदि हम पुराने नियम की व्यवस्था के आधार पर सभी प्रकार के टैटू को पाप घोषित करते हैं, तो हमें पुराने नियम के नियमों की अन्य सभी आवश्यकताओं को भी लागू करना चाहिए, जिसमें आहार प्रतिबंध, औपचारिक प्रथाएँ, सांस्कृतिक प्रथाएँ शामिल हैं, जैसे कि ...

- *"कोई स्त्री-पुरुष का पहिरावा न पहिने, और न कोई पुरुष स्त्री का पहिरावा पहिने; क्योंकि ऐसे कामों के सब करनेवाले तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में घृणित हैं"* (व्यवस्थाविवरण 22:5)

- *"याजक-सिर पर सन की सुन्दर टोपियाँ पहिनें और कमर में सन की जाँघिया बाँधे हों; किसी ऐसे कपड़े से वे कमर न बाँधें जिस से पसीना होता है"* (यहेजकेल 44:18)
- *"याजक-न तो अपने सिर मुँड़ाएँ, और न अपने गाल के बालों को मुँड़ाएँ, और न अपने शरीर चीरें"* (लैव्यव्यवस्था 21:5)
- *"एक पुजारी-किसी विधवा, या त्यागी हुई, या भ्रष्ट, या वेश्या हो, ऐसी किसी से वह विवाह न करे, वह अपने ही लोगों के बीच में की किसी कुँवारी कन्या से विवाह करे"* (लैव्यव्यवस्था 21:14)

हम पहले ही स्थापित कर चुके हैं कि नए नियम के विश्वासियों के रूप में, हम व्यवस्था के अंतर्गत दिए गए अनुष्ठानिक प्रथाओं को जारी नहीं रखते।

अतः, हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि नए नियम नियम के अनुसार हमारे लिए परमेश्वर का हृदय और मन होगा ...

हम किसी ऐसे व्यक्ति के बारे मे निर्णय नहीं ले सकते कि, जिसके पास टैटू है, जिसे परमेश्वर नापसंद करता है। कई बार एक व्यक्ति अविश्वासी के रूप में अपनी त्वचा पर टैटू बनवा सकता है। बाद में, वे यीशु मसीह में विश्वासी बन जाते हैं। उनके लिए विश्वासी बनने से पहले उनके द्वारा बनाए गए टैटू को हटाना व्यावहारिक रूप से संभव नहीं है। वे प्रार्थना करते हैं और पुनः विश्वास के साथ—आत्मा, प्राण, शरीर—को यीशु मसीह के प्रभुत्व के लिए समर्पित करते हैं। जबकि टैटू बने रह सकते हैं, वे पूरी तरह से प्रभु के हैं (1 कुरिन्थियों 6:20)। हमें सिर्फ़ उनके टैटू होने के कारण उन्हे नीची नज़र से नहीं देखना चाहिए।

यह प्रत्येक विश्वासी के लिए व्यक्तिगत पसंद और विश्वास का विषय है हम किसी ऐसे विश्वासी का न्याय नहीं करते जो टैटू बनवाता

है, उदाहरण के लिए क्रॉस, या बाइबल या कुछ ऐसा जिसके बारे में वे दृढ़ता से सोचते हैं। न ही हम दूसरे विश्वासियों के मुकाबले स्वयं को श्रेष्ठ समझते हैं, सिर्फ़ इसलिए कि हमारे पास टैटू नहीं है।

आनुवंशिक शोध और अन्य प्रगति

बाइबल इस विषय पर विशेष रूप से बात नहीं करती, क्योंकि यह प्रत्यक्ष रूप से स्पष्ट है, बाइबल के समय में यह ज्ञान उपस्थित नहीं था। उत्पत्ति 30:25-43 में याकूब के बारे में एक अभिलेख है, जो मवेशियों के प्रजनन के समय यह सुनिश्चित करने के लिए कुछ करता था कि उसे बहुत स्वस्थ्य और शक्तिशाली पशु मिलें। याकूब ने जो किया उसमें कुछ भी वैज्ञानिक नहीं दिखाई पड़ता और हम इसे परमेश्वर की आशिष मान सकते हैं कि उसके द्वारा पाली जा रही बकरियों और मेमनों के वर्ग में अधिक शक्तिशाली पशु पैदा हुए थे। तब, जब आधुनिक विज्ञान, आनुवंशिकी और जीन एडिटिंग में किए जा रहे शोध और काम और चिकित्सा, कृषि और जैव प्रौद्योगिकी में उनके अनुप्रयोगों की बात आती है तो हमारी प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए? शोध के इस क्षेत्र में आनुवंशिक विकारों के उपचार, कैंसर के उपचार, संक्रामक रोगों से लड़ने, पुनर्योजी चिकित्सा, फार्माकोजेनोमिक्स, आनुवंशिक रोगों की रोकथाम, जीन थेरेपी, रोग प्रतिरोधी फसलों का उत्पादन, पशुधन सुधार आदि में इसका प्रयोग किया गया है।

जबकि, नैतिक, सुरक्षा, पहुंच और विनियमन विषयों में अब भी गंभीर चिंताएं बाकी हैं। जबकि यह एक ऐसा क्षेत्र है जिस पर तर्क वितर्क और चर्चा होनी चाहिए, इस बारे में सोचने में हमारी सामान्य रूपरेखा इस प्रकार होगी ...

- यह पहचानें कि इन जैविक विवरणों पर शोध करने और उन्हें समझने की हमारी क्षमता परमेश्वर की ओर से एक वरदान है (यशायाह 28:23-29; नीतिवचन 8:12),

- यह पहचानें कि हम संसाधनों और ज्ञान के प्रबंधक हैं ताकि उनका उपयोग सभी के लाभ और भलाई के लिए किया जा सके (भजन संहिता 115:16; मत्ती 5:43-45),
- हानिकारक तकनिकियों एवं रीतियों से किए जाने वाले प्रयोगों पर ऐसे प्रतिबंध लगाएं जो इन प्रौद्योगिकियों को विनियमित और नियंत्रित कर सके (नीतिवचन 6:16-19),
- परमेश्वर को सारी सृष्टि के सृष्टिकर्ता एवं निर्माता और स्वामी के रूप में सम्मान दें (यशायाह 40:13-15,25-27; यिर्मयाह 9:23,24)।

बाइबल के दृष्टिकोण से विचार और तर्क के लिए एक समरूप रूपरेखा अंतरिक्ष यात्रा, जलवायु परिवर्तन, सृष्टि की देखभाल / पर्यावरण की देखभाल आदि के साथ-साथ वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के अन्य क्षेत्रों में भी लागू की जा सकती है।

23
परमेश्वर के वचन को लागू करना

परमेश्वर हमें सिर्फ़ वचन को सुनने वाले नहीं, बल्कि वचन पर अमल करने वाले बनने के लिए आमंत्रित करता है। हमें परमेश्वर के वचन के अनुसार जीना है, और यह एक आदर्श या मानक होना चाहिए। हम पुराने और नए नियम दोनों में परमेश्वर के वचन को अपने जीवन में लागू करने के इस आह्वान का पालन करते हैं।

व्यवस्थाविवरण 4:5-9

5 सुनो, मैं ने तो अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार तुम्हें विधि और नियम सिखाए हैं, कि जिस देश के अधिकारी होने जाते हो उसमें तुम उनके अनुसार चलो।
6 इसलिये तुम उनको धारण करना और मानना; क्योंकि और देशों के लोगों के सामने तुम्हारी बुद्धि और समझ इसी से प्रगट होगी, अर्थात् वे इन सब विधियों को सुनकर कहेंगे, कि निश्चय यह बड़ी जाति बुद्धिमान और समझदार है।
7 देखो, कौन ऐसी बड़ी जाति है जिसका देवता उसके ऐसे समीप रहता हो जैसा हमारा परमेश्वर यहोवा, जब कि हम उस को पुकारते हैं?
8 फिर कौन ऐसी बड़ी जाति है जिसके पास ऐसी धर्ममय विधि और नियम हों, जैसी कि यह सारी व्यवस्था जिसे मैं आज तुम्हारे सामने रखता हूँ?
9 "यह अत्यन्त आवश्यक है कि तुम अपने विषय में सचेत रहो, और अपने मन की बड़ी चौकसी करो, कहीं ऐसा न हो कि जो जो बातें तुम ने अपनी आँखों से देखीं उनको भूल जाओ, और वह जीवन भर के लिये तुम्हारे मन से जाती रहें; किन्तु तुम उन्हें अपने बेटों पोतों को सिखाना।

व्यवस्थाविवरण 6:4-9

4 "हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है;
5 तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना।
6 और ये आज्ञाएँ जो मैं आज तुझ को सुनाता हूँ वे तेरे मन में बनी रहें;

[7] और तू इन्हें अपने बाल–बच्चों को समझाकर सिखाया करना, और घर में बैठे, मार्ग पर चलते, लेटते, उठते, इनकी चर्चा किया करना।
[8]और इन्हें अपने हाथ पर चिह्न के रूप में बाँधना, और ये तेरी आँखों के बीच टीके का काम दें।
[9] और इन्हें अपने अपने घर के चौखट की बाजुओं और अपने फाटकों पर लिखना।

याकूब 1:22-25
[22] परंतु वचन पर चलनेवाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं।
[23] क्योंकि जो कोई वचन का सुननेवाला हो और उस पर चलनेवाला न हो, तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना स्वाभाविक मुँह दर्पण में देखता है।
[24] इसलिये कि वह अपने आप को देखकर चला जाता और तुरन्त भूल जाता है कि वह कैसा था।
[25] पर जो व्यक्ति स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता है, वह अपने काम में इसलिये आशीष पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं पर वैसा ही काम करता है।

परमेश्वर के वचन को लागू करने (करने) के बाद परमेश्वर के वचन की व्याख्या (समझ) होनी चाहिए।

बाइबल की सच्चाई की गलत व्याख्या, गलत समझ या गलत तरीके से लागू किए जाने के गंभीर परिणाम हो सकते हैं।

लागू करने के लिए दिशा-निर्देश

1) सही व्याख्या को लागू कीजिए

पहले, सही रूप से व्याख्या करें, फिर वचन को लागू करें। वचन की सही व्याख्या करने के लिए सहायक वचनों की व्याख्या इस पुस्तक में दिए गए व्याख्यात्मक सिद्धांतों का पालन करें।

2) वर्तमान सत्य को लागू करें

किसी भी विषय वस्तु के लिए, विचार करें कि वचनों में दिए गए उस

समय के तात्कालिक प्रकाशन / निर्देश / शिक्षा हैं। हम उसी के अनुसार जीते हैं। **उदाहरण:** सब्त का पालन करना।

3) उसी के साथ बने रहें, जो अच्छे से समझा जा सके

अस्पष्ट और कठिन अंशों को वचनों में स्पष्ट, प्रत्यक्ष और निश्चित प्रकाशन पर हावी न होने दें। **उदाहरण:** अय्यूब की सुरक्षा का घेरा बनाम शैतान की पराजय और विश्वासी के अधिकार के बारे में नए नियम की सच्चाई। भले ही हमें अय्यूब के चारों ओर परमेश्वर की सुरक्षा का घेरा (बाड़ा) और इसे क्यों उठाया गया, इस बारे में स्पष्ट समझ न हो, हम इस सच्चाई के अनुसार जीते हैं कि हम नए नियम के विश्वासियों के रूप में क्रूस पर यीशु मसीह के पूर्ण कार्य में जी रहे हैं। हमारे लिए, शैतान एक पराजित शत्रु है। हमें युद्ध के हथियार और विजयी जीवन जीने के लिए परमेश्वर के आत्मिक हथियार दिए गए है।

4) यीशु मसीह में परमेश्वर द्वारा दिए गए प्रकाशन के साथ जुड़े रहें

यीशु मसीह अनंतकालीन वचन है जो देहधारी वचन बने, वचन ही वह प्रकाशन या उजागरण है जिसके अनुसार हम जीते हैं। वह सत्य है। उसके साथ आरंभ करें और उसे सभी बाइबल प्रकाशन और व्याख्या के केंद्र के रूप में रखें। यदि कोई यीशु ने जो कुछ कहा और किया है, उससे सहमत नहीं है, तो यीवह शु ने जो कहा और किया, उसके अनुसार बना रहे।

5) आज के लिए परमेश्वर के काम करने की रीतियों को निर्धारित करें

वर्तमान पाठकों द्वारा अध्याय के मूल श्रोताओं के साथ साझा की गई बातों पर आधारित अनुप्रयोग। पहचानें कि विभिन्न युगों में परमेश्वर के कार्य किस प्रकार अलग-अलग होते हैं। उदाहरण के लिए, सेवा के लिए, हम समकालीन रीतियों, उपकरणों और तकनीकों का उपयोग करते हैं क्योंकि हम परमेश्वर के कालातीत, अपरिवर्तनीय

और अनंतकालीन वचन की घोषणा करते हैं। हमें बाइबल में इन समकालीन रीतियों, सामग्रियों और तकनीकों का उल्लेख नहीं मिलेगा, परंतु हम समझते हैं कि परमेश्वर अलग-अलग पीढ़ियों और युगों में कैसे काम करता है।

6) पवित्र आत्मा पर भरोसा करें

पवित्र आत्मा हमारा शिक्षक है और वह हमें ज्ञान और मार्गदर्शन देगा ताकि हम यह दिखा सकें कि हम रोज़मर्रा की ज़िंदगी में परमेश्वर के वचन को अपनी विशिष्ट स्थितियों में कैसे लागू करें।

परमेश्वर ने हमें अपने वचन के साथ क्या करने का निर्देश दिया है

1) वचन का अध्ययन करें
2) वचन पर मनन करें
3) वचन पर विश्वास करें
4) वचन बोलें
5) वचन का अभ्यास करें (उसके अनुसार जिएँ)
6) वचन सिखाएँ।

24
कठिन विषय

अब हम इस पुस्तक में विकसित व्याख्यात्मक रूपरेखा को कुछ सामान्य और कभी-कभी कठिन प्रश्नों पर लागू करते हैं। आगे के अध्ययन और परीक्षा के लिए मार्गदर्शक के रूप में कार्य करने के लिए रूपरेखा / संक्षेप में उत्तर प्रदान किए गए हैं। साथ ही, सामान्य प्रश्नों के बाइबल आधारित उत्तरों की निरंतर सूची के लिए कृपया हमारी चर्च वेबसाइट **apcwo.org/answers** देखें।

क्या यीशु परमेश्वर हैं?

यीशु ने कहा कि वह परमेश्वर है। यह उनके श्रोताओं द्वारा स्पष्ट रूप से समझा गया था और यह उनके द्वारा उन्हें क्रूस पर चढ़ाए जाने के प्राथमिक कारणों में से एक था (यूहन्ना 8:58; यूहन्ना 10:30-33; यूहन्ना 17:5; प्रकाशितवाक्य 1:8)।

पुराने नियम में परमेश्वर द्वारा प्रयुक्त "प्रथम और अंतिम" शीर्षक का उपयोग नए नियम में यीशु द्वारा किया गया था (यशायाह 41:4; यशायाह 44:6; यशायाह 48:12; प्रकाशितवाक्य 1:17; प्रकाशितवाक्य 2:8; प्रकाशितवाक्य 22:13)।

पुराने नियम में कहा गया है कि वह परमेश्वर है (यशायाह 9:6; मीका 5:2)।

नए नियम में कहा गया है कि वह परमेश्वर है (यूहन्ना 1:1-4; यूहन्ना 1:30; रोमियों 9:5; फिलिप्पियों 2:6; 1 तीमुथियुस 3:16)।

त्रिएकत्व

बाइबल परमेश्वर को तीन व्यक्तियों में एक परमेश्वर के रूप में प्रस्तुत करती है—परमेश्वर पिता, परमेश्वर अनंत वचन, परमेश्वर पवित्र आत्मा। वे अलग-अलग व्यक्ति हैं। वे एक समान हैं। ईश्वरत्व का प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण रूप से ईश्वरत्व का प्रतिनिधित्व करता है। ईश्वरत्व के किसी भी व्यक्ति की आराधना करना ईश्वरत्व की आराधना करना है।

पिता परमेश्वर है। यीशु परमेश्वर है। पवित्र आत्मा परमेश्वर है। पिता एक तिहाई परमेश्वर नहीं है। यीशु एक तिहाई परमेश्वर नहीं है। पवित्र आत्मा एक तिहाई परमेश्वर नहीं है। ईश्वरत्व का प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण रूप से ईश्वरत्व का प्रतिनिधित्व करता है। पिता परमेश्वर है और पूर्ण रूप से ईश्वरत्व का प्रतिनिधित्व करता है। यीशु, अनंत वचन है और पूर्ण रूप से परमेश्वर है और पूर्ण रूप से ईश्वरत्व का प्रतिनिधित्व करता है। पवित्र आत्मा पूर्ण रूप से परमेश्वर है और पूर्ण रूप से ईश्वरत्व का प्रतिनिधित्व करता है।

रोमियों 1:20 सिर्फ यहाँ उपयोग किए गए यूनानी शब्द *'थिओटेस'* का अनुवाद "ईश्वरत्व, दिव्यता, दिव्य प्रकृति" किया गया है।

दानिय्येल 7:13,14 दानिय्येल में पवित्र आत्मा कार्य कर रहा था और उसे दर्शन दे रहा था जिसमें उसने पिता परमेश्वर (प्राचीन काल) और मनुष्य के पुत्र (अनन्त वचन, यीशु मसीह) को देखा।

प्रेरितों के काम 7:55,56 पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्तिफनुस ने सिंहासन पर पिता परमेश्वर की महिमा को और पिता के दाहिने हाथ पर मनुष्य के पुत्र (अनन्त वचन यीशु) को देखा।

प्रकाशितवाक्य 1:4,5 पिता परमेश्वर (वह जो था, और जो है और जो आने वाला है), पवित्र आत्मा परमेश्वर (सात आत्माएँ जो उसके सिंहासन के सामने हैं), और पुत्र परमेश्वर यीशु मसीह।

प्रकाशितवाक्य 4:2-5; प्रकाशितवाक्य 5:5,6 परमेश्वर पिता (सिंहासन पर बैठा हुआ), परमेश्वर पवित्र आत्मा (आग के सात दीपक जो परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं), परमेश्वर के पुत्र (यहूदा के गोत्र का सिंह, दाऊद की जड़, मेमना)।

परमेश्वर का पुत्र, सृष्टि का आरंभ, पहिलौठा,एकलौता

हम यीशु मसीह के लिए अलग-अलग उपाधियों को कैसे समझते हैं—परमेश्वर का पुत्र, पहिलौठा, पहला जन्मा (एकमात्र जन्मा, एकलौता), आदि?

परमेश्वर का पुत्र

हम "परमेश्वर का पुत्र" की उपाधि को कैसे समझते हैं? परमेश्वर अनंत वचन था (और है), पिता और पवित्र आत्मा के समान। एक मानव देह में प्रकट होने में, अनंत वचन ने अपनी ईश्वरत्व, सर्वज्ञानी, सर्वव्यापी, और सर्वशक्तिमान होने की अपनी शक्तियों को त्याग कर एक मनुष्य के रूप में—एक मांस और लहू का शरीर धारण किया। वह पवित्र आत्मा के अभिषेक में एक मनुष्य के रूप में चला और एक पुत्र के रूप में परमेश्वर पिता के अधीन रहा। उन्होंने परमेश्वर होना या ईश्वरत्व का भाग होना बंद नहीं किया। वे परमेश्वर थे / हैं, किन्तु अपने सांसारिक जीवन में, उन्होंने स्वयं को मानवता तक सीमित रखा। इस देहधारी को परमेश्वर का पुत्र कहा जाता था / जाता है, जो पिता के सामने पुत्र के रूप में उनके चलने का संदर्भ देता है। *"मैं उसका पिता हूँगा, और वह मेरा पुत्र होगा?"* (इब्रानियों 1:5, यूहन्ना का सुसमाचार देखें)। उनके पुनरुत्थान के बाद, उनका शरीर एक पुनर्जीवित शरीर बन गया, जो एक स्वर्गीय आत्मिक पदार्थ का एक अलग, अमर, अविनाशी 'मांस और हड्डी' का शरीर था। उन्होंने प्रभु के रूप में अपनी शक्तियाँ ग्रहण कीं और अब पिता के दाहिने हाथ पर बैठे हैं। इस महिमामय शरीर में, ईश्वरत्व की पूर्णता, शारीरिक रूप से निवास करती है (कुलुस्सियों 2:9)। उनके सांसारिक जीवन के दौरान उन्हें दी गई सभी उपाधियाँ

अब भी लागू हैं। वह अब भी अच्छा चरवाहा, परमेश्वर का मेमना, मनुष्य का पुत्र, परमेश्वर का पुत्र है।

सष्टि का आरंभ

"जो आमीन और विश्वासयोग्य और सच्चा गवाह है, और परमेश्वर की सृष्टि का मूल कारण है: आमीन," (प्रकाशितवाक्य 3:14)।

"आरंभ" ग्रीक *'आर्क'*

"परमेश्वर की सृष्टि का आरंभ" दो रीतियों से समझा जाना चाहिए।

1) आरंभ, मूल, जिसके द्वारा कुछ भी होना आरंभ होता है, मूल, सक्रिय कारण। यह यीशु है, जिसने सभी वस्तुओं को आरंभ से ही बनाना शुरू किया, जिसके द्वारा, जिसके लिए और जिसके माध्यम से सभी वस्तुएं अस्तित्व में आईं (यूहन्ना 1:3; इफिसियों 3:9; कुलुस्सियों 1:15-18; इब्रानियों 1:2)।
2) पहला स्थान, प्रधानता, शासन, न्याय, सर्वोच्च अधिकारी। यीशु सर्वोच्च स्थान पर है और सभी सृष्टि का सर्वोच्च अधिकारी है।

इसका अर्थ यह नहीं हो सकता कि यीशु परमेश्वर द्वारा बनाया जाने वाला पहला व्यक्ति था, क्योंकि यीशु एक अनिर्मित, अनंतकालीन (अनंत), स्वयं-अस्तित्व वाला है और परमेश्वर है (यूहन्ना 1:1,2; यूहन्ना 5:26)।

पहलौठा, इकलौता

हम यीशु को दिए गए "पहलौठा" और "इकलौता" शब्दों या उपाधियों को कैसे समझते हैं?

यहाँ कुछ रीतियां दी गई हैं जिनके द्वारा यह उपाधियाँ यीशु के लिए उपयोग में लाई की जाती हैं।

- सारी सृष्टि में पहलौठा (कुलुस्सियों 1:15)

- संसार में पहलौठा (इब्रानियों 1:6)
- बहुत से भाइयों में पहलौठा (रोमियों 8:29)
- मृत्यू में से जी उठने वालों में पहलौठा (कुलुस्सियों 1:18; प्रकाशितवाक्य 1:5)
- पहलौठों की कलीसिया का मुखिया (इब्रानियों 12:23)

इन तथ्यों को निम्नलिखित के संबंध में समझा जाना चाहिए:

- पिता का एकलौता पुत्र (यूहन्ना 1:14)
- एकलौता पुत्र (यूहन्ना 1:18)
- उसका एकलौता पुत्र (यूहन्ना 3:16; 1 यूहन्ना 4:9)
- परमेश्वर का एकलौता पुत्र (यूहन्ना 3:18)
- तू मेरा पुत्र (भजन संहिता 2:7; प्रेरितों के काम 13:33; इब्रानियों 1:5; इब्रानियों 5:5)

"पहिलौठा" (यूनानी *'प्रोटोटोकोस'*) का अर्थ है "परिवार में सबसे पहले जन्म लेनेवाला।"

"पहिलौठा" और "इकलौता" शब्दों को समझने के लिए, हमें यीशु मसीह के बारे में निम्नलिखित बातों को पहचानना चाहिए। यीशु मसीह ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो अनंतकालीन परमेश्वर है, जो ईश्वरत्व से, पिता और पवित्र आत्मा से आया, और सृष्टि का भाग बना (*सारी सृष्टि में पहिलौठा, दुनिया में पहिलौठा*), परमेश्वर के परिवार का भाग बना (*बहुत से भाइयों में पहिलौठा*), मानवता से ओतप्रोत और पुत्र (*इकलौते पुत्र)* के रूप में चला, ईश्वरत्व में सबसे पहला और एकमात्र मनुष्य बना जो सारी मानवता के लिए "मरा" और पुनर्जीवित हुआ (*मृतकों में से जी उठने वाला पहिलौठा, आज तू मेरा पुत्र है, मैंने तुझे जन्मा है*), और वह उस कलीसिया का मुखिया है जिसे उसने स्थापित किया, और उसमें

उसकी पहचान भी हुई (*पहिलौठे की कलीसिया*)।

इन तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि किस अर्थ में यीशु पहिलौठे और एकलौते पुत्र हैं। सारी सृष्टि सृजनात्मक कृत्यों द्वारा अस्तित्व में आई, न कि ईश्वरत्व का अनंतकालीन होने और ईश्वरत्व से उत्पन्न होने के द्वारा, जैसा कि यीशु के विषय में हुआ। यहाँ तक कि "बहुत से भाई" भी यीशु के समान उत्पन्न नहीं हुए। "बहुत से भाई" मानव परिवार में सृजित लोगों के रूप में पैदा हुए, और फिर पवित्र आत्मा से जन्म लेने पर, परमेश्वर के परिवार में लाए गए (गोद लिए गए) (रोमियों 8:14-16; गलातियों 4:5,6; इफिसियों 1:5)। लेकिन यीशु अलग हैं क्योंकि वे हमेशा से ईश्वरत्व का अनंत हिस्सा (अनंतकालीन भाग) रहे हैं और वे ईश्वरत्व से निकले थे ताकि वेमनुष्यों के परिवार में पहिलौठे हों, जिन्हें परमेश्वर का जीवन और स्वभाव दिया गया था। यीशु, अपनी मानवता में मरकर, मृतकों में से या मृत्यू में से जी उठने वालों में पहिलौठे हैं और सभी मनुष्यों के पुनरुत्थान का प्रथम फल भी बने (1 कुरिन्थियों 15:23-33; कुलुस्सियों 1:18; प्रकाशितवाक्य 1:5)।

विरोधाभासी सुसमाचार विवरण?

हमें सुसमाचारों में जो विरोधाभास प्रतीत होते हैं, उन्हें कैसे समझाएँ। यहाँ विचार करने के लिए कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

गदरेनियों के देश में दुष्टात्मा

मत्ती 8:28-34 (दो दुष्टात्मा ग्रस्त पुरुष); मरकुस 5:1-20 (एक पुरुष); लूका 8:26-39 (एक पुरुष)।

तार्किक सोच में **विरोधाभास का नियम** यह बताता है कि कोई चीज़ एक ही समय में हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती है या दोनों नहीं हो सकती हैं। *कोई भी अंतर तब तक विरोधाभास नहीं है जब तक कि वह इस नियम को संतुष्ट न करे*। उदाहरण के लिए, मान

लें कि जॉन और जिम आज सुबह 9 बजे मेरे कार्यालय में मुझसे मिले। बाद में दिन में, जब किसी से बातचीत होती है, तो मैं उन्हें बताता हूँ कि मैं जॉन से सुबह 9 बजे मिला था। फिर जब मैं किसी और से मिलता हूँ, तो मैं उन्हें बताता हूँ कि मैं जॉन और जिम से सुबह 9 बजे मिला था। ये दोनों कथन भिन्न है किन्तु दोनों सही हैं। वे विरोधाभास नहीं हैं। इसलिए, गदरेनियों के देश में दुष्टात्मा से ग्रसित एक पुरूष के बारे में हम इस तरह से समझते हैं। मत्ती दो लोगों को दर्शाता है जो कि विषय रहा होगा, जबकि मरकुस और लूका मुख्य रूप से दो पुरुषों में से एक के साथ बातचीत पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि दोनों पुरुषों को छुड़ाया गया और मुक्त किया गया।

सेंचुरियन और कुलीन व्यक्ति

मत्ती 8:5-13 और यूहन्ना 4:46-54

जबकि ये दोनों घटनाएँ समान प्रतीत होती हैं, स्पष्ट अंतर हैं और इसलिए, ये भिन्न भिन्न घटनाएँ हैं।

- **मत्ती 8:5-13** यह कफरनहूम में हुआ, एक रोमी सूबेदार, एक लकवा ग्रस्त सेवक, यीशु ने उसके घर जाने की इच्छा व्यक्त की।
- **यूहन्ना 4:46-54** गलील के काना में हुआ, कफरनहूम के एक कुलीन व्यक्ति को यीशु ने अपने बीमार बेटे को घर जाकर अपने बेटे के स्वस्थ होने की घोषणा करने के लिए कहा।

यीशु के तीन अभिषेक का उल्लेख

1) एक अज्ञात स्त्री ने शमौन फरीसी के घर पर यीशु के चरणों का अभिषेक किया

यह संभवतः गलील में, शायद नाईन शहर में हुआ था (लूका 7:36-50)। यहाँ इस महिला ने यीशु के पैरों को अपने आँसूओं से भिगोया, उन्हें अपने बालों से पोंछा, उन्हें चूमा, और एक संगमरमर के पात्र में

रखे इत्र को लेकर उसके पैरों पर मला।

2) बैतनिय्याह की मरियम द्वारा यीशु के चरणों का अभिषेक

लाजर के घर में फसह से छह दिन पहले यीशु के पैरों का अभिषेक किया (यूहन्ना 12:1-9)। यीशु शुक्रवार की रात वहीं सोया और आखिरी सब्त आराम से बिताया और सूर्यास्त के समय, जब सब्त समाप्त हुआ, तो रात का खाना परोसा गया। मार्था और लाजर की बहन मरियम ने यीशु के पैरों पर कीमती इत्र लगाया और अपने बालों से उन्हें पोंछा।

3) एक अनजान स्त्री ने बैतनिय्याह में यीशु के सिर पर इत्र लगाया।

फसह से दो दिन पहले बैतनिय्याह में शिमौन कोढ़ी के घर में (मरकुस 14:1-9; मत्ती 26:6-13)। इस वृत्तांत में, एक अज्ञात स्त्री ने संगमरमर के पात्र में बहुमूल्य इत्र लेकर यीशु के सिर पर उंडेल दिया, जब वह मेज की और झुका हुआ था। यीशु ने कहा कि *"मैं तुम से सच कहता हूँ, कि सारे जगत में जहाँ कहीं यह सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहाँ उसके इस काम का वर्णन भी उसके स्मरण में किया जाएगा।"* (मत्ती 26:13)।

क्रूस पर क्या लिखा था?

एक दूसरे का विरोध करने के बजाय पूरक ग्रंथों की तुलना कैसे की जाए, इसका एक अच्छा उदाहरण रोमी हाकिम पिलातुस द्वारा लिखे गए शब्दों में मिलता है, जिन्हें उसने यीशु के क्रूस पर चढ़ने के समय लिखा था।

मत्ती 27:37 में लिखा है, **"यह यहूदियों का राजा यीशु है।"**

मरकुस 15:26 में लिखा है, **"यहूदियों का राजा।"**

लूका 23:38 में लिखा है, **"यह यहूदियों का राजा।"**

यूहन्ना 19:19 में लिखा है, **"नासरत का यीशु, यहूदियों का राजा।"**

पहली नज़र में ऐसा लग सकता है कि लेखकों में से किसी ने भी तख्ती पर लिखे शब्दों को ठीक से नहीं उतारा (कॉपी) किया। किन्तु, जब हम प्रत्येक विवरण को पढ़ते हैं, तो हम पाते हैं कि हर कोई बाकी जानकारी में थोड़ी और जानकारी जोड़ता है। यूहन्ना द्वारा, ज्ञात होता हैं कि पिलातुस ने लिखा था। लूका से, हमें अतिरिक्त जानकारी मिलती है कि ये शब्द अलग क्यों हैं—तख्ती पर मूल रूप से तीन भाषाओं, ग्रीक, लैटिन और हिब्रू (लूका 23:38) में लिखा गया था। इसलिए, शब्दों की भिन्नता तार्किक रूप से उपयोग की गई तीन भाषाओं के साथ-साथ प्रत्येक जीवनी लेखक के भिन्न दृष्टिकोण से प्रत्येक जीवनीकार के अलग-अलग दृष्टिकोण से संबंधित हो सकती है, जो मसीह के जीवन और सेवकाई के कुछ भिन्न दृष्टिकोणों पर बल देती है।

विभिन्न लेखों में शब्दों को जोड़ते हुए, हम देखते हैं कि संकेतों द्वारा अभिलेखित किया गया पूरा संदेश था **"यह नासरत का यीशु है, यहूदियों का राजा।"**

सुसमाचार के किसी भी लेख में दूसरे लेखों का खंडन नहीं है; वे अधिक समझ प्रदान करने के लिए एक दूसरे के पूरक हैं।

क्या यीशु ने क्रूस पर खट्टा सिरका पीया था?

मत्ती 27:34
उन्होंने पित्त मिलाया हुआ दाखरस उसे पीने को दिया, परंतु उसने चखकर पीना न चाहा।

यूहन्ना 19:30
जब यीशु ने वह सिरका लिया, तो कहा, “पूरा हुआ”; और सिर झुकाकर प्राण त्याग दिए।

हम सुसमाचारों में उल्लेखित घटनाओं के अनुसार ये दो भिन्न भिन्न घटनाएँ हैं। एक, सूली पर चढ़ने की शुरुआत में, यीशु को पित्त

मिलाया हुआ दाखरस दिया गया था, जिसका उद्देश्य व्यक्ति को सुन्न करना था ताकि उन्हें दर्द महसूस न हो। जिसे यीशु ने पीने के लिए मना कर दिया। उन्होंने पीड़ा को सहा। इसके उपरांत, क्रूस पर अपने अंत समय में (लगभग 6 घंटे बाद), उन्होंने कहा कि उन्हें प्यास लगी है। उन्होंने अपनी प्यास बुझाने के लिए पानी की इच्छा व्यक्त की होगी और अपनी जीत की अंतिम पुकार, "यह पूरा हो गया है" इसकी घोषणा करने केलिए स्वयं को तैयार किया होगा। इस बिंदु पर, उन्हें कुछ दाख रस दिया गया,जिसे उन्होंने सिर्फ अपनी प्यास बुझाने और क्रूस पर अपना अंतिम कथन कहने के लिए इसे पीया था।

सबसे बड़ा पाप—पिलातुस, यहूदा

यूहन्ना 19:8-12

8 जब पिलातुस ने यह बात सुनी तो और भी डर गया,
9 और फिर किले के भीतर गया और यीशु से कहा, "तू कहाँ का है?" परंतु यीशु ने उसे कुछ भी उत्तर न दिया।
10 इस पर पिलातुस ने उससे कहा, "मुझ से क्यों नहीं बोलता? क्या तू नहीं जानता कि तुझे छोड़ देने का अधिकार मुझे है और तुझे क्रूस पर चढ़ाने का भी मुझे अधिकार है?"
11 यीशु ने उत्तर दिया, "यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता; इसलिये जिसने मुझे तेरे हाथ पकड़वाया है उसका पाप अधिक है।"
12 इस पर पिलातुस ने उसे छोड़ देना चाहा, परंतु यहूदियों ने चिल्ला–चिल्लाकर कहा, "यदि तू इस को छोड़ देगा, तो तेरी भक्ति कैसर की ओर नहीं। जो कोई अपने आप को राजा बनाता है वह कैसर का सामना करता है।"

यीशु ने पहचाना कि पिलातुस को उसके स्थान पर रखा गया था और उसके पास वह अधिकार था जो उसके पास था क्योंकि परमेश्वर ने उसे दिया था। वह पिलातुस पर पड़ने वाले दबाव से भी अवगत था, और यह कि अंततः पिलातुस झूठ से दोषी ठहराए जाने वाले एक निर्दोष व्यक्ति (यीशु) को सूली पर चढ़ाए जाने के दबाव में आ जाएगा। यह निश्चित रूप से पिलातुस की ओर से अपने अधिकार का सही

प्रयोग न करने का पाप होगा। जबकि, यहूदा का विश्वासघात जिसके कारण यीशु को सबसे पहले पिलातुस के सामने लाया गया था, वह सबसे बड़ा पाप था। यहूदा को परमेश्वर ने 12 प्रेरितों में से एक के रूप में स्थान दिया था। उस विशेषाधिकार को त्यागना और इसके बजाय यीशु के विरुद्ध हो जाना सबसे बड़ा पाप था।

"महान " का अर्थ है "बड़ा"। सभी पाप परमेश्वर की महिमा के सामने छोटे हैं। सभी पाप एक ही दंड की ओर ले जाते हैं—मृत्यु (रोमियों 6:23)। जबकि, ऐसे पाप भी हैं जो पृथ्वी पर व्यक्ति(यों) के लिए उनके महत्व, प्रभाव और परिणाम में बड़े और महान हैं।

पूर्वनियति और मनुष्य की स्वतंत्र नैतिक क्रिया

हम पूर्वनियति और मनुष्य की स्वतंत्र नैतिक क्रियाओं को कैसे समझते हैं? क्या परमेश्वर मनुष्य के सभी विकल्पों को निश्चित करता है, निर्धारित करता है और निर्देशित करता है, विशेषतः अनंत जीवन के विषय में? या क्या यह व्यक्ति की व्यक्तिगत पसंद और उनकी स्वतंत्र इच्छा और नैतिक क्रियाओं का प्रयोग है जो यह निर्धारित करता है कि उन्हें परमेश्वर द्वारा अनंत जीवन का उपहार मिलेगा या नहीं? निःसंदेह यह गहन विवाद का विषय रहा है और आगे भी बना रहेगा।

इस विषय पर अध्ययन करने के लिए कुछ प्रमुख वचनों में रोमियों 8:28-30; रोमियों 9, रोमियों 11 और इफिसियों 1:5,11 का समावेश हैं।

इस पर विचार करने के लिए, हमारे पास दो धार्मिक धाराओं का संक्षिप्त विवरण होना चाहिए जो इस विषय पर दो अलग-अलग स्थितियों को रेखांकित करती हों।

कैल्विनवाद (कैल्विनिज्म) और आर्मिनियनवाद (अर्मिनियनिज्म)

कैल्विनवाद और आर्मिनियनवाद दो मुख्य धार्मिक दृष्टिकोण हैं जो

उद्धार के बारे में बात करते हैं। कैल्विनवाद का नाम धर्मशास्त्री जॉन कैल्विन (1509-1564) की शिक्षाओं के नाम पर रखा गया है। आर्मिनियनवाद का नाम धर्मशास्त्री जैकोबस आर्मिनियस (1559-1609) की शिक्षाओं के नाम पर रखा गया है। कैल्विनवादी दृष्टिकोण कुल भ्रष्टता, बिना शर्त चुनाव, सीमित प्रायश्चित, अप्रतिरोध्य अनुग्रह, संतों की दृढ़ता है। इसे **ट्यूलिप** में संक्षेपित किया गया है: आर्मिनियन दृष्टिकोण के लिए व्यापक रूप से कोई संगत संक्षिप्त नाम का उपयोग नहीं किया गया है।

कैल्विनवाद परमेश्वर की संप्रभुता और उद्धार के लिए लोगों को चुनने हेतु परमेश्वर के अधिकार पर बल देता है (प्रेरितों के काम 13:48; 2 थिस्सलुनीकियों 2:13)। आर्मिनियनवाद परमेश्वर को चुनने की मनुष्य की क्षमता और स्वतंत्रता पर जोर देता है (यहोशु 24:15)।

कैल्विनवाद में, परमेश्वर व्यक्तियों के उद्धार में अंतिम और निर्णायक है। आर्मिनियनवाद में, परमेश्वर के अनुगृह के प्रति मनुष्य की प्रतिक्रिया निर्णायक कारक है।

कैल्विनवादी अपनी सृष्टि पर परमेश्वर की संप्रभुता की पुष्टि करते हैं (रोमियों 9:22,23), पापी मनुष्य द्वारा परमेश्वर को स्वतंत्र रूप से चुनने की अक्षमता (1 कुरिन्थियों 2:14), परमेश्वर द्वारा लोगों को उद्धार के लिए चुने जाने और पूर्वनिर्धारित किए जाने में (2 थिस्सलुनीकियों 2:13) जो परमेश्वर की पसंद है, मनुष्य की नहीं (यूहन्ना 1:13; रोमियों 9:16), और यह कि बचाए गए विश्वासी हमेशा के लिए सुरक्षित हैं क्योंकि उनका उद्धार मसीह के कार्य में निहित है, मनुष्य की धार्मिकता या ईमानदारी में नहीं (यूहन्ना 10:27,28)।

दूसरी ओर, आर्मिनियनवाद का एक भिन्न दृष्टिकोण है और मनुष्य की इच्छा और परमेश्वर को चुनने की क्षमता की संप्रभुता की पुष्टि करता है, कि परमेश्वर द्वारा लोगों को पूर्वनिर्धारित करना उनके

विकल्पों पर उनके पूर्वज्ञान पर आधारित है, कि यीशु उन सभी लोगों के लिए मरा जो कभी जीवित थे, और यह कि किसी का उद्धार खोना संभव है।

पूर्वनियति पूर्वनिर्धारण नहीं है, बल्कि पूर्वज्ञान पर आधारित घोषणा है।

वचनों की संपूर्णता को देखते हुए, हम स्पष्ट रूप से पहचानते हैं कि परमेश्वर ने स्वतंत्र इच्छा और स्वतंत्र नैतिक माध्यम दिया है। लोग अपनी पसंद के अनुसार चुनने के लिए स्वतंत्र हैं। परमेश्वर समय से पहले जानते हैं कि हम क्या चुनाव करेंगे (पूर्वज्ञान)। मानव जाति के लिए, और उन सभी लोगों के लिए जो उसका अनुसरण करने का चुनाव करेंगे, उनके पास एक पूर्वनिर्धारित योजना है यह कि हम उनके परिवार का हिस्सा बनें और यीशु मसीह की छवि के अनुरूप बनें। जबकि, अब भी प्रत्येक व्यक्ति द्वारा व्यक्तिगत रूप से चुनाव किया जाना बाकी है।

क्या सारी बातें परमेश्वर की इच्छा अनुरूप ही होती है?

हम मानते हैं कि परमेश्वर राजा, सर्व-श्रेष्ठ, प्रभु और सभी का राजा है। और परमेश्वर ने अपनी संप्रभुता में यह निर्धारित किया है कि वह लोगों को स्वतंत्र इच्छा और स्वतंत्र नैतिक क्रियाएं सौंपेगा। उसने आदम और हव्वा से आरंभ करके पृथ्वी पर अपने द्वारा बनाए गए लोगों को अधिकार भी सौंपे हैं।

उत्पत्ति 2:15
तब यहोवा परमेश्वर ने आदम* को लेकर अदन की वाटिका में रख दिया, कि वह उसमें काम करे और उसकी रक्षा करे।

भजन संहिता 115:3,16
[3] हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में है; उसने जो चाहा वही किया है।

16 स्वर्ग तो यहोवा का है, परंतु पृथ्वी उसने मनुष्यों को दी है।

लूका 4:5,6
5 तब शैतान उसे ले गया और उसको पल भर में जगत के सारे राज्य दिखाए,
6 और उससे कहा, “मैं यह सब अधिकार, और इनका वैभव तुझे दूँगा, क्योंकि वह मुझे सौंपा गया है: और जिसे चाहता हूँ उसी को दे देता हूँ।

इस बात को ध्यान में रखते हुए हम मानते हैं कि परमेश्वर लोगों के कार्यों को निर्देशित नहीं कर रहा है, और इसलिए, पृथ्वी पर जो कुछ भी कहा जाता या किया जाता है वह उसकी इच्छा और उद्देश्य को नहीं दर्शाता है। इसके अलावा, हम जानते हैं कि शैतान ने मनुष्य के पतन के कारण केवल पृथ्वी पर प्रवेश ही प्राप्त नहीं किया बल्कि वह अपने बुरे काम भी कर रहा है। अतः फिर से यह परमेश्वर की इच्छा या उद्देश्य नहीं है।

अतः, लोगों के कार्यों और हमारे सामने आने वाली परिस्थितियों को समझने में, हमें यह पहचानना चाहिए कि क्या यह परमेश्वर की ओर से है, क्या यह अन्य लोगों के कार्यों के कारण है, क्या यह शैतान का है, और क्या यह पतन के कारण सृष्टि पर हावी होने वाली बरबादी है या यह भ्रष्टाचार की प्रक्रिया के कारण हुआ है। विषय देखें, **भ्रष्टाचार के बंधन में सृष्टि** (रोमियों 8:18-23)।

लोगों के पापों को क्षमा करना (यूहन्ना 20:23)

यूहन्ना 20:23
जिनके पाप तुम क्षमा करो, वे उनके लिये क्षमा किए गए हैं; जिनके तुम रखो, वे रखे गए हैं।

हम जानते हैं कि केवल परमेश्वर ही पापों को क्षमा कर सकता है (भजन संहिता 130:4)। जब शास्त्रियों ने टिप्पणी की कि सिर्फ परमेश्वर ही पापों को क्षमा कर सकता है, तो यीशु ने उनका खंडन नहीं किया। यीशु चाहते थे कि वे जानें कि पृथ्वी पर उनके

पास पापों को क्षमा करने की सामर्थ है (मरकुस 2:7,10; लूका 5:21,24)। यीशु ऐसा कर सकते थे, क्योंकि वे सम्पूर्ण संसार के पापों की कीमत चुकाने वाले थे। अतः, उसने इसलिए चंगा किया क्योंकि यीशु हमारी बीमारियों और दुर्बलताओं को अपने ऊपर ले जाने वाले थे (मत्ती 8:16,17)।

यूहन्ना 20:23 की व्याख्या सुसंगत या समरूप होनी चाहिए। सिर्फ परमेश्वर ही पापों को क्षमा कर सकता है, किन्तु वह मानवीय माध्यम के रूप में संदेश लेकर आया और लोगों को परमेश्वर की क्षमा प्राप्त करने की सुविधा प्रदान की। कुछ ऐसे परिदृश्य हैं जहाँ यीशु का एक चेला / अनुयायी लोगों को परमेश्वर से उनके पापों के लिए क्षमा प्राप्त करने में सहायक हो सकता है या उनके पापों को रहने भी दे सकता है।

1) सुसमाचार बताने के द्वारा—सुसमाचार को साझा करने के द्वारा, हम लोगों को यह बता सकते हैं कि यदि वे विश्वास करेंगे, तो उनके पाप क्षमा किए जाएँगे, यदि वे विश्वास नहीं करते हैं, तो उनके पाप बने रहेंगे। यह वही है जो हम प्रेरितों के काम की पुस्तक के माध्यम से देखते हैं जब सुसमाचार का प्रचार किया जाता है (**उदाहरण:** प्रेरितों के काम 2:38; प्रेरितों के काम 3:19, आदि)।

2) मत्ती 18:15-18 में उल्लेखनीय पापों के विषय में, जहाँ विवाद सुलझने पर दोनों पक्षों को उनके गलत कामों से मुक्त कर दिया जाता है।

3) कलीसिया में जानबूझकर किए गए पाप के विषय में, यदि कोई भाई जानबूझकर पाप करता है और सुधार प्राप्त करने के लिए तैयार नहीं है, तो हम उन्हें जाने देते हैं, और उनके पापों को उनके विरुद्ध तब तक रखा जाता है जब तक कि वे पश्चाताप नहीं

करते। इसका एक उदाहरण कुरिन्थियों की कलीसिया में हुआ (1 कुरिन्थियों 5:11-13; 2 कुरिन्थियों 2:6-11; 2 थिस्सलुनीकियों 3:6,14,15 भी देखें)।

तीन दिन और तीन रातें (मत्ती 12:40)

हम कैसे समझा सकते हैं कि यीशु को तीन दिन और तीन रात तक मरना पड़ा।

मत्ती 12:40
'योना तीन रात दिन जल–जन्तु के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा।

यहाँ संभवतः दो व्याख्याएँ हैं।

सब्त का बड़ा दिन

यूहन्ना ने लिखा है कि यह सब्त का बड़ा दिनथा (यूहन्ना 19:31)। यूहन्ना 19:31 में, "सब्त का बड़ा दिन" एक विशेष सब्त को संदर्भित करता है जो अखमीरी रोटी के पर्व के साथ मेल खाता है, जो फसह के तुरंत बाद निसान (यहूदी कैलेंडर का पहला महीना) की दिनाक 15 को आरंभ होता है। इस सब्त को "बड़ा" या "विशेष" दिन माना जाता है क्योंकि यह यहूदियों के प्रमुख त्योहारों में से एक है जिसके दौरान कोई भी काम करने की अनुमति नहीं थी, जिस प्रकार साप्ताहिक सब्त के दिन होता है।

फसह का पर्व और अखमीरी रोटी का पर्व वर्ष के पहले महीने (निसान का महीना) में मनाया जाना था (देखें निर्गमन 12:1-20)। यह 14वाँ दिन फसह की तैयारी का दिन है। 14वें दिन की संध्या।

बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
यहूदी गुरुवार बुधवार संध्या समय 6 बजे आरंभ होता है। निसान का 14वाँ दिन, **तैयारी का दिन।** फसह संध्या समय 6 बजे आरंभ होता है। यीशु ने ऊपरी कमरे में अंतिम भोज किया। उस रात उन्हें गतसमने के बगीचे में गिरफ़्तार किया गया।	प्रातः 9 बजे यीशु को गिरफ़्तार किया गया। सुबह 9 बजे से दोपहर 3 बजे क्रॉस पर उस दिन संध्या समय 6 बजे से पहले अंतिम संस्कार कर कब्र में दफना दिया गया। यहूदी शुक्रवार, गुरुवार संध्या समय 6 बजे से आरंभ होता है। **प्रथम रात्री**	अखमीरी रोटी का पर्व यहूदी शुक्रवार से आरंभ होता है। पर्व का दिन। **सब्त का बड़ा दिन।** लैव्यव्यवस्था 23:6,7; यूहन्ना 19:31 यहूदी सब्त (शनिवार) शुक्रवार संध्या समय 6 बजे से आरंभ होता है। **द्वितीय रात्री**	**साप्ताहिक सब्त** शुक्रवार संध्या समय 6 बजे से आरंभ होकर शनिवार संध्या समय 6 बजे तक। **तीसरी रात्री**	रविवार (भोर) सुबह यीशु को मृतकों में से जी उठे

यहूदी रात / दिन

सायंकाल और सुबह को एक दिन माना जाता है (उत्पत्ति 1:5)।

दूसरा विकल्प रात / दिन को देखना है, जिसमें उस रात / दिन की अवधि के दौरान जो कुछ भी हुआ उसे उसी दिन हुआ माना जाता

है, इसलिए उस दिन (रात / दिन) की अवधि को इसमें गिना जाता है। इस दृष्टिकोण में, सब्त का बड़ा दिन और साप्ताहिक सब्त एक ही दिन होते हैं।

गुरुवार	**शुक्रवार**	**शनिवार**	**रविवार**
यहूदी गुरुवार बुधवार संध्या समय 6 बजे आरंभ होता है।	प्रातः 9 बजे यीशु को गिरफ़्तार किया गया।	अखमीरी रोटी का पर्व यहूदी शुक्रवार से आरंभ होता है।	रविवार (भोर) सुबह यीशु को मृतकों में से जी उठे
निसान का 14वाँ दिन, तैयारी का दिन।	सुबह 9 बजे से दोपहर 3 बजे क्रूस पर	पर्व का दिन। **सब्त का बड़ा** दिन।	
फसह संध्या समय 6 बजे आरंभ होता है।	उस दिन संध्या समय 6 बजे से पहले अंतिम संस्कार कर कब्र में दफना दिया गया।	लैव्यव्यवस्था 23:6,7 **साप्ताहिक सब्त**	
यीशु ने ऊपरी कमरे में अंतिम भोज किया। उस रात उन्हें गतसमनी के बगीचे में गिरफ़्तार किया गया।	यहूदी शुक्रवार, गुरुवार संध्या समय 6 बजे से आरंभ होता है।	यहूदी सब्त (शनिवार) शुक्रवार संध्या समय 6 बजे से आरंभ होता है।	
पहली रात / दिन (गुरुवार रात / शुक्रवारसुबह)	**दूसरी रात/दिन** (शुक्रवार रात / शनिवार सुबह)	**तीसरी रात / दिन** (शनिवार रात / रविवार सुबह)	

जबकि हम व्यक्तिगत रूप से इनमें से किसी को भी निर्णायक घटना के रूप में प्रस्तावित नहीं करते हैं, हम दोनों स्पष्टीकरणों के लिए खुले हैं और इस तथ्य पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि यीशु हमारे लिए मरा था, मृतकों में से जी उठा था, और उसने सभी भविष्यवाणियाँ पूरी कीं।

जब वह जो सिद्ध है, आ गया है (1 कुरिन्थियों 13:9-13)

एक अंश जिसका उपयोग कभी-कभी समाप्तिवाद (अलौकिक के लिए समाप्ति तिथि) की धारणा का समर्थन करने के लिए किया जाता है, 1 कुरिन्थियों 13 में पाया जाता है।

आइये हम इस पर दृष्टि डालें।

1 कुरिन्थियों 13:9-13
9 क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी;
10 परंतु जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा।
11 जब मैं बालक था, तो मैं बालकों के समान बोलता था, बालकों का सा मन था, बालकों की सी समझ थी; परंतु जब सियाना हो गया तो बालकों की बातें छोड़ दीं।
12 अभी हमें दर्पण में धुँधला सा दिखाई देता है, परंतु उस समय आमने–सामने देखेंगे; इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है, परंतु उस समय ऐसी पूरी रीति से पहिचानूँगा, जैसा मैं पहिचाना गया हूँ।
13 पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थायी हैं, पर इन में सबसे बड़ा प्रेम है।

1 कुरिन्थियों 13:9 में, पौलुस हमें बताता है कि हम सिर्फ "आंशिक रूप से" भविष्यवाणी करते हैं। परमेश्वर हमें सब कुछ नहीं बताता। हम सिर्फ उस जानकारी के अंश या भाग की भविष्यवाणी करते हैं जिसे परमेश्वर प्रकट करता है। यह सभी प्रकाशन या प्रकटीकरण वरदानों और आत्मा के सभी वरदानों के कार्य के बारे में भी सच है। आत्मा का प्रत्येक वरदान या प्रकाशन हमारे अनंत परमेश्वर और उसके अस्तित्व के एक अंश या भाग की अभिव्यक्ति मात्र है।

फिर 1 कुरिन्थियों 13:10 में, पौलुस हमें बताता है कि जो अंश है, यानी पवित्र आत्मा के वरदान, जब "जो सिद्ध है" आएगा, तब समाप्त हो जाएगा। कुछ लोगों ने "जो सिद्ध है" का उपयोग बाइबल, संपूर्ण वचन को संदर्भित करने के लिए किया है। इस अर्थ में वचन सिद्ध है, क्योंकि पवित्रशास्त्र (बाइबल) परमेश्वर का अचूक, और प्रेरित वचन है। हमें इस पुस्तक में अध्ययन किए गए व्याख्यात्मक सिद्धांतों को लागू करना चाहिए। अध्याय के तात्कालिक संदर्भ में और इस पत्र के बड़े संदर्भ में, "बाइबल" का उल्लेख नहीं किया गया है और ऐसा लगता है कि यह लेखक के दिमाग में नहीं है। हालाँकि, उसी अध्याय के तात्कालिक संदर्भ और 1 कुरिन्थियों (अध्याय 15) के बड़े संदर्भ से, हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि प्रेरित पौलुस प्रभु के आगमन का उल्लेख कर रहा है। 1 कुरिन्थियों 13 में, पौलुस स्पष्ट रूप से संकेत देता है कि वह किसका उल्लेख कर रहा है। 1 कुरिन्थियों 13:10 में "जो परिपूर्ण है" हमें 1 कुरिन्थियों 13:12 में समझाया गया है कि हम उसे "आमने-सामने" देखते हैं और जानते हैं कि हम कैसे जाने जाते हैं। प्रेरित यूहन्ना भी लिखते हैं, *"... हम जानते हैं कि जब वह प्रकट होगा, तो हम उसके समान होंगे, क्योंकि हम उसे वैसा ही देखेंगे जैसा वह है"* (1 यूहन्ना 3:2)। इसलिए, यह कहना कि "जो सिद्ध है" बाइबल के संकलन को संदर्भित करता है, मूल व्याख्यात्मक सिद्धांतों का उल्लंघन है। वाक्यांश "जो सिद्ध है" स्पष्ट रूप से हमें उसे "आमने-सामने" देखने के लिए संदर्भित करता है।

इस पर विचार करें—यहां तक कि अनंत वचन, जो देहधारी हुआ, प्रभु यीशु मसीह, ने अपनी सांसारिक सेवकाई के दौरान पवित्र आत्मा के अभिषेक में होकर सेवा की (लूका 4:17,18; प्रेरितों के काम 10:38)। जब हम लिखित वचनों की सेवा करते हैं, तो हमें पवित्र आत्मा के अभिषेक और अलौकिक अभिव्यक्तियों पर कितना अधिक निर्भर होना चाहिए।

प्रेरित पौलुस पुराने नियम के वचनों को जानता था। उसके पास प्रकाशन भी था जिसे उसने अपने पत्रों में हमारे लिए लिखा था, और फिर भी, जब वह स्वयं सेवकाई करता था, तो वह पूरी तरह से पवित्र आत्मा की शक्ति पर निर्भर था (1 कुरिन्थियों 2:4,5)।

अतः,वचन पवित्र आत्मा के कार्य को समाप्त नहीं करता है। बल्कि वचन और पवित्र आत्मा मिलकर यीशु मसीह को परमेश्वर के पुत्र के रूप में गवाही देते हैं। क्योंकि स्वर्ग में गवाही देने वाले तीन हैं: पिता, वचन और पवित्र आत्मा; और ये तीनों एक हैं (1 यूहन्ना 5:7-12 के अनुसार)।

निरंतरतावाद (कन्टिन्युएशनिज्म)—बाइबल आधारित कारण

हमारे द्वारा विकसित किए गए व्याख्यात्मक ढांचे को लागू करते हुए, हम यहाँ 10 कारण (बिंदु रूप में) प्रस्तुत करते हैं कि हम यह निष्कर्ष क्यों निकाल सकते हैं कि वचन स्पष्ट रूप से सिखाता है कि हमारे दिन और समय में चमत्कार जारी हैं।

1) परमेश्वर नहीं बदला है।

बाइबल एक अपरिवर्तनीय परमेश्वर को प्रस्तुत करती है। बाइबल का परमेश्वर आज का परमेश्वर है। उसने तब चमत्कार किए और वह आज भी चमत्कार करता है।

2) यीशु की सेवकाई और उसका आदेश।

प्रभु यीशु ने चंगाई, मुक्ति और चमत्कार किए। उन्होंने अपने शिष्यों को भी ऐसा ही करने के लिए आज्ञा दी। हम यीशु मसीह के उसी सुसमाचार का प्रचार कर रहे हैं और हमें पवित्र आत्मा की शक्ति में ऐसा करना चाहिए।

3) बाइबल पर विश्वास।

परमेश्वर में विश्वास आज भी उसी तरह काम करता है जैसे बाइबल के समय में करता था क्योंकि परमेश्वर नहीं बदला है, और उसका वचन अब भी वही है।

4) पाप, शैतान और दुष्टात्माएं अब भी काम कर रहे हैं।

अंधकार की शक्तियाँ अब भी अपना दमनकारी काम जारी रखे हुए हैं। पुराने और नए नियम में, परमेश्वर की अलौकिक शक्ति के माध्यम से अंधकार के कामों का सामना किया गया और उन्हें उखाड़ फेंका गया। यह आज तक जारी है।

5) समस्याएँ और चुनौतियाँ।

दोनों नियमों में, परमेश्वर ने लोगों को मुक्ति दिलाने और अपनी भलाई का प्रदर्शन करके अपनी अलौकिक शक्ति के प्रदर्शन के द्वारा दैनिक जीवन की स्थितियों में हस्तक्षेप किया। लोग अभी भी समस्याओं और चुनौतियों का सामना करते हैं, और परमेश्वर अभी भी अलौकिक रीतियों द्वारा जीवन की स्थितियों में हस्तक्षेप करता है।

6) पवित्र आत्मा काम कर कर रहा है।

पवित्र आत्मा आज कलीसिया में और उसके माध्यम से काम कर रहा है। पवित्रशास्त्र में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि परमेश्वर पवित्र आत्मा ने अपनी शक्ति खो दी है या कलीसिया के माध्यम से अलौकिक रूप से काम नहीं करने का विकल्प चुना है।

7) विश्वासियों को अभी भी वरदान दिए जाते हैं।

यीशु मसीह की कलीसिया आज भी काम कर रही है । परमेश्वर अपने लोगों को शरीर में उनकी भूमिका और कार्य को पूरा करने के लिए वरदान देता है। नए नियम में ऐसा कोई स्थान नहीं है जो यह दर्शाता हो कि परमेश्वर ने अपनी अलौकिक शक्ति को प्रदर्शित करने वाले

वरदानों को वापस ले लिया है और वह सिर्फअन्य प्रकार के वरदान देता है।

8) कलीसिया में सेवकाई के वरदान

परमेश्वर ने प्रेरित, भविष्यवक्ता, पासवान, शिक्षक और प्रचारक की सेवकाई के वरदान रखे हैं, और इन सेवकाई के वरदानों की बाइबल के नए नियम की अभिव्यक्ति के लिए अलौकिक के प्रदर्शन की आवश्यकता है।

9) एक उत्तम वाचा, एक अधिक गौरवशाली सेवकाई

नया नियम सिखाता है कि हम एक उत्तम वाचा में हैं और इसलिए, हमारे पास एक अधिक गौरवशाली सेवकाई है। इसका अर्थ है कि नई वाचा में सेवकाई को पुरानी वाचा की तुलना में अधिक महिमा, अधिक शक्ति, अधिक संकेत, चमत्कार और चिन्हों को प्रकट करना चाहिए।

10) जब तक वह सिद्ध न आ जाए।

जैसा कि पहले बताया गया है, प्रेरित पौलुस संकेत देता है कि पवित्र आत्मा के वरदान तब तक जारी रहेंगे जब तक हम यीशु को आमने-सामने नहीं देखते। आत्मा की अलौकिक अभिव्यक्तियाँ आज भी कलीसिया में जारी हैं।

अधिक अध्ययन के लिए कृपया इन संसाधनों पर विचार करें, जो **apcwo.org/books** पर मुफ़्त डाउनलोड के लिए उपलब्ध हैं

- *पवित्र आत्मा के वरदान*
- *चंगाई और उद्धार की सेवा*
- *अन्य भाषा में प्रार्थना करने के अद्‌त लाभ*
- *भविष्यवाणी को समझना*
- *पवित्र आत्मा में बपतिस्मा*

स्त्री और पुरुष—मुख्य पद, अगुवाई, वरदान

इस बात पर विवाद होता है कि क्या स्त्रियाँ भिन्न भिन्न प्रसंगों में नेतृत्व कर सकती हैं (इससे अलग-अलग स्थितियाँ पैदा हुई हैं, जिन्हें अक्सर **समतावाद** कहा जाता है—पुरुष और स्त्रियाँ बराबर हैं और **पूरकवाद**—सिर्फ पुरुष ही नेतृत्व की पदवी रखते हैं)। आइये हम इस प्रसंग पर संक्षिप्त जानकारी देने के लिए इस पुस्तक में विकसित व्याख्यात्मक रूपरेखा को लागू करें।

जब हम पवित्रशास्त्र के सामान्य संदर्भ पर विचार करते हैं तो हम निम्नलिखित देखते हैं:

1) परमेश्वर की सरकार या अधिकार संरचना स्थापित है जिसका हमें उनके दिए गए संदर्भ में सम्मान करना चाहिए। परमेश्वर के राज्य में, मनुष्य को पहले बनाया गया था और इसलिए, वह उन क्षेत्रों में ज़िम्मेदारी लेता है जहाँ विशेष रूप से उसे नेतृत्व सौंपा गया है (1 कुरिन्थियों 11:1-12)। एक अधिकार क्षेत्र या क्षेत्र जहाँ नेतृत्व विशेष रूप से पुरुष को सौंपा गया है, वह घर है, जिसे विशेष रूप से पति को सौंपा गया है (इफिसियों 5:23)। घर में, पति मुखिया होता है और नेतृत्व प्रदान करता है। नेतृत्व करना एक जिम्मेदारी है और इसका श्रेष्ठता से कोई मतलब नहीं है । हमें घर में पति को दी गई इस प्रधानता को मानवीय गतिविधियों के अन्य सभी क्षेत्रों में विस्तारित नहीं करना चाहिए। बाइबल ऐसा नहीं करती है।

2) परमेश्वर ने दोनों नियमों में स्त्रियों के माध्यम से काम किया है। उसने उन्हें अभिषिक्त किया है और उन्हें आत्मिक, सामाजिक और राजनीतिक / सरकारी संदर्भों में महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए प्रयोग किया है जैसे कि मरियम, दबोरा, एस्तेर, रूत, हन्ना नबिया, फिलिप्पुस की बेटियाँ, पौलुस, लिडिया, अक्विला और प्रिस्किल्ला की सहकर्मी।

3) वचन स्पष्ट रूप से सिखाता हैं कि पुरुष और महिलाएँ परमेश्वर के सामने समान आत्मिक स्थिति में हैं। गलातियों 3:28; 1 पतरस 3:7।

4) आत्मिक वरदानों, अनुग्रह और बुलाहट के वितरण में, पुरुषों और स्त्रियों के बीच कोई अंतर नहीं है। रोमियों 12:3-8; 1 कुरिन्थियों 12:7-11; इफिसियों 4:8-11। सभी वरदान कलीसिया के लोगों के लिए हैं, न कि पुरुष या स्त्री मे से किसी एक के लिए।

अगुवाई: बाइबल यह नहीं कहती कि चर्च, सरकार या कार्यस्थल मे सिर्फ पुरुषों को ही नेतृत्व की स्थिति में होना चाहिए। परमेश्वर ने अगुवाई की स्थिति में पुरुषों और स्त्रियों दोनों के माध्यम से काम किया है और काम करना जारी रखता है।

बुलाहट, वरदान, अनुग्रह, सेवकाई और अभिषेक: ये पुरुषों और स्त्रियों दोनों को समान रूप से वितरित किए जाते हैं।

परिवार: बाइबल यह बताती है कि पति, पत्नी का मुखिया है। उसे अपने परिवार की देखभाल, सुरक्षा और अगुवाई करने की जिम्मेदारी दी गई है। पत्नी को पति के अधीन रहना चाहिए और घर में उसके साथ मिलकर काम करना चाहिए। दोनों परमेश्वर के सामने विवाह के अंतर्गत एक समान हैं और आत्मिक वरदानों और अनुग्रह तक उनकी समान पहुँच है। ऐसी परिस्थितियों में जहाँ पति मुखिया, अगुवा और प्रबंधक के रूप में अपनी भूमिका को पूरा करने में विफल रहता है, पत्नी, परमेश्वर द्वारा सशक्त होकर, आगे आती है और परिवार की देखभाल करती है।

क्या कोई विश्वासी मसीह से दूर हो सकता है और अपना उद्धार खो सकता है?

यह एक ऐसा विषय है जिस पर व्यापक रूप से बहस और चर्चा की

गई है। हम विचार करने के लिए वचन प्रस्तुत करते हैं, जहाँ अंतिम अवलोकन यह है कि—नया नियम स्पष्ट रूप से बताता है कि जो लोग एक बार मसीह में विश्वास करते थे, उनके लिए अपने विश्वास को त्यागना और यीशु मसीह में विश्वास से दूर होना संभव है।

- क्या वे लोग जिन्होंने एक बार उद्धार का स्वाद चखा है, ऐसी जगह आ सकते हैं जहाँ कोई पश्चाताप नहीं है? (इब्रानियों 6:4-6)
- क्या एक विश्वासी विश्वास से दूर हो सकता है? (इब्रानियों 10:26-39)
- क्या एक भाई ऐसा पाप कर सकता है जिसके लिए हमें अब और प्रार्थना नहीं करने के लिए कहा गया है? (1 यूहन्ना 5:16)
- क्या विश्वासी विश्वास से भटक सकते हैं? (1 तीमुथियुस 1:19,20; 1 तीमुथियुस 5:15,24; 1 तीमुथियुस 6:9,10; 1 तीमुथियुस 6:20,21)
- एक विश्वासी के साथ क्या होता है जो शरीर के अनुसार रहता है? (रोमियों 8:5-13)
- प्रेरित यूहन्ना हमें विश्वासियों के रूप में क्या चुनौती देता है? (1 यूहन्ना 2:4; 1 यूहन्ना 2:9-11; 1 यूहन्ना 3:4-15)
- अयोग्य होने का क्या अर्थ है? (1 कुरिन्थियों 9:27; 2 कुरिन्थियों 13:5,6)
- क्या एक मसीही जो शरीर के कामों को ज्यादा महत्त्व देता है, वह परमेश्वर के राज्य का वारिस होगा? (गलातियों 5:16,19-21)
- क्या एक विश्वासी के लिए धोखा खाना और विश्वास से दूर हो जाना संभव है? (1 तीमुथियुस 4:1-3)
- पतरस ने क्यों कहा कि सत्य को न जानना बेहतर होगा? (2 पतरस 2:20-22)
- अगर हम अंत तक धीरज नहीं रखते तो क्या होगा? (मत्ती 10:22)

- क्या जीवन की पुस्तक से नाम मिटाए जा सकते हैं? (निर्गमन 32:32,33; प्रकाशितवाक्य 3:5)
- क्या कर्म के बिना विश्वास हो सकता है? क्या मनुष्य केवल विश्वास से या विश्वास और कर्म से धर्मी ठहराया जा सकता है? (इफिसियों 2:8,9; याकूब 2:17-26)
- क्या एक बार प्राप्त वरदान को त्यागा, अस्वीकार किया या खोया जा सकता है? (रोमियों 6:23; इब्रानियों 6:4-9)

जीवन की पुस्तक से नाम किस प्रकार मिटाए जा सकते हैं?

बाइबल में जीवन की पुस्तक के बारे में निर्गमन 32:32,33; फिलिप्पियों 4:3; प्रकाशितवाक्य 3:5; प्रकाशितवाक्य 13:8; प्रकाशितवाक्य 17:8; प्रकाशितवाक्य 20:12,15; प्रकाशितवाक्य 21:27; प्रकाशितवाक्य 22:19 में उल्लेख किया गया है।

कुछ ऐसे स्पष्ट प्रश्न हैं जो हम पूछना चाहेंगे। जीवन की पुस्तक में नाम कब लिखे गए / लिखे जाते हैं? क्या जीवन की पुस्तक से नाम हटाए (मिटाए) जा सकते हैं?

आइये हम इनमें से कुछ वचनों पर विचार करें।

प्रकाशितवाक्य 13:8
पृथ्वी के वे सब रहनेवाले, जिनके नाम उस मेमने के जीवन की पुस्तक में लिखे नहीं गए जो जगत की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है, उस पशु की पूजा करेंगे।

यीशु मसीह वह मेमना है जो संसार की नींव से पहले या उसकी नींव रखने से पहले ही मार डाला गया था। बाकी के ये वचन (लूका 22:22; प्रेरितों के काम 2:23; प्रेरितों के काम 4:27,28; 1 पतरस 1:19,20) के अनुसार है। जबकि, प्रकाशितवाक्य 13:8 यह नहीं दर्शाता या संकेत नहीं देता कि जीवन की पुस्तक संसार की नींव से

पहले ही लिखी गई थी। इसलिए, हम इस अवधारणा को छोड़ देंगे।

बाइबल यह संकेत नहीं देती कि किसी व्यक्ति का नाम जीवन की पुस्तक में कब लिखा गया है।

जबकि, यह संकेत देती है कि किसी व्यक्ति का नाम जीवन की पुस्तक से मिटाया जा सकता है।

निर्गमन 32:32,33

32 तौभी अब तू उनका पाप क्षमा कर—नहीं तो अपनी लिखी हुई पुस्तक में से मेरे नाम को काट दे।"

33 यहोवा ने मूसा से कहा, "जिसने मेरे विरुद्ध पाप किया है उसी का नाम मैं अपनी पुस्तक में से काट दूँगा।"

प्रकाशितवाक्य 3:5

जो जय पाए उसे इसी प्रकार श्वेत वस्त्र पहिनाया जाएगा, और मैं उसका नाम जीवन की पुस्तक में से किसी रीति से न काटूँगा; पर उसका नाम अपने पिता और उसके स्वर्गदूतों के सामने मान लूँगा।

प्रकाशितवाक्य 22:19

'यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के वृक्ष और पवित्र नगर में से, जिसका वर्णन इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा।

अतः हम निम्नलिखित रीतियों द्वारा अपने निष्कर्ष पर से पहुँचते हैं ...

- **मौन से तर्क** (वचनों में स्पष्ट रूप से जो नहीं कहा गया है, उसके आधार पर निष्कर्ष निकालना),
- **विरोधाभास द्वारा प्रमाण** (यह दर्शाकर किसी कथन की सत्यता का प्रदर्शन करना कि इसे नकारने से बेतुका या विरोधाभासी निष्कर्ष निकलता है) और
- **संगति का सिद्धांत** (यदि कोई सिद्धांत एक स्थिति में लागू होता

है, तो उसे समान स्थितियों में लगातार लागू होना चाहिए जब तक कि स्पष्ट रूप से अन्यथा न कहा गया हो)।

परमेश्वर द्वारा लोगों के नाम दुनिया की नींव से पहले अपने पूर्वज्ञान के आधार पर जीवन की पुस्तक में लिखना और फिर उनके नाम मिटा देना उसके पूर्वज्ञान में त्रुटि को दर्शाता है, और हम जानते हैं कि परमेश्वर कोई गलती नहीं कर सकता। उसका ज्ञान सिद्ध है। (**विरोधाभास द्वारा प्रमाण**)।

बाइबल हमें यह भी नहीं बताती है कि किसी व्यक्ति का नाम जीवन की पुस्तक में कब लिखा जाता है। (**चुप्पी से तर्क**)

चूँकि किसी व्यक्ति का नाम पृथ्वी पर उसके द्वारा किए गए चुनाव और कार्यों के आधार पर जीवन की पुस्तक से मिटाया जा सकता है, इसलिए यह निष्कर्ष निकालना तर्कसंगत है कि उसका नाम जीवन की पुस्तक में सबसे पहले उसके चुनाव और कार्यों के आधार पर दर्ज किया जाता है। **(संगति का सिद्धांत)।**

अतः, हम निष्कर्ष निकालते हैं कि जीवन की एक पुस्तक है जो उन लोगों के नाम को रखती है जो परमेश्वर के अनंत राज्य में प्रवेश करेंगे। परमेश्वर ने इस पुस्तक में पहले से नाम नहीं लिखे हैं। लोगों के चुनाव और कार्यों के आधार पर नाम लिखे या मिटाए जाते हैं। जब कोई व्यक्ति यीशु मसीह और परमेश्वर के उद्धार के प्रावधान पर विश्वास करने का चुनाव करता है, परमेश्वर का अनुसरण करने का चुनाव करता है, तो उसका नाम लिखा जाता है। यदि कोई व्यक्ति प्रारंभिक प्रतिबद्धता करने के बाद यीशु मसीह को अस्वीकार करने का चुनाव करता है, तो उसका नाम मिटा दिया जाता है।

सब्त

हम सातवें दिन (शनिवार) को सब्त के रूप में क्यों नहीं मनाते?

पुराने नियम में सातवें दिन (हमारा शनिवार) को विश्राम के दिन के रूप में मनाने की बात स्पष्ट रूप से कही गई है।

नए नियम में, अपनी मृत्यु के दारा, प्रभु यीशु ने हमारे विरुद्ध की गई आवश्यकताओं को हटा दिया (कुलुस्सियों 2:14)। इसलिए, अब हम पुराने नियम की व्यवस्था और आवश्यकताओं के अधीन नहीं हैं, जिसमें सब्त का पालन करना भी शामिल है (कुलुस्सियों 2:16-23)। इसके बजाय, प्रत्येक व्यक्ति किसी विशेष दिन या सभी दिनों को प्रभु के दिन के रूप में मनाने के लिए स्वतंत्र है (रोमियों 14:4-8)। प्रारंभिक कलीसिया ने सप्ताह के पहले दिन, पुनरुत्थान के दिन को इकट्ठा होना शुरू किया, और इसे "प्रभु का दिन" कहा (लूका 24:1; यूहन्ना 20:1,19; प्रेरितों के काम 20:7; 1 कुरिन्थियों 16:2; प्रकाशितवाक्य 1:10)। इसलिए, हम ऐसा करना जारी रखते हैं—हालाँकि हमें किसी भी अन्य सुविधाजनक दिन पर एक साथ इकट्ठा होने और आराधना करने पर कोई रोक नहीं है (जैसे कि दुनिया के कुछ हिस्सों में, विश्वासी शुक्रवार को एक साथ इकट्ठा होते हैं, आदि)।

बहुविवाह और एकविवाह

पुराने नियम में परमेश्वर ने बहुविवाह की अनुमति क्यों दी थी? नए नियम में यह क्यों बदल गया?

उत्पत्ति 2:24 में विवाह के लिए परमेश्वर की मूल योजना स्पष्ट रूप से बताई गई है।

जैसे-जैसे बातें आगे बढ़ीं, मनुष्य ने बहुविवाह करने का विकल्प चुना। लोगों ने सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक गठबंधन और अस्तित्व की चिंताओं सहित कई कारणों से ऐसा किया। परमेश्वर ने मनुष्य को यह विकल्प चुनने से नहीं रोका। यह दिव्य सहिष्णुता, दिव्य अनुमोदन या दिव्य योजना का संकेत नहीं देती है।

नए नियम में, परमेश्वर ने विशेष रूप से विवाह, एक-विवाह (मत्ती 19:4-6) के लिए अपने मूल आशय की पुष्टि की। यह और भी महत्वपूर्ण हो गया है क्योंकि नए नियम में, विवाह चर्च के साथ मसीह के संबंध की एक छवि है (इफिसियों 5:31,32)। एक विवाह प्रथा ईश्वरीय जीवन को व्यक्त करती है जिसे जीने के लिए हमें बुलाया गया है (1 थिस्सलुनीकियों 4:1-8) और यह मसीही अगुओं के लिए भी मानक निर्धारित करता है (1 तीमुथियुस 3:2; तीतुस 1:6) ताकि यह सभी को अनुसरण के लिए एक उदाहरण बन सकें।

परमेश्वर ने इस विषय में अपना विचार नहीं बदला। आदम और हव्वा की रचना के आरंभ से ही उनकी मूल योजना स्पष्ट थी। उन्होंने मनुष्य को अपनी पसंद चुनने और कुछ समय के लिए अपनी इच्छानुसार कार्य करने की अनुमति दी (प्रेरितों के काम 17:29-31), किन्तु बाद में हमें अपने मूल रचना पर वापस बुलाया।

परमेश्वर और नरसंहार

परमेश्वर, प्रेमपूर्ण परमेश्वर कैसे हो सकता है जबकि परमेश्वर ने पुराने नियम में अपने लोगों को जनजातियों, उनके लोगों और उनके शहरों को मारने और नष्ट करने का आदेश दिया था? क्या यह 'नरसंहार' नहीं है?

परमेश्वर द्वारा पुराने नियम में कुछ जनजातियों और शहरों के विनाश का आदेश देने का मुद्दा सबसे चुनौतीपूर्ण धार्मिक और नैतिक प्रश्नों में से एक है। यह परमेश्वर के न्याय, दया और प्रेम के साथ-साथ हम इन घटनाओं के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और आत्मिक प्रसंगों को कैसे समझते हैं, इस बारे में प्रश्न उठाता है।

आइये हम पवित्रशास्त्र की संपूर्णता को अपने सामने रखकर इसे समझने का प्रयास करें।

परमेश्वर ने इस्राएलियों को कई बार कुछ समूहों के लोगों को नष्ट करने की आज्ञा दी थी जैसे कि कनानी, अमालेकी और अन्य पड़ोसी जनजातियाँ (व्यवस्थाविवरण 7:1,2; 1 शमूएल 15:3)। इस आज्ञा के पीछे का कारण इस प्रकार समझा जा सकता है अ) पाप पर ईश्वरीय निर्णय, आ) छुटकारे के लिए संरक्षण और इ) घृणा या पूर्वधारणा पर आधारित नहीं होता।

- **ईश्वरीय निर्णय:** इनमें से कई जनजातियाँ बहुत भ्रष्ट थीं, जो बाल बलि (लैव्यव्यवस्था 18:21), मंदिर वेश्यावृत्ति और अत्यधिक मूर्तिपूजा जैसी प्रथाओं में लिप्त थीं। ये प्रथाएँ परमेश्वर के लिए घृणित थीं और इनका नैतिक और आत्मिक प्रभाव विनाशकारी था। परमेश्वर ने कनानियों को पश्चाताप करने के लिए 400 से अधिक वर्ष दिए (उत्पत्ति 15:16)। उनका विनाश अचानक या बिना किसी चेतावनी के नहीं हुआ था। इन राष्ट्रों का विनाश पाप पर ईश्वरीय न्याय का कार्य था, ठीक वैसे ही जैसे नूह के समय में बाढ़ (उत्पत्ति 6-8) या सदोम और अमोरा का विनाश (उत्पत्ति 19)। यह मनमाना नहीं था, बल्कि निरंतर की जाने वाली दुष्टता का उत्तर था।
- **छुटकारे के लिए संरक्षण:** परमेश्वर ने इन राष्ट्रों को हटाने का आदेश दिया ताकि इस्राएल को उनकी प्रथाओं और मूर्तिपूजा से भ्रष्ट होने से बचाया जा सके (व्यवस्थाविवरण 7:4)। इस्राएल की आत्मिक शुद्धता परमेश्वर की छुटकारे की योजना के लिए आवश्यक थी, जिसने अंततः मसीह के माध्यम से सभी राष्ट्रों को उद्धार दिलाया।
- **घृणा या पक्षपात पर आधारित नहीं:** नरसंहार एक विशेष जातीय, नस्लीय या धार्मिक समूह का जानबूझकर विनाश है, जो मुख्यतः घृणा या पूर्वधारणा या पक्षपात से प्रेरित होता है। यह स्पष्ट है कि परमेश्वर की आज्ञाएँ जातीय घृणा या पूर्वधारणा पर

आधारित नहीं थीं। वे पाप के विरुद्ध न्याय के कार्य थे, न कि जातीयता के विरुद्ध। कनानियों को उनके कार्यों और नैतिक भ्रष्टाचार के लिए न्याय दिया गया, न कि उनकी जातीयता या नस्ल के लिए। पश्चाताप करने वाले कुछ व्यक्तियों और समूहों को छोड़ दिया गया (**उदाहरण:** यहोशू 2 में राहाब और उसका परिवार; यहोशू 9 में गिबोनियों को)। इससे पता चलता है कि आज्ञाओं को विवेकहीनता से लागू नहीं किया गया था, बल्कि दया के लिए अनुमति दी गई थी। ये आज्ञाएँ किसी विशेष समय और स्थान में कुछ समूहों के लिए विशिष्ट थीं और युद्ध या विजय का सामान्य सिद्धांत नहीं थीं।

परमेश्वर अभी भी एक प्रेमपूर्ण परमेश्वर, एक पवित्र परमेश्वर और एक न्यायी परमेश्वर है। परमेश्वर का न्याय और उसकी दया यीशु मसीह में पूरी तरह से प्रकट होती है। क्रूस परमेश्वर के न्याय (पाप को दंडित करना) और उसके प्रेम (मुक्ति प्रदान करना) दोनों को प्रदर्शित करता है। परमेश्वर का अंतिम उद्देश्य सभी लोगों का उद्धार करना है और सभी लोगों, सभी राष्ट्रों के लिए अपने प्रेम को प्रदर्शित करना था/है।

शाऊल और एन्दोर की जादूगरनी (1 शमूएल 28:1-20)

क्या जादूगरनी (मध्यस्थ, प्रेतवादी) द्वारा वास्तव में भविष्यवक्ता शमूएल को मृतकों में से वापस लाया गया था?

कुछ लोग सुझाव देते हैं कि यह एक रूप धारण करने वाली एक दुष्टात्मा थी।

कुछ अन्य लोग सुझाव देते हैं कि परमेश्वर ने वास्तव में शमूएल को उस क्षण में प्रकट किया था (जैसे मूसा और एलिय्याह यीशु के साथ रूपांतरण पर्वत पर दिखाई दिए थे), भले ही यह एक जादूगरनी / मध्यस्थ थी जिसने शमूएल को मृतकों में से बुलाया था। जबकि,

दोनों परिदृश्य एक दूसरे से इतने विपरीत हैं, शाऊल एक मध्यस्थ से जुड़ता है, और यीशु का रूपांतरण होता है, इस तर्क को स्वीकार करना कठिन है।

यहाँ विचार करने के लिए कुछ बिंदु दिए गए हैं:

- सिर्फ परमेश्वर के पास *नरक* से किसी को वापस लाने की शक्ति है; शैतान के पास ऐसा करने की शक्ति नहीं है।
- परमेश्वर द्वारा एक टोन्हा करनेवाली को एक मृत भविष्यवक्ता को वापस लाने के लिए सशक्त बनाना, अच्छाई द्वारा बुराई को सशक्त बनाने और वही करने के बीच विरोधाभास होगा जो उसने अपने लोगों को नहीं करने के लिए सिखाया था (यशायाह 8:19)।
- शैतान के दूत प्रकाश के स्वर्गदूतों के रूप में प्रकट हो सकते हैं और झूठे चिन्ह और चमत्कार कर सकते हैं (2 कुरिन्थियों 11:14; 2 थिस्सलुनीकियों 2:9)।

अतः, हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि इस घटना में, यह एक दुष्ट आत्मा थी जो शमूएल का रूप धारण कर रही थी, शाऊल की आत्मिक स्थिति को सही ढंग से बता रही थी और पहले से भविष्यवाणी कर रही थी कि वे अगले दिन क्या करने का प्रयास करेंगे, शाऊल, उसके बेटों की मृत्यु और पलिश्तियों के सामने इस्राएली सेना की हार। हम ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि योजना यह थी कि वह जादूगरनी अपनी परिचित दुष्टात्माओं के साथ मिली हुई थी और परमेश्वर इस तरह के अभ्यास में भाग नहीं लेगा या उसे सशक्त नहीं करेगा (2 कुरिन्थियों 6:14-18)।

25
प्रचार और शिक्षण

पवित्रशास्त्र का सही ढंग से अध्ययन करने और व्याख्या करने का एक उद्देश्य यह है कि हम दूसरों को सत्य बता सकें। यह बाइबल के सत्य को बताने के लिए एक छोटा और सरल अध्याय है। प्रवचनशास्त्र (होमिलेटिक्स), जो वचन की व्याख्या करने, इसके संदेश को व्यवस्थित करने और इसे प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत करने से संबंधित प्रचार की कला और विज्ञान है, अपने आप में एक विशाल विषय है और इसे एक अलग पुस्तक में संबोधित किया जाना चाहिए।

हम यहाँ अन्य लोगों को बाइबल के सत्य प्रदान करने में मार्गदर्शन करने के लिए प्रचार और शिक्षण पर कुछ आवश्यक विचार प्रस्तुत करते हैं।

व्यापक रूप से बाइबल सत्य को बताते समय, हम या तो प्रचार कर सकते हैं या सिखा सकते हैं।

1 तीमुथियुस 2:7
मैं सच कहता हूँ, झूठ नहीं बोलता, कि मैं इसी उद्देश्य से प्रचारक और प्रेरित और अन्यजातियों के लिये विश्वास और सत्य का उपदेशक ठहराया गया।

2 तीमुथियुस 1:11
जिस के लिये मैं प्रचारक, और प्रेरित, और उपदेशक भी ठहरा।

प्रचार करना यानि घोषणा करना है। इसके मुख्य उद्देश्य प्रेरित करना, प्रोत्साहित करना और प्रेरणा देना हैं।

शिक्षण देना यानि समझाना है। शिक्षण के प्राथमिक उद्देश्य हैं

समझाना, स्पष्ट करना और निर्देश देना। एक अच्छा शिक्षक जटिल चीजों को बहुत सरल और समझने में आसान बना देता है। एक बुरा शिक्षक सरल चीजों को बहुत जटिल और समझने में कठिन बना देता है।

बाइबल अध्ययन में विभिन्न रीतियों जैसे अलग-अलग तरह के कई उपदेश हैं जिन्हें कोई तैयार कर सकता है और प्रचार कर सकता है।

व्याख्यात्मक: पवित्रशास्त्र के किसी विशिष्ट अंश की व्याख्या करना और उसे लागू करना।

विषयगत: कई वचनों का उपयोग करके किसी विशेष विषय या मुद्दे को संबोधित करना।

पाठ्य: किसी एक वचन या छोटे अंश पर ध्यान केंद्रित करना ।

कथात्मक: बाइबल की किसी घटना या कहानी बताना।

प्रेरणादायक: प्रेरित करने, प्रोत्साहित करने, कार्यान्वित करने के लिए निर्देशित।

... और भी बहुत कुछ

पुराना और नया

मत्ती 13:52

उसने उनसे कहा, "इसलिये हर एक शास्त्री जो स्वर्ग के राज्य का चेला बना है, उस गृहस्थ के समान है जो अपने भण्डार से नई और पुरानी वस्तुएँ निकालता है।"

कई बार हम अपनी नई अंतर्दृष्टि लेकर आते हैं और कई बार हम जो पहले से ही बताया जा चुका है उसे दोहराते हैं, याद दिलाते हैं और समीक्षा करते हैं। दोनों ही बातें परमेश्वर के लोगों की आत्मिक यात्रा में वृद्धि और विकास के लिए आवश्यक हैं।

प्रचार और शिक्षण में बाइबल के उद्देश्य

परमेश्वर के वचन की सेवा करने की तैयारी करते समय आरंभिक बिंदुओं में से यह स्पष्ट होना जरूरी है कि दिये गए समय में परमेश्वर के वचन की प्रस्तुति के द्वारा हमें क्या प्राप्त करना है। क्या हम लोगों को सुसमाचार प्रचार कर रहे हैं, प्रोत्साहित कर रहे हैं, विश्वासियों को सत्य में स्थापित कर रहे हैं या विश्वासियों को सेवकाई के लिए तैयार कर रहे हैं? जब हमारा उद्देश्य स्पष्ट हो जाता है, तो हम अब उस उद्देश्य पर अपनी तैयारी केंद्रित करते हैं।

सुसमाचार का प्रचार करना और घोषणा करना

यहाँ हमारा लक्ष्य यीशु मसीह को प्रस्तुत करना और यीशु को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में लोगों के सामने लाना और यीशु को ग्रहण करने में उनकी सहायता करना है। हमारे श्रोताओं के आधार पर, हम मन को अपील करने और फिर हृदय तक पहुँचने, या यीशु मसीह की शक्ति का प्रदर्शन करने, या दोनों करने के लिए एक दृष्टिकोण अपना सकते हैं। अंतिम लक्ष्य उन्हें यीशु मसीह के बारे में निर्णय लेने के लिए चुनौती देना है और यह बताना है कि वे सुसमाचार के संदेश के साथ क्या करेंगे।

विश्वासियों को प्रोत्साहित करना और प्रेरित करना

जब हमारा लक्ष्य विश्वासियों को उत्साहित करना, प्रेरित करना, प्रोत्साहित करना या, उन्हें कार्रवाई के लिए प्रेरित करना होता है, तो हम संदेश को इस तरह से ढालते हैं जो दिल और दिमाग को छू लेता है। वास्तविक जीवन की कहानियों, बाइबल के दृष्टांतों का उपयोग करना और सरल और व्यावहारिक रीतियों पर दृष्टि डालना कि वे क्या कर सकते हैं जो परमेश्वर उन्हें करने के लिए कहता है, सामान्यतः लोगों को कार्रवाई के लिए प्रेरित करता है।

विश्वासियों को सत्य में स्थापित करना

जैसा कि हमने इस पुस्तक की शुरुआत में देखा, यह वचन की सेवकाई करने की पहली बुलाहट में से एक हैं । परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के वचन में स्थापित होने की आवश्यकता है ताकि वे अपने जीवन को एक ठोस नींव पर बना सकें और विपत्ति के समय या जब धोखे की हवाएँ चलती हैं, तब दृढ़ बने रह सकें।

विश्वासियों को सेवकाई के लिए तैयार करना

परमेश्वर चाहता है कि उसके सभी लोग उसकी सेवा करें। इसके लिए, विश्वासियों को सेवकाई का काम करने के लिए तैयार होने की आवश्यकता है। हमें परमेश्वर के वचन को सिखाने और बताने में सक्षम होना चाहिए ताकि विश्वासी सेवकाई के उन क्षेत्रों में सक्रिय रूप से शामिल हो सकें जिनके लिए परमेश्वर ने उन्हें बुलाया है।

बाइबल के उपदेशों में सरल अभ्यास

1) तैयारी

प्रार्थना: परमेश्वर के मार्गदर्शन, ज्ञान और अभिषेक की तलाश करें। जिन लोगों के लिए आप सेवा कर रहे हैं उनके लिए प्रार्थना करें।

अध्ययन: गहन व्याख्या करें और पाठ के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक संदर्भ को समझें।

संरचना: स्पष्ट परिचय, मुख्य भाग और निष्कर्ष के साथ प्रचार को व्यवस्थित करें।

2) प्रचार करना / बताना

स्पष्टता: सरल, समझने योग्य भाषा का उपयोग करें।

जुड़ाव: बिना खुद पर ध्यान आकर्षित किए कहानियों, दृष्टांतों और संबंधित उदाहरणों के माध्यम से दर्शकों से जुड़ें। लोगों के दिलों और

दिमागों को उत्तेजित करें।

जुनूनः संदेश द्वारा व्यक्तिगत जुड़ाव से आते हुए दृढ़ विश्वास और उत्साह से बताएं।

अध्याय का प्रचार करें, लोगों की मान्यताओं का नहीं: संदेश को वचनों के में लंगर डालें, यह सुनिश्चित करते हुए कि यह व्यक्तिगत विचारों को नहीं बल्कि परमेश्वर के वचन को दर्शाता है।

मसीह का प्रचार करें: प्रत्येक उपदेश में मसीह को केंद्रीय स्थान दें।

सरलता बनाए रखें और कुछ मुख्य बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करें: अत्यधिक विवरण से बचें; केंद्रीय संदेश या विषय पर ध्यान केंद्रित करें।

अध्याय को स्पष्ट रूप से समझाएँ: जटिल विचारों को समझने योग्य अवधारणाओं में विभाजित करें।

प्रसंगों के अनुसार पढ़ाएँ: जहाँ उचित हो, पाठ्यांश की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक पृष्ठभूमि की व्याख्या करें।

जब भी संभव हो सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करें:सीखने वालों को शामिल करने के लिए प्रश्नों, चर्चाओं और गतिविधियों का उपयोग करें।

व्यवस्थित रूप से निर्देश दें: विषय वस्तु को तार्किक और प्रगतिशील रूप से प्रस्तुत करें।

सहायक संसाधनों और उपकरणों का उपयोग करें: जब संभव हो, तो समझ को बढ़ाने के लिए प्रस्तुतिकरण उपकरणों और अन्य दृश्यों, उदाहरण के लिए, मानचित्र, आरेख और ऐतिहासिक डेटा का उपयोग करें।

दोहराएँ, याद दिलाएं, समीक्षा करें: विशेष रूप से एक पासवानीय व्यवस्था में, समय (महीनों / वर्षों) के साथ दोहराएँ, याद दिलाएँ और समीक्षा करें।

3) अनुप्रयोग

प्रासंगिकता: दिखाएँ कि बाइबल की सच्चाई समकालीन जीवन पर किस प्रकार लागू होती है।

कार्रवाई के लिए आह्वान: उन विशिष्ट प्रतिक्रियाओं को प्रोत्साहित करें, उत्साहित करें और प्रेरित करें जो परमेश्वर अपने लोगों से चाहता है।

जीवन और सेवकाई के लिए तैयार करें: शिक्षार्थियों को दिखाएँ कि वे अपने दैनिक जीवन और सेवकाई में बाइबल के सिद्धांतों को कैसे लागू करें।

वचन की सेवकाई करते समय किन बातों से बचना चाहिए

- लापरवाह, अनुचित या अश्लील होने से बचें।
- स्वयं पर ध्यान आकर्षित करने से बचें। खुद के बारे में प्रचार करने से बचें।
- राजनीति से बचें। राजनीतिक दलों या उन मुद्दों को बढ़ावा देने के लिए मंच का उपयोग न करें।
- व्यक्तियों को नीचा दिखाने या उन पर आक्रमक करने से बचें।
- अन्य संप्रदायों की आलोचना करने, उनका विरोध करने से बचें।
- लोगों के साथ चतुराई एवं उन पर नियंत्रण करने से बचें।

पवित्रशास्त्र सूची

बेसिक बाइबल इंटरप्रिटेशन 1991, ISBN 0-89693-819-O, रॉय बी. जुक (लेखक)

डेक्स स्टडी नोट्स (फ़िनिस डेक) कॉपीराइट © फ़िनिस जेनिंग्स डेक द्वारा।

डेविड गुज़िक की एंड्यूरिंग वर्ड कमेंट्री कॉपीराइट © 2014 डेविड गुज़िक और एंड्यूरिंग वर्ड मीडिया द्वारा

माउंस कॉन्सिस ग्रीक-इंग्लिश डिक्शनरी. विलियम डी. माउंस द्वारा रिक डी. बेनेट, जूनियर के साथ संपादित (1993)

स्ट्रॉन्ग्स हिब्रू एंड ग्रीक डिक्शनरी, जेम्स स्ट्रॉन्ग, एस.टी.डी., एल.एल.डी. द्वारा स्ट्रॉन्ग की संपूर्ण सहमति 1890 में प्रकाशित; सार्वजनिक डोमेन।

थायर्स ग्रीक डेफ़िनिश्न्स. 1886, 1889 में प्रकाशित; सार्वजनिक डोमेन।

वाइन्स कम्पलीट एक्सपोजिटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टेस्टामेंट वर्ड्स., © 1984, 1996, थॉमस नेल्सन, इंक., नैशविले, टीएन

वर्ड इन द न्यू टेस्टामेंट. आर्चीबाल्ड थॉमस रॉबर्टसन. 1930-1933 में प्रकाशित; सार्वजनिक डोमेन।

वर्ड स्टडीज इन द न्यू टेस्टामेंट. मार्विन आर विंसेंट, डी.डी. (1886)

सॉफ्टवेयर टूल्स और ऑनलाइन संसाधन

e-Sword® (संस्करण 12.1.0) www.e-sword.net, कॉपीराइट © रिक मेयर्स

सामान्य संदर्भ - साहित्यिक उपकरण

http://literary-devices.com/

बाइबल साहित्यिक तकनीकें

https://carm.org/Bible-literary-techniques

बाइबल अध्ययन विधियाँ

https://www.questionsgod.com/biblestudymethods.htm

बाइबल के इतने अधिक भिन्न-भिन्न संस्करण क्यों हैं

https://www.christianity.com/wiki/Bible/why-are-there-so-many-different-versions-of-the-Bible.html

(सभी ऑनलाइन संसाधनों का अंतिम बार दिसंबर 2024 में संदर्भ दिया गया था)

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपसे प्रेम करता है?

2000 साल पहले, परमेश्वर इस संसार में मनुष्य बनकर आया। उसका नाम यीशु है। उसने पूर्ण रूप से निष्पाप जीवन बिताया। यीशु देहधारी परमेश्वर था, इसलिए जो कुछ उसने कहा और किया, उसके द्वारा उसने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया। जिन वचनों को उसने कहा, वे परमेश्वर के वचन थे। जिन कामों को उसने किया, परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने इस पृथ्वी पर कई सामर्थ के काम किए। उसने बीमारों को और पीड़ितों को चंगा किया। उसने अन्धों की आंखें खोलीं, बहरे कानों को खोल दिया, लंगड़े चलने लगे। उसने हर प्रकार के रोगों और बीमारियों को चंगा किया। उसने आश्चर्यजनक रूप से कुछ ही रोटियां बहुगुणित कर भूखों को खिलायी, आंधी को थामा और कई आश्चर्यकर्म किए।

ये सारे कार्य हमें दिखाते हैं कि यीशु अच्छा परमेश्वर है, जो चाहता है कि उसके लोग भले, चंगे स्वस्थ और खुश रहें। परमेश्वर लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना चाहता है।

फिर परमेश्वर ने क्यों मनुष्य बनने का और हमारे संसार में आने का निर्णय लिया? यीशु क्यों आया?

हम सब ने पाप किया है और ऐसे कामों को किया है जो हमें उत्पन्न करने वाले परमेश्वर के सम्मुख अस्वीकारणीय हैं। पाप के परिणाम हैं। पाप परमेश्वर और हमारे बीच एक ऊंची दीवार है जिसे हम लांघ नहीं सकते। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उस परमेश्वर को जानने और उसके साथ, जिसने हमें बनाया है, अर्थपूर्ण रिश्ता बनाए रखने से रोकता है। इसलिए, हम में से कई लोग अन्य बातों का सहारा लेकर इस खालीपन को भरने की कोशिश करते हैं।

हमारे पापों का अन्य परिणाम है। परमेश्वर से अनंतकाल तक अलगाव। परमेश्वर की अदालत में, पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से दूर नर्क में अनंतकाल का अलगाव है।

परंतु सुसमाचार यह है कि हम पाप से मुक्ति पाकर परमेश्वर से फिर मेल कर सकते हैं। बाइबल कहती है, ***"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु***

परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है" **(रोमियों 6:23)**। यीशु ने सम्पूर्ण जगत के पापों का दण्ड सहा, वह क्रूस पर मरा। फिर तीसरे दिन वह जी उठा, और उसने कइयों को खुद को जीवित दिखाया और वह स्वर्ग में चढ़ गया।

परमेश्वर प्रेमी और दयालु है। वह नहीं चाहता कि हममें से कोई व्यक्ति नर्क में नाश हो। और इसलिए वह सम्पूर्ण मानवजाति को पापों और उसके परिणामों से मुक्ति का मार्ग दिखाने के लिए आया। वह पापियों को बचाने के लिए आया—आपके और मेरे जैसे लोगों को पाप और अनंतकाल की मृत्यु से बचाने के लिए।

पापों की यह विनामूल्य क्षमा पाने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ प्रभु यीशु मसीह ने क्रूस पर किया उसे ग्रहण करना और उस पर सम्पूर्ण हृदय से विश्वास करना।

"जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी" **(प्रेरितों के काम 10:43)।**

"कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा" **(रोमियों 10:9)।**

यदि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करेंगे, तो आप भी पापों की क्षमा और शुद्धता पा सकते हैं।

प्रभु यीशु मसीह में और जो कुछ उसने आपके लिए क्रूस पर किया उस पर विश्वास करने हेतु निर्णय लेने में आपकी सहायता करने के लिए यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। इस प्रार्थना की सहायता से आप जो कुछ यीशु ने आपके लिए किया, उसे ग्रहण कर सकते हैं और क्षमा और पापों से शुद्धी पा सकते हैं। यह प्रार्थना मात्र मार्गदर्शन के लिए है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं।

प्रिय प्रभु यीशु, जो कुछ आपने क्रूस पर किया उसे मैंने आज समझा है। आप मेरे लिए मरे, आपने मेरे लिए बहुमूल्य लहू बहाया और मेरे पापों का दण्ड

चुकाया, ताकि मुझे क्षमा मिल सके। बाइबल बताती है कि जो कोई आप पर विश्वास करेगा वह अपने पापों से क्षमा पाएगा।

आज, मैं आप में विश्वास करने का और क्रूस पर मेरे लिए मर कर और फिर मरे हुओं में से जी उठ कर जो कुछ आपने मेरे लिए किया उसे ग्रहण करने का निर्णय लेता हूं। मैं जानता हूं कि मैं अपने भले कामों से खुद को बचा नहीं सकता, न ही और कोई मनुष्य मुझे बचा सकता है। मैं अपने पापों की क्षमा मोल नहीं ले सकता।

आज, मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूं और अपने मुंह से कहता हूं कि आप मेरे लिए मरे, आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप फिर मरे हुओं में से जी उठे, और आपमें विश्वास करने के द्वारा, मैं अपने पापों की क्षमा और अपने पापों से शुद्धता पा सकता हूं।

धन्यवाद यीशु। आपसे प्रेम करने, आपको अधिकाई से जानने और आपके प्रति विश्वासयोग्य रहने में मेरी सहायता कीजिए।

आमीन।

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

ऑल पीपल्स चर्च यीशु से **प्रेम रखने वाली, वचन पर केंद्रित, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण** पारिवारिक कलीसिया, एक प्रशिक्षण संस्थान, मिशन आधारित संसार में सुसमाचार फैलाने वाली कलीसिया है।

- एक **पारिवारिक कलीसिया** के रूप में, हम मसीह केंद्रित संगति में एक समुदाय के रूप में एक साथ बढ़ते हैं, परमेश्वर की मण्डली के रूप में प्रेम में एक दूसरे की देखभाल और सेवा करते हैं।
- एक **सुसज्जित करने वाले केंद्र** के रूप में, हम प्रत्येक विश्वासी को विजयी रूप से जीने, मसीह की समानता में परिपक्व होने और उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सामर्थी बनाते हैं और सुसज्जित करते हैं।
- एक **मिशन के आधार** के रूप में, हम अपने शहर, राष्ट्र और राष्ट्रों को परमेश्वर के वचन और पवित्र आत्मा की सामर्थ के अलौकिक प्रदर्शनों के माध्यम से यीशु मसीह के पूर्ण सुसमाचार के साथ आशीष देने के लिए सार्थक सेवकाई में संलग्न हैं।
- एक **विश्व सुसमाचार प्रचारक** के रूप में, हम ईश्वरीय अगुवों और पवित्र आत्मा से भरी कलीसियाओं का पोषण करके स्थानीय और विश्व स्तर पर सेवा करते हैं जो परमेश्वर के राज्य के लिए उनके क्षेत्रों को प्रभावित कर सकते हैं।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझौते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4,5; इब्रानियों 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें: **apcwo.org/locations** या इस पते पर ई-मेल भेजें: **contact@apcwo.org**

निःशुल्क प्रकाशन

A Church in Revival
A Real Place Called Heaven
A Time for Every Purpose
Ancient Landmarks
Baptism in the Holy Spirit
Being Spiritually Minded and Earthly Wise
Biblical Attitude Towards Work
Breaking Personal and Generational Bondages
Change
Code of Honor
Divine Favor
Divine Order in the Citywide Church
Don't Compromise Your Calling
Don't Lose Hope
Equipping the Saints
Foundations (Track 1)
Fulfilling God's Purpose for Your Life
Gifts of the Holy Spirit
Giving Birth to the Purposes of God
God Is a Good God
God's Word—The Miracle Seed
How to Help Your Pastor
Integrity
Interpreting Scripture
Kingdom Builders
Laying the Axe to the Root
Living Life Without Strife
Marriage and Family
Ministering Healing and Deliverance
Offenses—Don't Take Them
Open Heavens
Our Redemption
Receiving God's Guidance
Revivals, Visitations and Moves of God
Shhh! No Gossip!
Speak Your Faith
The Conquest of the Mind
The Father's Love
The House of God
The Kingdom of God
The Mighty Name of Jesus
The Night Seasons of Life
The Power of Commitment
The Presence of God
The Redemptive Heart of God
The Refiner's Fire
The Spirit of Wisdom, Revelation and Power
The Wonderful Benefits of Praying in Tongues
Timeless Principles for the Workplace
Understanding the Prophetic
Water Baptism
We Are Different
Who We Are in Christ
Women in the Workplace
Work—Its Original Design

नई पुस्तकें नियमित रूप से प्रकाशित की जाती हैं। PDF, आडियो तथा अन्य फॉर्मेट में विनामूल्य ए. पी. सी. पुस्तकों को डाऊन लोड करने हेतु कृपया **apcwo.org/books** को भेंट दें। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और वीडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे वेबसाईट **apcwo.org/sermons** को भेंट दें।

क्रिसलिस काउंसलिंग

क्रिसलिस काउंसलिंग लोगों को जीवन की चुनौतियों का सामना करने और उन्हें दूर करने में मदद करने हेतु व्यक्तिगत परामर्श प्रदान करता है। क्रिसलिस काउंसलिंग व्यावसायिक और प्रशिक्षित और अनुभवी मसीही सलाहकारों की एक टीम है।

हमारी सेवाएं सभी आयु वर्ग के लोगों लिए हैं, और जीवन में होने वाली चुनौतियों की विस्तृत श्रृंखला का समाधान करती है।

- **किशोरों**
- **व्यक्तिगत समायोजन**
- **सम्बंधपरक चुनौतियां**
- **शिक्षा में कम सफलता पाने वाले**
- **कार्य सम्बंधित मुद्दे**
- **परिवार / दम्पत्ति: विवाह पूर्व, वैवाहिक आत्मिक समस्याएं**
- **माता-पिता / बच्चे / भाई-बहन / सहकर्मी**
- **व्यवहार सम्बंधी विकार**
- **व्यक्तित्व विकार**
- **मनोवैज्ञानिक / भावनात्मक समस्याएं**
- **तनाव / आघात**
- **शराब / नशीली दवाओं का गलत इस्तेमाल**
- **आध्यात्मिक मुद्दे**
- **जिंदगी की सीख**

क्रिसलिस काउंसलिंग सेवाओं के लिए शुल्क सस्ती और सुलभ है।

हमारे प्रशिक्षित सलाहकारों में से किसी एक के साथ मुलाकात तय करने के लिए

वेबसाइट: **chrysalislife.org**
फ़ोन: +91-80-25452617 टोल फ्री (भारत के अंतर्गत) 1-800-300-00998
ईमेल: **counselor@chrysalislife.org**

क्रिसलिस काउंसलिंग ऑल पीपल्स चर्च एँड वर्ल्ड आउटरीच की सेवकाई है।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (आ) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (इ) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, 'मसीही अगुवों के लिए सभाओं' का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में बिना मूल्य के वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और पवित्र आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक / बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से "ऑल पीपल्स चर्च," बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग करके आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

खाता नाम: All Peoples Church
खाता संख्या: 50200068829058
IFSC कोड: HDFC0004367
बैंक: HDFC Bank, 7M/308 80 Ft Road, HRBR Layout, Kalyan Nagar, Bengaluru-560043, Karnataka

कृपया ध्यान दें: *ऑल पीपल्स चर्च केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार कर सकता है। यदि आप चाहते हैं तो, अपना दान भेजते समय, स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें* **apcwo.org/give**

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

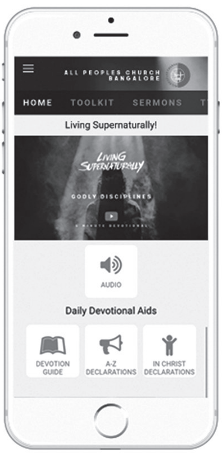

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

निःशुल्क ऐप डाउनलोड करें:

ऐप स्टोर या प्ले स्टोर में खोजें
“ऑल पीपुल्स चर्च (APCWO)”/
All Peoples Church Hindi

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google Play

विश्वास को मजबूत करने और सुसमाचार साझा करने के लिए विभिन्न विषयों पर आधारित वचनों के टूलकिट।
उपदेशों, टीवी कार्यक्रमों, पुस्तकों, संगीत और बहुत कुछ से भरे संसाधन।
अगर आपको यह पसंद आए, तो
दूसरों को भी इसके बारे में बताएं!

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज

apcbiblecollege.org

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज एंड वर्ल्ड आउटरीच भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं—सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज (एपीसी-बीसी) में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं :

- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में एक वर्षीय प्रमाणपत्र (C.Th.)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में दो वर्षीय प्रमाणपत्र (Dip.Th.)
- ईश्वर-विज्ञान और मसीही सेवकाई में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र (B.Th.)

हर सप्ताह के दिन, **सोमवार से शुक्रवार तक भारतीय समय के अनुसार सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक (UTC+5:30)** कक्षाएं ली जाती हैं।

- **ऑन-कैम्पस**: कैम्पस में व्यक्तिगत कक्षाओं में भाग लीजिए
- **ऑनलाइन**: ऑनलाइन लाइव व्याखान में भाग लीजिए
- **ई-लर्निंग**: ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से स्वयं की सुविधानुसार सीखनें के लिए **apcbiblecollege.org/elearn**

ऑनलाइन आवेदन हेतु, और कॉलेज, पाठ्यक्रम, पात्रता मानदंड, शिक्षण शुल्क और आवेदन पत्र डाउनलोड करने के विषय में अधिक जानकारी हेतु, कृपया इस वेबसाईट का अनुसरण करें: **apcbiblecollege.org**

बाइबल एक दिव्य पुस्तक और एक मानवीय पुस्तक दोनों है, एक दिव्य पुस्तक के रूप में हम पवित्रशास्त्र की प्रेरणा और हमारे जीवन में इसके द्वारा जारी की गई अलौकिक शक्ति को पहचानते हैं। एक मानवीय पुस्तक के रूप में हम मानते हैं कि इसे मानव भाषा में, कुछ सांस्कृतिक संदर्भों में साहित्यिक रूप, भाषा तकनीक और संचार शैलियों का उपयोग करके और बाइबल के समय में एक निश्चित श्रोता को संबोधित करते हुए लिखा गया था।

बाइबल की व्याख्या में हमारा लक्ष्य पवित्रशास्त्र के अर्थ को उचित प्रकार से समझना है ताकि हम वह ग्रहण कर सकें जो परमेश्वर आज हमसे कह रहा है। धर्मशास्त्र की व्याख्या करने के लिए पवित्र आत्मा के प्रकाश पर निर्भरता और सही निर्णय और तर्क आवश्यक है।

प्रेरित पौलुस ने परमेश्वर के वचन को सही रूप से साझा करने की कई आवश्यकताओं पर बल दिया, *"अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा सेवक ठहराने का यत्न करो जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक से बाँटता हो"* (2 तीमुथियुस 2:15)। इस पुस्तक में हमारा लक्ष्य यह सीखना है कि पवित्र आत्मा के नेतृत्व में परमेश्वर के वचन को उचित रूप से किस प्रकार संभाला जाए। हम पवित्रशास्त्र की सही व्याख्या करने के अभ्यास को सरल और समझने में सरल बनाने का प्रयास करते हैं ताकि विश्वासी और वचन के सेवक इन सिद्धांतों को परमेश्वर के पवित्र वचन को पढ़ने, अध्ययन करने और सेवकाई में लागू कर सकें। हमारा लक्ष्य इसे सरल और व्यावहारिक बनाए रखना है। हमने कुछ सामान्य प्रश्न और कठिन विषय भी सम्मिलित किए हैं जिससे हम इन विषयों पर बाइबल के दृष्टिकोण तक पहुँचने में व्याख्यात्मक प्रक्रिया को समझ सकें।

परमेश्वर के वचन का अध्ययन, समझ, व्याख्या, और सिखातेसमय यह पुस्तक एक उपयोगी संसाधन के रूप में सहायक होगी ।

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org